अन्ना पासवान

मनमोहन सेहगल

पचशील प्रकाशन, जयपुर

ऐतिहासिक रोमांस' उपन्यास में रोचक रोमांचक और रोमानी होता है। सत्रहवीं शती के जोधपुर सम्राट महाराज गजसिंह का राज्यकाल—महाराज के व्यक्तित्व में शौर्य और रोमानियत का अद्भुत संगम और फिर 'प्रेम तो पानी पीकर घर पूछना है' उन्हीं महाराज गजसिंह की ऐतिहासिक प्रेम कथा को विभिन्न ऐतिहासिक-अनैतिहासिक रंगों से रंगीनी प्रदान की गयी है। आज भी जोधपुर दुर्ग के भीतर संग्रहालय में रखे अनारन बाई के मोती जड़े जूते मूल घटना की सचाई पर मुहर लगाते हैं और समूची दास्तान का किस्सा बयान करते हैं। मैंने यह कहानी उन्हीं की जुबानी सुनी है जिसे अब आपको भी सुना रहा हूं। उम्मीद है कि यह रोचक कथा आपको भी पसंद आयेगी।

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला —मनमोहन सहगल

एक

मुगल सम्राट जहाँगीर दीवान ए खास म मसनद पर विराजमान थे। दूर रखे चादी के हुक्के की लम्बी घुमावदार नलकी, जिसके सिरे पर सोने की नार लगी थी, बादशाह के हाथ मे थी। अष्टधातु की चिलम मे लोबान मिश्रित तम्बाकू जिसे बादशाह सलामत के लिए विशेष तौर पर दमावद से मँगवाया जाता हल्की हल्की महक चारा ओर फैला रहा था। रुक रुककर बादशाह नाव को मुह के निकट लाकर एकाध लम्बा कश लेते हुए ज्यो ही धुआँ छोडते, माहौल और अधिक गधा उठता।

दीवान ए खास मे कुछ अन्य वजीर मशीर और अमीर भी बादशाह के साथ-साथ काबुल से आई रक्कासा नगीनाबाई का नाच और गाना देखने-सुनने के लिए खास तौर पर निमन्त्रित थे। अपनी अपनी चौकियो पर बैठे वे सम्मानित महसूस कर रहे थे। दीवान खास के बीचाबीच ईरानी कालीन बिछा था, छत म बिल्लौरी फानूस लटक रहे थे और चारो कोना मे रखी चमचमाती कदीला म सुगधित तेला स भिगोकर जलायी हुई मशालें पूरे वातावरण को आलोकित और मादक बना रही थी। मशाला की रोशनी बिल्लौरी फानूसो की आभा को दशगुणित कर रही थी—जैसे दर्पणा म लाखा सितारे टिमटिमा जाते हैं। दीवान खास की बाहरी महराबा के बाहर चारा ओर की ड्योढी म लाल मखमली बिछावन बिछा था, जिस पर जगह जगह शस्त्र धारी पहरुए और आज्ञाकारी नौकर चाकर पान सुपारी की तश्तरियाँ और पीकदान लिए मुस्तैद थे। बादशाह की मसनद के बिल्कुल सामने की तरफ कालीन स हटकर ड्योढी मे महराब के पास साजिद सारगी-तबले पर अपना कमाल दिखाने के लिए बादशाह सलामत के हुक्म की राह देख रहे थे और खुद बादशाह नगीना की राह म आँखें बिछाये कश पर कश लगाये जा रहे थे।

झ न झ न झनन थन। एक स्वर गुंजरित हुआ। दीवान ए-खास के खास महमान अपनी समस्त एंद्रिय शक्तियों को मानो में समोकर आँखों की बेताबी को छिपाने का प्रयास करने लगे। बादशाह जहांगीर ने भी नेहचा मुंह से हटाकर गदन को थोडा घुमाया। छोटी छोटी तराशी हुई मूछों और गहरी आँखों म मुस्कान तैर गयी। हाँ, यह नगीना बाई के आगमन की सूचक घुघरू की झनकार सूर्योदय से पूव प्रकाश की किरणो द्वारा धरती को चूम लेने य समान थी।

दीवान खान के पीछे की ओर से चिलमन को जस मरमरी हाथो ने छुआ और एक गोरा स्वस्थ पाव आग को बढ आया। सग ए मरमर से तराशे हुए पैर को दखकर दीवान खान की धडकनें तेज हो गयी, अमीर-वजीर सब दिल ही दिल बादशाह की पसद की दाद देने लगे और एकाध क्षण के अतराल को वर्षों लम्बी अवधि समझकर नगीना को आख भर देख लेने के लिए तडप गये। चिलमन का झीना रेशमी वस्त्र फिर सरसराया और जसे मखमत म गढी गोल लम्बी नागिन सी बलखाती हुई एक भुजा, जिसके ऊपर खिला कमल, पखुडी पखुडी स्वण छापा स सुसज्जित, कोमल-कमनीय कलाई पर झूमत कगन और हर बिल्लौर की चूडियाँ! बादशाह का विलास भवन गदरा गया, उछलत हुए दिलो को सीने म ही थाम लेन को कुछ हाथ बढ गये। तभी सग ए-मरमर से तराशकर बनाया एक बुत उनके सामन था। टागो म चूडीदार पायजामा शरीर के साथ ऐस चिपका था, जैसे जन्मजात हो। रग भी मुश्की-कशरी! कहाँ पायजामा की सीमा का अत था और कहाँ नग परा की लम्बी बनावट का आरभ हो रहा था, जान लेना कठिन था। यदि पाव की महावरी रेखा का घेरा पोट भर ऊपर न झाँकता होता, तो सचमुच पाँवो की गोराई पता ही न चलती। शरीर पर अँगरखा। मखमली अगूरी छटा। भरे शरीर पर एसा कसकर बँधा था कि धडकती छातिया विद्रोह करती-सी उठती गिरती दीख पड रही थीं। मुख जैसे चौदहवी का चांद, चदन के शरीर पर नागिन सी झूमती दो चोटियाँ! बालो म सितारे भरे बायी ओर चादी का झूमर, गले म गुलूबद, हाथो म रत्नचौक। चोटिया म चादी की गोट ऐस लपेटे थी, जसे सचमुच मचलती नागिन चमक चमक जाये। और तब वह बादशाह सलामत की ओर झुककर

जुहार करने की मुद्रा बस क्यामत ही नही हुई यही क्यामत थी। जो नजर उठी बस उठी ही रह गयी। सासें रुक गयी हवा थम गयी क्षण भर के लिए सष्टि की चेतना बहक उठी। नगीना बाई खूबसूरती की मुजस्सम तस्वीर साकार सुदरता की मूर्ति खुदा ने जैसे बडी लगन से गढी हो। बादशाह जहाँगीर भी उसकी आँखो की मादकता मे विमुग्ध पल भर के लिए नूरजहाँ से विमुख हो गया होगा।

झिनन धिन किन किनन ता दिक धिन धिन धिन्ना की स्वर लहरियो के कानो से टकराते ही बादशाह के सम्मुख झुककर जुहार करता सा वह बुत ऐसे तडपा जैसे किसी न साप छू लिया हो और चक्कर प चक्कर खाते हुए ऐसी फिरकियाँ लेने लगा कि जैसे सुदरता अचानक मचल उठी हो। नगीना बाई की एक एक भाव भगिमा के साथ साथ उठती गिरती साँसें और आखो की चिलमन जसे आतिश ए इश्क को हवा देती पखिया, तिस पर तुर्रा यह कि नगीना के कदमो को अपनी ओर बढते और मचलते रज़र से गोरे शरीर को देख देखकर प्रत्येक अमीर वजीर जर्रफी-जवानी की सीमाओ तथा दीवान ए खास की शिष्टता के बधनो को क्षण-भर के लिए भुलाकर 'आह' 'हाय के अद्ध-स्फुट स्वर हवा मे उछाल बठता। बादशाह पर ऐसा कोइ प्रभाव नही था। नगीना तो जैसे बादशाह के आगाश के लिए कई बार मचली तडपी, किंतु बादशाह सलामत ठडे गोश्त की तरह बेहिश ओ हरकत उसकी नत्य कला को देखते परखते रहे। साजिदो ने आखिरी थाप तबले पर दी और नगीना एक बार फिर बादशाह के सम्मुख झुककर आदाब बजा लायी।

बादशाह ने सबसे पहले 'वाह' कहते हुए ताली बजायी। फिर क्या था! सब अमीर वजीर वाह वाह और कमाल बेमिसाल आदि जुम्ले उछालने लगे और दीवानखाना तालियों से गूज उठा। जहाँगीर ने गले से गज मुक्ताओ की माला उतारकर नगीना की ओर बढा दी। नगीना न दस्त ए मुबारक से मुक्ता माला लेकर माथे मे लगा ली। तभी देखादेखी जसे अमीरो वजीरो म भी नगीना का पुरस्कृत करने की होड लग गयी कला के पारखी होने का दावा करने वाले कला की अपक्षा देह पर हुए नगीना को बहुमूल्य उपहार दे रहे थे। जहाँगीर की गुरगा

व्यवहार का जायजा ले रही थी और दीवानखाने के बाहर छिटकी चादनी म आधी रात का गजर सबको विश्राम का न्यौता देने लगा था।

नगीना उत्तेजनामयी भगिमाएँ प्रदर्शित करती हुई झुक झुककर उपहार एकत्रित कर रही थी बैठक की समाप्ति की विधिवत घोषणा अभी नहा हुई थी। स्वय बादशाह सलामत की नजरें नगीना के शरीर से टली न थी कि एक पहरुए न दीवान खाने म प्रवेश करते हुए कहा 'जान की अमान पाऊँ मेरे आका ! आपके खास गुप्तचर अभी इसी समय आपसे मिलना चाहते है।'

जहागीर न स्वीकृति मे सिर हिला दिया।

पल भर मे ही सामने की डयोढी स कादिर खा ने प्रवेश करक तीन बार झुकते हुए जुहार किया।

कहो, खान ! क्या खबर है ?

कादिर सब अमीरो वजीरो और नगीना को देखकर झिझक सा गया। खबर शायद गम थी और गोपनीय भी, अत बादशाह सलामत ने वहाँ तखलिया करने की बजाय स्वय वहा से उठ जाना उचित समझा। मसनद से उठकर भीतर विश्राम गृह म जाते हुए उन्होने कादिर खाँ को अपने साथ आने का सकेत किया।

नूरजहा के शयन-कक्ष स बाहर मुलाकातियो के लिए एक गुप्त कक्ष बना था। बादशाह नूरजहा के निकट जाने से पूर्व कादिर को लेकर उसी कक्ष म गय और भीतर से कपाट बद कर लिया।

'अब कहो कादिर।'

कहते जबान कांपती है हुजूर। जान की अमान पाऊ तो कहूँ।

'साफ कहो।'

हुजूर बादशाह सलामत ! पता चला है कि आपके नूर ए चश्म ने बगावत कर दी है। दिल्ली पर कब्जे की गज से वह एक बडी सिपह लिय चढा आ रहा है।

कौन ? खुरम बागी हो गया ?

जी आलीजाह मलिका आलिया के किसी सुलूक से उन्हें रज हुआ है, यह भी पता चला है।'

'इतनी जुरत ! सिपोलिए का सिर कुचल देना ही सही होगा।' बादशाह ने जैसे अपने आप से कहा फिर बोले 'अच्छा कादिर तुम जाओ मुस्तैद रहो। महावत खा को मेरे पास भेजते जाना। मैं इसी मेहमानखाने मे उसका इतिजार करूँगा।'

कादिर खा झुककर सलाम बजाते हुए वहाँ से निकला और उसने महावत खा को सदेश भिजवा दिया कि बादशाह सलामत ने उसे इसी वक्त तलब किया है। जब तक महावत खा पहुँचे जहागीर ख्याला मे खो गया। क्या यह मुगलिया खानदान की परपरा ही बन जायगी—बेटा बाप के खिलाफ हथियार उठाये ! मैंने भी तो अब्बा हुजूर से बगावत की थी। मुहब्बत मे बँधकर ही तो उन्होने बख्श दिया था मुझे। और अब यह खुरम सल्तनत का होने वाला वारिस खुदा खैर करे ! बिल्कुल उन्ही कदमो पर चल निकला। बगावत को दबाना जरूरी है। अभी सिपह भिजवाता हू, बादशाह को शायद उसने कमजोर समझ लिया है।'

बादशाह ने ख्याला के समुदर से उबरने के लिए जो नजरें उठायी तो महावत खा हाजिर था। महावत खा के बाअदब सलाम के जवाब मे बादशाह ने भर्राये गले से काम की बात की। 'खा साहब जानते हैं खुरम ने हमारे खिलाफ बगावत कर दी है। चीट के जब पर निकल आते है तो वह मशाल पकडने भागता है और उसी की लौ मे जलकर राख हो जाता है।'

महावत काप गया बोला, 'हुजर, बच्चे की नादानी मानिये उसे। बाल हठ है शायद ! इतने कठोर न होइये। मुझे हुक्म कीजिये मैं समझा कर वली अहद को ले आऊँगा।'

'नही, खा साहब ! इस तरह नही आयेगा। सुना है उसने फौज खडी कर ली है और आगरा पर काबिज होने को बढा चला आ रहा है। उसे तो गिरफ्तार करके लाना होगा।'

'आपका हुक्म आलीजाह !'

'देखो खाँ साहब हुकूमत की बेहतरी के सामने बाप बेटे का कोई रिश्ता नही होता। घमासान लडाई की उम्मीद करता हूँ मैं। आप फौज के सिपह सालार हैं। शाहजादा परवेज और राजा गजसिंह जोधपुरी को साथ ले जाइये। फौज इतनी तो जायेगी ही, जो खुरम की सिपह पर हावी हो

सके। राजा गजसिंह मजबूत राजपूत सरदारो का अगुआ बनकर लडेगा तो फतह हमारा दामन चूमेगी। कल सूरज चढन से पहले कूच का प्रबध करें और ज्योही सूरज की पहली किरण जमीन छुए, आपके डके की चोट मेरे कानो से टकरानी चाहिए। जाइये खुदा हाफिज। फतह की खबर जल्दी भिजवाइयेगा।' जहांगीर महावत खां को सब समझाकर नूरजहाँ की ख्वाबगाह मे चले गये।

सूर्योदय की पहली किरण। दिल्ली के लोगो ने घोडो, पैदला और तोप खाना पर मवनी एक बहुत बडी सिपह को नगर से बाहर जाते देखा। सबसे आगे खुद शहजदा परवेज और महावत खां थे। राजपूत सरदारो की टुकडी के सेनापति जोधपुर नरेश राजा गजसिंह केसरिया पगडी पहने ईरानी घोडे की मस्त चाल का प्रदशन करते हुए चले जा रहे थे। सबकी जुबान पर एक प्रश्नचिह्न था, यह आकस्मिक धावा किधर ! कल के दीवान ए खास म भाग लेने वाले अभी नगीना के सपनो मे गक थे कि तुरी और मदर की आवाजा ने उनकी कल्पना के रग म भग डाल दी थी। आखें मलत अपने चाकरो से यही पूछ रहे थे कि राजधानी मे यह क्या भगदड मच गयी है ! बादशाह हरम मे आराम फर्मा रहे थे, बेगम आलिया नर जहाँ हुकूमन की हर बात से आशना होती थी लेकिन आज हैरानी से विस्फारित नेत्र लिए बादशाह के निकट खुद एक सवालिया निशान बनी खडी थी—यह फौज किधर चढाई कहा और क्यो ? महलो म सिफ बाद शाह सलामत को ही मालूम था या शहजादा परवेज महावत खां और राजा गजसिंह जानते थे। उनके फौज के सिपाही भी नही जान पाये थे कि उन्हें कहाँ किससे कैसे लडना है। दयार ए गैर मे मरने के लिए जा रहे हैं या फातिहा बनने के लिए कोई नही जानता।

देखते देखते फौजें दक्षिण की ओर उतर गयी। पडाव डालते और मजिलें मारते हुए शहजादा परवेज तेजी के साथ मालवा की ओर बढा। उसे महावत खां और राजा गजसिंह का बहुत भरोसा था। शीघ्र ही खुरम और परवेज की सेनाए टकरा गयी। राजा गजसिंह की ललकार पर वीर

राजपूत खुरम की टुकडियो पर भूखे भेडियो की तरह टूट पडे। मालवा की धरती रक्त-स्नात हो उठी लाशा के ढेर लग गये। स्वय खुरम के घोडे की गदन म किसी वीर का भाला ऐस पिरोया गया जैसे किसी ने नयी प्रकार के हल का आविष्कार कर लिया हो। खुरम औंधे मुह धरती चाटने लगा और इससे पहले कि राजा गजसिंह का भाला उसकी गदन पर होता वह उठा और युद्ध भूमि से भाग खडा हुआ। सेना ने खुरम के घोडे को गिरते और खुरम को भागते हुए देखा, तो सिपाही अपनी-अपनी जान बचाने की फिराक म सब कुछ भूलकर जिधर जिसके सीग समाये, कतरा गये। शहजादा परवेज फतहयाब हुआ। शहजादे न पुन बादशाह के सामने कुबूल किया कि मालवा के युद्ध म उसकी विजय का रहस्य राजा गजसिंह की तलवार की कौंध मे छिपा है।

खुरम वहाँ से पराजित होकर दक्षिण मे भाग गया था। बादशाह अपने खून और मुगलिया परपराओ को पहचानता था। वह जानता था कि पहले धाव मे बिना किसी को पता चले वह खुरम को तोडने मे सफल रहा, किंतु शायद खुरम के दूसरे धक्के को सह पाना इतना आसान न होगा। जहागीर की नीद जाती रही उसने अपनी फौजा को नये सिरे से आयाजित किया। जयपुर के महाराजा जयसिंह को भी सहयोग के लिए बुला लिया गया। महाराजा जयसिंह एक बहुत बडी सेना लेकर शहजादा परवेज के साथ आ मिले। जैसा कि आशा ही थी बागी खुरम उडीसा और बिहार पर विजय पाने के बाद पुन आगरा की ओर बढा। महाराजा अमरसिंह के सिसोदिया राजपूतो का सहयोग पाकर शहजादा खुरम का घमड आसमान छूने लगा था। खुद अमरसिंह का पुत्र भीम खुरम की सेना का नेतत्व कर रहा था।

बनारस के निकट दोना सेनाओ का सामना हो गया। महाराजा जयसिंह के पास बडी सेना देखकर शहजादा परवेज ने अपनी फौज के अग्रभाग की कमान उन्हें सभाल दी। अब तलक शाही सनाआ के आगे-आगे हमेशा राठौर नरेश और उनकी फौज रहती आयी थी आज महाराजा जयसिंह को वह अधिकार मिलता देखकर राजा गजसिंह इसे अपमानजनक समझ बैठे और युद्ध मे सक्रिय भाग न लेन की गज से वे टोस नदी के बायी ओर हटकर अपनी सेना की टुकडी सहित अलग खडे हो गये। शहजादा परवेज,

महाराजा जयसिंह तथा सेनापति महावत खाँ अपनी अपनी सैनिक टुकड़ियों को ललकारते हुए खुरम और भीम की सेना पर टूट पड़े। भीम की सेना अधिक सुरक्षित स्थिति में थी। नदी के जिस ओर से परवेज की सेनाएँ बढ़ रही थी वह नीची ढलान और पानी भरा के कारण दलदली और फिसलन भरा हो गया था। खुरम की फौजें ऊपर की ओर थीं, जहाँ धरती सूखी थी और घोड़ो के सुम उस पर खट-खट करके बराबर पकड़ करते थे। इसी सुविधा का लाभ उठाते हुए खुरम और भीम की फौजो ने परवेज की फौज को रौंदना शुरू कर दिया। शाही सैनिकों के घोड़े जब फिसल फिसल कर गिर रहे थे और पैदल सैनिकों का मार्ग भी अवरुद्ध करते जा रहे थे, तब भीम की सेना तलवारों और भालों को ऐसे भाँज रही थी कि उसकी सीमा में प्रवेश करता हुआ शाही सैनिक क्षणों में ही नाबूद हो जाता था। आखिर शाही सेना के पाँव उखड़ने लगे, तो खुरम ने भीम को संकेत किया कि मौके का लाभ उठाते हुए राजा गजसिंह की राठौर सेना को भी खदेड़ दिया जाये। युद्धकला की गलत परख के कारण यही खुरम पिट गया।

टोंस के बाएँ किनारे खड़े तमाशबीन राठौरों पर भीम ने आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध के बाद भी राठौरों को वहाँ से न हटाया जा सका। बल्कि राजा गजसिंह के हाथों सेनापति भीमसिंह के मारे जाने से खुरम की इस्लामी सेना के साथ-साथ सिसोदिया राजपूतों के हौसले भी पस्त हो गये। शहजादा खुरम की विजय पराजय में बदल गयी।

शहजादा परवेज, महावत खाँ और महाराजा जयसिंह, तीनों को गजसिंह का लोहा मानना पड़ा। बनारस के इस युद्ध में शाही विजय का सेहरा गजसिंह के सिर बँधा। बादशाह जहाँगीर ने राजा गजसिंह को सम्मानित किया, उसका पद पाँच हजारी कर दिया और अपने हाथों उसकी कमर में स्वर्ण-खचित म्यान वाली तलवार बाँधी।

बनारस का युद्ध राजा गजसिंह की उन्नति और महत्व को चरम सीमा तक पहुँचाने वाला था। बादशाह जहाँगीर के इलावा इस युद्ध और गजसिंह की वीरता का डंका शहजादा खुरम की धड़कनों में भी बजने लगा था। सिसोदिया राजा अमरसिंह और उसके पुत्र भीमसिंह की मर्दानगी में खुरम को शक तो कभी नहीं गुजरा था, किंतु टोंस का युद्ध लड़ते

हुए युद्ध तक की कोई भूल थी जिसने राजा गजसिंह की वरिष्ठता प्रमाणित कर दी थी और बागी खुरम भी गजसिंह की निकटता पाने के प्रयास करने लगा था।

जाने इस बीच गगा के पुलो तले से कितना पानी निकल गया। बादशाह जहाँगीर की मत्यु हो गयी। आपस की फूट के कारण हुकूमत शिथिल पड गयी। चारा ओर नोच खसोट शुरू हो गयी। दक्षिण का सूबेदार खाँजहा लोधी बालाघाट का प्रात निजामुलमुल्क को सौपकर माडू पर अधिकार करने के लिए चला राजा गजसिंह तथा महाराजा जयसिंह ने पहले तो उनका साथ दिया, किंतु माग म ही मुगल शासन के प्रति अपनी वफादारी के विचार से अलग होकर अपन-अपन राज्यो को चल दिय। खाजहा ने बहुत चाहा कि वे लाग उसके साथ रह, किंतु उनके जाने से वह इतना कमजोर पड गया कि उसने भी माडू की ओर बढने का ख्याल छोड दिया।

शहजादा खुरम पहले स ही घात म था। वह अपनी बची-खुची शक्ति एकत्रित करके नूरजहा से अपना अधिकार छीन लेने को एक बार फिर आगरे की ओर बढा। सफलता ने इस बार उसके कदम चूम और नूरजहा की इच्छा और बल के विरुद्ध आगरा म उसका खैर मुकद्दम हुआ और उसे खाली गद्दी का वारिस स्वीकार किया गया। परवेज को आगरा छोडना पडा। खुरम ने शाहजहाँ के लकब से सिंहासन सभाला।

टोंस नदी के किनारे राजा गजसिंह से हुई झडप शाहजहा के दिल पर अभी काबिज थी। वह अपन गिद वीरो, राजपूत सरदारो और दरबार के वफादारो को एकत्रित करक अपनी ताकत इतनी बढा लेना चाहता था कि बाद की किसी भी विपरीत स्थिति म सुरक्षित रह सक। सिसोदिया राजा अमरसिंह से उसन परामश किया, किंतु सिसोदिया और राठौरा की परपरित शत्रुतावश वह राजा गजसिंह से घनिष्ठता स्थापित करने म सहमत न हो सका। मालवा, बनारस तथा बुरहानपुर के युद्धा म खुरम राजा मानसिंह के हाथा पिटा था। राजा अमरसिंह ने उन स्थितिया के विकृत चित्र पेश करक शाहजहा के मन म गजसिंह के लिए नफरत और दुश्मनी

पैदा करना चाही किंतु गुरम समझदार था, बहक म नही आया। उसका दृढ़ मत था कि जो व्यक्ति मुगल बादशाहत का वफादार था, वह अब भी वफादार होगा उसे अवश्य आजमाया जाना चाहिए।

शाहजहाँ ने दरबार-ए-आम की घोषणा कर दी। सल्तनत के पुराने वफादार सरदारों, राजपूत राजाओं और दूर दक्षिण तक के सूबेदारों को अपने साथ आने का मैत्री भरा निमंत्रण भी भिजवा दिया। यद्यपि राजा गजसिंह अभी जोधपुर म अधिक समय तक टिक नही पाया था, अपने शासन को समीचीन ढंग से व्यवस्थित भी नहीं कर सका था कि बादशाह के प्रेम पूर्ण बुलावे को पाकर आगरा के लिए चल पड़ा।

दरबार ए-आम म शाहजहाँ तख्त पर विराजमान था। अमीर वजीर, सरदार राजा नवाब सब आ-आकर कीमती तोहफे पेश कर रहे थे। बादशाह अनुग्रहवश तोहफे कुबूल करता और हैसियत के मुताबिक उन्हें दरबार की स्वीकृति प्रदान करता जा रहा था। तभी जोधपुर नरेश मानसिंह ने दरबार म अपना नजराना पेश किया। एक थाल मे स्वर्ण की मुहरें और दूसरे म कीमती मोती थ, साथ ही दो सजे-सजाये साना की झूल वाले विशाल दंती बाहर मौजूद थे। शाहजहाँ गजसिंह को देखकर मुस्करा दिया। दोनों की आँखें मिली, झुकी और पारस्परिक स्वीकृति का वचन दे बठी। राजा गजसिंह न कहा, आलीजाह, राठौर सल्तनत के हमेशा खैरख्वाह रहे हैं, अब भी हैं। मेरी सेवाएँ बादशाह के लिए हाजिर हैं।'

'हम ममनून हुए, शाहजहाँ न कहा। 'हमारे दिल म आपकी बहादुरी और वफादारी क लिए खास इज्जत है। आप आगरा मे ही कयाम कीजिये, मुगल सल्तनत आपकी एहसानमंद है।'

तभी शाहजहाँ न घोषणा की कि राजा गजसिंह का पाँच हजारी जात और पाँच हजारी सवारों का मनसब बना रहेगा। उसी समय खासा, खिलअत, जड़ाऊ खंजर, फूलकटार, सुनहरी जीन वाला अरबी घोड़ा नक्कारा और निशान अता कर शाहजहाँ न गजसिंह का सत्कार किया तथा आगरा म ही उसके ठहरने के लिए अमीरजादों के मुहल्ले म एक शानदार मकान ठीक करवा दिया।

नागौर का पठान खिज्रखाँ भी अपनी वफादारी का हलफ लेने दरबार

ए-आम मे आया था, किंतु उसके नजराने को स्वीकार करते हुए शाहजहाँ ने इतना ही कहा, खान साहब अभी तो आप कुछ दिन रुकेंगे। नागौर रियासत की कुछ शिकायतें दरबार मे आयी हैं, फिर कभी उन पर चर्चा करेंगे।' खिज्रखाँ का रग उड गया।

दो

क्यो मिया, खाँ साहिब का कुछ काम बना ?' नागौर रियासत के मुख्य बाजार की मस्जिद की आट मे रशीद न फन्न को रोककर पूछा।

'अभी क्या कह सकू हूँ ! मालूम नही घोडे पर जात हुए खान न किस पुतली नचाने वाले के साथ उस महताब को देख लिया होगा। इधर शहर का कोई कोना मैंने नही छोडा, पुतली बनाने नचाने वाले ता सभी घर तलाश लिए है। लगता है वे तमाशगीर कोई बाहर से आये होगे।'

'यह भी हो सकता है हम तो भई तलाश करना होगा। खान का गुस्सा बडा जालिम है पता नही कब फट पडे। ये पुतलीगर तो पूरे राजपूताने मे फैले हुए हैं।'

'अरे हा याद आया। परसो जब मैं खान के लिए जगली खरगोश ढूढने पूरब की ओर दूर निकल गया था, तो वहा पचासो खेमे मेरे देखने मे आये थे। पता किया तो मालूम पडा कि खानाबदोश राजपूतों का एक दल वहा टिका हुआ है। उनमे भी तो पुतलीगर हो सकते है'—रशीद ने स्मृति-पटल पर जोर देते हुए से कहा।

'खूब बताया रशीद मिया, फन्न ने एहसान मानते हुए कहा मैं कल उधर जाकर भी पता करूँगा। यह अपने खान साहिब भी बडे रसिया आदमी है। उडती चिडिया के पर गिनते है—औरत की तो गध लेकर नस्ल बता देने वाले हैं। अमाँ, क्या नक्शा दिया है। एक ही नजर मे पहिचान सकता हूँ कि खान की आख किस पर होगी।

अच्छा मिया लगे रहो। मेरी मदद की जरूरत हो तो बता देना। खुदा हाफिज, कहते हुए रशीद खान के महल के मुख्य द्वार की ओर चल

दिया।

फन्ने रशीद की बात का विश्लेषण करता हुआ कुछ क्षण वहीं अटक रहा। 'नागौर शहर के पूर्व की ओर खानाबदोशा का दल', उसके मन मस्तिष्क म चक्कर खान लगा। हिंदू राजपूता म पुतलीगर बहुत कम हैं, मुसलमाना म यह कम ज्यादा मकबूल है। फिर भी पता तो लगाना ही होगा। सभव है हिंदू राजपूता की ही कोई लडकी हो वह जो खान को भा गयी। लेकिन यदि ऐसा हुआ तो जान-जोखम का काम होगा, उसे फुस लाना या खान तक ला सकना। क्या औरतें होती हैं, खजर के बगर तो बात ही नही करती, और कही बहला फुसला भी लिया तो आखिरी मर हले पर तो जान ऐसे दे देती हैं, जस कोई फूल शाख से तोड ले। जिन्दगी पर खेल जाना या अपनी तरफ बढ़ते गलत हाथ को ही काट फेंकना, राज पूत लडकी क लिए मामूली बात होती है। मोचता हू अगर खान का माहताब राजपूती खानाबदोशा क किसी खेमे में चमकता हुआ, तो उस तक पहुचने की हिम्मत कहाँ से लाऊँगा ?' इस ख्याल से तो फन्ने का दिमाग घूम गया। एक तरफ जान के जोखम और दूसरी तरफ खान से मिलने वाले भारी इनाम इकराम की उम्मीद। फन्ने को हाथ म खुजली महसूस होन लगी। जो हो, खान क साथ तो वफादारी निभानी ही होगी—इस विचार का बीज लोभ की प्रवृत्ति मे दबा पडा था, अकुरित हो उठा।

फन्ने मन ही मन कुछ सोचकर मुस्कराया और फिर अपने घर को चल दिया।

प्रात काल नागौर के लोगो न देखा कि एक राजपूत सरदार घोडा भगाते हुए तेजी के साथ पूर्व दिशा की ओर चला गया। उसका आगमन महलो के परकोटे की ओर हुआ था, जिधर खिदमतों के खास विश्वासपात्र सेवका के रहने के लिए कक्ष बनाये गये हैं। कोई राजपूत सरदार खान के विश्वासपात्रो म कभी नही रहा, फिर भी जनता को इतनी फुरसत कहाँ कि वह सब होनी-अनहोनी को सोचे और फिर खान के गुस्से का भी शिकार बने। कोई होगा! बात खत्म। दोस्त था तो खान का मेहमान

होगा, दुश्मन था तो खान को चिंता होगी, हमे क्या ? नागौर की राजपूत जनता खिज्रखाँ का बोझ ढो रही थी, किसी को उसके शासन से सहानुभूति नही थी। जालिम शासक प्रजा की बहू-बेटियो पर बदनजर रखने वाला, आचरणहीन खान, कौन रियाया चाहेगी ऐसा नवाब। अत किसी को प्रात काल भागकर निकलते राजपूत सरदार पर ध्यान देना आवश्यक प्रतीत नही हुआ।

अरबी घोडा, उस पर कसी सुनहरी जीन, पीठ पर अकडकर बैठा स्वस्थ नौजवान जिसके सिर पर राजपूती पद्धति की तुर्रेदार दस्तार, गाढा केसरी रग। मुख पर घनी मूछ दाढी जिस बाध तपटकर शानदार दिग्दशन किया गया था। मूछो को मुर्की द देकर बिच्छू के डक की तरह तीखी और ऊपर उठी हुई बनाया गया था। शरीर पर पीत वर्णी अँगरखा जिसकी गदन के निकट वाली तनी खुली होने के कारण ऊपर का अश उलटकर नीचे की ओर लटक गया था और छाती के घन काले बाल सरदार की मदानगी का प्रमाण द रह थ। सफेद चूडीदार पायजामा और पाव म जयपुरी जूती, जिस पर हल्की सी सुनहरी तार की कढाई भी दखी जा सकती थी। जूती वाले दोना पैर घाडे की रकाबा म फँस उसके पेट म एड देने को मचल रहे थे। कमर म लम्बी तलवार बँधी थी, दाना हाथा मे घोडे की वल्गा थामे वह राजपूत सवार दखन वालो के लिए बिल्कुल अपरिचित था और प्रशासकीय भवना की ओर स उसका आगमन पूणत असम्भावित था। फिर भी किसी ने इस आकस्मिक सुयाग की ओर मन नही दिया, परिणामत घुडसवार तेजी से निकल गया।

राजपूत सरदार घोडा दौडाता हुआ नागार के पूव म खानाबदोश राजपूता के खैमा के निकट पहुँचा। उसने देखा कि खानाबदोशो का वह दल पूरे सनिक साज सामान स लैस एक प्रकार स वहा छावनी बनाये बठा है। सभी खमा को चारा ओर स घेरकर युवक राजपूतो द्वारा चौकसी का पूरा बदोबस्त वहा मौजूद था। हाथा म लम्बे भाले लिए पीठ पर ढाल और कमर म तलवार बाधे उनक प्रहरी खमो के चारा ओर सौ सौ गज की घेराबद दूरी पर तैनात थे। एक राजपूत सरदार को अपनी ओर आत देख एक प्रहरी न उस टाका—

कहाँ जाना है ? किससे मिलना है ?'

फन्ने खा ने, जो पूरे राजपूत ठाट बाट से घोडे पर विराजमान था, दोनो एडिया से रकावें पीछे को धकेलते हुए घाडे के पुटठे दबाकर घोड को रोका। तभी राजपूत प्रहरी ने निकट आकर घोडे की लगाम थाम ली और अपने प्रश्न के उत्तर के लिए फन्ने की तरफ ताकने लगा।

फन खा का वास्तविक नाम तो शायद फन्ने को भी ज्ञात न हो। बहुत छोटी आयु से ही वह खान की सेवा म था। उसन खान के लिए कई असभव कार्यो को सभव बना दिया था। तभी स खान उसे फन्ने खा कहने लगा था और अपना राजदान बनाकर रखता था। फन न भी कभी नवाब के राज को फाश नही किया था, दाना म खूब घुटती थी। विश्राम क क्षणो म नवाब फन्ने का बुलाकर अपनी इच्छाओ और चाहता की चर्चा उससे करता रहता था जा कि प्राय खूबसूरत औरतो के साथ रग रेलिया से सबधित होती थी। नवाब की ऐसी हवस कभी कम नही हुई थी। आज भी फन्ने को ऐस ही एक काय क लिए स्वाग भरना पड रहा था।

युवक प्रहरी से आख मिलात हुए फन न बडे सतुलित ढग से कहा 'मैं नागौर की वडी हवली वाला की तरफ से आया हूँ। उनके यहा लडकी की शादी है। बारात के मनोरजन के लिए पुतली का तमाशा और नृत्य का प्रबध करना है। पता चना था कि आपके दल म ऐसे तमाशगीर और नतकियाँ शामिल हैं जो समारोहा की रौनक बढात हैं। उनमे स किसी को भी मिलना मरा उद्देश्य है।

बडी हवली नागौर क प्रसिद्ध हिंदू व्यापारी का मकान है, जिसे दूर दूर क राजपूत पहचानते ह इसलिए वहा स आन वाले व्यक्ति का सब सत्कार करते हैं।

युवा प्रहरी ने घोडे के निकट होकर स्वय अपने कधे का सहारा देकर फन्ने खाँ को उतरने का सकेत किया। फन्न खाँ राजपूती लिबास म जच रहा था। कूदकर घोडे स नीचे खडा हो गया। प्रहरी न घोडे को एक ओर ले जाकर झाडी स बाँध दिया। आप मेरे साथ आइये' कहते हुए वह अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखे फन्न के आग आगे चला। फन्ने खाँ भी राजपूती आन की रक्षा क प्रयास म अपनी तलवार की मूठ पर बायाँ

थे। जो लोह खड पूरा लाल हो जाता उसे उसी पकड के सहारे निकाल कर अहरण पर रखत थे—तब सामने खडी पसीने में तर स्त्री का भारी हथौडा उस लाल गम लाह को पीटन लगता था। यह सब, जैसे स्वचालित हो। अपने काम मे व्यस्त लोहा कूटने वाले सब लोगो न एक नजर प्रहरी के साथ चलते फन खाँ को देखा भर और फिर अपने काय म मग्न हो गय। किसी न उधर इतना ध्यान नही दिया, जिसस आगतुक के लिए उनकी आशका या उत्सुकता प्रकट हो।

वहा से गुजरकर पहरेदार फन को खेमा की छावनी के केद्र की ओर ले चला। लोहे क हथियार बनान वाले कारीगरा के बाद पुतलियाँ बनाने वाले कारीगरो के खमे थ। व पुतलियाँ बनात भी थे और उन्हें नचाने का अभ्यास भी करत थ। बनाने वाल काठ और मिटटी स पुतलिका बनात थे। मिटटी को भिगो गूथकर वे बिना साँच के अलग अलग प्रकार के चहरे बनाते थ नीच क शरीर की वहुधा आवश्यकता नही पडती थी, केवल कपडा लपटकर ही काम चल जाता था। भुजाओ की जगह पेड की वटी शाख, लाह की नार अथवा लकडी का कोई छोटा टुकडा काम दे जाता था। उस पर ढीला कपडा चढ जाने स भीतर की सामग्री अनचीह्ना रह जाती थी। काठ से चेहरा बनाने के लिए छीलन और घिसने वाले औजार कारीगरो के हाथ थ। पुतलिका नचाने वाला का काय अधिक कठिन था। वडे बुजुग छोटा को पुतली नचाना सिखा रहे थ। प्रत्यक पुतलिका सूत्रों द्वारा निश्चित दिशा की आर चलायी जाती थी—बहुधा एक पुतलिका को चलान के लिए एकाधिक सूत्र नचान वाले के हाथ म रहत थे। उसकी कारीगरी इसी म थी कि भूल किये बगर ठीक समय सही सूत्र का परिचालन करे। दोना हाथा की दसा अँगुलिया की पोटा पर पुतलिया क सूत्र लपेटे बालक बडे-बूढा की देख रेख मे अँगुली हिलाने का अभ्यास कर रहे थे। बहुधा वे चारपाई या कोई चादर बीच मे डाल लेते थे। स्वय उस आवरण के पीछे खडे रहकर वे पुतलिका नचाना सीखते थे।

पूरे पडाव के बिल्कुल बीचाबीच थोडी जगह खाली छोड रखी थी। खमा म रहन वाली बारह वष से ऊपर की आयु वाली सब लडकियाँ आवश्यकता होन पर उस खाली जगह म अपना मनोरजन कर सकती थी।

पुन प्रहरी के पीछे चल दिया।

'राम राम नायकजी' प्रहरी ने नायक को सबोधन किया और बोला 'आप बडी हवेली वालो के यहाँ से आये हैं। उनके यहा कोई शादी है इसी लिए ये कुछ नाच तमाशा चाहते हैं।

फन्ने खा ने राम राम बोलने के पुक से बचने के लिए हाथ जोड दिये। नायक लडकियो के नाच को बडे ध्यान से देख रहा था। अन्ना के बिजली की सी तेजी से चलते और टखनो पर उछलती-बजती पायल को वह अपने नृत्य ज्ञान की कसौटी पर परख रहा था। उसका विश्वास था कि अन्ना नृत्य-कला मे प्रवीण हो जायेगी तो नृत्य दिखाकर वह कुटुम्ब चलाने के लिए पर्याप्त धन अर्जित कर सकेगी। इन्ही विचारो म खोये और नृत्य मग्न लडकियो को देखते हुए उसने आगतुक को नजरो म लाये बगैर अपनी ही खटिया पर एक ओर बैठ जाने का सकेत कर दिया। हुक्के से एक लम्बा कश खीचते हुए उसने नली आगतुक की ओर बढा दी। फन्ने जानता था कि राजपूत अपने हुक्के से मुसलमान को कश नही लेने देते अत क्षण भर के लिए झिझका किंतु तभी विवेक की चपत खाकर होश म आ गया—कही रहस्य खुल जाये या सदेह हो जाये तो फन्ने की हड्डी भी ढूढे से वहाँ न मिलेगी। जल्दी से नायक के हाथ से नली थामकर दो चार कश लिए और नली पुन नायक को लौटा दी। दोनो की दृष्टि नृत्य मग्ना ललनाओ पर टिकी थी।

फन्ने अनारन के शरीर को नजरो स तौलने लगा। नवाब ने जो विशेषताएँ बतायी थी एक एक उसमे ठीक उतरती थी जैसे खुदा ने अनारन को बनाने के बाद वह साँचा ही नष्ट कर दिया हो। सचमुच सुदरता साकार होकर नाच रही थी। गदराया गोरा बदन उभरती जवानी चचल नयन पाव म बिजली चोली मे स्पन्दन, जो ओढनी मे भी न छिपे चाद मे दाग हो तो सभव किंतु अन्ना का चाँद-सा चेहरा कुद-कलियो म से फूटती उषा किरणें गालो म खिलते गुलाब और उस पर ओठ स थोडा हटकर गाल पर काला तिल सचमुच अनारन अनारकली का पद पाने योग्य

प्रतिमा थी। सम्राट अकबर की पारखी दृष्टि अब कहा रह गयी थी? अन्यथा अनारन के पग अकबर के दरबार ए खास मे थिरकते होते यहा खानाबदोशो की रतीली धरती पर वह क्यो तडपती भला।' नायक सोच रहा था, कितनी अच्छी नर्तकी बह बन सकती है सजीव पुतलिका! फिर भला उसे पुतलिया का तमाशा दिखाने को जगह-जगह क्या भटकना पडता। बहादुर भी कितनी है किसी के बहादुरी के कारनामे सुनती है तो बस खो ही जाती है उसमे। राजपूती आन का निभाने वाला प्रत्यक व्यक्ति उसके लिए नायकत्व का अधिकारी है।' नायक मुस्कराया। अनजाने म ही उसकी हल्की सी हँसी फूट पडी। फन सावधान हो गया बोला क्या बात है नायक? बहुत खुश हो रहे थे?

नायक ने फन की बात सुनी या नही भी सुनी। अपने म ही मग्न हो गया। अब लडकियो ने घूमर-गीत शुरू कर दिया था—

म्हारी घूमर छै नखराली, ए माय!
घूमर रमवा म्हे जास्या।

अनारन ने फिरकी ली और चूनर को दो छोरो से पकडकर हवा मे लहराती तितली की तरह सखियो के बीच चपला की नाई घूम गयी। तभी दूसरी सखी ने स्वर दिया—

म्हांन रमतां नै काजल टीकी लाधा ए माय
घूमर रमवा म्हे जास्या।

तीसरी लडकी फिरकी लेती हुई आगे आयी। लहँगे के एक छोर को थामकर दूसरी भुजा को फहराते हुए उसने टेक दी—

म्हानै रमता नै लाडूडो लाध्यो ए माय,
घूमर रमवा म्हे जास्या।

सभी लडकिया एक साथ वृत्त बनाकर फिरकी की तरह घूमने लगी और मटकते हुए 'घूमर रमवा म्हे जास्यां' की पंक्ति को सस्वर गाने लगी।

कुछ देर के लिए नायक और फन इस दृश्य मे खो से गये। ऐसा प्रतीत होता था कि सजी सँवरी सजीव पुतलिया किसी यान्त्रिक प्रावधान से चक्रित हो रही हो। तभी अनारन पुन आगे बढी। लहँगे को सँभालकर वह इतनी तेजी से फिरकी लेते हुए एक एक सखी को आवृत्त करके आगे
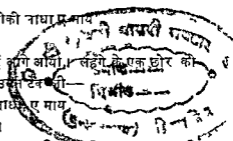
अच्छा नाचती गाती हैं। वह बीच वाली लडकी तो जैसे बिजली हो।' फन्ने ने जान बूझकर नायक की हृदय वीणा का तार झङ्कृत करने का प्रयास किया।

नायक प्रसन्न हो गया। वह अन्ना के लिए एक बहुत सुघड नर्तकी बनने की कल्पना करने लगा था, उसकी जीवित पुतलिका। जीवन भर उसने पुतलिया नचायी थी, जाति से मीणा था किंतु घर की मर्यादा का ध्यान रखते हुए सदैव यही सोचा करता था कि यदि अनारन उत्सवा त्यौहारो मे झूमर की नायिका बन सके तो अच्छी मुशक्कत मिल जाया करे। बोला मालिक यह मेरी बेटी है। बचपन मे ही इसकी मा मर गयी थी। मैंने इसे बेटो की तरह पाला है। तलवार हाथ मे ले-ले तो तीन चार को तो सामने टिकने न दे और नाचते हुए जब फिरकी लेती है तो बडे बडे कलाकार झूम उठते हैं।'

बेटी किसकी है ?' फन्ने ने नायक की हवा बाधी।

नही मालिक हम गरीबो की क्या बिसात ? आप लोगो की पारखी नजर से कुछ मिल जाता है, बस गुजर चल जाता है। अनारन पुतली की डोरी थाम ले तो उसकी अँगुलिया का पोट पोट पुतली के साथ नाचता है। बडे बडे राजा नवाब और हवेलियो के जमीदार मालिक दाँता तले अँगुली दबाकर रह जाते है—छाटा मुँह बडी बात। बुरा न मानना मालिक अनारन नाचने नचाने की कला मे सचमुच प्रवीण है छाटा मुह बडी बात।' कहते कहते नायक झेंप गया। फिर बोला, 'मुआफ करना मालिक आप तो बडी हवेली की तरफ से आये हैं ना। क्या आज्ञा है ? आपका हुकुम सिर आखो पर, छोटा मुँह बडी बात।'

चतुर खिलाडी की तरह फन्ने सँभलकर बोला देखिये नायक साहिब कल बडी हवेली मे बारात आ रही है। बडे बडे राजा महाराजा, अमीर मशीर पधार रहे है। बारातियो का दिल बहलाने के लिए नाच गाने की एक महफिल वहा हो जाये। मेरे मालिक खुश हो गये तो मालामाल कर देंगे। अनारन के नृत्य का प्रबध कल वहाँ करवा दो।

'क्या बोलते हा मालिक। छाटा मुह बडी बात। अनारन ने सुन लिया होता तो अभी जीना दूभर कर देती। वह बडी ऊँची हवा मे है। एक रहस्य

की बात बताऊँ ? कुछ वर्ष पूर्व जब वह छोटी लड़की ही थी हमारा यह दल जालौर के निकट खेमे गाड़े पड़ा था। उन दिनों जालौर पर गुजरात के शासकों का दावा था। मुगलों की ओर से अनेक प्रयास हुए थे, किंतु जालौर को वे जीत नहीं पाये थे। स्वयं अलाउद्दीन भी बारह वर्ष तक जालौर को गिरा नहीं पाया था। उन्हीं दिनों मुगलों की ओर से जोधपुर के राजकुमार गजसिंह ने जालौर पर चढ़ाई की थी। खूब लोहे से लोहा बजा गजसिंह के पराक्रम और वीरता की बात आज भी सोचता हूं तो भुजाओं की मछलियां फड़कने लगती हैं। हम अपने टीले पर से युद्ध भूमि में राजकुमार की वीरता देख-देखकर दाँतों तले अंगुली दबा रहे थे—छोटा मुंह बड़ी बात ! आह क्या शौर्य था। राजकुमार किले पर ऐसे चढ़ गया था जैसे यात्रा पर आया हो। गुजरात के शासकों को पहली बार किसी ने लोहे के चने चबवा दिये थे छोटा मुंह बड़ी बात ! राजकुमार गजसिंह विजयी हुए थे। जालौर निवासियों ने राजकुमार का स्वागत फूलमालाओं और पशमीने की चादरों से किया था।

'मेरी बेटी अन्ना तब छोटी-सी गुड़िया ही थी—छोटा मुंह बड़ी बात ! राजकुमार की भी बस मसें भीगी थीं। जाने कब अन्ना भागकर नगर में चली गयी। राजकुमार की वीरता और पराक्रम पर इतना मोहित हुई कि अपनी औकात भूल बैठी। मैं तो वहाँ नहीं था, छोटा मुंह बड़ी बात ! लोगों ने बताया फूलमाला लेकर सीधे राजकुमार की ओर बढ़ी। सैकड़ों सैनिकों नागरिकों भीड़ भव्वड़ और राजकीय ठाट बाट से तिल भर नहीं ठिठकी। राजकुमार के गले में फूल माला पहना दी और बोली कुमार साहब बधाई हो। आप बड़े वीर हैं, मैं बलिहार हूँ आपके पराक्रम पर। फिर छोटा मुँह बड़ी बात ! कुमार ने अन्ना का हाथ पकड़ लिया। बोले, तुम कौन हो ?' मैं बाबा की बेटी कहते हुए अन्ना शरमा गयी।

'बड़ी सुन्दर हो तुम, कहाँ रहती हो ? कुमार ने पूछा।

उधर खेमा में, मुझे छोटी चिड़ियों के पीछे भागना और वीरता से तलवार चलाते शूरवीरों को देखना अच्छा लगता है', अन्ना ने राजकुमार गजसिंह से कहा, 'आपको लड़ते देखकर मुझे न जाने कैसा लगा।'

'वीरता से लड़ने वालों को देखने के लिए तो तुम्हें हमारे साथ रहना

होगा रहोगी ?' राजकुमार ने प्रश्न किया। छोटा मुह बडी बात, अन्ना कहाँ चूकने वाली थी बोली रहूँगी अगर आप रखेंगे तो।'

ठीक है, हम तुम्हें बुला भेजेंगे' राजकुमार ने कहा। अन्ना प्रसन्नता म उबलती उछलती-कूदती मेरे पास भागी चली आयी। मैं राजकुमार के साथ रहूँगी मैं राजकुमार के साथ रहूँगी' की रट लगाने लगी। छोटा मुह बडी बात, मैं तो समझ ही नही पाया किंतु अन्ना तभी से राजकुमार के निमत्रण की प्रतीक्षा मे है। हमेशा उसी के गुण गाती है—

बारे बरस अलाऊदी, खप छूटो पतशाह।
चढिया घोडा सोनगढ तै लीनो गजशाह॥

अक्सर इसी दोहे को गुनगुनाया करती है। राजकुमार गर्जसिंह अब महाराज' हो चुके है। मुगल-दरबार मे उनकी प्रतिष्ठा है, बचपनी बात वे भूल चुके होग। छोटा मुँह बडी बात, यह मूख अन्ना, रहेगी तो गर्जसिंह के साथ, नाचेगी तो गर्जसिंह के लिए उनके निमत्रण पर सब कुछ न्योछावर किए बठी है। मेरा तो मुह छोटा बात बडी है। लाख चाहता हूँ कि यह [illegible] विवाहो म नाच गा लिया करे तो चार पैसे बनें, किंतु कहाँ [illegible] है यह नखसमी।' नायक ने क्षोभ व्यक्त किया।

कुछ देर रुककर नायक फिर बोला 'पिछले दिना जब [illegible] गर्जसिंह ने दक्षिण के मलिक अबर को धूल चटाई और [illegible] फाट दी, जब राजपूती गौरव ने उन्हें दल-थम्भन' [illegible] सम्मानित किया, तब से तो अन्ना गर्जसिंह की भक्त [illegible] है। [illegible] बार समझा कर अब उधर से ध्यान बँटाता हूँ—[illegible] गान म। मरे साथ तो यह पुतली नचाने को जाना भी [illegible], अब कभी-कभी साथ द देती है। बूढा हो रहा हूँ [illegible] इसीलिए मुझ पर दया करके वह मेरे साथ पुतली [illegible] लगी है। छोटा मुँह बडी बात, बडी ऊँची हवा म रहती है [illegible]। इस कौन समझाये कि [illegible] महल मे इस जैसी दासियों [illegible] होगा। कहाँ [illegible] कहाँ गगू तेली। है ना [illegible]।' नायक ने हुक्का [illegible] ओर बढाते हुए सवाल [illegible]।

'नायक भाई', [illegible] अनारस

इस हवा म रहना कल्पना मे उडने के सिवा क्या कहा जाय ! उसे तो नाच के लिए राजी कर लो बडी हवेली से इनाम तो बहुत मिलेगा। वहाँ नाच पर हवेली के मालिक रीझ गये तो वह बडे-बडे मोतियो का उनका हार अनारन के गले म होगा। लाखो का है, मालिक तो यो भी इनाम देन म बेजोड हैं।'

नायक ने ओठा पर जीभ फेर ली। है तो छोटा मुह बडी बात मालिक किंतु उसे मनाय कौन ? आप वहाँ पुतली का तमाशा करवा लो। बहुत बढिया करूँगा। बारातिया के दिल खुशिया मे भर जायेंगे। अन्ना भी साथ तो आ ही जायगी। वहा अगर मालिक के कहने पर नाचना स्वीकार कर ले तो इनाम तो बरसेंगे' नायक न सावधानी स कहा।

फन्ने को अपना तीर निशाने पर लगता दिखायी पडा। वह तो घबरा ही गया था नायक की बातें सुनकर। कम्बख्त गजसिह नवाब क रकीब पर फिदा हुई पडी है। यहा पडाव पर मे तो उसका अपहरण भी सभव नही। दो चार को तो वह अकेले आगे लगा लेती है। नवाब है कि बस ऐसा ही बिजली पर न्दिल-ओ जान लुटाये बठा है। चलो, अगर अनारन पुतली के तमाशे के लिए ही साथ चली आय तो वहाँ कुछ डौल बना लेंगे। ऐसा सोचते हुए फन्ने बोला 'नायक साहब आप निश्चित रहें अनारन का पुतली नचाने के लिए ही साथ लाइये। मालिक के कहने पर तो कोई भी लडकी नाच उठती है वह जानता है नचाना', कहते हुए फन्ने ने ओठ काट लिया। खिज्रखाँ को कौन इनकार कर सका है ?' उसने दिल मे सोचा।

प्रकट म बोला नायक, कल साय सूर्यास्त के समय तुम अपनी ताम झाम लेकर नागौर की सीमा पर पहुँच जाना हम वही तुम्हारी अगवानी करके तुम्हें बडी हवली ले चलेंगे। पुतली के तमाशे के लिए यह अग्रिम रकम रख लो'—ऐसा कहते हुए फन्ने ने अँगरखे मे छिपाई अपनी गुथली निकाली और उसम से एक गिन्नी नायक की ओर उछाल दी। नायक की आखें फटी रह गयी— यह अग्रिम राशि है तो पारिश्रमिक और इनाम इक राम क्या होगा ? कुछ क्षणा के लिए वह इसी भँवर मे खो गया।

फन्ने चलने के लिए उठा, उसे अगले दिन की अगवानी का भी सारा प्रबध करना है जल्दी पहुँचना चाहिए। नायक गिन्नी मे ही डूबा रह गया

फत्ते उठकर खेमो के बाहर आ गया। घोड़ा झाडी से खोलकर प्रसन्नता से वह नगर की ओर चला।
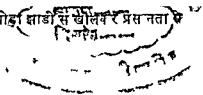
'खान साहिब आपका इकबाल बुलद हो', कहते हुए फत्ते खिज्रखा की ख्वाबगाह म पेश हो गया। जहा फत्ते सुबह स लेकर अब तक एक बडा मोर्चा फतह कर चुका था वहा अभी खिज्र का हमाम गम हो रहा था। एक से एक बढकर सुदर दासिया इतर मिले सुगधित तेलो से उसके शरीर को चमका रही थी। नवाब जाघिया पहन एस बीच म पसरा था जैसे खुरिया म नआल लगवान के लिए टट्टू पसर जाता है। अर्द्ध नग्न खूबसूरती को अपन चारो ओर देखकर और उनस मालिश करवाकर वह दृश्य और स्पश सुख लाभ कर रहा था। बीच बीच किसी दासी स छेडछाड और खीचतान भी चलती ही थी—तब एक ठहाका गूजकर वातावरण को सुमधुर बना देता था। ठहाके मे नवाब तथा दासियो की मिली जुली आवाज ऐसे लगती थी जैसे भूल से एकाधिक यत्रो के तार इकट्ठे छू दिए हो।

फत्ते को आया देखकर तथा उसके चेहरे पर फतह की खुशी देखकर खिज्रखा उत्तेजित हो उठा। सबस सुदर दासी सकीना को झटके से अपनी ओर खीचकर उसने सीने स लगा लिया, और उसके मधुर ओठो को चूमते हुए फत्ते की ओर मुखातिब हुआ, फत्ते खा, खुश नजर आते हो कुछ मार्का मार लिया लगता है। कहो चिडिया फँसी या नही ?'

इससे पूव कि फत्ते कोई उत्तर देता, सकीना इस वाक्य को सुनकर बिदक उठी। हरम मे वह सबसे अधिक खूबसूरत थी, जवानी और नखरे मे भी उसकी तुलना न थी। खिज्र ने कई बार उससे निकाह का वादा किया था। व्यवहार म भी आज तक वह उसके हरम की स्वामिनी ही थी, उसके रहते खिज्र को बीवी का अभाव कभी नही खला। आज खिज्र द्वारा किसी अन्य चिडिया का पीछा करना सकीना के लिए असह्य हो उठा। अपमान क्रोध खीझ और उपेक्षा की मिली-जुली सवेदनाओ से त्रस्त होकर वह बिफर उठी। बोली, मेरे रहते यहा कोई चिडिया पर नही मार

सकती ।' फिर कुछ स्वस्थ चित्त होकर अपनी स्थिति को पहचानते हुए नम्र पडी नहीं मेरे मालिक मुभसे कोई गुस्ताखी हुई जो किसी अ य चिडिया को फासने चले ?' इतना कहते कहते उसकी आखें भीग आयी। ईर्ष्यालु दासिया मुस्करा दी। दिल ही दिल वे सकीना से चिढती जो थी।

हृदयहीन खिज्रखा औरत को भोग या खिलवाड की वस्तु समझता था। सकीना भी उसके लिए इससे अधिक कुछ न थी। निकाह की बात तो उस यौन-सतुष्टि के लिए, गर्भाने के लिए करता था वह। क्रोध म उसे परे धकेलते हुए फन्न से बोला, कोई अच्छी खबर लाये हो ?'

आपका इकबाल बुलद है, मालिक !' फन्ने बोला, 'बस अब वह अन माल नायाब मोती आपके गले का हार बना ही समझो। ऐसा प्रब ध किया है कि आप इस नाचीज की सूझ की दाद दिये बिना न रहेंगे। हाँ, आपको कुछ ' कहते-कहते फन्ने रुक गया। उसकी दृष्टि दासियों और विशेषकर सकीना की ओर उठकर लौट आयी। खिज्रखा समझ गया। उसी प्रकार जाँघिया पहने वह फन्ने का हाथ थामकर भीतर के कक्ष मे ले गया और किवाड बद कर लिए।

'अब कहो। खान ने उतावली से पूछा।

खान साहिब, आपकी नीद हराम करने वाली दोशीजा को ढूढ निकाला है। सचमुच आपकी नजर ए शौक की दाद देना पडती है। फन्न ने मिस्कीनी से कहा।

'पहेलिया मत बुझाओ, फन्ने ! कहाँ है वह ? कभी मेरे आगोश म आयेगी वह ?' खिज्र न प्रमादी कामुको की सी हरकत करते हुए अपने राजदान फन्ने से कहा।

हुजूर, हम तो आपके खिदमतगार हैं। दिन रात उसे खोजने म लगा दिया। आप तो उसे सीने से लगाने को तडपते रहे और हम उसकी खोज मे पिछले कई दिना स नीद भर सोये नहीं। खर चीज बडी खौफनाक है, तलवार पकड ले तो पाँच सात को आगे लगा सकती है। राजपूती खून, उस पर बला की खूबसूरती ! हाँ एक नुक्स है आपके रकीब गर्जसिंह की चाहती है। कहते-कहते फन्न अट्टहास कर हस दिया, कहाँ राजा भोज, कहाँ गगू तेली', समझती है कि उस काफिर के महला मे रह सकेगी।'

'उसे कैसे लाओगे यहाँ ? एक बार नागौर मे आ जाये तो फिर अपनी हुकूमत है। कोई क्या कर लेगा ?'

पूरी बात तो सुनें जनाब यह खाकसार कच्ची गोलियाँ नही खेला है। अपनी जान पर जोखिम उठाकर मालिक की दिलजोई का पूरा सामान करके आया हूँ। कही राज खुल जाता, तो इस खादिम का टुकडा भी आपके हाथ न लगता', फन्ने ने तब खानाबदोश राजपूती पडाव मे जान की सारी घटना कह सुनाई।

खिज्रखा सारा बयान सुनकर उछल पडा। वह नागौर रियासत का नवाब है यह भी भूल गया उस। फन्न को गल से लगाकर मुह चूम लिया उसका। उसी वक्त फन्ने खाँ के लिए एक लाख टका पुरस्कार की घोषणा नवाब ने कर डाली। खुशियो मे झूमता फन्न भी अपना सब कष्ट भूल गया।

फन्ने खाँ नवाब के खास महला स प्रसन्न मुद्रा मे निकला तो बाहर दालान मे उसे सकीना दिखायी दी। फन्ने की नजरें उससे मिली तो गच्चा खा गयी। सारी खुशी काफूर हो गयी। सकीना की आखा मे फन्ने के लिए आग थी, जिसमे यदि वह जल गया ता राख भी शेष न बचेगी, यह वह जानता था। किंतु एक लाख टके का लोभ कोइ साधारण बात तो नहीं। वह सकीना की आग बुझा दगा ! धन से कुछ भी किया जा सकता है !!

उसने सकीना की ओर से दृष्टि हटा ली, आख मिला सकने की ताब उसमे नही थी। जल्दी से उसके पास से गुजरता हुआ वह बाहर निकल जाना चाहता था किंतु सकीना ने उसका बाजू थाम लिया। बोली, 'नमक हराम तुमने सकीना की महरबानिया देखी है बदले की आग नही देखी। तुझे जहन्नुम म न पहुँचाया तो सकीना तुर्की खून नही, किसी काफिर की औलाद होगी।' हड्डी हड्डी काप गयी फन्न खा की। घबराहट म पेशानी पर पसीने की कुछ बूदें चमक गयी। बाँह छुडाकर वह किसी तरह गिरता पडता बाहर की ओर आया।

महल से बाहर बगीचे की ताजा हवा के झाके स जैस उस चेतना हुई।

सकीना की धमकी का भय वह जानता था और उसके लंबे हाथों से भी परिचित था वह। लेकिन वह क्या करे? साप छछूंदर वाली स्थिति—न छोड़े बने, न लीले। नवाब की नाराजगी! सिर कलम करवा लेगा। सकीना की नाराजगी! महल में घुसना बबाल ए-जान होगा। वक्त पाकर नवाब को ही अर्ज करूंगा। पर उस औरत के गुलाम का भी क्या भरोसा! नकली खुशी पाकर वह होश गँवा बैठता है, कहीं सकीना ने उसी से मेरी मौत के परवाने पर दस्तखत करवा लिए तो क्या होगा? सहम उठा फन्न खां। खिली बाछें मुरझा गयी नानी मर गयी उसकी। कुछ ही पलों में उसकी प्रसन्न मुद्रा महीनों के रोगी जैसी हो गयी और वह धीरे धीरे अपने मित्र रशीद के पास बड़े बाजार की पुरानी मस्जिद में पहुँचा।

कहो मियाँ यह मुहरमी चेहरा लिए कैसे आये? खैरियत तो है, य" शक्ल पर लानत बरस रही है। नहीं मिली वह नवाब की गुलबदन, तो तुम क्या नाहक परेशान हुए जा रहे हो?" रशीद ने फन्ने को देखते ही अनुमान कर लिया कि उसकी उदासी का कारण पुतलियों वाली खूबसूरत बला का न मिलना ही हो सकता है।

फन्न मरियल-सी आवाज में बोला, ऐसा नहीं है दोस्त। उसे पा जाने की ही परेशानी है।

हैं-ईं माशा अल्लाह, मिल गयी? वह मिल गयी है? तब तो तुम्हारी पांचों घी में होंगी रो क्या रहे हो? उन्हीं खानाबदोशों की लड़की है क्या?

फन्न ने सिर हिला दिया।

तो क्या उसे हासिल करना मुश्किल हो रहा है? अरे हम खिदमत बताओ, गुलबदन को तो हम यों उड़ा लायेंगे —कहते हुए रशीद ने चुटकी बजा दी।

नहीं मियाँ, ऐसा कुछ नहीं। उसे हासिल करने में भी कोई दखल नहीं। नवाब भी उसकी इंतिजार में आँखें बिछाये बैठा है। उसने तो मेरे लिए इनाम का ऐलान भी कर दिया है।'

अमाँ फिर ईद मनाओ, यह मुहरम क्या बरस रहा है चेहरे पर— रशीद ने बात की तह तक पहुँचने के लिए तरह दी।

'नवाब के महलों म हसद की आग भडक उठी है। सकीना नवाब के खूब मुह लगी है। नवाब भी उसके बगैर अपने को अधूरा ही महसूस करता ह। नवाब की चाहत को खोज निकालने पर वह खूख्वार हुई जा रही है। मुझे जहन्नुम रसीद करने की धमकी दी है उसने। फ ा ने खुलासा किया।

लाहौल उन्वला कुवअत लानत भेजो उस पर। तुम नवाब की खिदमत म हो, उसकी मुसरत का ध्यान रखना तुम्हारा फर्ज है। इतनी-सी बात पर क्या मरे जा रहे हो?' रशीद ने दिलजोई की।

वह बडी खतरनाक औरत है।'

छोडो मिया औरत की धमकी तो दूध का उबाल होता है, जरा पानी का छीटा दिया और वह ठडी। उसकी तारीफ करते रहो, नयी चिडिया से उसे ज्यादा खूबसूरत बताओ, बस जायल हो जायगी धमकी। एकाध बार नवाब ही उससे कह द कि नयी तो दिल बहलाने के लिए है, निकाह तो सकीना से ही होगा। सकीना हवा मे तरती नजर पडेगी। रशीद ने हौसला बँधाया और कहा अब बताओ, जाल कहा बिछाना है?

नायक अपनी लडकी अनारन को लेकर कल प्रात सूरज के सिर पर आने स पहले नागौर की दक्षिणी हद्दद पर पहुचेगा। पुतली का तमाशा दिखाने का ताम झाम भी साथ होगा। मुमकिन है पाच चार आदमी और भी साथ हो। अब तुम बताओ, बिरादर हम कैसे कदम उठाना चाहिए, जिसस बिना शक हम नायक और अनारन को बाकी लोगो से, अगर कुछ साथ हो, अलग कर सकें? तमाशा तो सूरज छिप, अँधेरा छाने पर होता है। इसलिए उन्हे आराम करने और शाम को हवेली म चलने का बहाना बनाया जा सकता ह।'

रशीद न ताईद की। 'यह तुम मुझ पर छोड दो। आराम के बहाने मैं नायक और उसकी बेटी को नवाब के बगीचे के पीछे बने महमानखाने म ले जाऊँगा। और लोग हुए तो तुम उन्हे शहर की सराय म ठहराने को ले जाना। हम राजपूती पोशाक म होंगे, कोई पहचानेगा भी नही। बाद म व सिर पटककर चलते बनेंगे। मेहमानखाने को नवाब खुद सँभाल लेगा। जिंदगी या मौत, नायक जो चाहेगा चुन लेगा।'

'ठीक है, फिर कल फिल्ल दोपहर तैयार रहना। शहर से बाहर चल कर ही पोशाक बदलेंगे। साथ रख लेना। फन्ने खाँ कुछ हल्का होकर मस्जिद से बाहर आया और आराम की गज से अपनी कोठरी की ओर चला।

ईर्ष्या और वह भी औरत की खुदा भी खौफ खाता है उससे। फिर यहाँ तो इसका दखल स्त्री के छिनते प्रेम और अपनी ही आँखों के सामने प्रेमी के आगोश म किसी और को इठलाते देखने की मजबूरियों के साथ हो रहा है। नागिन किसी को भी नाग के निकट देखकर यों ही फुफकार उठती है, तिस पर घायल हो, तो कौन बच सकता है उसके विष से। सकीना भी घायल नागिन-सी ईर्ष्या का विष घोलती अपने अंग ताड रही थी। किसी भी मोल पर उसे यह सह्य न था कि कल तक जिससे वह निकाह के वादे करती आयी है जिसने जी भरकर उसकी जवानी का रस लिया है, जैसा चाहा उसके शरीर को भोगा है, वही आज अकस्मात उसे चूसे हुए गन्ने की नाइ दूर फेंककर किसी नयी नवेली की नजाकत उठाना चाह रहा था। बेवफाई ही नहीं, घोर अन्याय है यह और सकीना जान पर खेलकर भी अन्याय के विरुद्ध लडेगी। वह देखेगी कि कौन उसके अधिकारों को चुनौती देता है।

फन्ने खाँ का इसम कितना दोष है ? उसने सोचा। वह तो कुत्ता है मालिक के इशारे पर भूकता और इशारे पर दुम हिलाता है। गुलाम को तो हुकुम बजाना होता है, बात बदलने या दखल-अंदाजी की उसकी क्या हस्ती। मैंने यों ही उस पर क्रोध किया, अपना ही छोटापन दिखाया।' कुछ समय के लिए फन्ने के प्रति सकीना को सहानुभूति हुई। 'लेकिन वह मेरी मात का सामाँ तो ला रहा है मेरी जिंदगी म जहर घोलने की हिमाकत तो वह कर रहा है। सजा तो उसे भी मिलेगी। और वह नवाब! अपनी ताकत के घमंड म औरत की ताकत को भूल बैठा है इसे भी नाको चने न चबाये तो सकीना नाम नहीं मेरा।

आने वाली कमसिन तो बली का बकरा होगी। जाने कितनी

लडकी किन हालात म, कितनी कठोरता से अपहरण की गयी होगी ! सिफ नवाब का दिल बहलाने और बिस्तर गर्माने के लिए उसके कितने अरमानो का खून किया जायेगा और कौन जाने नवाब का दिल भर जान पर वह किस घूरे पर फेंक दी जायेगी !! जैसे आज उसकी जवानी नजर चढी है, तो इस अय्याश नवाब ने मुझे ठुकरान म पल भर नहीं लगाया, वैसे ही कल उसकी क्या हालत होगी, खुदा जाने !

तो इसे किस्मत मानू, अह ! किस्मत आदमी की सबसे बडी कमजोरी है जो उसे मैदान ए-कोशिश से बे दखल कर देती है। किस्मत आदमी को अपनी नाकामयाबी को चुपचाप सह जान की ताकत भले बख्शती हो, मैदान ए-अमल का फातहा नही बनाती। इसी की वजह आदमी नाकाम-याबी के सबब जानकर अपने लिए बदल हुए नये रास्ते खोज लेने की बजाय ना उम्मीदी, काहिली और सुस्ती के आगोश मे दम तोड देता है। मेरा तुक खून ! नही, वह मुजमिद नही हो सकता।'

ऐसी ही उधेड-बुन म पडी सकीना, अभी किसी निष्कर्ष पर नही पहुँची थी, कि महला के सामन एक सपेरा बीन बजाता हुआ कुछ नजर पान की आशा से रुका। ईश्वर-कृपा से उस समय वहा और कोई न थी। जनाना डयोढी म चिता मग्न सकीना को अकेले दखकर बोला, बेगम, उदास लगती हो। बालिश्त भर के फन वाले नाग के दशन कराऊँ ? बिगडे काम बन जात हैं, खोया वकार दोबारा हासिल होता है। हुकुम कीजिये, बेगम साहिबा ! नाग बाबा के दशन तो यकीनन फतह की निशानी होते है—एसा कहते कहते उसने झोली म से नाग वाला पिटारा निकालना शुरू किया। सकीना जसे सोये से जगी हो।

नही बाबा, मुझे नाग के दशन नही नाग चाहिए। ऐसा फनीगर, जिसकी एक फुवार से दिल की धडकन रुक जाये, जहर छू भर जाय, तो आदमी मुल्क ए-अदम का रास्ता नापे। क्या, है ऐसा साप तुम्हारे पास ?' सकीना ने कुछ सोचकर सपरे से सवाल किया।

आप हुकुम कीजिये बेगम साहिबा ! ऐसा भी मेरे पास है, जिसके छू जाने से आदमी नीला पड जाता है [illegible] सवाल ही नही। उसका काटा पानी नही मागता। लेकिन आपको ऐसी क्या जरूरत आन पडी,

मुहतरिमा !" सपेरे ने नजदीक होकर धीरे से पूछा।

'तुम्हें इससे मतलब ?' सकीना ताव खा गयी। 'हम तुमसे साँप खरीदना चाहते हैं, पाल, गले में डालें या मार दें, तुम्हें क्या ! तुम्हें साँप देना हो तो बोलो !'

सपेरा शायद सकीना का विश्वास पात्र बनना चाहता था, किंतु डाँट खाकर अपनी सीमाओं को पहचानने लगा। चुपचाप मिट्टी के बरतन में बंद एक विषैला तक्षक उसने सकीना को पकड़ा दिया और उसकी विशेषता बताते हुए सपेरे ने काटे पर पानी न माँगने की बात को पुनः दोहराया। सकीना ने ताव में से निकालकर एक गिन्नी सपेरे को पुरस्कार के तौर दे दी और वह प्रसन्नमुद्रा में वहाँ से चल दिया।

सकीना अपनी योजना में किसी को राजदार भी नहीं बनाना चाहती थी। वह जानती थी कि महलों की दीवारें भी सुनती बोलती हैं। कौन कब पीठ में छुरा घोंप दे कोई अनुमान नहीं। अतः सकीना ने सबसे पहला वार फत्ते खाँ पर करने में ही अपनी सफलता का अंदाज लगाया। उसका सहज विश्वास था कि यदि अगले दिन फत्ते जीवित रहा तो निश्चय ही वह खिज्र की चहेती को उस तक पहुँचा देगा। इसलिए क्यों न पहले उसे ही ठिकाने लगाया जाय ! उसके लिए कल नहीं आयगा, तो नवाब भी मेरी सौतिन नहीं पा सकेगा। इसी सोच ने सकीना को सुंदरी से बला बना दिया।

ईर्ष्या की आग में जल रही सकीना मिट्टी के बरतन में बंद तक्षक को अपनी ओढ़नी में छिपाकर महल के परकोटे के पीछे की ओर आयी, जहाँ विशेष सेवकों के रहने के लिए कक्ष बनाये गये थे। आते-आते मिट्टी का ठंडा बरतन उसकी नाभि से छू गया। दिल का चोर, ऐसा लगा, जैसे साँप ही छू गया हो। सिर से पाँव तक काँप गयी सकीना। माथे पर पसीना छूट गया। बरतन को शरीर से दूर करके डरते डरते पकड़कर वह आगे बढ़ी। फत्ते खाँ की कोठरी के निकट पहुँचते पहुँचते उसकी धड़कनें काफी तेज हो गयी थीं। बड़ी कठिनाई से वह अपनी उत्तेजना पर काबू पा रही थी, फिर साँसें इतनी तेजी से चलने लगी थीं कि कोई सहज ही उसके तनाव का अनुमान कर सकता था।

फन्ने की कोठरी का द्वार भीतर से बद था। यह अनुमान कर कि फन्ने भीतर है उसने कोठरी के पीछे वाली खिडकी से साप उसकी कोठरी म छोड दिया। सकीना का विश्वास था कि फन्ने साप का शिकार अवश्य बनेगा किंतु परमात्मा रखे तो कौन चखे। ज्यो ही सकीना कोठरी मे साप छोडकर आगे के द्वार की ओर आई तो फन्न के साथ वाली कोठरी का वासी हमीद उधर आ निकला। सकीना को महला म सम्मानपूवक बेगम साहिबा' कहकर ही पुकारा जाता था। हमीद सकीना को देखकर असमजस म आ गया। आखिर बेगम को यहा सवका की कोठरियो मे आने की क्या जरूरत। फन्ने खा का वहीं बुला सकती थी—हमीद का माथा ठनका। सकीना भी सकते मे थी। अभिवादन के ख्याल से हमीद ने 'सलामवलेकुम बेगम साहिबा' कहकर पुकारा।

'वालेकुम सलाम' सकीना न काफी आहिस्ता जवाब दिया, किंतु भीतर फन्ने को आवाज पहचानन मे गलती नही लगी। सकीना हमीद से कन्नी काटकर भीतर महलो की ओर चली गयी।

फन्ने के गुदगुदी होने लगी। यह सकीना इस समय कोठरियो की ओर! कोई षडयत्र हो सकता है। आज ही तो प्रात धमकी दी थी सकीना ने फन्न को। इतनी जल्दी धमकी को व्यावहारिक बनाने का प्रयास भी वह कर सकती है—ऐसा फन्न को भी विश्वास न था। किंतु सकीना का उस ओर अप्रत्याशित पधारना निश्चय ही दाल मे कुछ काला होन की आशका उपजाता था। यह बात फ ने के मस्तिष्क मे चक्कर घिन्नी की तरह इतनी तीव्रता से घूमन लगी, कि आराम की इच्छा से चारपाई पर लेटा फन्ने उठकर बठ गया और अपनी कोठरी को नजरा म तोलने लगा। पिछली खिडकी की ओर सामने चौकी के नीचे उसे कुछ हिलती-सी लम्बी चीज दिखायी पडी। ध्यान लगान पर उसके साँप होने का कोई सदेह न रह गया। साँप फन उठाकर कभी झूमता दाएँ-बाएँ इठलाता और कभी फन बद करके कुछ दूर तक सरक लेता। फन्ने का शरीर ठडा पडने लगा। साप देखकर नही, साँप के वहाँ आने या पहुँचाय जाने के पीछे के मतव्य का समझ-सोचकर फन्ने खाँ सिहर उठा।

सचमुच फन्ने खाँ का भाग्य बली था। सकीना का पाँसा उल्टा पडा।

मुहतरिमा !' सपर ने नजदीक होकर धीरे से पूछा।

'तुम्हे इससे मतलब ? सकीना ताव खा गयी। 'हम तुमसे साप खरीदना चाहते हैं, पालें, गले मे डाले या मार दें, तुम्हे क्या ! तुम्हे साँप देना हो तो बोलो !'

सपरा शायद सकीना का विश्वास पात्र बनना चाहता था, किंतु डाट खाकर अपनी सीमाओं को पहचानने लगा। चुपचाप मिट्टी के बरतन मे बद एक विषैला तक्षक उसने सकीना को पकडा दिया और उसकी विशेषता बताते हुए सपरे ने काटे पर पानी न मागने की बात को पुन दोहराया। सकीना ने काख म स निकालकर एक गिन्नी सपरे को पुरस्कार के तौर दे दी और वह प्रस नमुद्रा म वहा स चल दिया।

सकीना अपनी योजना म किसी को राजदार भी नही बनाना चाहती थी। वह जानती थी कि महलो की दीवारे भी सुनती बोलती है। कौन कब पीठ म छुरा घोप दे कोई अनुमान नही। अत सकीना ने सबसे पहला वार फत्ते खा पर करने म ही अपनी सफलता का अदाज लगाया। उसका सहज विश्वास था कि यदि अगले दिन फत्ते जीवित रहा तो निश्चय ही वह खिज्र की चहेती को उस तक पहुँचा देगा। इसलिए क्यो न पहले उसे ही ठिकाने लगाया जाय ! उसके लिए कल नही आयगा, तो नवाब भी मेरी सौतिन नही पा सकगा। इसी सोच न सकीना को सुदरी स बला बना दिया।

ईर्ष्या की आग म जल रही सकीना मिट्टी के बतन मे बद तक्षक को अपनी ओढनी म छिपाकर महल के परकोट के पीछे की ओर आयी जहाँ विशेष सेवको क रहने के लिए कक्ष बनाये गये थ। आते-आते मिट्टी का ठडा बतन उसकी काख से छू गया। दिल का चोर ऐसा लगा, जसे साप ही छू गया हो। सिर से पाव तक काप गयी सकीना। माथे पर पसीना छूट गया। बतन को शरीर से दूर करके डरते-डरते पकडकर वह आगे बढी। फत्ते खाँ की कोठरी क निकट पहुँचते पहुचते उसकी धडकनें काफी तेज हो गयी थी। बडी कठिनाई से वह अपनी उत्तेजना पर काबू पा रही थी, फिर साँस इतनी तेजी स चलन लगी थी कि कोई सहज ही उसके तनाव का अनुमान कर सकता था।

फने की कोठरी का द्वार भीतर से वद था। यह अनुमान कर कि फने भीतर है उसने कोठरी के पीछे वाली खिडकी मे साप उसकी कोठरी मे छोड दिया। सकीना को विश्वास था कि फने साप का शिकार अवश्य बनेगा किंतु परमात्मा रखे तो कौन चखे। ज्यो ही सकीना कोठरी मे साप छोडकर आगे के द्वार की ओर आई तो फने के साथ वाली कोठरी का वासी हमीद उधर आ निकला। सकीना का महलो मे सम्मानपूवक बेगम साहिबा' कहकर ही पुकारा जाना था। हमीद सकीना को देखकर असमजस मे आ गया। आखिर बेगम को यहा सेवको की कोठरियो मे आने की क्या जरूरत। फने खा का वही बुला सकती थी—हमीद का माथा ठनका। सकीना भी सकते मे थी। अभिवादन के ख्याल से हमीद ने 'सलामवलेकुम बगम साहिबा' कहकर पुकारा।

'वालेकुम सलाम' सकीना ने काफी आहिस्ता जवाब दिया किंतु भीतर फने को आवाज पहचानने मे गलती नही लगी। सकीना हमीद स कनी काटकर भीतर महलो की ओर चली गयी।

फने के गुदगुदी होने लगी। यह सकीना इस समय कोठरियो की ओर। कोई षडयत्र हो सकता है। आज ही तो प्रात धमकी दी थी सकीना ने फन को। इतनी जल्दी धमकी को व्यावहारिक बनाने का प्रयास भी वह कर सकती है—ऐसा फने को भी विश्वास न था। किंतु सकीना का उस ओर अप्रत्याशित पधारना निश्चय ही दाल मे कुछ काला होने की आशका उपजाता था। यह बात फने के मस्तिष्क म चक्कर घिन्नी की तरह इतनी तीव्रता स घमने लगी कि आराम की इच्छा से चारपाई पर लेटा फने उठकर बठ गया और अपनी कोठरी को नजरो मे तोलने लगा। पिछली खिडकी की ओर सामने चौकी के नीचे उसे कुछ हिलती सी लम्बी चीज दिखायी पडी। ध्यान लगाने पर उसके साँप होने का कोई सदेह न रह गया। साप फन उठाकर कभी झूमता दाएँ बाएँ ढुलाता और कभी फन बद करके कुछ दूर तक सरक लेता। फने का शरीर ठडा पडने लगा। साँप देखकर नही, साप के वहाँ आने या पहुँचाये जाने के पीछे के मतव्य को समझ-सोचकर फने खाँ सिहर उठा।

सचमुच फने खाँ का भाग्य बली था। सकीना का पाँसा उल्टा पडा।

हमीद सामने न आ गया होता तो उसकी चाल सफल थी, हमीद की सलाम का उत्तर देने में ही मर्दाना की समूची योजना चौपट हुई लेकिन अब क्या हो सकता था।

वादे के मुताबिक पन्ने और रशीद बड़ी हवेली के राजपूत कारिंदे रूप नगर की सीमा पर मौजूद थे। दूर से एक ऊंट-गाड़ी को आते देख पन्ने ने चुटकी ली 'लो मियां आ गयी नवाब की माशूक जरा होशियारी से। पांसा सीधा ही पड़ना चाहिए।'

'यह तो कामयाबी अपनी बांह में पड़नी है देखते जाओ कैसे शीशे में उतारता हूँ'—रशीद ने बड़े आत्मविश्वास से कहा।

तभी गाड़ी निकट पहुँची। नायक स्वयं गाड़ी हाँक रहा था। उसके बिल्कुल हाथ जुड़ी बैठी थी उसकी बेटी सुंदरता की मूर्ति! राजस्थानी के बेड़ों पहरावे में वह बेदाग चांदनी लग रही थी कहीं बेगमों की पोशाक में होती, तो परियों की राजकुमारी दीखती। गाड़ी के पीछे दो राजपूत भाले लिए हुए मुस्तैद थे।

'जय बाबा भोले शंकर' पन्ने और रशीद ने एक ही समय हाथ जोड़कर नायक का स्वागत किया। उत्तर में नायक ने भी भोले शंकर की जय' बुलायी। सब कुशलपूर्वक है ना नायकजी? मार्ग में कोई तकलीफ तो नहीं हुई। रशीद ने आवाज में मिठास घोलते हुए पूछा।

सब ठीक है मालिक! छोटा मुंह बड़ी बात। भला आपके इलाके में हमें क्या कष्ट हो सकता है? यह अन्ना तैयार नहीं हो रही थी, इसी के कारण कुछ विलंब भी हुआ—नायक ने खुलासा किया। कुछ देर रुककर नायक ने फिर पूछा सब प्रबंध तो ठीक है? छोटा मुँह बड़ी बात! सब ठीक ही होगा!' कहते हुए वह बेकार की 'ही ही' करने लगा।

नायकजी', रशीद ने प्रबंध का संकेत-सा करते हुए कहा आपके तथा बेटी के लिए बड़ी हवेली के पीछे बगीचे वाले मेहमानखाने में ठहरने का प्रबंध है। आपके दोनों आदमियों के लिए हमने उधर धर्मशाला में प्रबंध किया है। पुतलिका नृत्य का कार्यक्रम संध्या में दीपक जलने पर होगा।

तब तक बाराती अन्य कर्मों से मुक्त हो चुके होंगे। खूब महफिल जमेगी। अन्ना का नृत्य भी तो होगा ना।' रशीद ने जान बूझकर छेड़ा, ताकि नायक और अनारन का विचार पता चल सके।

'छोटा मुह बड़ी बात, मालिक ! अन्ना नाचने को तैयार ही नही होती हां इसकी अँगुलियो का करतब देखियेगा आप। अब मान जाये तो मान भी जाये। बड़े मालिक के कहने पर शायद ' नायक ने अनारन की ओर देखकर खीसें निपोर दी इनाम भी तो बड़ा मिलेगा, मालिक से।'

रशीद ने फन्ने को इशारा किया मतलब था नायक लालची है जल्दी फँस सकता है। फिर मुस्कराते हुए फन्ने से बोला, 'ठाकुर आप नायक को मेहमानखाने लेकर चलिये। मैं इन दोनो सेवको को धर्मशाला के कक्ष म छोडकर आया।'

ठीक है' कहते हुए सभी अपनी-अपनी दिशा की ओर बढ़े। फन्ने ने नायक और अनारन को अकेला पाकर बड़े अपनत्व से कहा, अन्नाजी सच कहता हूँ, हमारे मालिक की बात मान लेने से राज करोगी।'

'क्या मतलब ? नायक ने तीखी प्रतिक्रिया की।

मेरा मतलब बड़ा इनाम कई उपहार। एक ही बार म इतना धन पा लोगी कि राज करने समान ही होगा ना।' फन्ने सँभल गया। वह समझ गया कि पहला वाक्य उसने समय से पहले कह दिया था।

हाँ, यह तो मैं भी कहता हूँ अन्ना मान ले तो ना।' नायक ने अपनी बेबसी कुबूल की।

इसी प्रकार बातें करते हुए वे लोग उसी ऊँट-गाड़ी मे नवाब के महल का सीधा माग छोडकर पिछवाड़े से चक्कर लगाते हुए बगीचे वाले मेहमानखाने पर जा पहुचे। वहाँ सब प्रबंध नवाब के इशारो पर ठीक ठाक था। कही सदेह की गुजाइश नही थी। मेहमानखाना भी मुगलई माहौल का न होकर उस समय पूरी तरह राजपूती साज-सज्जा से सम्पन्न था। सेवक-सेविकाएँ जो सुबह तक मुस्लिम पोषाक मे घूम रहे थे इस समय बिल्कुल राजपूती शान से कार्यरत थे। नायक को यह सब मुस्तैदी देखकर बड़ा सन्तोष मिला। बोला छोटा मुँह बड़ी बात मालिक ! बड़े मालिक को हमारा प्रणाम कहना। उनकी जब आज्ञा होगी, अन्ना खुद पुतली का नाच

दिखायगी।'

ठीक है नायकजी ! आप लोग विश्राम कीजिये। किसी भी चीज की जरूरत हो तो यह गजर बजा दीजियगा। सेवक उपस्थित रहेगा', कहते हुए फत्ते बाहर आ गया।

फत्ते खाँ के बाहर आते ही मेहमानखाना नवाब के सिपाहियों ने घेर लिया। नायक और अनारन एक प्रकार से नवाब की कैद में पहुंच गये थे। मजा इस बात का था कि नायक को अभी अपनी नियति का भान नहीं था और वह नागौर की इस यात्रा को केवल विवाहोत्सव में पुतलियों-नृत्य दिखाने का प्रस्ताव ही समझ रहा था। या कहिये कि चिड़िया पिंजरे में थी सय्याद खुश था किंतु अभी दाना चुगने में आत्म विस्मृत चिड़िया को यह मालूम नहीं हो पाया था कि पिंजरे का द्वार बंद हो चुका है। आकाश की व्यापक गहराइयों में उड़ानें भरने वाली चिड़िया आज अपने परों के भरोसे बाज के घोंसले में झाँकने का लोभ संवरण नहीं कर पायी थी। बेचारी निर्दोष मासूम चिड़िया नहीं जानती थी कि बाज की तेज नजर से कौन पक्षी बच पाया है? वह सबके पर कतर देता है और फिर ऊँचाइयों की उड़ान नहीं आँगन की फुदकन ही बाकी रह जाती है।

उधर रशीद भी नायक के दोनों अनुचरों को इधर-उधर घुमा फिराकर एक धर्मशाला के किसी कमरे में ठहराकर बाजार के कोने वाली मस्जिद में आन पहुँचा। फत्ते पहले से ही वहाँ इंतजार कर रहा था। दोनों गले मिले अपनी-अपनी सफलता की दास्तान कही और नवाब के पास चलकर पुरस्कार पाने की योजना बनाने लगे। तभी फत्ते अकस्मात उदास हो गया। जानते हो रशीद सकीना ने तो कल ही मेरी जिन्दगी का फातिहा पढ़ने का सामान जुटा दिया था।' फत्ते ने जैसे रशीद की सहानुभूति पाने के लिए कहा।

क्यों, क्या किया उस आफत की पुड़िया ने? रशीद सावधान हो गया।

मेरी कोठरी में उसने पिछली खिड़की से जहरीला साँप छोड़ दिया। वह तो खुदा को अभी मेरा जीना कुबूल था, सो मैं हूँ। उस नागिन से कैसे बचा जाये? नवाब तो अनारन को पाकर उसे ठुकरायेगा ही, आखिर

माहताब को पाकर कौन जुगनुओ की टोह मे रहेगा ! लेकिन सकीना डक जरूर मारेगी। उससे बचने का कोई रास्ता निकालो, दोस्त ! देखो मेरी पेशानी पर ठडा पसीना कैसे उमडा आ रहा है, उस कम्बख्त की दुश्मनी के ख्यान से ही मैं मरा जा रहा हूँ', फन्ने ने बडे आजिजाना ढग से कहा।

'अबे क्यो मरा जा रहा है हसीना की तो दुश्मनी मे भी लुत्फ है। उसे कहो, नवाब ने ठुकरा दिया, तो क्या है ? हम भी तो अभी जवान हैं'—रशीद ने बात हँसी मे उडा देना चाही।

नही रशीद, कुत्ते के काटने चाटने, दोना मे नुक्सान है। वह इतनी हसीन नही, जितनी कमीनी है। वह नवाब पर भी चोट कर सकती है, फन्ने की उसके लिए कोई अहमियत नही।' फन्ने ने सकीना के लम्बे हाथो और नीच फितरत की बात की।

'ठीक है फन्ने मिया तुम अपनी कोठरी मे मत ठहरो। यहा मेरे पास मस्जिद मे चले आओ। मेरी कोठरी मे दोना पडे रहेंगे। रात यही बिताया करो अभी तुम्हारी कोठरी में खतरा हो सकता है। बाद मे नवाब से कभी बात चलायेंगे'—रशीद ने बात समाप्त की 'आओ अब अपना इनाम खरा कर लें और जरा नायक की नाक की कहानी भी जान लें।'

सध्या गहराने लगी थी। अभी तक बडी हवेली की ओर से कोई बुलावा नही पहुँचा था। यद्यपि नायक और अनारन के आतिथ्य का पूरा ध्यान रखा गया था, हर चीज उनके इशारे पर उपलब्ध करवाई गयी थी किंतु न तो फन्ने खाँ के दोबारा दशन हुए थे, न ही उस दिशा मे हवेली का कोई आदेश या सदेश प्राप्त हुआ था। बाहर निकलकर देखा तो सिपाहिया और सेवको की मुस्तैदी देखकर उसे कुछ सदेह-सा होने लगा। रात्रि उतर आयी थी, काई सदेश न पाकर नायक का माथा ठनका। अपनी गाडी भी बाहर कही दिखायी नही दी। एक सिपाही से पूछन पर इतना ही पता चला कि वे नवाब के मेहमान है और हुजूर नवाब साहिब के हुकुम के बगैर उन्हे बाहर जाने की इजाजत नही।

नायक का पसीना छूट गया। समझ गया कि उसे धोखे से इस चूहे-

दानी म फँसाया गया है। अब कारण समझते भी उसे देर नही लगी। फ्ने का वह वाक्य 'हमारे मालिक की बात मान लेने से राज करोगी' उसकी समझ मे आ गया। हाँ, बुरा हो लोभ तुम्हारा। तुम्हारे मगतृष्णा से हरे खेतो को देखकर मनुष्य अपना पेट भरन योग्य साधारण चरागाह भी छोड बैठता है। सचमुच लोभी का अत गँवाने मे ही होता है पाने मे नही। बुद्धि तो इसके विचार से ही कुठित हो जाती है आँखें भी सही काम नही करती। लाभ का रगीन चश्मा सामने की हर चीज रँग देता है और मनुष्य उन्नति की सीढिया टटोलता हुआ गहरी खाई मे जा गिरता है। नायक की भी यही दशा हुई थी। बुद्धि तो कुठित हुई थी, फ्ने को पहचानने मे भी उसकी आँखो ने साथ न दिया। उसे ध्यान आया, नगर की सीमा पर 'जय बाबा भोलेशकर' कहकर अभिवादन किया था उसका। राजपूत ठाकुर होते, 'जय भवानी' बोलते। अरे उस समय ध्यान ही नही आया इस बात का। फिर मेरे आदमियो को मुझसे अलग ठहराने की क्या जरूरत थी? तब भी बात मेरी समझ मे नही आयी। और अब तो पूरी तरह नवाब के पजे मे फँसे हैं। सुना है चरित्र का अच्छा आदमी नही है। अन्ना पर इसकी कुदृष्टि, मेरा तो मरण है। अब इस दशा म अपने साथियो की सहायता की भी आशा नही की जा सकती—पडाव के लोग हमारी कमाई का कल्पना कर रहे होगे और दोना सरक्षक वे तो अभी तक बदी बना लिए गये होंगे। भीतर ही भीतर नायक तडप उठा।

अनारन ने पूछा बाबा कब चलना होगा हवेली म ?'

कौन सी हवेली बेटी ? कैसा नृत्य ?' नायक फूट पडा 'हम तो दुश्मन के चगुल मे फँस गये हैं। दस दिन पहले तुम्हे याद होगा, जब हम इसी नगर मे पुतली का तमाशा दिखाकर लौटने के लिए सामान इकट्ठा कर रहे थे, तभी उस तरफ स नवाब की सवारी गुजरी थी। आगे आगे सुनहरी जीन वाले घोडे पर यहा का नवाब था, साथ आठ दस सिपाही थे। तुम्हारी ओर देखता हुआ वह निकट स गुजर गया था। आगे जाकर उसके दो सिपाही लौटकर हमारे पास पूछताछ के लिए आये थे। इतनी बात जान कर कि हम पुतली का तमाशा करते है एक ने दूसरे को मुस्कराते हुए कहा था, देखा, किस्मत इसे कहते हैं', और वापिस चले गये थे। मुझे

उस समय ही नवाब की नीयत पर सदेह होना चाहिए था, किंतु इस अति कुटिल व्यवहार को मैं पहचान नही पाया। अब मैं क्या करूँ ?' नायक फफक कर रो पडा।

अनारन जवान थी, सुदर थी वीरता और शौर्य की पुजारिन थी। राजकुमार गजसिंह को देखकर उसके मन मे बहुत पहले गुदगुदी हुई थी। राजकुमार की सेविका बनकर महलो मे रह सकने का सपना कभी उसने देखा था। किंतु वह लडकपन था अब जवानी के अरमान ! आसमान के तारे तोड लाने से कम तो उसने कभी सोचा ही न था। किंतु नवाब खिज्र खा ! यह उसकी कल्पना मे कभी नही आया था। यो भी इसकी चरित्रहीनता की कथाएँ उसने सुनी थी। अनारन को चरित्रहीन पुरुष नही भाते। जो उसका बनकर रह सके हमेशा उसी को चाहे वही उसके सपनो का राज कुमार हो सकता था। किंतु भाग्य की विडम्बना ! अनारन आगे सोचने मे असमर्थ थी।

रात काफी बीत चुकी थी। चारो ओर भयकर सन्नाटा था। मेहमान-खाने मे इधर उधर दो चार मशालें जलने के अतिरिक्त इधर उधर दूर तक कोई प्रकाश दीख नही पडता था। नायक और अनारन को नींद कहाँ ! दोनो नियति की राह देख रहे थे। नियति के अनेक वेष हैं मालूम [illegible] कब, कहाँ, किस वेष मे प्रकट हो ! खिलते फूल मुरझा जाते हैं [illegible] फूल खिल जाते हैं, बिगडी बनती है बनी बिगड जाती है, [illegible] जीवन का सदेश बन जाता है हँसता नाचता जीवन [illegible] राजा रक हो जाते हैं और रक छत्र धरवाकर चलते हैं—[illegible] किया चीज है। कब चित को पट और पट को [illegible] जानता। अनारन के भाग्य म क्या है, कौन [illegible] 'खुदा को नाखुदा मानकर कश्ती उसी [illegible] है। देखते हैं नियति के पिटारे म [illegible]

अभी आधी रात का गजर [illegible] थी, दूर कही कुत्ता गीदडो के [illegible] मेहमानखाने के बाहर [illegible] रहे थे। नवाब के महल [illegible]

अर वेवकूफ', अपने असली रूप मे नवाब के साथ आया फने खा बोला 'नवाव की प्रजा से प्यार है तभी तो तुम्हारी बेटी को गले लगाने आये हैं। क्यो मेढक की तरह टर्राते हो। खुश किस्मत हो, नवाब तुम्हारी बेटी को बेगम बनाना चाहते ह, मजूर करो, तुम्हे धन माल और इज्जत, किसी चीज की कमी नही रह जायेगी। बेटी भी राज करेगी, तुम भी नवाबी ठाठ मे रहोगे।

राज करेगी शब्द को सुनकर नायक फने को पहचान गया। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। चुप रहने मे ही कुशल थी। नवाब अनारन की तरफ मुखातिब हुआ, देखो हसीना, हमे खूबसूरती से मुहब्बत है। तुम्हारी खूबसूरती से हम मुतास्सिर है इसलिए तुम्हें अपने हरम म ले जाना चाहते हैं। तुम्हारी हा' मे हमारी मेहरबानिया और तुम्हारे बाप की जान-बख्शी है तुम्हारी ना' म हमारी जबरदस्ती और तुम्हारे बाप की मौत है। तुम खुद जो चाहो चुन लो।'

इस साफगाई पर कुछ पल उस प्रकोष्ठ म सन्नाटा छा गया। किसी को भी कुछ कहते बोलत न देखकर फने न सुझाया, 'हा कह दो बेगम! नवाब बडे जिंदा दिल, खुलूस परवर और मुहब्बत के फरिश्ते हैं। आपकी खूबसूरती पर इनकी नजर आपकी खुशकिस्मती है। नागौर की रियासत को बेगम मिल जायेगी—और आप जैसी बेदाग खूबसूरती पर किस फख्र न होगा।

नवाब, अनारन न वक्त की नजाक्त को पहचानत हुए मुह खोला, आप मेरी खातिर मेरे बाप की जान क्यो लेना चाहत है। मरी प्राथना है कि आप मुझे मौत के घाट उतार दें और मरे बाप को मुक्त कर दें। मरी खूबसूरती मेर बाबा के लिए मौत का सदेश बन जाय, यह मैं नही सह सकती।'

'हमे आपके बाबा से कोई दुश्मनी नही। हम तो उनकी इज्जत-अफ-जाई करना चाहत हैं। आप हमारी हाना कुबूल कीजिये, हम आपकी हर बात कुबूल होगी।' नवाब न सीधी बात की।

अनारन ने नायक की ओर देखा। उसकी गदन के घाव से रक्त बह रहा था और उसके चेहर स निपट निरीहता टपक रही थी। दाना की आँखें

लिए वहा की कोई आवाज मेहमानखाने को नही जगाती। उस सन्नाट म नायक को महसूस हुआ कि अकस्मात कुछ खुसर पुसर बढ गयी। सिपाही मुस्तैदी स चहलकदमी करन लगे है और धीरे धीरे अँधेरे प्रकोष्ठो में भी प्रकाश फैलने लगा है। सचमुच कुछ ही क्षणा मे सारा मेहमानखाना मशालो की रोशनी म प्रदीप्त हो उठा। नौकरो चाकरो की भगदड शुरू हो गयी और देखते ही देखते नायक के कक्ष का द्वार खुला। नवाब खिज्र खाँ अपने कुछ जानिसार सिपाहियो के साथ वहा खुद आ पहुँचा।

अनारन और नायक के हाथा मे तलवारें होती तो शायद नवाब की यह आखिरी रात होती किन्तु निहत्थे बाप बेटी चाहकर भी कुछ कर सकने मे असमर्थ, चारा ओर शत्रु सनिको से घिरे हुए सिवाय कुटिल नवाब की ओर विटर बिटर ताकने के कुछ न कर सके। तराशी हुई मूछा मे मुस्कराते और अपनी छोटी सी बकरदाढी को हिलाते हुए नवाब ने बिना कुछ बोले अनारन की ओर इस प्रकार हाथ बढा दिय जैसे कोई आलिंगन के लिए किसी को आमन्त्रित करता है। नायक इस हरकत को सहन नही कर पाया, फट पडा नवाब, अपनी सीमाओ म रहो। इसे पाने से पहले तुम्हें मेरे साथ तलवार के दो हाथ करने होगे।'

नवाब अट्टहास करके हँस दिया। नवाब के एक सिपाही ने आगे बढकर भाले की नोक उसकी गदन पर रख दी बोला चुप रह बुड्ढे अभी तेरी छुट्टी कर दूगा।' ऐसा कहते हुए उसने भाला गदन पर इतना चुभा दिया कि नोक के पास से रक्त बह निकला। अनारन यह देख रही थी। बाबा को इस प्रकार भाले की नोक पर टगा देखकर वह चुप नही रह सकी। भूखे भेडिये की तरह तडपकर उस सिपाही की ओर झपटी और एक ही धक्के से उसे धराशायी कर दिया। वह तो शायद उसका भाला छीनने मे भी सफल हो जाती यदि दूसरे दो सिपाही उसे अपनी पूरी ताकत से काबू न कर लेते।

नायक ने नवाब की ओर हाथ जोडते हुए विनती की 'छोटा मुह बडी बात मालिक! क्रोध म कुछ भी कहने के लिए मुआफी चाहता हू। मुझे और मेरी बेटी को जाने दीजिय, आपके पाव पडता हूँ। हम गरीब आपकी प्रजा हैं।

'अरे बेवकूफ', अपने असली रूप मे नवाब के साथ आया फ'ने खाँ बोला नवाब को प्रजा से प्यार है, तभी तो तुम्हारी बेटी को गले लगाने आये हैं। क्यो मेढक की तरह टर्राते हो। खुश किस्मत हो, नवाब तुम्हारी बेटी को बेगम बनाना चाहत ह, मजूर करा, तुम्हे धन माल और इज्जत, किसी चीज की कमी नही रह जायेगी। बेटी भी राज करेगी, तुम भी नवाबी ठाठ म रहोगे।

राज करगी' शब्द को सुनकर नायक फ'ने को पहचान गया। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। चुप रहने मे ही कुशल थी। नवाब अनारन की तरफ मुखातिब हुआ, 'देखा हसीना, हमे खूबसूरती से मुहब्बत है। तुम्हारी खूबसूरती से हम मुताम्सिर है, इसलिए तुम्हे अपने हरम मे ले जाना चाहते हैं। तुम्हारी 'हा' मे हमारी मेहरबानिया और तुम्हार बाप की जान-बख्शी है तुम्हारी ना' मे हमारी जबरदस्ती और तुम्हारे बाप की मौत है। तुम खुद जो चाहो चुन लो।'

इस साफगोई पर कुछ पल उस प्रकोष्ठ म स'नाटा छा गया। किसी को भी कुछ कहते बोलत न दखकर फ'ने ने सुझाया, हा कह दो बेगम। नवाब बडे जिंदा दिल, खुलूस परवर और मुहब्बत के फरिश्ते हैं। आपकी खूबसूरती पर इनकी नजर आपकी खुशकिस्मती है। नागौर की रियासत को बेगम मिल जायगी—और आप जैसी बदाग खूबसूरती पर किसे फख्र न होगा।'

नवाब, अनारन न वक्त की नजाकत को पहचानत हुए मुह खाला, आप मेरी खातिर मेर बाप की जान क्या लेना चाहत हैं। मरी प्रायना है कि आप मुझे मौत के घाट उतार दे और मरे बाप का मुक्त कर दें। मरी खूबसूरती मेर बाबा के लिए मौत का सदेश बन जाय, यह मैं नही सह सकती।'

हमे आपके बाबा से काई दुश्मनी नही। हम तो उनकी इज्जत-अफ-जाई करना चाहते हैं। आप हमारी होना कुबूल कीजिय, हम आपकी हर बात कुबूल हागी। नवाब ने सीधी बात की।

अनारन ने नायक की ओर देखा। उसकी गदन के घाव स रक्त बह रहा था और उसके चेहरे स निपट निरीहता टपक रही थी। दाना की आँखें

मिली, नायक की पलका से एक मोती टूट पडा। नायक राजपूत था मौत का वरण उसके लिए मुश्किल न था। किंतु क्या मरकर भी वह अनारन को शत्रु के नर्गे से बचा सकेगा? अनारन का भविष्य तो अब बदला नहीं जा सकता। नवाब सब शर्तें मजूर कर सकता है, अनारन को यहाँ तक लाकर छोड दना उसे कभी गवारा न होगा। अत नायक ने बडी मिस्कीन नजरो स नवाब की आर देखा और बाला, 'मालिक', मेरा छोटा मुह है और बात बडी है। यदि अनारन को आपका प्रस्ताव स्वीकार हो तो मुझे कोई आपत्ति नही है। हा, एक शत है। आप उसे अपनी बेगम बनायें, रखैल जोई नही।

नवाब उस समय किसी भी मूल्य पर अनारन को अपने आगोश म लने का व्याकुल था। बोला, 'मुझे आपकी शत मजूर है और इससे पहले कि अनारन अपनी स्वीकृति या अस्वीकृति प्रकट करे नवाब ने गज मुक्ताओं का हार अपन गले से उतारकर खुद अनारन के गले मे पहना दिया। बाहर शादियाने बज उठे। नवाब के सग आय मुह लगे सेवको ने मुबारक अर्ज की और इनाम की माग भी रखी। सबको अगले दिन इनाम देने का वादा कर नवाब दासिया के बीच अनारन को साथ लेकर अपने महलो की तरफ चल पडा। बूढ़ा नायक नियति का खेल दखता, अपनी नासमझी और असमर्थता को कोसता वही पडा रह गया। यह अपहरण या लडकी की भेंट! न शादी न निकाह, हाय अ'ना! मैं कुछ न कर सका तुम्हारे लिए!' नायक बडबडाता मूछित होकर गिर पडा।

दासिया म घिरी अनारन तथा नवाब के महला म आन की सूचना सकीना को मिली। साप लोट गया सीने पर किंतु वह इतनी ओछी न थी कि तूफान खडा कर देती। करती भी तो किस अधिकार से? नवाब मैले वस्त्र के समान उसे त्याग देता क्या कर सकती थी वह? समझदारी का तकाजा था कि नवाब के मन मे अपन लिए घणा को जगह न बनाने दे। अभी उसे नवली का चाव है कुछ दिना बाद फिर उसे सकीना के ही पास आना होगा—इसी विश्वास से उसे अपनी योजना कार्यान्वित करनी है, एसा

सोचकर वह भी खान की अन्य रखैलो के साथ अनारन को देखने के लिए परकोटे की खिडकी मे जा बैठी।

अनारन सचमुच एक अछूता सौदर्य था। एक बार तो सकीना का विश्वास भी हिल गया। यह तो वह जानती थी कि खिज्र खा बातूनी है, निकाह की बातें करता है शायद निकाह के लिए वह दिल से किसी की तरफ भी कभी नही झुका। आज अनारन को देखकर उसका कलेजा काप गया। नवाब का दिल फिसल सकता है। बला की हसीन किंतु अनमनी और लाचार। देखें कैसे निभती है।

नवाब, दासिया और बीच म अनारन परकोटे से आगे निकलकर नवाब के खास महल की ओर चल गय। नवाब ने दासियो को कुछ इशारा किया और खुद फन्ने मियाँ को साथ लेकर अपनी ख्वाबगाह मे जा पहुँचा। खुश्बूदार तबाकू क कश लेन के लिए मसनद पर बडे-बडे गाव तकियो का सहारा लेकर खिज्र खा लेट गया। फन्ने उसकी टाग दबाने लगा। ख्वाब गाह मे मशाल की हल्की रोशनी चिलमन से छनकर आ रही थी, धूपदान मे लोबान जल रहा था, थोडी कस्तूरी भी उस पर डाल दी गयी थी। सुगधित धुआ धीरे धीरे धूपदान मे से निकलकर हवा मे मिल जाता था। जिसस सारा माहौल गम और गरिमामय था। चारो ओर सुगधि फली हुई थी, वातावरण मादक था, फन्ने झूमने लगा।

'फन्ने खा तुमने सचमुच बहुत बडा काम किया है, नवाब बोला, उसकी कुवारी खूबसूरती मेरे जहन मे एक हलचल मचा रही है। उसे क्या कहूँगा कसे अपना बनाऊँगा मुझे कुछ समझ ही नही आ रहा। अनारन सचमुच मुहब्बत का बुत लगती है जी चाहता है उसकी प्रस्तिश करूँ। ये काफिर इसीलिए शायद बुत पूजते है—मैंने देखा है, उनके मदिरो मे लगे बुत बहुत खूबसूरत होते ह। ऐसे परी जमाल को देखकर क्यो न कोई काफिर हो जाये!'

'नवाब आप तो शायर हुए जा रहे हैं', फन्न ने चुटकी ली, 'अभी तो हुस्न एक नजर देखा भर है, जब आगोश म होगा, तब तो गजल ही हो जायगी। फन्न को दाद दीजिये, साहिब! इस नाचीज पर मेहरबानी बनी रहे, ऐसी काफिर चीजें तो बनती ही नवाबो-बादशाहो के लिए हैं। मुझे

जाने की इजाजत दीजिये, मुबारक हो आपको हुस्न-ओ जवानी का बुत और उसकी कुवारी मुहब्बत।' कहते हुए फत्ते ने उठकर सलाम बजायी। नवाब न मसनद पर ही करवट बदली और अनारन की कल्पनाओं में खोया धीरे धीरे हुक्के के कश खीचने लगा।

दासियाँ अनारन को श्रृगार प्रकोष्ठ मे ले गयी थी। जीवन म पहली बार नीम गम सुगधित जल मे स्नान करने का अवसर अनारन को मिला। दासिया स्वय उसे नहलाना चाहती थी, किंतु उसने सबके सामन निवसना होन से इनकार कर दिया। राजकुमार गजसिंह के ख्यालो मे खोयी अनारन कहा आ पहुँची थी इसी विचार मे डूबी उसन स्नान पूरा किया और मानसिक तौर पर अपने को भावी परिस्थिति के लिए तैयार करने लगी। उसके दल मे कई लडकिया की शादियाँ उसके देखते हुई थी। उसने छिप छिपकर उन लडकियो को अपने दूल्हो की बातें और रातो की खुराफातें कहते सुना था इसलिए अपने भावो के सबध मे वह कुछ-कुछ जागरूक हो गयी थी।

स्नानोपरात दासियो न उसका खूब श्रृगार किया। कई प्रकार के सुगधित तल उसके सुदर शरीर पर मालिश के लिए प्रयोग हुए। अति सुन्दर गुलाबी पशमीने का मुगलई लहँगा-कुर्ता उसे पहनाया गया। उसी रग की गोट लगी चमचमाती चुनर सजायी थी। अनारन को स्वय ऐसा महसूस हुआ कि वह दुल्हिन बन गयी है। गले मे नौलखा हार, बाजुओं मे बाजूबद बिल्लौरी चूडिया बालो म झूमर पाव में सोने की पायल आदि गहने, जो कभी अनारन ने देखे भी न थे, आज उसके शरीर पर सज रहे थे। परो म महावर लगायी गयी थी, आँखें अजन की झीनी रेखाओ से तीखी कटार-सी बन रही थी—मृगी देख ले तो जगल मे मुह छिपाये न बने। गालों म तो गुलाब खिले ही थे, शख जैसी ग्रीवा म पडी मोती-मालाएँ डरते-डरत जब वक्षस्थल को छूती थी तो मार लाज के उठ उठ गिरती थी।

श्रृगार सपन्न करके दासिया न अनारन के सामने दपण रख दिया। यह क्या ? दपण में क्या सचमुच अनारन का ही प्रतिबिंब था ? विश्वास नही हुआ अनारन को। अपनी ही छाया पर रीझ गयी वह। मुगल खान दान की खूबसूरत दुल्हिन जैसी लग रही थी वह ! ऐसा सपना तो उसने कभी

नही लिया था। राजकुमार की दासी बनने की बात तो उसने सोची थी, नवाब की दुल्हिन बनने की नही। क्या नवाब सचमुच उसे अपनी बीवी बना लेगा ? नही, वह राजपूत है, मुसलमान से शादी नही करेगी। एक क्षणिक विचार उसके मस्तक मे कौंधा। मन ने उत्तर दिया, 'शादी नही करेगी, तो क्या वह उसे महल के कमरे म सजाकर बिठा लेगा !' फिर एक आवाज उसके काना म गूजी, 'अनारन को अब सब सपने भूलकर अपने लिए यहा अपनी जगह बनानी होगी। कुवारे सपने सब पीछे छूट गये हैं, भाग्य बलवान है जहाँ वह लिए जा रहा है वही जीना होगा।'

तभी सकीना न शृगार कक्ष म प्रवेश किया। सुनत हैं स्त्री स्त्री के रूप पर मोहित नही होती किंतु अनारन को शृगार किये हुए दखकर सकीना तो फिदा हो गयी उस पर। दिल ही दिल म हसद की आग लपटे बनकर भडकने लगी। सकीना न प्रत्यक्ष म उस पर पूरा काबू रखा और चुटकी ली—'हाय मेर नवाब पर यह ता गाज बनकर गिरेगी। खूबसूरत भी बला की है नवाब को बला की तरह न चिपट जाना कि फिर कभी हमारी बारी ही न आय ! सकीना इतना कहकर ठहाका लगाकर हँस दी। दासिया न भी उसका साथ दिया।

अनारन का माथा ठनक गया। नवाब ऐसे ही अपना हरम भरे हुए है ! सबकी बारी बँधी हुई है क्या ? नही, मुझे ऐसा नवाब नही चाहिए, जो मुझे छोडकर किसी और के साथ भी वही सबध बनाये, जो मेरे साथ हो। एसी नवाबी से गरीबी का टुकडा भला जहा मद की मुहब्बत अपनी तो हो। तभी जैसे अनारन के भावो पर बुद्धि के चाबुक ने चोट पहुँचायी। 'नवाब को अपना बनाया तो जा सकता है। मैं हिंदू लडकी हूँ। मजबूरी मे जब मैंने नवाब को स्वीकार कर ही लिया है तो उसे इतना प्यार और सुख दूगी कि वह पल भर के लिए भी दूसरी किसी औरत के बारे मे सोच ही न सकेगा। मुझसे उसने निकाह का वादा किया है, फिर भला वह किसी और से बारी क्या ले।' अनारन का मस्तिष्क तेजी से ऐसी कई बातें सोच गया, किंतु ईर्ष्या की अग्नि म जल रही सकीना तो जान बूझकर चोट पहुँचाने ही आयी थी बोली अनारन बी, नवाब न निकाह का वादा मुझसे कई बार किया है। आज वह तुम पर लटटू है, जरा मेरी सिफारिश तो

कर देता, सैय्याजी के पास।' एक बार पुन सारा वातावरण ठहाकों से भर गया।

एक दासी फुसफुसायी, 'निकाह का वादा यहाँ किसके साथ नहीं हुआ? किसने उस अपना सब-कुछ कुर्बान कर झोली भर खुशियाँ नहीं दीं? किस ब्याह रचाया उसने? सबका रूप रस लूटकर कुछ दिन खेल बनाया और अब पड़ी रहो दासी बनी! यही सब ता यहाँ आने वाली हर लड़की की किस्मत म होता आया है। सकीना भी आज लुट गयी, कल अनारन की खुदा जाने!'

ये शब्द अनारन के कानों म पिघले शीशे के समान पड़े और वहीं जम गये। ये सब दासियाँ कभी अनारन ही की तरह लायी गयी थीं, इसी तरह सज धजकर व नवाब की हवस का शिकार बनी थीं, झूठे वादे उनसे भी कई बार दुहराये गये थे और आखिर उनकी वतमान स्थिति उसके सामने है। सकीना शायद अपने अधिकारों का छिनता हुआ देख रही है, इसीलिए विषैले वचन कह रही है और जीवन के यथार्थ को जानने से पहले ही अनारन के भीतर कटुता भर देना चाहती है। यद्यपि अनारन को पोथी की विशेष शिक्षा नहीं मिली थी, तथापि अनुभव-क्षेत्र उसका भी व्यापक था। अत सब सुन समझकर उसकी सब कल्पनाएं धुल गयीं व्योम कुंजों में इठलाती उमड़ाती अकस्मात वह धरती के कठोर गत म आन गिरी। अपनी सुंदरता और चापल्य के सहारे उसने सदा राजमहलों के ही सपने देखे थे, किंतु नवाब द्वारा निकाह की शर्त स्वीकार कर लेने पर वह अपने सपने बेगम ए अव्वल बनकर पूरे होते महसूसने लगी थी। राजकुमार गजसिंह के महलों मे तो वह दासी के तौर पर रहने से अधिक नहीं सोच पायी थी, किंतु नवाब के द्वारा अपहृत होकर वह कुछ अलग ही सोचती थी। उसे अपनी सुंदरता पर गर्व था, किंतु किस्मत पर रोष हो रहा था। मन की उमंग ठंडी पड़ गयी थी उल्लास म वेदना का दर्द घुल गया था और भविष्य के खूबसूरत दृश्य अकस्मात धूल मे मिल गये थे।

होनी तो पूर्व निश्चित ही थी, कोई मिटा नहीं सकता। उधर अर्द्ध रात्रि का गजर बजा इधर दासियाँ सजी हुई दुल्हिन के रूप म अनारन को नवाब खिज्र खाँ की ख्वाबगाह की ओर लेकर चलीं। चलते चलते भी सकीना

ने एक और जुमला कस दिया, नवाब फूल फूल का रस लेने वाला भँवरा है, सारा रस एक ही दिन मे न लुटा देना।' अनारन ने विष के घूट की तरह चुपचाप इसे सुना और अपने अरमानो का होम करने के लिए दासियो के साथ इस प्रकार चल दी, जैसे कोई बलि पशु सज सजाकर वेदी की ओर ले जाया जा रहा हो।

नवाब की ख्वाबगाह के बाहर पहुचकर दासियो ने धीरे से अनारन को भीतर धकेल दिया और द्वार ओटाकर लौट आयी। अनारन का दिल इतनी जोर से धडकने लगा कि अभी मुह से उछल पडेगा! हाथ-पाव फूल गये, मन म त्रास और मस्तक मे बाबा का ध्यान हो आया। 'आह, बाबा, तुम्हारी बेटी ऐसे छली जायेगी, यह कब सोचा था मैंने!'

सामने मसनद पर नवाब विराजमान था। अनारन की ही प्रतीक्षा कर रहा था। उसके चेहरे या व्यवहार म कोई ऐसा लक्षण नही था, जिससे किसी नवीनता का वैचित्र्य भासित हो। अनारन की तरह कई सुदरिया समय-समय पर उसके पास इसी प्रकार सज धजकर आयी थी। हरम ऐसे ही रसलुटे फूलो का चमन था। जो भी कभी नवाब की नजर चढी, वही साम, दाम, दड, भेद किसी भी नीति से हरम म पहुँची। पहली रात और हर रात, जब तक कि पहली की जगह लेने वाली कोई नयी सुदरी और न मिल जाये, बडे-बडे वादे, प्यार के, शादी के और बगम-ए-अव्वल बनाने के। नया रूप, रस, जवानी, नया अदाज, नये सिर से प्यार-वफा के कस्मे-वादे—यह सिलसिला नागौर की नवाबी पा जाने के दिन से लेकर आज तलक चला ही आ रहा था। बडे-बडे अरमानो-वलवलो को लेकर हरम म दाखिल होने वाली दोशीजाएँ आज दासियो से अधिक कोई महत्व नही रखती। सकीना तो शुद्ध तुर्की रक्त था, खूबसूरती जवानी, नाज-नखरा, नवाब को खुश करने के लिए क्या नही था उसके पास किंतु ।

नवाब से नजर मिली। हाथ उठाकर बडी मुलायम वाणी से बोला, 'आओ, मेरे पास आओ, जान-ए-खिज्र!' अनारन का मन चीत्कार कर उठा। सबको इसी तरह पुकारा होगा नवाब ने, सब उसकी प्राण-वल्लभा रही होगी और मन भर जाने पर उसे हटाकर कोई नयी-नवेली लायी गयी होगी। जान! क्या जान बदली या निकाली जा सकती है? निकलने के

बाद नवाब की हस्ती कैसे बनी रहती है ? मक्कार !

दिल के फफोलों को सहलाती हुई अनारन दो एक कदम आगे को बढ़ी, किंतु किसी अज्ञात भय से उसकी टाँगें काँपने लगीं। वह आगे न बढ़ सकी। नवाब खुद मसनद से उठकर उसकी ओर झपटा। यदि आगे बढ़कर उसने थाम न लिया होता, तो अनारन कटे पेड़ की तरह गिर गयी होती। नवाब ने अनारन को दोनों भुजाओं में उठा लिया और मसनद पर ले आया। प्यार से दुलराया पुचकारा हवा दी—तब कहीं अनारन ने आँख खोली। वह मूर्छित तो नहीं हुई थी किंतु मूर्छा जैसी किसी स्थिति में उसने एक नरक पार कर लिया था।

नवाब बतियाने लगा—वे ही, गहना से लादने की बातें, निकाह पढ़वाने की बातें, बेगम बना लेने और सदा के लिए उसका हो रहने की बातें, खूबसूरती की तारीफ जान फिदा कर देने के वादे और न जाने क्या-क्या! अनारन अब इन बातों का मतलब समझती थी। भँवरा फूल को रिझाने के लिए तब तक ही गीत गाता है, जब तक रस पान करने के लिए उसके भीतर जगह नहीं बना लेता। खिज्र खाँ भी कुछ ऐसी ही चालें चल रहा था। अनारन की खूबसूरती कमसिनी, कोमलता और उभरती हुई जवानी उस शातिर को कहीं अनजाने में रोक रही थी, लेकिन रात तो अभी पूरी बाकी थी। बिल्ली चूहे को खिलाती रही खिला खिलाकर मारती रही और अंतत खा गयी। अनारन को महसूस हुआ, जैसे किसी ने उसका शरीर चीर दिया हो। आह! नरक की आग में जलकर मनुष्य के पाप धुलते हैं कैसी आग है यह कि पाप गुणा होते चले जाते हैं, इहलोक का सजीव नरक!

नवाब की ख्वाबगाह के साथ वाला सबसे सुंदर कक्ष अनारन को दे दिया गया। सुख-सुविधा के सभी उपकरण मौजूद थे उसमें। अनारन रानी थी, दास-दासियाँ हाथ बाँधे उसके आदेश की प्रतीक्षा करते थे। नहाने धोने बनने सँवरने तक का कोई भी काम उसे अपने हाथों नहीं करना पड़ता था। उसके कोमल हाथ अब केवल नवाब की संपत्ति थे, उसका गोरा-गदराया

शरीर अब केवल नवाब की भूख को जगाता और बुझाता था। वह अब भी प्रतिदिन अनारन मे निकाह का वादा करता था। प्रात काल होते ही उसे मुसलमान बनाकर अपनी बेगम बनाने के करार किये जाते थे और बस इसी तरह 'रात बीती बात गयी' की कथा दोहरायी जाती थी। फिर भी अनारन अप्रसन्न नही थी क्योकि उसे अपेक्षा से अधिक मिला था। वह बेगम नही थी उसका हुकुम चलता था। लेकिन उसके भीतर बैठी शोषित प्रिया अनारन अभी मरी नहीं थी, फिर वह भली भाँति यह जान चुकी थी कि नवाब के सब चोचले तब तक के लिए ही हैं, जब तक उसकी नजर म कोई और सुदरी नही चढ जाती। सकीना उसकी दोस्त बन चुकी थी, अनेक दासियो की आप बीती भी वह सुन चुकी थी। उसने अपने कष्ट के दिनो म सकीना के प्रति नवाब की बदली दृष्टि को ही नही झेला था, बल्कि वह जान चुकी थी कि उन दिनो सकीना पुन नवाब के आगोश मे पहुच जाती है। भरमा फुसलाकर नवाब से बीसियो सुविधाएँ पा जाने मे वह सफल हुई है। अनारन की ओर से यदि नवाब ने अभी मुह नही मोडा तो उसका कारण सकीना की उदारता नही, वरन अनारन मे बचा रूप रस है।

पता नही किस पारस्परिक स्वार्थ के वशीभूत अनारन से भयकर ईर्ष्या करने वाली सकीना धीरे धीरे उससे बहनापा दिखाने लगी थी। उद्वेग के कुछ कमजोर क्षणो मे अनारन ने भी सकीना को आपाजान के प्यारे से नाम से सबोधित कर लिया था और एक ही प्रकार के दो मजलूम अपना दुख सुख बाँटकर जीवन का बोझ हल्का करने लग थे।

अनारन म बडी सहिष्णुता थी। वह न सकीना की तरह [illegible] थी, और न ही कुनमुनाती थी। नवाब द्वारा किये जा रहे अपने [illegible] को वह बराबर समझती-पहचानती थी। नवाब अपना दाम्पत्य [illegible] टालता आ रहा था। अब तो वह शादी, निकाह आदि को स्त्री को मूर्ख बनाने का [illegible] बाग समझने लगी थी, और धीरे धीरे इस दुर्दशा पर विजय [illegible] प्रयास कर रही थी। उधर सकीना आशा मे [illegible] गज बढ़ रहे

अब हिचकती नहीं थी इसी से सकीना जान चुकी थी कि अनारन के सपनों का राजकुमार अभी भी गजसिंह ही है। इतने समय तक खिज्र खाँ की रखैल रहने पर भी गजसिंह का ध्यान वह भुला नहीं पायी थी। और जब से उसने यह सुना था कि खिज्र खाँ शाहजहाँ के गद्दीनशीनी के उत्सव पर आगरा जा रहा है उसका हरम भी साथ जायेगा और वहाँ उसका राजकुमार अब जोधपुर का शासक गजसिंह भी नये बादशाह के सम्मान में उपस्थित होगा, वह मन ही मन प्रसन्न थी।

सकीना आपा के साथ इस प्रसन्नता को बाँटते हुए अनारन ने गजसिंह से मिल सकने की इच्छा प्रकट की। 'कहो आपा क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आगरा मे मैं अपने सपनों को साकार कर सकूं ? अपने राजा से एक बार मिल सकू ?'

'यह तो वहीं चलकर पता लगेगा। सुना है अभी नवाब पक्का इरादा नहीं कर सका कि हरम को साथ ले जायेगा या नहीं। अगर वह हमें आगरा ले ही न गया तो बाकी बातों का सवाल कहाँ पैदा होता है ?' सकीना ने शक जाहिर किया।

'नहीं नवाब हमें साथ ले जाना चाहता है, सिर्फ वहाँ ठहरने के लिए मकान की दिक्कत हो सकती है। इस बात के लिए तो आज रात मे मैं नवाब को मना लूगी' अनारन ने झेंपते हुए कहा।

'फिर ठीक है बाकी वहाँ जाकर देखेंगे। हो सकता है तुम्हारे गजसिंह की क्यामगाह भी कहीं पड़ोस में ही हो।' सकीना ने हवाई बातों मे कोई सार न देखते हुए छोटी और अपरिपक्व जानकर अनारन को चुप करवा दिया दीवारों के भी कान होते हैं, यहाँ की दासियाँ तो एक वक्त की नवाब की माशूकाएँ हैं। कौन कब हसद की आग मे घर जला दे कोई नहीं जानता। सावधानी जरूरी है।'

अनारन स्थिति की नजाकत को समझ गयी और चुप लगा गयी।

आगरा मे शाही महलों के पीछे अमीरजादों राजाओं, नवाबों आदि के लिए सुंदर पक्के मकान बनाये गये थे। पूरे दो मुहल्ले थे। ताजपोशी की रस्म पर मुबारकबादी के लिए बादशाहत के तूल-ओ-अर्ज से छोटी-बड़ी रियासतों के राजा-नवाब पधारे थे। यद्यपि जोधपुर के राजा गजसिंह ने

विद्रोह के दिनों म खुरम को नाको चने चबवाय थे, फिर भी बादशाह बनने के बाद खुरम (शाहजहाँ) जोधपुर की वफादारी से मुतास्सिर रहा और उसने खास मशीर भेजकर राजा गजसिह को आमत्रित किया। सयोग ही समझिये कि नवाब नागौर की क्यामगाह के पिछले मुहल्ले के आखिरी महलनुमा मकान म राजा गजसिह को ठहराया गया था। राजा गजसिह अपन दती पर बठकर अपने निवास से शाही महलो मे प्राय आता-जाता था। बादशाह शाहजहाँ ने राजा का पाँच हजारी का मरतब बना रहन दिया था, और वेशकीमती उपहार देकर उसका सत्कार किया था।

खिज्र खाँ को आगरा आये महीना भर हो गया था। हरम को साथ लाया था एय्याशी मे पडा रहता था। बादशाह ने एकाध बार तलब किया तो सिफ इसलिए कि नागौर की शिकायतो का निपटारा किया जा सके। शिकायतो म एक शिकायत यह भी थी कि नवाब अय्याश है, प्रजा की सुदर जवान औरतो को हरम म डाल लेता है। खास तौर पर, खानाबदोश राजपूतो की एक सुदर लडकी को बडे छल-कपट से नवाब न रखैल बना लिया है—यह शिकायत बडी दुखद थी। नवाब के पास क्या उत्तर था, इन शिकायतो का! ऐसी शिकायतें अगर किसी हिंदू रियासत के विरुद्ध होती, तो बादशाह शायद रियासत छीन लेता, या शाही रुतबे से महरूम कर दता, किंतु खिज्र खाँ भी तो मुगलिया खून था, इसलिए पूछ ताछ एक औपचारिकता मात्र थी। खिज्र साफ मुकर गया—'मेरे हरम मे खानाबदोश बाजीगर राजपूतो की कोइ लडकी नही।' वह जानता था कि हरम मे कोई खोज नही करवा सकता, अत झूठ का सहारा लेने मे ही सुरक्षा है। भीतर से वह घबरा जरूर गया और बादशाह को अपने प्रति खुश रखने के तरीके सोचने लगा।

बादशाह की पूछ-ताछ से नवाब ऐसा घबराया कि उस रात अनारन का कक्ष लाघते हुए सकीना के कक्ष मे जा पहुँचा। सकीना मसनद से उठ बैठी। बडे सत्कार के साथ नवाब को मसनद पर बिठाकर चुटकी लेती हुई बोली 'आज मेरे नवाब को कनीज की याद कैसे हो आयी? क्या मुजस्सम खूबसूरती अनारन से कुछ गुस्ताखी हुई?'

'नही, ऐसा कुछ नही।' नवाब ने व्यग्य को सहजता से ओढते हुए

सकीना को आज शाही दरबार में हुई सारी बातचीत से अवगत कराया। उसने बताया कि इस तरह की अय्याशी की जिंदगी बादशाह को नागवार है इसलिए मैंने निकाह पढ़वा लेने का निर्णय कर लिया है। शरीयत की रू से तुमसे निकाह आसान है। अनारन को भी छोड़ने का मन नहीं होता लेकिन उसे पहले मुसलमान बनाना होगा। मुसलमान बनने को वह कभी तैयार नहीं हुई, इसलिए मैं उसे टालता रहा। अब अगर बादशाह को उसके मेरे हरम में होने का पता चले, तो वह मेरी अच्छी गत बनायेगा। इसलिए उसे मुसलमान बनाकर भी मैं उससे निकाह नहीं कर सकूंगा। मैं सोचता हूं कि उसका यहाँ रहना भी जोखिम है यहाँ से जाना अधिक जोखिम। जानए मन, तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ?

सारी बात सुनकर सकीना के कानों में घंटियाँ बज उठीं। उस गर्म पतझड़ के मौसम में माहौल नर्म शीतल महसूस होने लगा। बिना फूलों के ही उसके नथुने गंध में बस गये। ऐसा लगा, जैसे कोई खोयी हुई अमूल्य वस्तु उसके हाथ लग गयी हो। दिल बल्लियों उछलने लगा नयनों में चंचलता आयी गालों और आँखों के बीच का प्रदेश कानों की कलियों तक हल्का गुलाबी हो उठा। सकीना की जवानी, जिसे वह विदा होती सी समझ रही थी अकस्मात लौट आयी। बेसाख्ता वह नवाब से लिपट गयी और बोली, 'मैं कहती थी कि मुझसे निकाह पढ़ लेने में ही तुम्हारी इज्जत है। मैं तो कब से इंतिजार कर रही हूँ।

पर अनारन? बादशाह की नाराजगी से बचने के लिए उसे तो बीच से हटाना ही पड़ेगा। खैर, मैं इसका इंतिजाम कर लूंगा। हरम में रखैल या कनीज के तौर पर भी उसका रहना खतरे की घंटी बन सकता है। नवाब ने दिल का अंदेशा जाहिर किया।

तो क्या मरवा दोगे बेचारी को? नहीं नहीं उसने अपना सब कुछ तुम्हें दे दिया तुम उससे यह सुलूक नहीं कर सकते सकीना ने मीठी झिड़की दी। अब वह अनपेक्षित रूप से अचानक 'आप' और 'हुजूर' से तुम पर आ गयी थी। जैसे बात की बात में बीवी के हुकूक पा गयी हो!

मरवाना कोई जरूरी तो नहीं किंतु उसे हरम से तो हटाना ही होगा। यह भी तो हमारी शान के शायाँ नहीं कि हमारी हमनुमा किसी और के

आगोश मे रहे ! हम कैसे सह सकेंगे यह बे इज्जती।' नवाब ने मजबूरी की दुहाई दी।

'इन बातो का फैसला हम नागौर लौटकर करेंगे, यहाँ परदेश मे क्यो हल्कान हो ?' सकीना ने नवाब को कुछ समय के लिए इस दिशा मे सोचने से मुक्त कर दिया।

नवाब खिज्र खा का मन सचमुच अनारा से भर गया था। अनारन उसे अपना बनाने की धुन मे नवाब पर इतना न्यौछावर हो गयी थी कि अब नवाब मे उसे कोई नया आकर्षण महसूस नही होता था। फिर भी उस जैसी सुदर कोई अन्य औरत उसके हरम मे नही थी इसलिए वह उससे महरूम भी नहीं होना चाहता था। बादशाह के पास उसने एकदम झूठा वक्तव्य दे दिया था, इसलिए अनारन का हरम मे बने रहना उसे जोखिम दीख पड रहा था। किसी तरह सकीना की बात गले उतारकर उस समय उसने चुप रहना ही ठीक समझा।

अगले दिन सकीना ने अनारन को सावधान कर दिया। सकीना जानती थी कि नवाब किसी ऐसी स्थिति मे पहुँच चुका है कि कभी भी अनारन से छुटकारा पाने के लिए उसकी हत्या करवा सकता है। इतने समय के सयोग से दोनो म स्नेह हो गया था। नवाब के शोषण से दोनो पीडित थी सकीना भी मन से कभी उस पशु को अपना नही सकी थी अनारन अभी भी गजसिह के सपने लेती थी—हाँ, सकीना परिपक्व बुद्धि थी इसलिए न इतनी मीठी बनती थी कि कोई निगल ले और न इतनी कडवी कि कोई थूके। बस एक सतुलित व्यवहार, नवाब के साथ भी वह अपनी सीमाएँ बनाये हुए थी। अनारन पर मँडरा रहे मुसीबत के बादलो को उसने स्पष्ट देख लिया था और बहिनापे के स्नेह वश वह उसे बचाने की कोई योजना करना चाहती थी।

कहते हैं परोपकार मे ईश्वर का सहयोग होता है। परोपकार की इच्छा मात्र से कार्य सफलता का रुद्ध मार्ग खुलता प्रतीत होता है। परोपकारी जीव को आगे बढने की अत प्रेरणा मिलती है बहुधा उसे बल मिलता है और परोपकार के मार्ग पर चलते हुए वह दूसरो की खातिर मृत्यु से टकरा जाता है। सकीना की स्थिति भी कुछ-कुछ ऐसी ही थी।

दढ निश्चय कर लिया था कि अनारन को हर मूल्य पर बचायेगी। इसी सोच मे उसे राजा गर्जासिह का ध्यान आया और उसने अपने विश्वासपात्र सेवक को सब जानकारी लेने को कहा।

सेवक ने सूचना दी 'शाही दरबार मे सबसे अधिक प्रतिष्ठित योद्धाओं और शासको मे राजा गर्जासिंह का बडा मान है। बादशाह सलामत ने उनकी बड़ी इज्जत अफजाई की है खुद सदेश भेजकर उन्हें बुलाया। यहाँ पिछले मोहल्ले के आखिरी महल मे उन्हें ठहराया गया है। प्रतिदिन हाथी पर सवार होकर वह शाही महल मे जाते हैं। प्रात-साय नदी पर हवा खोरी के लिए जाते हुए भी उनका हाथी पिछवाडे से गुजरता है। आगरा मे वे अकेले आये हैं रानी को साथ नही लाये। रानी से उनके दो सदर लडके हैं—बडा अमरसिंह और छोटा जसवतसिंह।'

सकीना को राहत हुई। एक टीस थी—गृहस्थ होते राजा गर्जासिंह अनारन को स्वीकार करेगा ? वह पगली, पतगा होकर चाद की ललक पाल रही है। लेकिन डबते को तिनके का सहारा। इच्छा ठगिनी भी होती है बलवती भी। नागौर से चलते समय से ही अनारन की इच्छा गर्जासिह के दशनो की बनी थी कोशिश कर देखन मे हज ही क्या है !

समूचे रहस्य और जानकारी को अनारन के साथ बाँटकर सकीना ने अपने मकान के पिछवाडे झरोके से हाथी पर सवार गर्जासिह के दर्शनों की योजना तैयार की। नवाब खिज्र खा का मकान एक ही मजिल का था, ऊपर की छत और हाथी की ऊँचाई लगभग बराबर पडती थी। हाथी के हौदे मे बैठा व्यक्ति छत पर खडे व्यक्ति के सीधा सपक मे आ सकता था गली मे चलते लोगो को उनकी इशारेबाजी का पता भी न चले ऐसी सहज व्यवस्था थी। यथासमय अनारन और सकीना घर की छत पर आ गयी। नीचे कुछ विश्वासपात्र सेविकाओं को सावधान कर दिया गया। नवाब आ जाये या पूछ बैठें तो किस प्रकार स्थिति को सभाला जाये, यह सब उन्हें समझा दिया गया।

अनारन द्वारा उसके रूप शौर्य और बल की निरतर प्रशसा सुन सुन कर सकीना के मन मे भी गर्जासिह को देखने की गुदगुदी होने लगी थी। मकान के पिछवाडे से हाथी पर गुजरते हुए गर्जासिह को देख सकने की

ललक से दोना अभिभूत थी। अनारन का दिल धडक रहा था। उसका राजकुमार अब कैसा लगता होगा ! विवाह और सतानोत्पत्ति के बाद अनारन को दिये निमत्रण की उसे कुछ याद भी होगी !! उधर सकीना की धडकनें भी तेज हो रही थी। पहली बार एक राजपूत वीर को वह एक खास दृष्टि से देखने की मानसिक तैयारी कर रही थी।

दिवाल के पर्दे की ओट मे खडी दोनो स्त्रिया राजा के आने की प्रतीक्षा म थी। तभी घटे का स्वर उनके काना म पडा। मथर गति से हाथी के चलते बजने वाले घटे ने उन्हें गजसिह के पधारने की सूचना दी। चौकन्नी हो गयी वे। निर्निमेष दृष्टि से वे गली के उस ओर देखने लगी, जिधर से घटे की ध्वनि उभर रही थी। कुछ ही क्षणा मे उन्हें आने वाले हाथी के हौदे मे बैठे एक वीर युवक के दर्शन हुए। धनुष की प्रत्यचा पर खिचे हुए तीर की तरह अकडकर सीधे बैठे गजसिह के मुख पर तेज बरस रहा था। आखा मे बिजलिया को लज्जित कर देने वाली चमक चौडी पेशानी प्रलब भुजाएँ चट्टान की तरह मजबूत सीना ! हाथ म भाला पकडा था, पकड मात्र से भुजाआ की मछलियाँ उभरकर दूर से फडकती सी महसूस हो रही थी। कमर मे बधी तलवार की मूठ सुनहरी कमरबद से बाहर झाकती थी। सोने की तारो से बना अगरखा, जिस पर बडे बडे मोतिया की माला हाथी के चलने से जल तरगा की तरह उठती गिरती थी। हाथी ज्या-ज्यो निकट आ रहा था, छत की दीवाल के पीछे छिपी दोनो स्त्रिया का कलेजा उछलकर मुह को आ रहा था। अनारन तो जैसे किसी परम आनद मे खोयी आत्म विस्मृत हुई जा रही थी।

उसके अर्द्ध निमीलित नेत्रो के सम्मुख वह दृश्य झूल रहा था जब छोटी बच्ची के रूप मे वह वीर राजकुमार गजसिह मे मिली थी और उसन कहा था तब तो तुम्हें हमारे साथ रहना होगा !' वर्षों पहले कहे गय वे शब्द अकस्मात उसके कानो मे ध्वनित होने लग थे। उसे लग रहा था कि राजकुमार अब भी कही छिपकर उसके काना मे वे ही शब्द फुसफुसा रहे हैं। सामन हाथी के हौदे पर बैठा वीर कई वर्ष पीछे का कुमार हो गया है और वह बार-बार भागकर उसके पास जाती और कहती, 'कुमार साहब, आप बडे वीर है ' आप बडे वीर हैं मैं बाबा की बेटी बडी सुदर हो

तुम नहीं, आप बड़े वीर हैं' कुछ ऐसा ही गड़ड मड़ड हुआ जा रहा था। शायद उसे होश ही नहीं था कि सकीना भी उसके साथ है।

हाथी उनकी छत के निकट से होता हुआ आगे निकल गया। अनारन मानसिक रूप में शायद अभी भी अपने अरमानों का पीछा कर रही थी कि सकीना ने उसे 'जगाया'। 'कहाँ हो, अन्ना? महाराज तो चले गये। आओ हम भी नीचे चलें।'

ओं हाँ अनारन जैसे सोने से जगी हो जरा भी तो नहीं बदले, वही मेरी इच्छाओं का साकार रूप, वही आँखें वही निर्दोष चेहरा, वहा तक बिल्कुल वही ओजस्वी मूर्ति—इतने वर्षों का अन्तराल जैसे नकार दिया हो! काश, वे मेरे होते! मैं उनकी दासी हुई होती!! नवाब की बेगम बनने के सपनों ने फूल का रस रूप गंध छीनकर घूरे के ढेर पर फेंक दिये जाने की प्रासंगिकता साकार कर दी है आह मैं क्या करूँ आपा, मुझे बचाओ मैं क्या करूँ कहते हुए अन्ना सकीना के गले से लिपटकर फफक उठी।

सकीना ने ढाढस बँधायी, 'घबराओ नहीं मेरी अच्छी बहिन! मेरे जीते जी तुम पर आंच नहीं आयेगी। यदि महाराज गजसिंह किसी तरह तुम्हें स्वीकार करने को तैयार हों तो मैं प्राणों पर खेलकर भी तुम्हें उन्हीं की माला का मोती बना दूंगी। उनका विचार जानना जरूरी है—फिर देखना तुम मेरी करामात।' कुछ देर रुककर सकीना अनारन को साथ लिए अपने कक्ष में चली आयी बोली मुझे चिंता इस बात की है कि राजा आज विधुर होते हुए भी, दो होनहार बेटों के प्यार में तुम जैसी स्त्री को अपनाना भी चाहेगा या नहीं! मैं इस ओर से निश्चिंत हो लूं।'

अनारन को भी आज अपना सब कुछ लुट चुका सा प्रतीत हुआ। राठौरों का सिरताज पराक्रम की सजीव तस्वीर महाराजा गजसिंह भला उस जैसी जठन को क्योंकर स्वीकार करेगा। अपने अरमानों बलवलों और आकांक्षाओं के अँधेरे में उसने इस ओर कभी देखा ही नहीं। देखा भी हो तो आशा की चकाचौंध में यथार्थ का रजत-बोध क्योंकर होता! तो क्या अब निराशा के अंधकार में ही पड़े पड़े मर जाना होगा! अनारन को ऐसा लगा जैसे उसकी समूची जीवनी शक्ति नष्ट हो गयी हो। पेड़ से

छुटी लता की नाइ वह चक्कर खाकर मसनद पर लुढक गयी। सकीना उसके नेकट न होती तो शायद वह कई घटे वहीं मूर्छित पडी रह जाती। दासी से गुलाब जल मँगवाकर सकीना न कुछ उपचार किया और अनारन होश मे आते ही छोटी बच्ची की तरह आपा, आपा' करती सकीना से चिपटकर अविरल रोने लगी।

करुणा की भावना बडी विचित्र होती है—किसी को दु ख मे देखकर तो जागत होती है किंतु ईर्ष्या का सहयोग पाकर बडी निमम हो जाती है। ईर्ष्यालु अपने प्रतिद्वद्वी पर आघात पहुँचाने क लिए करुणा के आवरण मे उसे सुझाव के माध्यम से ऐसे सुझाव दता है, जिसस उसका रास्ता साफ हो जाये। भले ही प्रतिद्वद्वी किसी अनचीन्हे माग पर विनाश को प्राप्त हो, या नियति के हाथो समद्ध जीवन जिय ! ईर्ष्यालु इधर से आख मूदकर अपन लक्ष्य की ओर बढता है। शायद यही स्थिति सकीना की थी। अनारन स उसका बहिनापा हो गया है, यह दुरुस्त है किंतु दोनो की स्थिति म दिल से प्यार का प्रश्न नही उठता। दोना के सबधा का आरभ ईर्ष्या ही थी, और ईर्ष्या का बीज कभी नष्ट नही होता, रूप बदल जाता है। सकीना भी यद्यपि बहिनापे के कारण यह नही चाहती कि नवाब अनारन से छुटकारा पाने के लिए उसे मरवा डाले, यही करुणा ह। किंतु भीतर से वह प्रसन्न है कि अनारन से छुटकारा मिलने से नवाब पर केवल उसी का अधिकार होगा। इसी करुणा और ईर्ष्या के द्वद्व म उसकी वाछा ह कि किसी तरह अनारन नवाब से टूट जाय। उसका मर जाना सकीना की करुणा को सह्य नही।

अनारन को आसू बहाते देखकर करुणा ने जोर मारा। यदि राजा गजसिंह अनारन को किसी भी रूप मे स्वीकार कर सके, तो नवाब के नरक से निकलन मे वह उसकी सहयोगिनी हो सकती है। ऐसा विचारकर सकीना ने गजसिंह का मन जानने का निश्चय किया। नवाब के हरम की औरत, जिसका प्रवेश तो जिंदा होता है, निकास नही, बाहर जाकर गजसिंह से भी तो नही मिल सकती थी। किंतु हरम म रहकर नवाब की अनेक रखैलो के बीच अपना महत्व बनान और कायम रखन की इच्छा ने उस अदाज ब्यान और साज-सौंदय के पुरुष-मोहक अनक हथकडो म प्रवीण बना दिया

था। वह यह भी जानती थी कि नागौर वापस पहुँचकर अनारन का जावित रह सकना सभव नही होगा—इसलिए यही आगरा मे उसका कोई स्थायी प्रबध सकीना कर देना चाहती थी। धीरे धीरे उसने एक सार्थक याजना तैयार कर ही ली।

अगले दिन प्रात यमुना तट पर सैर के लिए जाने को राजा गर्जसिंह का हाथी जब पिछवाडे स गुजरा, तो सकीना न दीवार की ओट स अनारन के हाथ से लिखा एक पत्र हाथी के हौदे मे गिरवा दिया। पत्र म वर्षों पूर्व राजकुमार गर्जसिंह के शौय से प्यार करन वाली एक सुदर चचल लडकी की याद दिलायी गयी थी। लडकी तब से आज तक अपने राजकुमार की सुदर यादो मे खोयी हुई है—नवाब खिज्र खाँ ने बलपूर्वक उसे अपने हरम म डाल लिया है। क्या पराक्रमियो के सिरताज राजा गर्जसिंह उस निरीह अबला को उस नरक से मुक्त नही करायेंगे ? पत्र की समाप्ति इसी प्रश्न को उछालकर की गयी थी।

हौदे मे बैठा गर्जसिंह कुछ गिरने से चौंका। जिधर से कुछ गिरा था, उधर दृष्टि उठायी। कुछ नही था वहा, यो भी हाथी कुछ कदम आगे बढ चुका था। राजा ने पत्र उठाया, पढा और विजयोत्सव के उस क्षण को याद करने लगा जब गुडिया सी एक सुदर लडकी ने चपलतापूर्वक उसके गले म फूल माला पहनायी थी और उसकी वीरता को सदा अपनी आँखो के सम्मुख देखन की तमन्ना प्रकट की थी। बचकानी-सी बात, वह कली कितना मनमोहक पुष्प हो गयी होगी, कितना रूप, रस गध उसका यौवन भार हुआ होगा और वह दुष्ट खिज्र, काला भाडा भँवरा ! यदि पुष्प की अभिलाषा मेरे उद्यान म महकने की है तो वहा की धरती इतनी कठोर तो नही कि चाहत का फूल भी न खिल सके ! और गर्जसिंह खो गया उस कल्पना लोक म जहाँ चपला-सी चचल गुडिया अब भरपूर यौवन के आवेग मे सौदय की सेज पर सायी है। हाथी चलते चलते यमुना-तट पर पहुँचा और महावत क अकुश क इशारे से बैठ गया। चारो ओर स्नानार्थियो की भीड। राजा गर्जसिंह के कुल पुरोहित का निकट आकर राजा को आशीर्वाद देना और स्नान के लिए हौदे स बाहर आने की प्रार्थना करना, राजा ने जागती आखो से सब कुछ देखा किंतु कुछ भी पता नही चला

उसे। मन से वह किसी अपनी चाहने वाली के विचारो मे डूबा था। 'कैसी होगी वह ? खिज्र के हरम म कैसे पहुँची और अब क्यो भागना चाहती है ? मुझे इसमे सहयोगी होना चाहिए या नही ? राजपूत के पराक्रम को एक विवश सुदरी ने पुकारा है क्या उसकी मुक्ति वीर धम नही ?' ऐसे अनेक प्रश्न राजा गर्जसिह के मन मस्तिष्क को झझोड रहे थे अन वह अद्ध चेतन सा पुरोहित के सकेत पर हाथी से उतरकर स्नान के लिए चल दिया।

सध्या समय जब राजा अपने हाथी पर उसी जगह से गुजरा, तो उसन उस स्थान पर पहुँचकर नजर घुमायी जहाँ से वह पत्र उसके हौदे म गिरा था। खिज्र क मकान पर उसकी आखो के सामन एक बिजली-सी चमकी और लुप्त हो गयी। सकीना ने अनारन को सजा सँवारकर पूव योजना-नुसार छत पर भेजा था। राजा गर्जसिह के दशन पाकर वह सतप्त हुई, लज्जावश एकदम पीछे हट आयी थी। फिर भी राजा गर्जसिह की सौदय-पारखी दष्टि ने न केवल अनारन की आखो मे घुमडत चाहत के बादल दख लिए थे बल्कि उसके रूप-सौदय को दखकर राजा का दिल बल्लियो उछल गया था। उसका तजस्वी मुख, शख सी ग्रीवा, गोल प्रलब भुजाएँ आकपक नाक नक्श, गोर गोरे हाथ और मदिर मुस्कान इतना ही दख पाया था राजा ! छत पर लहँगा-कुर्त्ता ओढनी पहने शर्माती सी अनारन का उतना भाग ही हाथी पर बठे राजा को दिखायी दिया था, किंतु उसके उद्दीप्त भावो को परिपुष्ट करने के लिए यह भी क्या कम था ? अनारन तो लजा-कर छत से नीचे चली गयी, राजा भी आग बढ गया, किंतु दष्टि की डोरी पर स होते हुए दानो के दिल नट की नाइ आर पार हो गय।

अनारन की छोटी सी इच्छा की वचकानी फुलवाडी अकस्मात उद्यान बन गयी। वह भागकर सकीना से जा लिपटी। सकीना के वक्ष म मुख छिपाकर बोली आपाजान उन्हाने मेरी ओर दखा।'

'तब ? सकीना ने अन्ना का मुख दोनो हाथा से ऊँचा करते हुए पूछा, 'तुमने क्या किया तब ?'

अन्ना घबरा गयी। लजाकर बोली, मै क्या करती ? मुझे तो शम आ गयी और मैं नीचे की तरफ भागी।'

'धुत, पगली', सकीना न प्यार से डाँटा 'नवाब के साथ रहत शम

नही जाती कभी जो वहा सब गुड गोबर कर आयी !'

अनारन न दोनो हाथो से चेहरा ढक लिया। सचमुच प्यार म लज्जा उद्दीपन होती है देह भोग मे लज्जा बाधक ! नवाब ने अनारन से भोग का नाता बनाया है जबकि अनारन ने राजा गर्जसिह को सदा मन स प्यार किया है। सकीना के कहन पर अनारन न जब मुख से हाथ हटाये, तो उसका चेहरा लाल हो चुका था, विशेषकर कान तो जसे किसी न मसल दिये हो।

सकीना ने अगले दिन का कायक्रम बनाया। अनारन सजधजकर छत की ओट मे रहगी। राजा के निकट आने पर सामने आकर अभिवादन करेगी और सीने पर हाथ रखकर कुछ अनुभावो के माध्यम से 'मुझे मुक्त करो, मैं तुम्हारी हूँ जसी अभियक्ति करेगी। यथासमय ऐसा ही हुआ भा। राजा गर्जसिह ने दृष्टि भरकर अनारन को देखा, अनारन का रक्तिम होता हुआ चहरा उसे भा गया। सचमुच उसके अतचक्षुओ के सामने वर्षों पहले की सुदर गुडिया सी अनारन साकार हो उठी। राजा ने महसूस किया कि अनारन की सारी सुदरता विवशता और अरोचकता से आच्छादित हो रही है। उसकी आखो से अकस्मात चू जाने वाले अश्रु अनारन की अत वेदना कह गये। निश्चय ही यह अनुभाव कायक्रमानुसार नही था, तथापि आकस्मिक रुलाई न राजा को उद्विग्न बना दिया। उसका हाथी चलता हुआ आगे बढा जा रहा था और राजा राजकीय शिष्टताओ को विस्मत किये पीछे को देखता और हाथ उठाकर सात्वना-सी देते हुए व्याकुल हो रहा था।

सकीना को इससे बडी ढाढस मिली। वह महसूस करन लगी थी कि इस प्रकार यदि राजा गर्जसिह अनारन को पाने के लिए उद्विग्न होगा, तो शायद अनारन का खिचा के हरम से निकल सकने का कोई रास्ता खुले। वह जानती थी कि इस हरम म अनारन की मत्यु बहुत निकट है और नवाब अपनी नाक की खातिर अपनआप अनारन को छोडेगा नही। यो भी अनारन क हरम म आन पर जो ईर्ष्या सकीना म पैदा हुई थी उसकी अवचेतन प्रतिक्रिया अनारन का हरम से भगा देन का रूप लेन लगी थी। अत उसन पहन दिन की तरह ही भाज पत्रक के एक टुकडे पर अनारन के मृत्यु मुख

मे होने की सूचना और शीघ्रतापूवक मुक्ति की प्राथना राजा गर्जासह को पहुँचा दी । अब सारी स्थिति भाग्य पर छोड दी गयी—हाँ, अनारन आते जाते राजा का वहा से गुजरते देखने का लोभ सवरण नही कर पाती थी, इसलिए उस समय बराबर छत पर बनी रहती थी ।

शाहजहा के सिंहासनारूढ होन के उत्सव समारोह एक माह तक चले । सब अधीनस्थ राजा महाराजा और नवाब इस बीच आगरा म ही बने रहे । नवाब खिज्र खाँ बादशाह की डाट से घबरा गया था—पहले उसकी रियासत मे अव्यवस्था की भी कई शिकायतें हो चुकी थी । जहागीर ने तो एक बार उससे रियासत छीन लेने तक की धमकी द दी थी । किंतु इस बार अपराध सगीन था । राजपूत परिवारा तथा कुछ दलो की ओर से बलात उनकी लडकियो को हरम म डाल लेने की शिकायत हुई थी, बादशाह अभी किसी कीमत पर राजपूता से बिगाडना नही चाहता था । झूठ का सहारा आखिर कब तक चल सकता है । उस दिन खिज्र खा न साफ मुकरकर अपने को बादशाह की नाराजगी से बचा लिया था, किंतु यदि कोई बादशाह को सच्चाई बता दे, ता खिज्र का क्या हागा । वह नित्य इसी चिंता मे रहन लगा था, अत यथा शीघ्र नागौर लौटकर अपने हरम मे से हिंदू औरतो को अलग कर दना चाहता था । हा, मानसिक तौर पर उसे यह सह्य नही था कि उसकी कोई रखैल किसी और के सग रहे, इस दिशा म उसन पहले भी एकाध औरत के गभ रह जान पर उससे मुक्ति पाने की खातिर उसे विष देकर मार डाला था । दूसरी ओर अब उसे वश चलाने की भी चिंता होन लगी थी इसलिए वह अपनी खानदानी रसूमात से किसी मुस्लिम औरत से निकाह पढकर उस बेगम बना लन को भी उत्सुक हो उठा था । हरम के भीतर इस पद के लिए उसे सकीना ही सर्वोपयुक्त दीख पडती थी, किंतु बाहर से भी कोई प्रस्ताव स्वीकार हो सकता था । इसीलिए एक दिन शाही दरबार मे उसने वापसी के लिए बादशाह की इजाजत चाही ।

'हाँ हम आप सबके बहुत मशकूर हैं । आप लोगा ने यहाँ आकर हम

खुशी दी है, अपनी वफादारी का सुबूत दिया है, पर क्यों इस बार शिकार की रवायत की किसी ने बात ही नहीं चलायी।' बादशाह शाहजहाँ ने मुस्कराते हुए टिप्पणी की।

जयपुर के महाराज शीघ्रता से बोले, 'यही तो, बादशाह सलामत! मैं भी अर्ज करना चाहता था। आपके साथ शिकार पर चलने से जो खुशी हासिल होती है, वह अकेले कहाँ? शिकार पर जरूर चला जाय अन्नदाता! सबब से सब लोग इकट्ठा हुए हैं, संगति का भी तो आनन्द होता है। आप जब हुकुम करें शिकार का प्रबंध कर लिया जायेगा।'

नेक काम में देरी क्या?' बादशाह ने मुस्कराते हुए कहा। 'कल ही कूच किया जाय', शाही फरमान जारी हो गया।

सब राजा महाराजा और नवाब खुश थे, उन्हें बादशाह के साथ साथ-साथ रहकर शिकार की इज्जत बख्शी जा रही थी। लेकिन खिज्र की हालत अजीब थी—रोजा छुड़ाने गये थे नमाज गले पड़ी। वह नागौर पहुँचने की जितनी जल्दी मचा रहा था, उतना ही विलंब आड़े आता था। जाने नियति क्या गुल खिलायगी! यही मानकर वह चुप रह गया।

राजा गजसिंह ने अकेले में बादशाह से खास दरख्वास्त की और दीवान साहब की अलालत के बहाने वापिस जोधपुर लौटने की इजाजत चाही। बहाना वाजिब था। यद्यपि शाहजहाँ चाहता था कि गजसिंह सरीखा वीर शिकार के मौके पर उसके साथ रहे, लेकिन राजा का लौटना भी तो जरूरी था। दीवान की बीमारी की सूचना अभी दो दिन पहले ही तो दरबार में मिली थी। शिकार पर चार छः दिन लग जाना सहज ही था, अतः बादशाह ने भारी मन से गजसिंह को जोधपुर लौट जाने की इजाजत दे दी और खुद सब ताम-झाम लेकर अगले दिन प्रातः ही वजीरों मशीरों के साथ शिकार के लिए कूच कर गया।

खिज्र खाँ बादशाह के साथ शिकार पर चला गया। जाते समय उसने हरम की सुरक्षा का पूरा प्रबंध कर दिया था। विश्वासपात्र अधिकारियों और सतर्क पहरेदारों को यथोचित आदेश दे दिये गये थे, क्या मजाल कि नवाब की अनुपस्थिति में महल के भीतर चिड़िया भी पर मार सके। सब तरह से निश्चिन्त होकर नवाब ने प्रस्थान किया था। इधर राजा गज

सिंह जोधपुर लौटने की तैयारी कर रहा था। उसे भी अगले दिन प्रात ही जोधपुर के लिए कूच करना था। अनारन की प्राथना उस तक पहुँच चुकी थी और वह गभीरतापूवक उस पर विचार भी कर चुका था। उसे मालूम था कि खिज्र शिकार पर गया है। हरम की रक्षा के कडे प्रबधो और अनारन के बाहर आ सकने की असभावना का भी वह समझता था। अनारन के लिए उसके हृदय म प्रेम, सहानुभूति, करुणा और मुक्त करवाने की वाछा के मिल-जुले भाव उद्वेलन मचा रहे थे। थोडे से साहस की अपेक्षा थी, मैदान तो पहले से ही साफ था।

राजा गजसिंह ने अपन सग आय सब लागा को जोधपुर के लिए रवाना कर दिया। एक घुडसवार दस्ता राजा न अपने हाथी क साथ साथ चलने को रोक लिया। प्रात आगरा से चलत समय सनिको, कारिंदा, घरेलू सेवका, खेमाबरदारो और बावर्चियो का आदश दे दिय गय थे कि वे दिन भर चलकर आगरा स पद्रह कोस आग निकल जायें और वही राजा की प्रतीक्षा करें। रात होन तक राजा उनके साथ आ मिलेंगे आर अगले दिन सब इकट्ठे आगे बढ़ेंगे। राजा के पीछे रुकन का कारण किसी को मालूम नही था। सब कयासाराइयाँ कर रह थे और आपस मे बतियाते आग बढे चले जा रह थ। अग रक्षक घुडसवार सनिक दस्त के सिपाहियो को भी राजा के मन की बात अज्ञात थी और राजा उद्विग्न हु ा इधर उधर घूम रहा था।

राजा के भीतर भावा का एक युद्ध चल रहा था। अनारन की सुदरता, जवानी, बेबसी और अपने लिए चाहत देखकर उस चाहने लगा था, किंतु वह नवाब खिज्र खाँ की रखल है उसे भगा ले जान का अथ नवाब से शत्रुता मोल लेन से कम तो न था। पुन नवाब बादशाह की मसलहत म है शिकायत हान पर शायद बादशाह भी नाराज हा। नवाब की उसे कोई विशेष परवाह न थी, उसस निपट सकन की शक्ति गजसिंह की भुजाओ म थी, किंतु बादशाह की नाराजगा ? भीतर की स्थिति का ज्ञान राजा को नही था। बादशाह क सामन खिज्र खा क झूठे बयान की जानकारी उसे नही था, न ही ऐसा काई सकत सकीना द्वारा भेज रुक्क म था। महारानी की मृत्यु के कारण घर म उसकी नाराजगी या सौतिया डाह की भी उस चिंता न थी—रानी पहल भी उसके ललित-नायकत्व से परिचित थी।

अनारन को मत्यु-मुख म उसके भाग्य पर छोडकर वहाँ से चला आ उसकी राजपूती आन के विपरीत था। एक स्त्री ने उसके पौरुष को पुकार था, वेबसी के जीवन से मुक्ति दिलाने के लिए। उसकी बात सुनी-अनसुनी करना राजा की दृष्टि म घोर पाप का पर्याय था। उधर खिज्र के घर पर लगा पहरा, चाक-चौकस प्रहरी, सैनिक दस्ता और मुसलमान घर के हरम जहाँ स्त्री को पर्दे से बाहर झाँकने तक की इजाजत नहीं। अनारन क उस घर से निकाला जाय तो कैसे ? यही अनुत्तरित प्रश्न उस डसता था और परिणामतः मन की पट्टिका पर बहुत कुछ लिख लिखकर वह मिट जा रहा था।

अनारन और सकीना भी घर के भीतर कुछ ऐसी ही स्थितियों में जी रही थी। नवाब चला गया था। सब वजीर-अमीर शिकार पर गये हैं, व जानती थी राजा गजसिंह भी गया होगा यह स्वाभाविक ही लगता था उन्हें। अतः हफ्ते भर के लिए उनकी सारी सोच ठंडी पड गयी थी, उनकी गतिविधियों का जसे पाला मार गया था और उनकी विकसती इच्छाओं तथा आशाओं पर पानी फिरता दीख पड रहा था। सकीना का विश्वास था कि सबके लौटने पर कुछ नहीं हो सकेगा। यह सुनहरी मौका खुदा ने जुटाया है, अगर अनारन इस मौके का फायदा न उठा सकी तो फिर कभी वह यहाँ से जिंदा आजाद नहीं हो सकेगी। लेकिन राजा को कुछ तो करना चाहिए था सच्चा राजपूत है वह—एक औरत को मुसीबत म देखकर भी वह चुप कसे लगा गया ? अगर उसे सबके साथ शिकार पर जाना ही पडा हो तो भी उसे कोई प्रबध तो करना ही चाहिए था। दोनो एक ही कक्ष म बैठी इसी चिंता म मग्न थी। अन्य सब दास दासियाँ और रखलें पूरी परिस्थिति से अप्रभावित अपने अपने काम धधा म व्यस्त थी। अनारन के कानो म अचानक घंटा बज उठा।

सुनो सुनो आपा, घंटे की आवाज, जसे हाथी आ रहा हो, अनारन ने चिहुँककर सकीना का ध्यान उधर दिलाया।

'आवाज तो वैसी ही है, किंतु आज कैसे आयेगा हाथी ? राजा साहब शिकार पर हैं। पीछे सारा मुहल्ला खाली पड़ा है, सभी अमीर बादशाह के साथ शिकार का लुत्फ ले रहे है। ऐसे ही कोई फीलवान नदी पर ले जा

रहा होगा हाथी का !' सकीना ने सदेह प्रकट किया।

अनारन न तरमीम की 'नही आपा, मुझे तो आवाज राजा साहव के हाथी के घटे की ही लगती है। इजाजत दो तो देखकर आऊँ ?'

सकीना मुस्करा दी 'पगली, इजाजत मागती है। घटे की आवाज सुनकर ही दिल वल्लियो उछल रहा है अगर सचमुच राजा हुए तो क्या करोगी ! जाओ देख लो मैं इधर पहरुआ का ध्यान रखती हू।'

अनारन जैसे उडती हुई तितली की तरह झपटकर छत पर पहुँच गयी।

तब तक हाथी अभी दीख नही पडता था लेकिन अनारन ने गली के अत मे कुछ राजपूत घुडसवारो को वडी चौकसी म खडे देखा। गली का वह छोर छत से साफ दिखाई दे रहा था। अनारन को लगा कि हो न हो, वे सिपाही राजा गजसिंह के ही है। भागती हुई वह नीचे आई और सकीना को भीतर ले जाकर अलग से अपन दिल की धडकनें गिनाने लगी।

हाथी के गले मे बँधे घटे का स्वर अब बहुत निकट से साफ-साफ सुनायी देने लगा था। सध्या का झुटपुटा हो चुका था कही कही आसमान म कोई सितारा भी आँख मिचौनी करने लगा था। कृष्ण पक्ष की सध्या और सुन सान गली ! घरो के स्वामियो के चले जाने पर कोई दिया बत्ती भी दीख नही पड रही। नवाव के द्वार के प्रहरी काम की बारी बाँधकर भोजन तैयार करन म जुट गय थे, घर के भीतर भी सब अपने अपने कक्षो मे अलग-अलग खिचडी पका रही थी। किसी को हाथी के घटे के स्वर का ध्यान तक भी नही था, केवल अनारन और सकीना के प्राण काना मे बसे थे। उन्हे हाथी का वढता हुआ एक एक कदम ढोल पर थाप की तरह सुनायी पड रहा था। हाथी के आने म अब किसी को सदेह नही रहा था, किंतु क्या राजा गजसिंह ही आय हैं यह अभी निश्चित नही था। दोनो स्त्रियाँ चुपके से सीढिया के माग से ऊपर पहुँच गयी और दीवारा की ओट लेकर पीछे की सुनसान अधेरी गली मे झाँकने लगी।

मौसम वडा सुदर था। हवा म कुछ ठडक आ गयी थी, जोकि शीता-गमन की सूचना दे रही थी। फर्राटे से दोना की ओढनियाँ उडी जा रही थीं। अनारन उस गहराते हुए अधकार मे पूनो के चाँद के समान छत पर खडी जरा दूर से देखने वाले आगरा के लोगा को छल रही थी। काली

होने लगी थी।

महाराज की ओर से दोनो की शिक्षा का अत्युत्तम प्रबध किया गया था। छोटा कुमार लिखायी पढायी मे बडे से कोसो आगे था। उसमे ऐसी ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा थी कि वह गुरजी द्वारा बतायी गयी किसी भी बात को जल घट मे गिरी तेल की बूद की नाइ व्यापक बना लेता था। इसके विपरीत अमरसिंह की बुद्धि नमदे की भाँति थी, जिसमे किया छिद्र स्वयमेव ही बद हो जाता है। हाँ शस्त्रास्त्र के खेल म जसवत अमर का मुकाबला नही कर पाता था। तलवार चलाने भाला फैंकने कटार भाकने म अपनी आयु के बालको मे शायद जोधपुर भर म उसकी कोई तुलना न थी। जसवत भी कायर नही था। उसके हाथ की तलवार छीन सकना भी सिंह की माँद म प्रवेश सरीखा ही दुष्कर था किंतु अमर हमेशा उस पर भारी पडता था। अमर शिकार का शौकीन था जसवत काव्य ग्रथो को पढने और काव्य रचना की सुदृढ प्रवत्ति पाल रहा था। तात्पय यह कि दोनो राजकुमार माँ के अभाव मे असहज विकास ले रहे थे—बाल्यावस्था के लाड प्यार और कोमलता सापक्ष सस्कार दोनो मे नहीं बन पा रहे थे। राजा गजसिंह को इस दिशा म विचारने का अवकाश नही था। देख भाल करने वाले सरदार राजकुमारों की प्रवत्तियो को अपरिपक्व बुद्धि की अस्थायी रुचियाँ मानकर अपनी स्वामि भक्ति का परिचय देते थे। भविष्य म सब ठीक हो जायेगा राजा गजसिंह को यही रपट मिलती थी।

सवदनशील जसवत शिकार पर भी पशु पक्षियो की किल्लोल ही देखता रह जाता था। मादा पशु द्वारा अपने बच्चो के पोषण-सरक्षण के दृश्य उसे बहुत लुभाते थे और वह कदाचित घटो उन्ही दृश्यो म खो जाता था। जबकि कठोर मना अमरसिंह छोटे बडे पशु पक्षियों को खिला खिला कर मारने मे रस लेता था। सशावक मगी पर बाण चलाने मे उसे आनन्द आता था और जब मगी के मर जाने या तडपते होने पर उसका छौना हत प्रभ होकर आँसू बहाता तो अमर को खुशी होती थी। शायद अपने अवचेतन म वह भगवान से बदला लता था जिसने उसे मातृ विहीन बनाकर आसू बहाने को छोड दिया था—वह जगल के पशुओ को मात विहीन करके भगवान को मुह चिढाता था। उग्रता, अक्खडता और हठवादिता के कारण

अनेकधा यह महाराज गजसिंह के लिए लज्जित होने का कारण बन जाता था किंतु हल क्या था ?

मुहिम पर या बादशाह की सेवा में रहने के कारण महाराज गजसिंह कुमारों की ओर अधिक ध्यान नहीं दे पाते। अमरसिंह की बढ़ती हुई उद्दंडता से वे मन-ही मन दुखी तो होते थे किंतु यथेष्ट अभाव पूर्ति उनके वश की बात नहीं थी। पुनर्विवाह से यह समस्या हल नहीं हो सकती थी—नयी रानी के कारण तो शायद अधिक सिर-दर्द का शिकार बनना पड़ता। गजसिंह सोचते थे कि तब राजगद्दी के लिए होने वाले षडयंत्र उनके शांत जीवन को विषाक्त कर देंगे। किसी भी स्त्री के भीतर राजमाता बनने की वांछा उनके राजकुंवरों को अधिकारच्युत कर देगी। दोबारा विवाह के भावी परिणामों को जब वे दूर तक सोचते थे, तो कांप जाते थे। उन्हें अपने कुमारों से सहज प्यार था इसीलिए मंत्रियों-दीवानों के कहने समझाने पर भी उन्होंने दोबारा विवाह का विचार कभी नहीं बनाया था। वे शुद्धाचरण और ईश्वर भीरु जीव थे, इसलिए उनके हरम में पड़दायतों, बडारणों आदि की फौज भी मौजूद नहीं थी। राजस्थान के राजाओं में एक रात्रि के सहवास का मोल आजीवन संरक्षण और पालन पोषण से चुकाने की नीति महाराज गजसिंह को मान्य नहीं थी। अतः वे अपनी कामनाओं को संयत कर बालकों के लिए धाय माता तथा योग्य प्रशिक्षकों का प्रबंध करके ही अपना विधुर जीवन काट लेना चाहते थे। यही कारण था कि महाराजा के जोधपुर पहुंचने से पूर्व आगरा में घटित घटनाओं का जो समाचार जोधपुर पहुंचा उससे महलों में रोमांच जगा और किसी परिवर्तन की आशा से कुछ दुगारमक भाव-वीणा झुनझुनाने लगी।

इन्हें राजकुमार मां के प्यार से वंचित थे। धाय मां को विश्वास था कि अनारा सरीखी औरत बच्चों का उनका प्राप्य तो क्या देगी उनसे पिता का प्यार भी छीन लेगी। इसी परिताप में उन बालकों का भविष्य और अंधकारमय प्रतीत होने लगा था। बचपन से ही गजसिंह की हृदय स्थापित मूर्ति की पूजा करती रहने वाली स्त्री भी जब एक की न बनी रह सकी यह दूसरे का क्या बना देगा, कौन जाने! महलों की वर्तमान स्वामिनी धाय-मां ने अनारा को देखे बिना ही, उसके विरुद्ध शस्त्र उठा लेने

की योजना बनाने की शुरुआत कर दी। उसके लाडले कुमारो का क्या होगा, इसी चिंता मे घुलने लगी वह!

बहुत सभव है कि धाय माँ की इस स्थिति के पीछे अधिकारच्युत होने की अवचेतन सभावना और अभी न आँकी जा सकने वाली ईर्ष्या हो, फिर भी प्रकट या अप्रकट मे वह राजा के द्वारा अनारन के उडा लाने और जोध पुर के महलो की ओर बढने के तथ्य को मन स्वीकृति नही दे पायी। अश्र पूरित नेत्रो स उसने दोनो कुमारा को अपने आँचल म छिपाते हुए रुआँसी आवाज म कहा तुम्हारा क्या होगा, मेरे बच्चो! चुडैल तुम्हारे पिता को भी छीन लेगी तुमसे! कहते हुए बच्चो को सीने से भीचकर मन-ही-मन धाय मा ने जैसे कोई सकल्प लिया।

बच्चा का सोने का समय था, अत धाय मा ने उन्ह शयन-कक्ष में पहुँचाया। सेवक दो गिलास दूध रख गया था। बडे प्यार से बहला फुसलाकर दोना कुमारा को दूध पिलाया और उन्हें अपने-अपने विस्तर पर लिटाकर उस परी की कहानी सुनाने लगी, जिसे देव उठा लाया था और वीर राजकुमार परी की पुकार पर उसे देव के बधना से मुक्त करके अपने महलो का श्रृगार बनाना चाहता था। देव भी कुछ कम नही था—दोनो अपने-अपने हर्बे आजमा रहे थे अपनी शक्तिया को तौलते और नित्य नयी योजनाएँ बनाते थे। आखिर एक दिन वीर राजकुमार परी को देव की कैद से छुडा लेने मे सफल हो गया बच्चे कहानी पूरी होने से पहले ही सो गये।

शहनाई का धीरे धीरे बढता हुआ स्वर पौ फटन का सूचक था। किले की दशनी डयाढी के ऊपर बने नक्कार खाने म बडी मदिर मु[illegible] की
जा रही थी। नगाडे पर लय ताल मे [illegible] इतनी सतुलि[illegible]
थी, कि शहनाई का मधुर [illegible] आकषक
वातावरण म मिश्री घुल जाती [illegible] वद
होने लगते थे, जसे रात भर [illegible] चाल
[illegible] मे पख तोल [illegible]

जीवो को सुवासित थपकी देते हुए उनके कानो मे शहनाई की मीठी ध्वनि फूकता और लोग प्रेयसियो के परिरम्भन जल से मुख धोकर सूर्योदय का स्वागत करते। चौखलाव की बगीची में बावडी के चारो ओर की हरितिमा ही राजस्थान के रेगिस्तान मे वनस्पति पर सूर्योदय के प्रभाव को प्रकट करती थी। मडोवर का नखलिस्तान तो वहा से दूर था—राजाओ, महाराजाओ को जब कभी विशेष ताजगी की अपेक्षा होती, तभी वहाँ जाते थ। अन्यथा चौखलाव मे चटखती कलियो की मादक गध से ही सतोष पा लेते थे। यही खिलने वाले कुछ पुष्प जोधपुर के कुलदेवता की भेंट करके धाय मा अपना प्रत्येक नया दिवस आरम्भ करती थी। मुह अंधेरे उठकर महलो के भीतर से किले के परकोटे के साथ साथ चौखलाव बगीची मे उतरने वाली सीढियो से होते हुए धाय माँ अपने हाथो मे कुछ फूल बीनकर लाती, कुलदेवता के चरणों पर अर्पित करते हुए गले म फल डालकर हाथ जोडे नित्य राजकुमारो के कल्याण की प्राथना करती और तब उनके शयन कक्ष म आकर उन्हें प्यार से चूम लेती। धाय माँ का चुम्बन स्पश ही दोनो राजकुमारो के जागने का बहाना था—सोते सोते धाय माँ के गले मे बाँहे डालकर छोटा जसवन्त न उठने को मचलता, किन्तु मेहराबो से छनकर आने वाली सूर्य किरणो को कौन समझाये ? वे कक्ष की दीवारो और फश पर रूई के फाहो की तरह या बिखर जाती, कि राजकुमार भी उन्हें बटोरने का लोभ सवरण न कर पाते। और बालक जग जाते।

जब तक बालक आरम्भिक दिन चर्या से मुक्त होते महाराज उनके लिए कलेऊ का प्रबध करता। धाय माँ स्वय अपन सामने उन्हे कलेऊ करवाती, उनके सग बतियाती, उन पर बलिहार जाती और तब तक उपस्थित हो आने वाले शिक्षकों को सौंप कर स्वय महलो की देख भाल तथा दास-दासियो को काम समझाने मे प्रवृत्त हो जाती। कई वर्षों से दिवसारम्भ का यही नियम था, यही नियति थी, किन्तु आज धाय मा के मन मे कहीं सन्देह का सप बार बार फुफकार कर उसे बालको के प्रति अतिरिक्त सजग बना रहा है। बारहा चाहकर भी वह अपने ध्यान को उधर से बाँट नही पाती। उसे बालको के भविष्य की चिन्ता है। जब से उसे समाचार मिला है कि महाराज किसी मुस्लिम नवाब के हरम से किसी

औरत का भगाकर ला रहे हैं, तब से बच्चो के प्रति वह अपना उत्तर दायित्व बढ़ गया महसूस कर रही है और इसी आकुलता मे आज उसका मन किसी अन्य काय म नही लग रहा है।

महाराजा को आज अपनी प्रेयसी अनारन बाई के साथ नगर प्रवेश करना है अत न्दास-दासिया सनिक रक्षक, खवास और महलों के अधिकारीगण सब स्वागत समारोह की तैयारी मे सलग्न हैं। नगर के द्वारों को सजाया जाना तो रात्रि से ही शुरू हो गया था। अब तोरन द्वार बनाये जा रहे थे वदनवार बाँधी जा रही थी, दुग के मुख्य द्वार से लेकर भीतर महलो तक के पत्येक महराब मे अगरू चदन का चूण जलाया जा रहा था। सारा वातावरण सुगधि से महकने लगा था।

आगरा से आने वाला के लिए प्रवेश फतह पोल की ओर से होना था इसलिए मुख्य द्वार के ऊपर मचान बनाकर शहनाई वादक बिठा दिये गये थे। मचान से लेकर नीचे आधे द्वार की ऊँचाई तक फूलो की लड़ियाँ लटका दी गयी थी जो निश्चय ही धरती से इतनी ऊँचाई तक रखी गयी थी कि हाथी पर वैठकर वहाँ से गुजरने वाले व्यक्ति के माथे पर सेहरे की लडियो का स्पश बन सकती थी। फतह पोल के बाहर घुमावदार माग पर चादनी लगा दी गयी थी और भीतर पोल से चौकीदारो के कक्षो तक सगीत के विभिन्न वाद्य यत्रो पर अपनी कला के प्रदशन करते हुए साजिदें सब थे। कोई तरग वजा रहे थे किसी के पास झालर थी तो कोई दूसरा चग पर हाथ आजमाता हुआ दीख पडता था। राजस्थान का परम्परित सगीत भीलों के माट वादन मे मौजूद था। इसे प्रमुखता प्रदान करने की खातिर प्रबंधकों ने चौकीदारो के कक्षो के समाप्त होते ही दूसरी डयोढी पर मचान बनाकर माट-वादन भीलो को बिठा रखा था। जनतार बजाने वाले भी भीलो के साथ मौजूद थे क्योकि माटो के साथ जनतार की सगत का अपना ही समा होता है। दो तुम्बी के बीच बास लगाकर ऊपर टुनटुनाते तार का यह वाद्य जो हल्की मदिर ध्वनि उपजाता है वह माटो की मन्थरता के साथ अनूठापन लिए रहती है। सारगी, कमायचा आदि बजाने वाले कलाकार विशेष ध्यान आकर्षित करते थे। इन सबको दुग की दीवार की मेहरबो म पहली ड्योढी से लेकर दूसरी डयोढी तक जगह जगह बिठा दिया

गया था। महाराजा के आगमन की खुशी म उक्त पूरे माग पर वदनवार लगायी गयी थी, राजभवत प्रजाजनों ने सुन्दर कढाई की तथा मखमली और पशमीने की चादरें दीवारों पर ऐसे टाग दी थी, जसे विस्तृत आकाश में चाद सितारों की जडत से रात्रि सुशोभित होती है। फतह पोल से दूसरी ड्योढी तक की दीवार ऐसी ही सज्जा से मनोहर लग रही थी। माग के दोनो ओर धरती पर रक्तिम वण के गणवेश म केसरिया पगडी पहने राज तन सनिक थोडे थोडे फासले पर खडे थे। मेहराबों के ऊपर खिडकियों में फूलो की टोकरिया भरे युवा सुदरिया विराजमान थी। उन्हें आदेश था कि महाराजा की सवारी पर वे निरन्तर फूल बरसाती रहें।

दूसरी ड्योढी स पवत के ऊपर बना दुर्गा मदिर दिखायी पडता है। महाराजा गजसिंह जब जोधपुर म होते हैं इसी मदिर म नित्य श्रद्धा सुमन चढाते और कुछ समय तक वही बैठकर दुर्गा सप्तशती का पाठ किया करते हैं। ड्योढी से गुजरते हुए भी वे आते जाते मां दुर्गा को शीश झुका देते हैं। इसलिए आज प्रबन्धको ने इस स्थान पर करना वादक का बिठाया था। करना, लम्बी सीधी तुरी, हाथ में लिए उस कलाकार को बता दिया गया था कि महाराज का हाथी वहा रुकेगा। महाराज जब मा दुर्गा के नमन करें तो उसे करना फूकना होगा, साथ म नगाडा बजाया जायगा।

ड्योढी स आगे 'रण बका राठौर' का राज चिह्न—खुले पखो वाला गरुड, जिसके एक हाथ म सुरक्षा और अधिकार का प्रतीक छत्र है—पत्थर म बना हुआ है। आज इस चिह्न का स्वामी, साक्षात रण-बका राठौर गजसिंह पधार रहा था, इसलिए चिह्न की रोली मौली स पूजा करके उस पर पुष्प-माला चढा दी गयी थी। महाराजा के पुरखे नाथो सिद्धो पर श्रद्धा रखते आये थे, महाराजा गजसिंह भी पुरानी परपराओ को नत मस्तक निभाते थे और अपनी अभिशप्त नगरी और दुग को नाथो की रहस्य मयी क्रूर दृष्टि स बचाये रखने के लिए उनके पिंड उसी प्रकार भरवाते थे, जसे गदन दबाने वाले पर को सहलाया जाता है। राव जोधाजी को जब इन पठारो म दुग बनाने की अपेक्षा हुई, तो कहते है कि इन टेकडियो म नाथयोगी चिडियानाथ का डेहरा था। किला उसारने के लिए उस डेहरे को उठाना पडा। चिडियानाथ क्रुद्ध हो गया। चाहता तो क्षमा भी

औरत को भगाकर ला रहे हैं तब से बच्चा के प्रति वह अपना उत्तर दायित्व बढ गया महसूस कर रही है और इसी आकुलता मे आज उसका मन किसी अन्य काय म नही लग रहा है।

महाराजा को आज अपनी प्रेयसी अनारन बाई के साथ नगर प्रवेश करना है अत दास दासिया सैनिक रक्षक खवास और महलो के अधिकारीगण सब स्वागत समारोह की तैयारी मे सलग्न हैं। नगर के द्वारा को सजाया जाना तो रात्रि से ही शुरू हो गया था। अब तोरन-द्वार बनाये जा रहे थे वदनवार बाँधी जा रही थी दुग के मुख्य द्वार से लेकर भीतर महलो तक के प्रत्येक मेहराब मे अगरू चदन का चूण जलाया जा रहा था। सारा वातावरण सुगधि से महकने लगा था।

आगरा से आने वालो के लिए प्रवेश फतह पोल की ओर से होता था, इसलिए मुख्य द्वार के ऊपर मचान बनाकर शहनाई वादक बिठा दिये गये थे। मचान से लेकर नीचे आधे द्वार की ऊँचाई तक फूलो की लडियाँ लम्का दी गयी थी जो निश्चय ही धरती से इतनी ऊँचाई तक रखी गयी थी कि हाथी पर बैठकर वहाँ से गुजरने वाले व्यक्ति के माथे पर सेहरे की लडियो का स्पश बन सकती थी। फतह पोल के बाहर घुमावदार माग पर चाँदनी लगा दी गयी थी और भीतर पोल से चौकीदारो के कक्षो तक सगीत के विभिन्न वाद्य यत्रा पर अपनी कला के प्रदशन करते हुए साजिदें सजे थे। कोई तरग बजा रहे थे किसी के पास झालर थी तो कोई दूसरा चग पर हाथ आजमाता हुआ दीख पडता था। राजस्थान का परम्परित सगीत भीलो के माट वादन मे मौजूद था। इसे प्रमुखता प्रदान करने की खातिर प्रबधको ने चौकीदारो के कक्षो के समाप्त होते ही दूसरी डयोढी पर मचान बनाकर माट वादन भीलो को बिठा रखा था। जनतार बजाने वाले भी भीलो के साथ मौजूद थे क्योकि माटो के साथ जनतार की सगत का अपना ही समा होता है। दो तुम्बो के बीच बाँस लगाकर ऊपर टुनटुनाते तार का यह वाद्य जो हल्की मदिर ध्वनि उपजाता है, वह माटो की मदरता के साथ अनूठापन लिए रहती है। सारगी, कमायचा आदि बजाने वाले कलाकार विशेष ध्यान आकर्षित करते थे। इन सबको दुग की दीवार की मेहरवा म पहली ड्योढी से लेकर दूसरी डयोढी तक जगह जगह बिठा दिया

गया था। महाराजा के आगमन की खुशी मे उक्त पूरे माग प बदनवार लगायी गयी थी, राजभवत प्रजाजनो न सुदर कढाई की तथा मखमली और पशमीने की चादरें दीवारा पर ऐस टाग दी थी, जैसे विस्तत आकाश मे चाँद सितारा की जडत से रात्रि सुशाभित हाती है। फतह पोल से दूसरी ड्याढी तक की दीवार ऐसी ही सज्जा से मनोहर लग रही थी। माग के दोना आर धरती पर रक्तिम वण के गणवेश मे केसरिया पगडी पहने राज पूत सैनिक थोडे थोडे फासल पर खडे थे। मेहराबा के ऊपर खिडकियो म फूला की टोकरिया भरे युवा सुदरियाँ विराजम न थी। उन्ह आदेश था कि महाराजा की सवारी पर वे निर तर फूल बरसाती रहे।

दूसरी डयोढी से पवत के ऊपर बना दुर्गा मदिर दिखायी पडता है। महाराजा गजसिंह जब जोधपुर म होते है इसी मदिर म नित्य श्रद्धा सुमन चढाते और कुछ समय तक वही बैठकर दुर्गा सप्तशती का पाठ किया करते है। ड्योढी से गुजरते हुए भी व आते जाते मा दुगा को शीश झुका दते ह। इसलिए आज प्रब धको न इस स्थान पर करना वादक को बिठाया था। करना, लम्बी सीधी तुरी, हाथ म लिए उस कलाकार का बता दिया गया था कि महाराज का हाथी वहा रुकेगा। महाराज जब मा दुर्गा के नमन करे तो उसे करना फूकना होगा, साथ म नगाडा बजाया जायगा।

डयोढी स आगे 'रण बका राठौर का राज चिह्न—खुल पखा वाला गरुड, जिसके एक हाथ मे सुरक्षा और अधिकार का प्रतीक छत्र है—पत्थर मे बना हुआ है। आज इस चिह्न का स्वामी, साक्षात रण बका राठौर गजसिंह पधार रहा था इसलिए चिह्न की रोली मौली स पूजा करक उस पर पुष्प-माला चढा दी गयी थी। महाराजा के पुरखे नाथा सिद्धा पर श्रद्धा रखते आये थे, महाराजा गजसिंह भी पुरानी परपराओ का नत-मस्तक निभात थे और अपनी अभिशप्त नगरी और दुग को नाथो की रहस्य मयी क्रूर दष्टि स बचाय रखन क लिए उनके पिड उसी प्रकार भरवात थ, जस गदन दबान वाले पर को सहलाया जाता है। राव जाधाजी को जब इन पठारा म दुग बनाने की अपेक्षा हुई, तो कहत है कि इन टेकडिया मे नाथयोगी चिडियानाथ का डेहरा था। किला उसारन के लिए उस डेहरे को उठाना पडा। चिडियानाथ क्रुद्ध हो गया। चाहता तो क्षमा भी

कर सकता था, किंतु नाथा की गम मनावृत्ति के अनुरूप अभिशाप दे डाला—'नही बसेगी राव तुम्हारी यह नगरी, कभी पानी न मिलेगा तुम्हें, जा, प्यासी धरती में प्यास लोग ही रहगे तेरे किले म।' राव जोधा अभिशाप से घबरा उठे। चरण पकड लिए चिडियानाथ के उन्होन। दया आ गयी, किंतु योगीराज की फुरी बात भी क्योंकर टले? वर्षा होती रहने का वरदान दे दिया। करो वर्षा का पानी एकत्रित, सरोवरो, जलाशयो मे वर्षा का जल इकटठा करके रखो और बुझाओ प्यास। दुग के भीतर पानी का स्रोत कोई नही हो सकता, अभिशाप जो था। जल तो जल ही है वर्षा का ही सही—अब यदि किसी अवज्ञा के कारण चिडियानाथ या राव भीमसिंह के गुरु गोस्वामी गोविंद नाथ की आत्मा को ताप पहुँचा तो न जाने भविष्य क्या हो। इसलिए राज्य चिह्न के पीछे बने सरोवर के किनारे वरुण पूजन का प्रबध कर दिया गया था।

यहा पूजनोपरात महला मे प्रवेश तक के माग पर लाल मखमली बिछावन बिछा दिया गया था, ताकि महाराजा अपनी नवला प्रेयसी के साथ चलते हुए प्रासाद मे आयें। प्रासाद के द्वार पर खाशा डयोढी के बाहर सात बडे-बडे टोकरो म अलग प्रकार के अनाज तथा एक बडे थाल म चादी के सिक्के रखवा दिये गये थे, ताकि महाराज मोती महल मे प्रवश करने से पूव अपनी प्रेमिका की नजर उतार दे और वह अनाज तथा सिक्के निधन प्रजाजनो मे बाँटे जा सकें। खाशा डयोढी और जनाना महल के बीच वाले आगन मे महाराजा और उनकी प्रेमिका अनारन के स्वागत का प्रबध था। कुमारी कन्याएँ परपरित रग बिरगी पोशाको मे रजत थालो मे फूल, रोली, तदुल, मिष्ठान्न और दीपक लिए अपनी सहज चचलता नेत्रो म समोए नवला राज सगिनी को देखने के लिए मचल रही थी। चौक के बीचोबीच सगमरमर के चबूतरे पर एक सुहागिन सोलह शृगार किय वीणा के तारो से खेल रही थी। सुदरी के मुख मे गुलाब खिले थे दाँत कुद कलिकाओ की नाइ दीप्त थ और उसने लम्बे केशो को लपटकर ग्रीवा के पीछे कुछ इस प्रकार बाँध रखा था कि अजता की मूर्ति दीख पडती थी।

मोती महल, खाशा डयोढी और जनाना महल मे खूब रौनक थी दास-दासिया, महलो के अधिकारी, सरक्षकगण और राज घरान के स्त्रियाँ

पुरुष सब अत्यत व्यस्त दीख पडते थ। दास-दासियो के तो पाँव धरती पर नही टिकते—उन्हें आज पुरस्कार, न्योछावर प्राप्ति की आशा है। राजघराने के लोग महाराजा की प्रसन्नता म प्रसन्न हैं। महारानी के दिवगत होने के बाद उन्होंने सदैव महाराजा की अवसादमयी मूर्ति देखी थी, आज उन्हें उस मूर्ति म आनदासव की मस्ती दीखने का आश्वासन प्राप्त करना था। केवल धाय माँ कुछ चिंतित थी। उसे नन्हें कुमारो की चिंता थी। यद्यपि महाराज राजकुमारों से उत्कट प्यार करते थे, तथापि भविष्य किसने देखा। महारानी की उपस्थिति म महाराज की रखलें, पुतरियाँ, पडदायतें, वटारणें राज्य के उत्तराधिकारियो का कुछ नही बिगाड सकती, किंतु अब उनका सगा कहने को कौन होगा ! माँ प्राणो के मोल पर भी बच्चो की रक्षा करती है किंतु मात्र शारीरिक सुख दने और पाने वाली पासवान सुदरी को राजवश स क्या लेना-देना ! इसी सभावना से धाय मा अतमन म सतप्त थी और बार-बार राजकुमारो को गले लगाती, चूमती और उनकी मगलकामना करती थी। मन ही तो है, लाख समझान पर भी उस पर कोइ प्रभाव न था भीतर की हूक आँखो को खारा करती थी, किंतु इस डर स कि कोई इस मगलवेला म उसके अश्रु पूरित नेत्रो का देख कर कुछ गलत धारणा न बना ले, वह बार बार मुख छिपाने का प्रयास करती थी।

राज-ज्योतिषी न मुहूर्त निकाला था—महाराजा को तीसरे पहर जोधपुर के महलो म प्रवेश करना है। ब्राह्ममुहूर्त से ही दुग और महलो की रौनक उत्तरोत्तर बढती जा रही थी। ज्यो ज्यो समय समीप आ रहा था लोगो के हृदय बल्लियो उछल रह थे। सब लोगो के कान फतह पोल की ओर लगे थे और आखें अपने लोकप्रिय राजा के दशनो को उत्सुक थी। महामत्री, दीवान तथा अन्य उच्च पदाधिकारी नगर-सेठ को साथ लिए फतह पोल के बाहर फूलमालाएँ लिए महाराज की अगवानी क लिए मौजूद थे। हाथी के घटे का स्वर दूरागत ध्वनि की नाइ अब कानो स टकराने लगा था। तभी मीणा जाति के लाग ढूवको बजाते, नाचते-कूदत, कलाबाजिया लगाते,

तरह-तरह के आंगिक हाव भावों का प्रदर्शन करते हुए आगे की पंक्तियों में आते दीख पड़े। इनका इन्हीं मीणों द्वारा आविष्कृत विचित्र वादन-यंत्र है। एक लोटे में दंड गाड़कर उसके तल और दंड के बीच ताम्र-तार बाँधकर यह यंत्र बनाया होता है। लोक-नर्तक बाएं हाथ में इसे थाम सीधी अंगुली से इसके तार को टुनटुनाते और बिना किसी संहिति के उछल कूद कर फिरकी लेते हुए खुशी प्रकट करते हैं। महाराज की सवारी के आगे-आगे वे स्वागत का निजी ढंग अपनाए, बढ़े चले आ रहे थे। उनकी स्त्रियाँ भी इस उल्लास में सम्मिलित थीं। अर्द्धनग्न रहकर भी खुशी की धुन में ओढ़नियों की ओट में अपना यौवन छिपा सकने में असमर्थ वे मधुर-मधुर कुछ गा रही थीं। उनकी आँखों की मुस्कान और हाथी पर बैठे महाराजा तथा अनारन के युगल को आशीर्वाद देने को उठे हुए हाथ उनकी राज भक्ति और राजा की लोकप्रियता का प्रमाण था।

ज्योंही हाथी का हौदा दिखायी दिया, द्वारपालों ने नरसिंघे फूंक दिए। नरसिंघे की ध्वनि के साथ ही ड्योढ़ियों की मचानों और दीवारों की मेहराबों में बैठे वादकों ने अपने-अपने यंत्र संभाल लिए। शहनाइयाँ गूंज उठीं और फतह पोल पर खड़ी स्वागत-समिति ने एकबारगी 'महाराजा गजसिंह की जय' का तुमुलनाद वातावरण में गुंजा दिया। ड्योढ़ियों की खिड़कियों में बैठी सुंदरियों ने फूलों की डलियाँ संभाल लीं, मधुर कोकिल-कंठों से महाराज की जय का स्वर ऐसा प्रतीत होता था, जैसे सैकड़ों घुंघरू एक साथ बज उठे हों। महाराजा के हाथी के फतह पोल में प्रवेश के साथ ही हर्षोल्लास का यह समारोह रंगीन होने लगा था। हाथी पर महाराजा की बगल में अनारन को बैठी देखकर प्रजा उत्साहित हो रही थी। एक लम्बी अवधि के बाद उन्होंने अपने महाराजा के मुख पर प्रेम का तेज देखा था, उनके बनवासी-से राजा को आज पुनः मधुर प्रेम का रस प्राप्त हुआ था, इसलिए वे आनंदातिरेक में सब सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए अपने मनोद्गारों को आंगिक क्रियाओं द्वारा प्रकट कर रहे थे। हाथी की पीठ पर अनारन यह सब देखकर छुई मुई-सी अपनी मुगलई ओढ़नी में अपनी गोरी गदराई को छिपाने का असफल प्रयास कर रही थी।

फतह पोल से आगे बढ़ते ही दोनों ओर से महाराजा और अनारन पर

फूल बरसने लगे थे। सगीत की विभिन्न ध्वनियाँ मगल वेला की सूचना दे रही थी। 'महाराज की जय', 'जोधपुर नरेश, महाराज गजसिंह सदा सलामत रहें' आदि के स्वर से दुग का यह ग्रह निनादित हो रहा था। महाराज सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए हाथी पर ही आगे बढ़ते जा रहे थे। दूसरी ड्योढी को लाँघकर राज चिह्न के सम्मुख राजा का हाथी रुक गया। महावत ने अकुश का इशारा किया, हाथी ने धीरे से पहले अपनी आगे की दायी टाँग टेढ़ी की, फिर बायी को समेटा और इस प्रकार हाथी धरती पर उकडूँ बैठ गया। महाराजा ने अनारन का सहारा दिया। हाथी के पास चौकी रख दी गयी। सुहागिनों ने अनिद्य सुदरी अनारन को हाथोहाथ लिया। उसके बाद महाराजा स्वय चौकी पर पाँव रखते हुए हौद से नीचे कूद गये। पुन जय जयकार हो उठा। महाराज गजसिंह ने राज्य चिह्न की ओर मस्तक झुकाया और वहाँ पहले से ही तैयार पूजा सामग्री म से एक मुट्ठी फूलो का अजलि मे लेकर माँ दुर्गा के मदिर की ओर मुख करके पवत की चोटी की ओर, जहाँ दुर्गा मदिर बना था, देखते हुए सुमनाजलि छोड दी और शीश झुकाकर मत्र मुग्ध भाव से यह श्लोक सस्वर उच्चरित किया—

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यश्चतुर्भिभुजै ।
शख चक्र धनु शराश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि शोभिता ॥
आमुक्तागद हार कंकणरणत्कांची क्वणन्नूपुरा ।
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुंडला ॥
ओ प्रभायै नम, इ मायायै नम ।
ऐं सूक्ष्मायै नम, ऐं विशुद्धायै नम ॥
ओ नन्दिन्यै नम ओ सुप्रभायै नम ।
अ विजयायै नम, अ सर्वसिद्धिप्रदायै नम ॥

करना और नगाडा ध्वनित हो उठे। महाराज पीछे की ओर मुडे और सरोवर पर वरुण पूजन के लिए बढ़े। आज पहली बार वरुण पूजन के लिए ब्राह्मणों ने अकेले महाराज के लिए आसन लगाया। महारानी को ब्याहकर लाये थे तो गजसिंह ने सपत्नीक पूजा की थी। उसके बाद जब भी कभी पर्व-उत्सव पर ऐसा हुआ, महारानी राजा के वामांग पर सुशोभित रही,

किंतु आज यद्यपि एक अवधि के वैधव्य के बाद राजा एक सुंदरी को अपने प्रेम-पाश में बांधे संगिनी बनाकर लाये हैं, तथापि मर्यादा और पावन राज्य धरोहर की परंपराएँ अनारन को पूजा में महाराजा की जीवन संगिनी बनाकर बिठाने में अनौचित्य देखती है। अतः राज-पंडित ने पहले ही सुहागिनों को, जो अनारन को घेरे खड़ी थी, ऊपर महलों की ओर चलने का संकेत कर दिया। वे सुख सौहार्द संपदा और विलास के गीत गाती हुई अनारन को घेरे घेरे आगे को चल पड़ी। अनारन ने उचककर महाराजा की ओर देखना और आदेश पाना चाहा, किंतु राजा को व्यस्त पाकर वह अन्य स्त्रियों की रंगीन भीड़ में आगे को घिसटने लगी।

राज पंडितों ने बड़े आदर-मान से राजा गजसिंह को वरुण पूजन करवाया। जल जीवन है, नगर और दुर्ग में इसका कभी अभाव न हो—वरुणदेव से यह प्रार्थनाएँ की गयी। नाथ योगियों की स्तुति द्वारा उनकी आत्मा को भी संतुष्ट किया गया और तब महाराज आसन से उठकर मखमली लाल बिछावन पर पाँव रखते हुए मोती महल के निकट से होते हुए सीधे खाशा ड्योढ़ी की ओर बढ़े। सुहागिन सुन्दरियों के बीच घिरी अनारन ड्योढ़ी के बाहर ही महाराज की प्रतीक्षा में थी। महाराज के पहुँचते ही अनारन को उनके निकट लाया गया। दोनों ने सहेज सातों अनाज के टोकरों और सिक्कों से भरी रजत-थाली को छूकर निर्धनों में बाँटने को भेज दिया। महाराजा के एक संकेत पर सेवक सभी टोकरे उठा-उठाकर चौखलाव की फसील के बाहर एकत्रित दानार्थी भिखारियों में अन्न बाँटने के लिए चल दिये।

खाशा ड्योढ़ी के भीतर घुसते ही जनाना महल से पूर्व आँगन में कन्याओं ने राजा गजसिंह व उनकी प्रेमिका अनारन बाई की एक साथ आरती उतारी। ऊपर खिड़कियों से फूल बरसाये गये। आँगन के बीचोबीच चबूतरे पर शृंगार किये बैठी कलाकार सुंदरी ने वीणा के मधुर तारों को झंकृत किया। अब तक सांझ उतर आयी थी, महलों के शमादान रोशन हो गये थे। आज तो आलोक का विशेष प्रबंध किया गया था, अतः दीपोत्सवी-सी दीपावलियाँ प्रकाशित की गयी थी। खाशा ड्योढ़ी के इस बड़े चाव में ही दो ऊँचे आसन लगाये गये थे, जहाँ महाराज और उनकी हृदयेश्वरी

अनारन को बिठाया गया। युवतिया न दोनो के स्वागत सम्मान म यही एक नृत्य का आयोजन किया हुआ था। इसलिए जनाना महल मे प्रवेश से पूव ही चौक मे यह कायक्रम निश्चित किया गया। खाशा डयोढी म कुछ चुने हुए दरबारियो और राजघराने के लोगो के अतिरिक्त और कोई नही आ सकता था। आज दरबारियो की सुहागिन महिलाओ को विशेष निमत्रण था। ज्याही अनारन बाई और महाराजा न आसन ग्रहण किय, धायमा दोनो राजकुमारो को साथ लेकर जनाना महल से बाहर आयी। आते ही उन्होंने राजा को तिलक किया, अनारन के अभिवादन पर सुखी रहो' का औपचारिक आशीवाद दिया और दोना कुमारो को राजा की गोद मे धकेलकर मुँह पीछे माडे आसुओ को आखो मे ही सुखाने का प्रयास करने लगी। राजा से यह सब छिपा न रहा, किंतु उस समय मौन रहना ही उचित समझा।

महाराज न दोना राजकुमारो को आलिगन मे लेकर प्यार किया, माथा चूमा और फिर कहा, जाओ बेटा, माता समान अपनी मौसी का आशीष भी प्राप्त कर लो।' ऐसा कहते हुए महाराजा न अनारन की ओर सकेत किया। अनारन न भी अपनी दोनो भुजाए खाल दी, कुमारो का आह्वान किया। पहले तो दोना झिझके, रुके और फिर पिता की आज्ञानुसार अनारन की ओर बढन लगे। पूरे आगन मे निस्तब्धता छा गयी। हिचकत झिझकत कुमार उधर बढ रह थे, अनारन की खुली क्रोड उन्ह आमन्त्रित कर रही थी। निकट जाकर दोना रुके, जसवत भावुक और सवदनशील था, अमर उद्दड हो गया था। क्षण भर के लिए लोगो की सांसे रुक गयी। अनारन अभी तक मुगलई पोशाक म थी, अमर न उसे एकटक देखा और मुह बिचकाकर उसके समीप स होता हुआ महलो के भीतर चला गया। जसवत आग बढकर अनारन के खुले क्रोड म प्रवेश कर गया। सीने से लगा लिया अनारन न उसे, जसवत को भी ऐसे लगा, जैसे खोयी मा मिल गयी हो। उपस्थित जनसमुदाय ने राहत की सास ली थी। अमर की उद्दडता से तो महाराजा पहले से ही परिचित थे। उन्हें डर था कि कही जसवत भी भाई की देखादेखी उसका अनुसरण न करे। उन्हें इसम अनारन के तिरस्कार का भय था। जसवत को अनारन के क्रोड म देखकर राजा का भी हप हुआ

और तभी तबले की थाप के साथ अनक युवतिया के चरण थिरक उठे।

नृत्योपरात महाराज और अनारन को उनके अलग-अलग कक्षो मे ले जाया गया। भोजनादि से निवत्त होकर महाराज मोती महल के अपने निजी कक्ष मे विश्राम करन के लिए चले आय। राजघरान की दासिया और धाय मा जानती हैं कि अनारन को किस प्रकार वहा पहुचाना है और यदि रात की सगति मे अनारन न महाराज का दिल जीत लिया, तो महलो मे उसकी क्या स्थिति और अधिकार होगा ! अत उन्हान दिल ही दिल महाराज के चुनाव का सराहा और कर्तव्य पूण करन म जुट गयी।

रात्रि के प्रथम पहर तक महाराजा दीवान और मत्री से मिलकर राज्य की राजनयिक स्थिति और प्रजा की समस्याओ पर चर्चा करत रहे। इस बीच धाय माँ ने अनारन बाई को आदर-सत्कारपूवक राजा की गृहस्थी का परिचय दिया, कुमारा पर स्नेह वात्सल्य बनाये रखन की प्रेरणा दी और बडे स्नेह के साथ उस दासियो के हवाले करके स्वय कुमारा के शयन-कक्ष की ओर चली गयी।

रजवाडी परपरा के अनुकूल दासियो द्वारा राज प्रेयसी को सजा सँवार-कर, शुचि वस्त्राभूषणो स शृगार करा महाराजा की अक शायिनी होन के लिए भेजना होता है। अत कुछ समय तक धाय-मा से बतिया लेन, भोजना-परात दासियो द्वारा पग सहलान और मुट्ठिया भर दन के कारण अब अनारन बाई सहज महसूस करन लगी थी। खिजर खा के हरम मे रहते रहने के कारण उसे नवाबी शिष्टता और दास-दासिया स काम लन के गुर बखूबी आ गय थे। इसीलिए दासिया का कोई व्यवहार उसे एसी कठिनाई म नही डाल पाया, जिसम प्राय कोई गाव की नयी चिडिया फस जाती है। मात्र स्थिति, परपरा और विधि के किचित अतर से उस कुछ-कुछ ऐसी ही स्थिति का पहला आभास खिजर खाँ के यहाँ हो चुका था। अस्तु जब दासिया ने उस स्नान के लिए चलने का कहा, तो वह बिना किसी परशानी के स्नानागार की ओर बढ गयी। स्नानागार म सुवासित जल का हमाम तैयार था। चदन का उबटन लगाकर दासिया न जब अना

रन को नहलाया तो आगरा से जोधपुर तक की समूची थकावट जैसे चदन की शीतलता मे घुलकर घुल गयी।

अनारन बाई को वहाँ से महल के शृगार-कक्ष मे लाया गया। दासियो ने मिलकर उसे परपरित नव दुल्हन जैसी राजपूती पोशाक पहनाई। लाल रग का अस्सी कलियो वाला लहँगा स्वण तागे से कढी चोली और सिर पर सोने की गोट लगी झीनी ओढनी। नख से शिख तक सुदर जडाऊ आभरण महावर मिस्सी, महदी और मगाक—शरीर पर सुगधि गालो मे लाली और आखो मे अजन। एक ओर अनारन-सी अनिद्य सुदरी, दूसरी ओर सोलह शृगार रात के अधेरे म भी शुक्ल पक्ष का भ्रम हो जाये! तुलसी बाबा कहते थे नारी ना मोहे नारी के रूपा' और यहा तो जब अनारन का शृगार सपन कर दासियो ने उसके रूप की ज्योति पर अपने ही नेत्र शलभो को आसक्त होते देखा तो लज्जित होकर रह गयीं। अनारन को दपण के सम्मुख खडा किया गया, तो वह भी अपने को आज कुछ अधिक सुदर लगी—शायद इसलिए कि आज उसे मनचाहा रणबका राठौर अप नाने वाला था! खिज्र का हरम जिंदगी बिताने की मजबूरी था, राजा गजसिंह का रनिवास जिंदगी जीने का आनद! मुख की काति शतगुणित हो रही थी।

रात्रि का दूसरा प्रहर आरभ होते ही राजा गजसिंह मत्रणा कक्ष से शयन-कक्ष म पहुँचा। उधर दासिया भी अनारन की ओट म रूप की धध कती ज्वाला को राजा के शयन कक्ष की ओर ले चली। राजा का शयन कक्ष मोती महल के पिछले भाग के दोमजिले पर था। वहाँ के झरोखा से चौखलाव उद्यान का मनोहारी दृश्य दीख पडता था। रात्रि की शीतल बयार उन झरोखो से भीतर आकर प्रेम विह्वल हृदया को गुदगुदा जाती। कक्ष म बडे बडे नक्काशीदार पाया वाले पलगो पर मसनद बिछे थे। पलगो पर बिछी चादरें ईरानी गलीचो की तरह की थी, जिन पर नरगिसी आखो वाली कोई सुदरी सिंह का शिकार करने को धनुष की प्रत्यचा चढा रही थी। ऐसी ही मनमोहक चित्रकारी कक्ष की दीवारो पर भी हुई थी। दो एक पौराणिक दृश्य सामने की दीवार पर चित्रित थे—एक म तपस्वी विश्वा-मित्र के उरु प्रदेश पर मेनका विराजमान थी तो दूसरे मे श्रीकृष्ण और

राधा आँख मिचौनी खेल रहे थे। छत पर दुष्यंत की मजाओं में झूलती शकुंतला ऐसी प्रतीत हो रही थी, जैसे साक्षात रति और कामदेव की युगल जोडी का ही चित्र अंकित किया गया हो। कक्ष की दूसरी दीवार पर एक ढाल टँगी थी और उसे काटती हुई दो मजबूत तलवारें एक-दूसरे के गले मिलती-सी ढाल के ऊपर सजायी गयी थी। कोने में एक चौकी पर सोने की नक्काशी वाली सुराही में सुधिनी और दो स्वर्ण पात्र रखे थे। जल-झारी भी मौजूद थी, किंतु सागर व मीना हो तो जल का सम्मान घटने-बढने लगता है ना!

मसनद से हटकर एक झूला छत से लटक रहा था। झूले में काल आबनूस की कश्मीरी लकडी में छोटी छोटी मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी थी। उसमें दो गद्देदार आसन लगे थे—महारानी के जीवित होने पर प्राय महाराजा गजसिंह सपत्नीक उस पर विराजते और दाम्पत्य सुख का भरपूर आनंद लेते थे। आज उन्ही स्मृतियों में खोए महाराज अजदहा ए-पैकर की लपलपाती जिह्वा पर हाथ रखे पुराने दिनों की पुनरावृत्ति की कल्पना और अनारन से खोए सुख की पुन उपलब्धि की आशा में प्रतीक्षा रत थे। अजदहा ए-पैकर एक बहुत बडे अजगर की धातु मूर्ति थी जो मुगल बादशाह की ओर से महाराजा को सम्मान चिह्न के तौर पर भेंट की गयी थी। महाराजा को वह लडकी याद आ रही थी जो बीस वर्ष पहले कभी उन्हें फूल माला पहनाकर उनसे बतियाई थी और जाने अपने मन में क्या धारणा लेकर वहाँ से जुदा हुई थी। परिस्थितिया करवट बदलती रही और आज की रात्रि आन पहुँची। सचमुच दृढता धैर्य और लगन, तीनो जब एक व्यक्ति में एकत्रित हो जायें तो भगवान को भी नयी परिस्थिति का साँचा बनाने से पूर्व उससे पूछ लेना पडता है— बता तेरी रजा क्या है ?'

बाहर अनेक कदमो की आहट से महाराजा अनारन के आ पहुँचने का सही अनुमान लगाते हैं। दासियाँ अधखुला हुआ द्वार धकेलती हैं और फिर अनारन बाई के सिर की बलाएं लेती हुई उसे कक्ष में धकेल देती हैं। साथ ही एक हल्की सस्वर मुस्कान द्वार के बाहर हवा में तैर जाती है। अनारन महाराजा के शयन कक्ष में भौचक-सी खडी रह जाती है। महाराज धीरे धीरे उसकी ओर बढते और बडे आदर से उसे कंधो से थामकर पलंग की

मनसद पर बिठा देते हैं। कक्ष के शमादान के प्रकाश मे रूपसी अनारन अपने नाम को निरर्थक करती हुई अग्नि की लपट-सी दीख पडती है। उसके भीतर आने से कक्ष महक उठता है वातावरण पर बहार आ जाती है, महाराजा को महारानी के सग इसी कक्ष मे मनायी मधुयामिनी की याद उमडने लगती है। अनारन का सौंदय निर्निमेष नेत्रा से पान करते हुए गजसिंह यह सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि अनारन यदि उनके जीवन मे न आयी होती तो शायद वे साकार सुदरता स कभी दो चार न हुए होते। महारानी कुलीन मर्यादा थी, अनारन रूप की ज्वाला। महारानी राजा के उत्तराधिकारी की जननी थी, अनारन प्रेम और समपण का मूत्त रूप। ऐसी अनेक बातें महाराजा के मस्तिष्क म ठेलमठेल कर रही थी और विधुर जीवन के आरम्भ से लेकर अब तक कठिनाई से नियत्रित की शारीरिक भूख भी धीरे धीरे जगने लगी थी। महाराज अनारन के निकट मसनद पर स्वय भी विराज गय। अनारन का हाथ थामते हुए महाराजा ने अब तक का मौन भग किया अनारन, क्या आप सचमुच मेरी बनकर रहेगी ?'

उत्तर म अनारन ने अपना शीश महाराज के सशक्त चौडे वक्ष से जुटा दिया। महाराजा के नेत्रा मे भाव विभोर होकर झाँकने लगी।

महाराज गजसिंह ने उन्नत मस्तक को थोडा झुकाया और अनुभावा की मौन भाषा को मुखरित करते हुए तडपते हुए उत्तप्त ओठो को अनारन के माथे से छुला दिया। तडप उठी वह प्रेम दीवानी। दोनो बाहे महाराज के गले मे डालकर पुष्ट पेड पर झूलती लता सी वह कुछ भी न कहकर सब कुछ कह गयी। दोना आलिगनवद्ध हुए कुछ क्षण बाहर को विस्मत किये रहे। तभी महाराज न बाहो का बधन ढीला करते हुए ठोडी से अनारन का मुख ऊँचा किया। नेत्रा ने नेत्रो की भाषा फिर पढी और दो जोडी आठ निकट आते आते सहसा टकरा गये। एक दूसरे की बाँहो मे अनारन और महाराज गजसिंह ऐसे तडप उठे जसे एक साथ कई बिच्छुओ न डक मार दिया हो।

अब वाणी फूटी, 'युग-युग म तो आप ही की थी महाराज! अपने चरणो मे थोडी जगह दे दो दासी वही बनी रहेगी, मेरे प्राण! आप उदार हैं, महान है, भटक जाने का मेरा अपराध क्षमा कर दीजियेगा।' इतना

कहते-कहते अनारन रो दी।

महाराज गजसिंह ने पुन उसे अपने सीने से भीचते हुए आद्र स्वर मे कहा 'नही, भटक तो मैं गया था, जो तुम्हारी पूजा का देवता बनकर भी पुजारिन की यथेष्ट रक्षा न कर पाया। भूल जाओ अतीत को, हम आज से नया जीवन आरभ करेंगे। रनिवास मे सर्वोच्च पद तुम्हारा होगा मेरी प्रेरणा।'

'महाराज ! मुझे आपकी कृपा दृष्टि और थोडा सा प्यार चाहिए पद नही। अपनी सैकडो दासियो म एक जगह मुझे भी प्रदान करें इससे अधिक की कल्पना मैंने कभी भी नही थी कभी। मैं तो केवल आपके निकट रहकर आपका शौर्य और गौरव निहारते रहना चाहती हूँ। अनारन ने झिझकते रुकते मन की बात कह दी।

महाराजा गजसिंह को चोट सी लगी। बचपन की साधारण लगन किस प्रकार परवान चढती है, इसका जीता जागता रूप उनकी बाहो म मौजूद था। कली से फल बनने की समूची भाव कथा अनारन ने पराश्रित होकर अत्याचारो की भटठी मे जलते हुए महाराज की यादो मे लिखी थी। लबे वियोग के उपरात आज कथा के नायक नायिका का मिलन क्षण आया था, पुजारिन की पूजा सफल हुई थी—रावण की कद से छूटकर श्रद्धा की जानकी अपन देवता की सासो का स्पश पा सकी थी। पुजापे के रूप म क्या था बेचारी सतप्ता के पास ? फूलो की माला तक भी तो अपनी नही, क्या भेंट दे देवता को। अत वाणी पुन मौन हो गयी। पुजारिन ने देवता के चरणा मे अपा-आपको ही समर्पित कर दिया।

एक लबे अतराल के बाद आज अनारन सूर्योदय से पहले जगी। सुप्तप्राय हो चुके अपने हिंदू सस्कारो को भी जगाया उसने। उषा की रक्तिम आभा की ओर मुह उठाय उसने अर्घ्य चढाया। अचल को सिर और गले म लपेट कर सूय देवता से महाराज के कल्याण की प्रार्थना की आरती का सामान सजाया और भवानी के मदिर मे जाने को तैयार हो गयी। जब तक महा राज जगकर दैनिकचर्या से निवत्त हो अनारन हिंदू गहिणी की सुगढता

ओढे पूजा के लिए तैयार महाराज की प्रतीक्षा मे खडी थी। कल वरण पूजा के अवसर पर राज-पडित न उसे महाराज के साथ पूजा पर नही बैठने दिया था और आज प्रस्तुत दृश्य देखकर सब आश्चयचकित थे।

पहले भी महाराज भवानी के मदिर जान के लिए महारानी के साथ ऐसे ही तैयार होते थे। तब दास दासियो मे ऐसा विस्मय कभी नही था। सब यथावत होता था किंतु आज! राजाआ महाराजाओ के शयन-कक्षो मे अपहृत सुदरिया रखैला को अक शायिनी बनाया जाता है राजा की विलासिता को चारा डालन के अनेक उपक्रम चलते रहते है, इन तथ्यो से सब परिचित थे। राजस्थान मे रातभर अत्यत सुख पहुँचाने वाली सुदरी से प्रसन्न होकर राजा उनके आजीवन रहने खाने का खच भी उठा लेते हैं, रनिवास के किसी उपेक्षित कक्ष मे वडारण या पडदायत का पद देकर पडी रहन की अनुमति भी दे देते हैं यह भी वे जानते थे। अनारन के आगमन पर सभी ने ऐसा ही कुछ सोचा था। उन्ह तो प्रसन्नता इस बात की थी कि राजा के विधुर जीवन मे विरक्ति का व्रत समाप्त होकर फिर से कुछ बहार आयेगी। लेकिन कोई स्त्री रानी न बनकर भी रानी का स्थान लेने की क्षमता पा जायेगी यह विश्वास किसी को न था। सबके चेहरो पर यही आश्चय झलकता था।

तभी धाय मा पिता को प्रणाम करवाने के लिए राजकुमारो को लेकर वहा आ पहुँची। सहमे हुए दास दासियो को छिपे छिपे महाराज के कक्ष मे झाकत और विस्मय करते देखकर धाय मा ठिठकी। अनुभवी आखा ने स्थिति की पडताल की। गजसिह की प्रकृति से जितना वह परिचित थी महलो म और कौन हो सकता था। गजसिह भी उसी की देख रेख मे पला था। वह जानती थी कि गजसिह मात्र विलास का पुतला नही बन सकता। शयन-कक्ष मे रखैलें नही पाल सकता वह। उसका स्वभाव भिन्न था स्त्री उसके लिए सदैव सम्मान्या रही है केवल वासना शमन के लिए स्त्री का भोग और उसके उपरात उस अक शायिनी को ठुकराकर वह स्त्री का अपमान नही कर सकता था। उसकी प्रकृति अन्य विलासी राजाआ की नही थी धाय मा यह जानती थी। अत धाय माँ ने द्वार पर दस्तक देकर अपने आगमन की सूचना दी।

महाराजा गर्जसिंह सँभल गया। परीक्षा की घड़ी आ गयी थी। स्वय द्वार के निकट आकर उसने धाय माँ का स्वागत किया। बच्चो ने पिता के चरण छुए। भीतर का दृश्य देखते ही धाय माँ को स्थिति समझते क्षण भर भी नही लगा। बच्चो से बोली देखो बेटा मौसी के चरण नही छुओगे।'

अमर फिर अनसुनी कर गया। जसवन्त धाय माँ की बात मानकर अनारन की ओर बढा। इससे पूर्व कि वह अनारन के चरण छुए, अनारन ने उसे आलिंगन मे लेकर प्यार से उसका माथा चूम लिया।

बच्चा के बाहर चले जाने पर धाय मा ने गर्जसिंह की ओर देखा। आँखें मिली तो गर्जसिंह ने आखें झुकाकर सिर हिला दिया। धाय मा सब समझ गयी, उसने आगे बढकर अनारन को गले से लगा लिया। 'आज से मेरे राजा की निगहबान तुम्ही हो, रानी! चिरजीव रहो, महाराज की सेवा म रत अपना जीवन सफल करो। उसका दुर्भाग्य जो राज महिषी बनकर भी सुख भोगने मे असमथ रही, तुम उसकी स्थानापन्न बनकर सब अधिकारो को भोगो, सब कर्तव्यो को निभाओ। खुशी है कि महाराज ने तुम्हे अपनाया है सदा उन्ही के निकट बनी रहो उनकी पासवानी करो। महलो मे आज से तुम पासवान कहलाओगी महारानी के सब कर्म-कर्तव्य अब तुम्हे ही पूर्ण करने होगे' ऐसा कहते-कहते महारानी की याद म धाय माँ का गला भर आया, आँखें नम हो गयी। कुछ देर रुककर धाय माँ पुन बोली 'जाइये पासवान जी महाराज के साथ दुर्गा मदिर मे आरती का समय हो रहा है। माँ दुगा का आशीर्वाद पाकर एक नये जीवन की शुरुआत करिये।'

धाय माँ को बाहर आते देखकर सब दास-दासिया ने उन्हे घेर लिया। राज्य के कुछ अहलकार भी चौक म एकत्रित हो गये थे। धाय माँ ने सबको आह्लादक समाचार दिया। महाराज ने अनारन बाईजी को स्थायी तौर पर अपना बना लिया है। वे आज से पासवान हैं। सब सावधान रहे, किसी प्रकार मान-सम्मान और मर्यादा मे अतर न पडे।

यह घोषणा सुनकर जसे सब उछल से पडे। पासवानजी की जय, महाराजा साहब की, जय महलो म जय जयकार की ध्वनि गूज उठी। भीतर चकित मगी की नाइ अनारन सब घटनाओ को देखती महसूसती हुई धीरे धीरे महाराजा के निकट आकर छुई मुई सी पुन उनकी बाँहो म

सिमट गयी।

मुहूर्त भर बाद वर्षों पहले का दृश्य साकार हो उठा। सबने देखा, अनारन बाई आरती की थाली उठाये सदगृहिणी की नाइ सलज्ज भाव से माँ भवानी के मंदिर की ओर बढ़ी चली जा रही हैं। महाराजा गजसिंह साथ मे उसे हल्का सहारा देते हुए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। मंदिर से शंख ध्वनि आने लगी थी आरती का समय हो गया था। अंग रक्षक पीछे चल रहे थे। मार्ग म जहाँ से वे गुजरते थे, पहरुए शीश झुकाकर प्रणाम करते और पासवान जी की जय बोलकर प्रसन्नता तथा सम्मान प्रकट करते थे। जैसे किसी जादू की छड़ी ने अनारन का जीवन बदल दिया था।

अनारन के आने से महलो मे सजीवता आ गयी थी। महाराज भी जोधपुर म टिके थे—यो कहिये कि उनके लिए अब वहाँ एक आकर्षण था। पिता के रहने के कारण दोना राजकुमारो मे सयम और मर्यादा बढ़ने लगी थी। अमर की उद्दंडता कम नही हुई थी, फिर भी वह पिता और अनारन बाई को साथ साथ देखकर झेंप जाता था। उनके सामने अक्खड़ता को मर्यादा के गुणो म बाधने का प्रयास करने लगता था। हाँ वह अपने मानसिक धरातल पर अनारन को मौसी रूप मे स्वीकार करने को तत्पर नही हो पाया था। अनारन को महलो मे जो पद अधिकार प्राप्त था, उसे भी वह मान नही सका था और उसकी अक्खड राजपूती शान को यह भी मजूर नही था कि उसकी माँ की जगह एक अजानी, अकुलीन स्त्री को दे दी जाये। निश्चय ही वह जीवन म शरीर की भूख और महाराजा अनारन के सबधो की पीठिका को समझ सकने म अभी असमर्थ था, फिर भी उसे ऐसा भासित होने लगता था कि अनारन ने उसके पिता को भी उससे छीन लिया है इस लिए अनारन के लिए उसके मन मे शुरू से ही गाँठ बन गयी थी। इस गाठ को खोलने का जो भी प्रयत्न अनारन, महाराजा अथवा धाय मा की ओर स किया जाता वह सन की गाठ पर पानी की भूमिका बन जाता। ज्यो ज्यो आयु पकती जा रही थी, अमरसिंह के भुज बल की धाक बैठ रही थी। राजस्थान भर मे इस वीर के शौर्य के चर्चे होने लगे थे, किंतु घर मे महा

राजा के कहने पर भी वह इतना मानसिक सामजस्य पैदा नही कर पाता था कि अनारन को मात सम आदर सत्कार प्रदान करे। महाराजा को इसका दु ख था ।

इसके विपरीत जसवन्तसिंह सवदनशील हृदय का कुमार था। अनारन के ढिग जाकर रहकर उसने पहचाना था कि पिता के साथ इस स्त्री का अतरग व्यवहार है। पिता को यह अतरगता स्वीकार है, वे उस पर पूण विश्वास रखते और उसे अतीव प्रिय मानते हैं तो निश्चय ही वह माता के समान है। पिता की सगिनी, हृदयेश्वरी होन के ही कारण उसे कुमारों का मात-पद प्राप्त है भले ही उसने कुमारा को जन्म नही दिया भले ही उनका पोपण धाय मा के सुपुद है और भले ही वह पिता की विवाहिता नही है। भाव स्तर की यह भिन्नता ही अमर की उद्दडता को तीखा किये जा रही थी और जसवन्त की सवेदनशीलता को अनारन की ओर प्रवत्त कर रही थी।

पासवान का पद पा जाने पर अब अनारन को ऐसी कोई आशका नही रह गयी थी कि कोई उस पर अँगुली उठायेगा। महारानी के आदेश और व्यवहार की ही नाइ उसकी हर बात को महत्व प्राप्त था। धाय मा के मन मे कभी कभी विमातत्व की आशका जगती थी किन्तु अनारन के स्नेहसिक्त व्यवहार एव कुमारा के कल्याण की चिंता का देखकर उसे अपना विचार बदल लेना पडता था। अमरसिंह अब हर बात तलवार की भाषा मे करने लगा था धाय-मा अमर की कमजोरी को जानती थी। धीरे धीरे अमर की अक्खडता उद्दडता से विरस होते होते धाय माँ भी उसके विरद्ध अनारन का पक्ष लेने लगी थी। महाराजा वस्तुस्थिति से परेशान थे किंतु नीलकठ की नाइ विष को कठ मे ही पचाये कालावधि से समझौता कर लेते थे—पुत्र की खर मस्तियो को सह जाते थे। अनचाही तुलना के कारण भीतर स वे भी जसवन्त के प्रशसक बनते जा रहे थे, जसवन्त की शालीनता, उसकी मधुर वाणी और उसके सदव्यवहार से महाराजा या अनारन ही नही, समस्त दरबारी सतुष्ट थे। अनारन भी उसे मन से चाहने लगी थी, उसे पुत्रवत प्यार देती थी, यथा सभव पढने, खेलने और सोने के अतिरिक्त समय म वह उसे अपने निकट बनाय रखने म प्रसन्नता प्राप्त

करती थी।

इन्ही दिनो एक घटना घट गयी, जो जसवत की योग्यता और सवेदन शीलता का मुँह बोलता प्रमाण थी। महाराज अपने महल के भीतर वाले नत्य कक्ष मे विराजमान थे। यह कक्ष महल की दूसरी मजिल पर सूर्योदय की दिशा म महल के बाहरी झरोखो की सीधी ताजी हवा का स्वागत करता सा साझ मे बडा सुखद लगता था। प्रात की चढती धूप जब तक तप्त हो पाती थी इस कक्ष के पिछवाडे जा चुकी होती थी। अत साँझ म चलती पूर्वा इस कक्ष मे बैठन वालो का जी बहलाती और शीतलता के गीत सुनाती थी। कक्ष के फश पर लाल मखमल बिछा था बीचोबीच ईरानी कालीन और सामने वाली दीवार के साथ महाराज की मसनद। मसनद पर बडे बडे गाव-तकिये जरीदार बिछाई और लाल मखमली फश पर द्वार से लेकर मसनद तक वैसा ही जरीदार पथ पट। मसनद वाली दीवार को छोडकर शेष तीनो ओर कक्ष म चार चार द्वार थ कक्ष को बारहदरी ही कहा जाय, तो कोई अनुचित न होगा। बारह द्वारो को मिलाती हुई एक बाहरी दीर्घा कक्ष क चारो ओर बनी थी, जिसके झरोखे बाहर आकाश की ओर खुलकर दूर बसे जोधपुर नगर के मकानो की ऊपरी छतो का दश्य प्रस्तुत करते थ। एक बडा झरोखा दौलतखान के चौक म खुलता था जो महाराज के दशन देन अथवा आम प्रजा को यदि आवश्यकता हो तो सबोधन करने के काम आता था। कक्ष यद्यपि बहुत बडा था फिर भी उसकी समूची छत पर नक्काशी की गयी थी, बीच बीच म स्वण खचित नक्काशी कक्ष म बैठन वाला क लिए समाँ बाँध देती थी। महाराज की मसनद के पीछे बडे बडे दपण लगे थे, जिनम कक्ष क सभी बारह द्वारो म से प्रवेश करन वाले प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिबिंब दश्य था और महाराज के अगरक्षक नत्य-पुत्तलिका की फिरकिया के साथ साथ दपणो म ध्यानस्थ रह कर भी सभावित शत्रु के प्रति जागरूक रहत थ।

महाराज मसनद पर विराजत थे साथ ही दूसरे तकिये का सहारा लिए पासवानजी मौजूद थी। अमर और जसवत भी नत्य का आनन्द लेने आये थे। कुछ विशेष सामत अतिथि और पदाधिकारी भी अपने आसनो पर पालथी लगाये थे। जोधपुर राज्य की राज नतकी सनमा

पूरे शृगार के साथ चचल नयना से उपस्थित दर्शको पर तीखे कटाक्ष करती हुई कक्ष के बीचाबीच अपनी मदिर कला का प्रदशन कर रही थी। सलमा अपने समय की इतनी ख्यातिनामा पुतलिका थी कि स्वय बादशाह शाहजहा महाराज गजसिंह से उसको माग कर चुका था। नाचती थी तो बस बिजलिया टूटती, मुस्कराती तो कयामत ही आ जाती। चचल नेत्रो पर पलकें झपकती, तो कमलो पर पख तोलते भँवरे भी क्षुद्र दीखते। गला भी अच्छा पाया था, जोधपुरी कोकिला कहलाती थी सलमा। ठुमरी गाने और नृत्य के साथ गाय जाने वाले हल्के राजस्थानी गीतो की तो वह मलिका थी। महाराज की निकटता के कारण जिसे सलमा के नत्य गान के आनद का अवसर मिल जाता, वह अपने को भाग्यशाली समझता था। ऐसे ही भाग्यशालियो म आज जोधपुर राज्य का नगर-कोतवाल भी शामिल था। वास्तव मे वह एक विशेष सूचना महाराज तक पहुँचाने और उनका आदेश प्राप्त करने आया था, किंतु क्योकि महाराज मनोरजन कर रहे थे, इसलिए उसे भी वही बुला लिया गया—नृत्य के अत तक वही रुकने का आदेश पा वह एक ओर लगे आसन पर बैठ गया था और सलमा की अदाओ मे खो रहा था।

खुशियो के क्षण जल्दी खत्म होते हैं नगर-कोतवाल का यही अनुभव था। अभी वह कल्पना-लोक मे पूरी तरह उडान नही भर पाया था कि सलमा का नत्य समाप्त हो गया। उसका दिल सलमा की फिरकिया के साथ-साथ घूमता, नाचता अभी नतकी को ख्यालो की दुनिया म भेटने की योजना ही बना रहा था कि महाराज की करतल ध्वनि ने उसे चौंका दिया। घबराकर उसन बिना कारण जाने ताली पीटना शुरू कर दिया। यह तो उसे बाद म पता चला कि सलमा नृत्य समाप्त कर महाराज के जुहार के लिए झुक चुकी है।

पासवानजी की आखें अभी सलमा की अदाओ को तोल रही थी, महाराज की प्रशसा भरी दृष्टि का पीछा करते-करते उन्होंने देखा कि आज महाराज सलमा पर कुछ विशेष दयालु हो रहे हैं। प्रसन्न चित्त महाराज ने अपन गले से गजमुक्ताओ की माला उतारकर अपने हाथो सलमा की झुकी ग्रीवा म पहना दी। अनारन बाई ईर्ष्या से उत्तप्त हो उठी, बिना

कुछ बोले वह मसनद से उठकर भीतर शयन कक्ष की ओर चली गयी। अमर और जसवत वही बैठे रह गये।

नृत्य-सभा की समाप्ति पर उठने से पूर्व महाराज गजसिंह ने नगर-कोतवाल खड्गसिंह राठौर को वही बुलवा लिया। कुशल समाचार जानने एव नगर के सुरक्षा प्रबधो की चर्चा के उपरात कोतवाल ने महाराज से अपने आने का कारण स्पष्ट किया।

'मुझे क्षमा करें, महाराज! कल सैनिको ने नगर की सीमा पर एक ऐसे जजर निधन वृद्ध को बन्दी बनाया है, जो चिल्ला चिल्लाकर आपसे मिलने की आकाक्षा कर रहा था और अपने को सुश्री पासवानजी का पिता बताता है।'

'क्या बकते हो? अनारन का पिता! उसने तो इस सबध मे कभी कोई बात ही नही की।'

हा महाराज, सभव है कभी अवसर न मिला हो! मैंने जाच पडताल कर ली है। वृद्ध मीणा के एक खानाबदोश दल का नायक है। पुतलियो नृत्य करवाने, पुतलिया बनाने आदि का धधा करता था। पासवानजी उसकी पुत्री हैं। नागौर के निकट जब एक बार उन लोगो का पडाव था, तभी छलपूर्वक नवाब खिज्र खा ने उसे बुलवाकर पासवानजी को उससे छीन कर हरम म दाखिल कर लिया था। तब से ले कर अब तक नायक ने बडे कष्ट उठाये है उसकी कहानी बडी हृदय विदारक है। मैंने नायक को अपने पास टिका लिया है आपका आदेश अपेक्षित है।

महाराज कुछ क्षण के लिए चिंतित हो उठे। अभी चिंता के बादल छटे भी न थे कि अमरसिंह, जो सब बातें सुन रहा था बोला, मैं तो पहले ही जानता था कि वह घूरे की चीज छल से जोधपुर के महलो पर हुकुम चला रही है।'

बहुत बदतमीज हो गये हो, तुम अमर! तुम्हें छोटे बडे का कोई लिहाज नही। चले जाओ, यहाँ से। महाराज गजसिंह ने परेशानी मे उसे डाट दिया।

डाट खाकर अमर वहाँ से चुपचाप खिसक गया। जसवत सवेदनशील और स्नेहल बालक था। सजग प्रतिभा उसकी सगिनी थी। पलक झपकते

ही पिता की परेशानी एव नगर-कोतवाल की समस्या को वह समझ गया। बडे विनम्र भाव और मधुर स्वर म बोला, 'पिताजी आप चिंतित क्यो हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम नाना का प्यार भी उपलब्ध होगा। आप उन्हें दुग म ही बुलवा लीजिये ना, मौसी भी उन्हें दोबारा अपन निकट पाकर खिल उठेंगी।'

राणा प्रताप के महान वश से सबध रखने वाली मीणा जाति भले ही आज पतित और उपेक्षित समझी जाती हो, फिर भी उसकी परपरा समादरणीय और प्रणम्य है। सघप म सलग्न रहकर पुत्री को मुस्लिम अत्याचारी के पजे से छुडाने के लिए ही नायक आज तक जीवित रहा है और अब उसके आपके पास पहुँच जाने के समाचार न उसमे की जीवनी शक्ति को उद्दीप्त कर दिया है, नगर कोतवाल ने जसवत की बात का समथन-सा करते हुए कहा।

महाराज अब तक प्रकृतस्थ हो गये थे। जसवत को सबोधित करत हुए बोले, तुम ठीक कहते हो। तुम्हारी मौसी पिता से मिलकर बहुत खुश होगी। तुम स्वय कोतवाल के साथ जाओ और नाना को प्रेम और आदर से लिवा लाओ, खडगसिंह उनके यहा आने का सब प्रबध कर देगा।'

'जी।

जो आज्ञा महाराज।'

जसवतसिंह एव नगर कोतवाल खडगसिंह न महाराज से अनुमति पाकर वहा से प्रस्थान किया। उधर महाराज नृत्य-कक्ष स उठकर दीर्घा से होते हुए धीरे धीरे अपन निजी कक्ष की ओर चले। कक्ष क बीचाबीच छत क साथ एक झूला लटक रहा था। झूला क्या, पूरी मसनद थी। पीछे पीठ टिकान क लिए मीनाकारी की लकडी का अवलब था। बीच मे दो सुदर दपण जडे थ, दपणो के चारो ओर लकडी म बेल-बूटो की नक्काशी की गयी थी। जरी मे मढी गद्देदार बिछाई तथा तकिय झूल रहे थे। झूले के पाये चदन की लकडी के थे। प्रत्येक पाये पर नृत्य मुद्राओ म स्त्रियो की मूर्तियाँ उकेरी गयी थी। सामन दीवार के साथ एक बडी चौकी पर हुक्का रखा था, जिसकी नलकी बहुत लम्बी थी। झूल के आगे-पीछे झूलने पर भी नलकी क कमने म हुक्के के हिलने की कोई सभावना नहो रहती।

महाराज सीधे वहा आकर झूले की मसनद पर ऐसे बैठे, जैसे जुआरी दाव हारकर निराशा म टूट गिरता है। सेवक न आगे बढकर महाराज की जूतिया को गोद म सँभाला यथास्थान रखकर हुक्का गम किया और नलकी की नाव महाराज के हाथ म थमाकर स्वय नतशिर अन्य किसी आदेश की प्रतीक्षा म दीवार के पास जा खडा हुआ।

महाराज ने दो कश खीचे। सुगधित तबाक की महक कमरे म फैलने लगी मस्तक म जमी धुध भी साफ हुई। सेवक से बोले, तुम जाओ, बाहर ठहरो। पासवानजी को यहा आने का निवेदन करो।'

जो आज्ञा', कहता हुआ सेवक कक्ष स बाहर चला गया।

कक्ष मे बिल्कुल अकेले हुक्के की नाव मुह मे लगाय कश पर कश खीचते हुए महाराज गजसिंह स्थिति का विश्लेषण करने लगे। पासवानजी के पिता नायक का आगमन पहले तो उन्हे अप्रत्याशित और मानसिक आघात की तरह लगा, किंतु जसवत की टिप्पणी सुनकर आश्वस्त हुआ मन कही खिज्र खा के प्रति कुपित हो उठा। एक युवती को प्राप्त करने के लिए पहले तो उसकी इच्छा के विरुद्ध बनात कम और फिर उसे मजबूर करने के लिए उसके पिता स नृशस व्यवहार ! घोर अमानवीय कृत्य है यह। अक्षम्य अपराध खिज्र का दड मिलना ही चाहिए। अनारन को उससे छीन लेना उसके लिए पर्याप्त दड नही है। उस ऐसी शिक्षा दूगा कि भविष्य मे कोई उसके वश म भी राजपूती नारी का अपमान करने का साहस नही करेगा !' गजसिंह ने सोचा।

महाराज के निजी कक्ष म प्रवेश करत हुए अनारन न उनका अभिवादन किया। समुश्रु चहरे पर मुस्कान लाते हुए महाराज गजसिंह न अभिवादन का उत्तर दिया और अपने निकट झूले पर ही बैठने का सकेत किया। अब तक महाराज प्रकृतस्थ हो चुके थे इसलिए अनारन के आने तक उन्हे कोई मानसिक क्लेश अथवा क्षोभ नही रह गया था।

कहिये, महाराज न दासी को कैसे याद किया ?'

'दासी किसकी ? हमारी ता हृदय साम्राज्ञी बन गयी हो। क्या अभी भी

दासी पहलवान का मोह मुझे 'दास' समझने और पहलवान के लिए तो नहीं ?'

राम राम, दोनों कानों को छूते हुए अनारन ने कहा। क्या पाप के कांटों में घसीटते हैं। मुझे तो आपके चरणों में पड़ी रहने का अवसर मिल जाय वही गनीमत है—कहते हुए वह झूले से उठकर सचमुच महाराज के चरणों के निकट धरती पर बैठ गयी।

अरे-अरे क्या करती हो ? तुम तो प्राण हो मेरी', महाराज ने भुजा थामते हुए अनारन को खींचकर झूले पर बिठाते बिठाते आलिंगन में ले लिया। और फिर दोनों एकबारगी हँस पड़े।

तब सहज होकर अनारन ने महाराज की ओर इस प्रकार देखा जैसे वह उनके कथन को बड़े ध्यान से सुनने को आतुर है। 'जानती हो नगर कोतवाल खड्गसिंह क्या आया था ?' महाराज ने पूछा।

पासवानजी ने धीरे से इनकार में शीश हिलाकर नीचे भुका लिया।

प्रसन्नता का समाचार है कि तुम्हारे पिता जीवित हैं, महाराज अनेक बातें कहना और पूछना चाहते थे, किंतु पासवानजी का मन दुखी न हो जाये, इस विचार से अन्य सब बातों को छिपा गये। यों तो वे पूछना चाहते थे कि अनारन ने इतने दिनों से कभी अपने पिता के संबंध में बात क्यों नहीं की, किन परिस्थितियों में वह उनसे अलग हुई थी या पिता का वहां आना अच्छा लगा या बुरा ? ऐसी अनेक बातें महाराज के मन में उद्वेलन मचा रही थीं, किंतु अनारन का सामने शीश झुकाये बैठी देखकर वे उसका मन दुखाने का साहस नहीं कर सके। अतः समूचा विष नीलकंठ की नाईं पचाकर उन्होंने प्रेयसी को केवल शुभ समाचार द्वारा गुदगुदाना ही उचित समझा।

चमत्कृत हो उठी अनारन, 'सच ?

महाराज ने स्वीकृति में सिर हिलाया, जसवंत उन्हें लिवाने गया है, कोतवाल के साथ।

अनारन के नेत्रों की चमक द्विगुणित हो गयी। कितनी प्रसन्नता होगी उन्हें मुझे यहां देखकर। उन्होंने और मैंने मिलकर कुछ सपने पाले थे, किंतु अत्याचारी मुस्लिम शासक ने एक ही झटके में हम मिट्टी में मिला

दिया था। उन्हें तो मैं मृत्यु का ग्रास बन गया मान चुकी थी। यह तो आपकी उदारता और साहस था कि घूरे में गिरे फूल को उठाकर देव चरणों में जगह दे दी। हाँ, बाबा तो खुशी से झूम उठेंगे, अपने सपनों को सत्य देखकर।' एक ही सांस में अनारन यह सब कह गयी।

अब गजसिंह को लगा कि उसने अनारन से पिता के संबंध में पूछताछ न करके अच्छा ही किया। उसका रायाँ दुखाकर प्यार को रुसवा करने की बात होती!

'बाबा यदि यहां रहना पसन्द करें, तो उनका प्रबंध किया जाये?' गजसिंह ने परामर्श के ढंग से बात चलायी।

पासवान बोली 'आज की रात तो वे रहेंगे ही, किंतु हमेशा के लिए वे यहां नहीं रहेंगे। हमारे यहां लडकियों के पास रहने की परंपरा नहीं।'

गजसिंह यह सुनकर जैसे भार मुक्त हो गया हो। फिर भी दिखाने के लिए बोला 'जसवंत तो नाना के प्यार के लिए मचल उठा था, तभी तो उन्हें लिवाने गया है। वह उन्हें जाने नहीं देगा, बडा संवेदनशील है।'

'हां', अनारन ने हामी भरी, 'वह सबको चाहता है। समझदार और विनम्र भी है। अमर और भी उद्दंड हो रहा है।'

'अपना अपना स्वभाव है। अमर तलवार का धनी है, जसवंत कलम और तलवार दोनों का। अमर में व्यावहारिकता का नितांत अभाव है, मैं बहुधा उसके व्यवहार से चिंतित हो उठता हूं।' गजसिंह की पेशानी पर बल पड गये।

अनारन उत्सुक हो उठी। महाराज का हाथ थाम कर उनके कंधे पर प्यार से सिर टिकाते हुए बोली, 'अधीर न हों महाराज! वह अभी कुमारावस्था में है, उत्तरदायित्व सब सिखा देता है। आप प्रसन्न रहा करें, अपनी चिंताएँ मुझे दे दें।' अनारन की सुरभित श्वास को महाराज ने अपनी श्वासा के साथ मिलता हुआ महसूस किया।

महाराज मुस्करा दिये। चंद्र को अपने इतना निकट पाकर शीतलता को चूम लेने का लोभ संवरण नहीं कर पाये। भुजाओं के क्रोड में लिपटी सोने और सुगंध में भरी मादकता से मधुर सम्बोधन करते हुए बोले, 'प्राण, तुम्हारी इन्हीं बातों ने मुझे ठगा है। जसवंत को तो तुमने प्यार से अपना पुत्र

ही बना लिया है। तुम्हारे प्रति मैंने कभी उसे अवहेलना करते नहीं देखा। मुझे बडा संतोष होता है जब मैं उसे शालीनता और विनम्रतापूर्वक तुम्हारे प्रति समर्पित देखता हूँ। इसी तुलना में अमर की चिंता होने लगती है। वह बडा है उत्तराधिकारी है, किंतु राज काज में नीति और अधीनस्थ के लिए प्यार चाहिए। उद्दंडता और अव्यावहारिकता के कारण, मुझे डर है वह कभी सफल नरेश नहीं बन सकता।'

आप फिर भविष्य की चिंता करने लगे। यथासमय सब ठीक हो जायगा, अभी से उल्लास के इन क्षणों को संभावना की बोझिल चिंता के नीचे पिसने की क्या मजबूर कर रहे हैं, फिर राज्य की देखभाल जसवंत भी तो कर सकता है। अनारन जब से दोनों राजकुमारों के संपर्क में आयी थी, अनचाहे में दोनों के गुणों की तुलना करते हुए महसूस करने लगी थी कि जोधपुर का भावी शासक जसवंत को होना चाहिए। उद्दंड अमरसिंह के हाथों वह कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। आज यही बात अकस्मात् उसके ओठों पर आ गयी थी।

गजसिंह कुछ नहीं बोले। थोडी देर यह निस्तब्धता बनी रही। महाराज ने बात सुनी और उसके मर्म को पहचान लिया था। निस्संदेह महाराज स्वयं ऐसा ही सोचा करते थे किंतु पासवानजी के द्वारा कही यह बात उन्हें चुभी थी। वे इसीलिए गंभीर हो आये थे। सच कडवा तो होता ही है कडवी दवा की तरह। कडवी होने का ज्ञान उसके निगलने जाने में दुष्करता पैदा करता है। महाराज की भी यही स्थिति थी।

उधर महाराज को गंभीर देखकर अनारन को अपनी भूल समझ आ गयी थी। किंतु तीर धनुष से निकल चुका था। अनारन ने दाँतों तले जीभ काट ली। थोडे समय के मौन ने अनुलेप का कार्य किया। महाराज को रोष अवश्य हुआ, किंतु पासवानजी की परेशानी देखकर वे बात की आकस्मिकता को समझ गये। परेशानी के राहू द्वारा ग्रसित पासवानजी का चंद्रमुख महाराज के क्रोध को शांत करने में सहायक हुआ। ठीक भी है अपना ही सिक्का खोटा हो तो बनिये को क्या दोष। फिर पासवानजी ने कोई अपने स्वार्थ की बात भी तो नहीं की। सचमुच जसवंत अधिक गुण संपन्न है। उद्दंडता, अनुदारता और अव्यावहारिकता शासन पर आघात

पहुँचाने वाले दुर्गुण हैं—अमर इन्ही मे पलता है जबकि जसवत इनसे कही ऊपर है योग्य है।

'देखो प्राण', महाराज ने स्थिति का बोझीलापन दूर करते हुए कहा, जसवत बडे प्यार स नाना को लिवाने गया है। आता ही होगा ! तुम धाय माँ स कहकर अतिथि कक्ष मे बाबा के ठहरने का प्रबध करदो। मेरी ओर से भी उनसे ठहरने का निवदन करना किंतु यदि वे तुमसे मिलकर जाना ही चाहेंगे, तो कल प्रबध कर दिया जायेगा।

महाराज गजसिह आदेश देकर झूले से उठ गये। उन्हें रात्रि पूव की मत्री मडल की बठक म जाना था। उनका नियम था कि रात्रि मे विश्राम अवकाश प्राप्त करने से पूव सभी राज्याधिकरियो से मिलते और प्रजा के दुख-सुख की बातो की जानकारी लेते थे। आज भी महाराज उसी समिति मे जाने के लिए शेप प्रबध पासवानजी को सौंपकर अपने निजी कक्ष स बाहर आये और सीधे दरबार कक्ष मे पहुचे।

दरबार कक्ष मोती महल के साथ वाले दालान को पार करते हुए विशेपकर ऐसी ही विशिष्ट सभाओ के लिए बनाया गया था। इस कक्ष मे बीचोबीच पूव दिशा की ओर एक बहुत बडा आबनूस का सिंहासन लगा था। सिंहासन पर गद्दा गाव-तकिया तथा दूध धुली सफेद चादरें डालकर बिछायी की गयी थी। सिंहासन के बायी ओर कुमारो की चौकिया तथा दायी ओर मुख्यमत्री एव दीवान के लिए कुछ छोटी चौकिया बिछायी गयी थी। कक्ष के अन्य तीनो ओर लकडी की चौकियाँ लगी थी। कक्ष के ऊपर दीर्घा के समान चारो ओर रानियो अथवा स्त्री सेविकाओ के लिए झरोके थे। झरोको की महीन जालिया तथा उनके पीछे बैठी महिलाएँ नीचे के पुरुषो का आकषण होती थी किंतु जब महारानी अथवा पासवान झरोके के पीछे हो तो किसी को ऊपर की ओर आख उठाने का भी अधिकार नही था। इस कक्ष की छत पर नक्काशी एव चित्रकला के सुदर बेल बूटे बने थ। दीवारो मे लाल पत्थर पर बेल बूटो के अलावा कही-कही सगमरमर की जडत भी सुहानी प्रतीत होती थी। राज्य के विभिन्न अधिकारी, जमीदार श्रेष्ठी और मुख्य नागरिक लकडी की कुर्सियो पर पहले से विराजमान थे। राजकुमारो की चौकिया खाली थी। दीवानजी बडी शिद्दत से महाराज के

आने की प्रतीक्षा म सलग्न थे।

महाराज ने तभी दरबार कक्ष म प्रवेश किया। सब उपस्थित लोग उठकर खड़े हो गय। राजपुरोहित ने महाराज को आशीर्वाद दिया और दूर्वादल से जल के छीटे सारे कक्ष म उडाये। महाराज ने पुरोहित के लोटे म एक स्वण मुद्रा डालकर प्रणाम किया और आसन ग्रहण किया। पुरोहित आशीष देते हुए दरबार कक्ष से बाहर चला गया।

दीवानजी ने आज की दिन भर की बीती करनी का ब्यौरा देन के लिए राज्याधिकारियो का आह्वान किया। महाराज दत्त चित्त सुनने लगे।

राज्य की पश्चिमी सीमा पर नागौर रियासत के नवाब ने सेनाबदी कर ली है। उसका इरादा ठीक नही लगता। जब स पासवानजी महाराज की शरण म आयी हैं खिच खाँ छेडखानी के बहाने ढूढा करता है।

नगर मे आज कुछ मुसलमान कूचडो न चोरी चोरी एक गाय की हत्या का प्रयास किया। नागरिको ने उ हें पकडकर शहर कोतवाल को सौंपा।

'मडोर उद्यान म कुलदवताओ की मूर्तियो की स्थापना सपन्न हो गयी है। महाराज कभी पधार।'

खार के (उत्तर पश्चिम म) मरु प्रदेश म जल का निपट अभाव है प्रजाजन किसी समाधान की खोज मे है।

अरावली की पहाडिया मे कुछ दिन पूव कोई बनला पशु शायद बाघ है आ गया है, कई पालतू पशुओ की हत्या कर चुका है। प्रजा महाराज को शिकार के लिए आह्वान करती है।

इस प्रकार जब सब अधिकारियो ने दिन भर की रपट पेश कर दी तो शात भाव से महाराज ने दीवानजी का सम्बोधित करत हुए कहा खिच्च के नो दांत खट्टे करने की नही तोडने की अपेक्षा है। सनापतिजी से योजना तयार करन को कहिये। यो पश्चिमी सीमा पर चौकसी बढा दी जाये। ये मुस्लिम कूचड अभी भी चोरी छिपे गौ हत्या स नही टलते इ हें नगर से निकाल बाहर किया जाये। नगर क बाहर [illegible] झापडियाँ बनवा दी जायें। हमारी प्रजा [illegible] उन्हें कष्ट होता होगा। खार [illegible] का नियमित प्रबध किया जा [illegible] प्ति है

रखने की हिदायत कर दें।'

दीवानजी को तीनों आदेश देने के उपरांत महाराज मंत्री महोदय की ओर संबोधित हुए। मंत्रीजी, विचार बुरा तो नहीं शिकार पर चलने का। लम्बे अरसे से शिकार पर जाने का अवकाश भी नहीं मिल पाया। यहां तो पुण्य और फलियां साथ-साथ मिल रही हैं। बाघ का शिकार प्रजा के कष्टों का निवारण और फिर मार्ग में मंडोर उद्यान में कुल देवताओं की मूर्तियों के भी दर्शन हो जायेंगे। पासवानजी को साथ ले लेंगे, उन्होंने तो अभी मंडोर की हरितिमा के आकर्षक दृश्य देखे ही नहीं, कहीं जोधपुर को पत्थर और बालू ही न समझती रहें' कहते कहते महाराज ठठाकर हँस दिये। सबके चेहरों पर मुस्कराहट खेल गयी। महाराज के माधुर्य में सबकी मधुरता घुल गयी। मंत्रीजी ' महाराज ने खुलासा किया आप शिकार की यात्रा का प्रबंध तो कर ही डालिये। सुविधानुसार जो दिन जँचे, वही ठीक है।' इतना कहकर महाराज रात्रि पूर्व की इस विशिष्ट बैठक में उठ गये। उनके उठते ही सब लोग अपने अपने विश्रामस्थल के लिए चल दिये।

नगर कोतवाल के घर पर घड़ी भर के लिए तो जसवंत यह विश्वास ही नहीं कर पाया कि जिस मांस रहित अस्थि पिंजर के सामने वह खड़ा है, वह उसके पिता की प्रेयसी अनिंद्य सुंदरी अनारन बाई का जनक होगा। मानव कंकाल, भूल से जो अँधेरे में सामना हो जाये, तो भूत ही समझे लोग। सिर पर छोटे अव्यवस्थित सफेद बाल दाढ़ी मुंडी घनी मूँछें, पिचके गाल लम्बी छरहरी देह, संघर्ष, कष्टों और समय की चोटों से घायल अंग, फटे मैले कपड़े निःशक्त हाथ-पैर वह लोक कलाकार आज स्वयं किसी चित्रकार द्वारा बनाया भुखमरी की साकार यातना का चित्र दीख पड़ता था। जसवंत ने सिर से पाँव तक उसे देखा फिर शिष्टाचार-वश आगे बढ़ कर चरण छू लिए उसने नायक के। जोधपुर के राजकुमार द्वारा चरण स्पर्श पाकर एकदम द्रवित हो उठा वह और जसवंत को सीने से लगाकर अविरल अश्रुपात करने लगा। खड्गसिंह और जसवंत ने उसके मानसिक घावों पर अनुलेप के फाहे लगाये और धीरे धीरे सांत्वना देते हुए

अतीत को भूल जाने का परामर्श दिया। नवाब खिज्र खाँ के लिए उसकी घृणा इतनी ठोस हो गयी थी कि आज करुणा में आँसू भी उसे धो नहीं सके, हाँ अनारन के बचपन के सपनों को पूरा हुआ देखने की अभिलाषा ने उसमें एक नयी स्फूर्ति जरूर भर दी। अतः जसवंत की प्यारी संगति में वह दुर्ग के भीतर के महलों में पहुँचने की कल्पनाओं में खो गया।

नगर-कोतवाल ने दारोगा को हिदायत दी और सब लोग नायक को सादर महल में ले चले। उनके दुर्ग में पहुँचते न पहुँचते सूर्य पूर्णतः अस्त हो चुका था। संध्या रात्रि में ढल गयी थी। दुर्ग की ड्योढ़ी में मशालें गाड़ दी गयी थीं। चौकीदारों के बच्चों के सपनों में खोये होने का प्रमाण थी वहाँ की लौह शीतल चुप्पी। नायक को वहाँ कोई नहीं पहचानता था किंतु राजकुमार जसवंत और दारोगा को उनकी अगवानी करते देखकर मार्ग में सब लोग सत्कारपूर्वक नत शिर हो नायक का अभिवादन कर रहे थे। कोई भी हो वह! जरूर कोई विशिष्ट व्यक्ति होगा, तभी तो जसवंत को इसे लिवाने भेजा है महाराज ने। बस उन भोले ईमानदार ड्योढ़ी रक्षकों के लिए इतना ही पर्याप्त था।

दारोगा के परामर्श पर उन सबने महल के पिछले द्वार से प्रवेश लिया। धाय माँ को पता लग चुका था। अतिथि गृह भी महल के पिछवाड़े ही था इसलिए उधर से सीधे नायक को वहाँ पहुँचाने में सुविधा हुई। तभी सेवकों ने नायक को स्नानागार में नहाने के लिए पहुँचा दिया। स्नानोपरांत नये कपड़ों का प्रबंध किया गया। दूध और फलों का हल्का आहार नायक के सामने परस दिया। फलाहार के बाद नायक ने अपने शरीर में जीवन-योग्य शक्ति का संचार होते महसूस किया। अब वह प्रसन्न और स्फूर्त दिख रहा था। नायक के भोजन समाप्त करते-करते महाराज भी रात्रि पूर्व अधिशासी-बैठक का निलंबन कर उठ गये थे और सब अधिकारीगण अपने अपने विश्राम-कक्षों में जा चुके थे।

रात्रि का प्रथम प्रहर शुरू हो गया था। अभी-अभी दुर्ग के गजर ने इसकी सूचना दी थी। आकाश में शुक्ल पक्ष का चाँद सिर पर आ गया था, किंतु

महल अभी जग रहा था। धाय माँ ने अमर और जसवत को सुला दिया था। सेवक सेविकाएँ सब अभी अपने अपने स्थान पर मुस्तैद थे। पासवान जी महाराज की प्रतीक्षा म अपने कक्ष म पिंजर म बद सिंहनी के समान इधर स उधर और उधर से इधर चक्कर लगा रही थी। वे अपने पिता से मिलने के लिए अधीर थी किंतु राजवश की मर्यादा का ध्यान करके पहले महाराज से परामश कर लेना चाहती थी।

अधिशासी बैठक से उठकर महाराज सीधे पासवानजी के निकट पधारे। दोनों की आँखें मिली एक दूसरे से आँखो म प्रश्न हुए और बिना कोई उचित उत्तर पाये आखें झुक गयी। अनारन बाई का अतीत आज साकार होकर महलो म आ पहुँचा था। मर्यादा को ठेस पहुँचाने वाले अतीत के कडवे अनुभव, कौन उससे नमन मिलाना चाहता है? फिर अनारन तो अपनी सुदरता भाग्य एव सूझबूझ से आज प्रगति के शिखर पर पहुच चुकी थी। अतीत से दो चार होने का तात्पय नीलकठ की नाइ विष पचान का सामथ्य है, जिसे सब कुछ पा सकने का साहस रखने वाली अनारन भी बटोर नही पा रही। महाराज का ऐसा कोई क्षोभ नही। वे मात्र अनारन बाई के खिज्र द्वारा किय गये अपहरण की आखो देखी साक्षी दे सकने वाले नायक की उपस्थिति मे घबराहट महसूस कर रहे थे। व नही जानत कि अनारन के अपहरण के पीछे किसकी कितनी शक्ति मौजूद थी तथापि रह रहकर खिज्र के विरुद्ध उनका क्रोध उफनता और मन छटपटाता था।

इस दिशा म आज अधिशासी मडल की बैठक मे महाराज का यह सूचना भी दी गयी थी कि पश्चिमी सीमा पर युद्ध के बादल मँडरा रहे है। खिज्र खा को दड देने की इच्छा से महाराज के हाथ खुजला रहे थे। अनारन बाई तो मानसिक रूप म महाराज के प्रति बचपन से ही समर्पिता थी फिर खिज्र ने उसे अपनी बनाने का साहस क्यो किया—महाराज इस द्वेष से भी पीडित रहते थे।

अब नायक का जीवित होना और महलो मे उपस्थित हो जाना महा राज गजसिंह की द्वेष पीडा को अनेकानेक बिच्छुओ के डक की तरह वेदना की तरगो म कम्प्ल रहा था। महाराज बडे उदार और सुसस्कृत थे, इस

लिए मन की दशा को चेहरे से प्रकट नही होने देना चाहते थे। ऊपर से सौमनस्य बनाये रखकर उन्होने पासवानजी को सबोधन किया, प्रिय, बाबा से मिलने नही चलोगी ?'

पासवानजी के लिए जैसे यह वाक्य परीक्षा मे पूछा जाने वाला ऐसा प्रश्न था, जिसका उत्तर उन्हें मालूम न हो। अत वे चुपचाप महाराज की गहरी झील सी आखो मे झाँकती रह गयी। मुहूर्त भर की निस्तब्धता के बाद स्वय महाराज ने आगे बढकर उनके कधे को थपथपाया और अतिथि गृह की ओर चलने का मौन सकेत किया। अनारन बाई यत्र चालित-सी धीमे कदमों से महाराज के साथ-साथ महल के पिछवाड़े की ओर चली।

नायक के टूट गये शरीर आलोकहीन नेत्रो तथापि स्फूर्त चित्त को देखकर अनारन के मन पर गहरा आघात लगा। स्फूर्त चित्त का कारण वह समझ गयी है। वह जानती है कि यह अस्थायी मजिल है किंतु बाबा की देह और आखें तो अब स्थायी तौर पर धोखा दे रही हैं। अत अनेक वर्षों के बाद बाबा को सामने देखकर अनारन बाई अपने को और अधिक सयत नही रख सकी। तडित तीव्रता से लिपट गयी वह बाबा के साथ। दोनो के नेत्रो से अविरल जलधारा बहने लगी थी और महाराज पास म खडे इस वात्सल्ययुक्त मिलन को देख रहे थे।

'कहाँ खो गयी थी तुम मेरी लाडली ! बहुत ढूढा मैंने तुझे', रुआसे स्वर मे नायक ने अनारन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

अनारन पुन बिलख उठी, बोली बाबा, तुम्हें बहुत कष्ट सहने पडे, सब मेरे लिए। मैं न हुई होती तो ।' नायक ने उसके मुख पर हाथ रख दिया। कहा, तुम न हुई होती तो महाराज से सबध का गौरव मुझे क्यो कर प्राप्त होता ! मारवाड की आन और मर्यादा के रक्षक और पोषक महाराज के निकट तुम्हें देखकर मेरी बूढी हड्डियाँ भी उल्लास म नृत्य करने लगी हैं।

महाराज अब पिता पुत्री की बातो मे बोले बिना न रह सके, 'बाबा, आप ही का सब प्रताप है। अनारन ने भी कम कष्ट नही पाया है। अभी तो मुझे उस पाजी खिची का सजा देनी है। आपके आगमन स हमे बडी प्रसन्नता हुई है, ईश्वर आपका साया हम पर बनाये रखें। जसवत तो

सध्याकाल से ही नाना के आगमन का समाचार पाकर प्रफुल्लित हुआ फिर रहा है बडी खुशी से कोतवाल के संग आपको लिवाने गया।'

बाबा मुझे तो ख़िज्र ने कही का न रखा था', अनारन फिर बोली महाराज का सरक्षण न मिला होता तो शायद अब तक मेरी हत्या करवा दी गयी होती !

कुछ देर सब स्तब्ध रहा। क्या बाबा, आपने यह सब समय कहाँ बिताया ?' अनारन तथा महाराज गजसिंह ने उत्सुकतावश एक ही समय नायक से यह प्रश्न कर दिया।

नायक तडप उठा। 'मत पूछो मेरी लाडली यह प्रश्न मत पूछो मुझसे। मैंने इस बीच जो सहा है छोटा मुह बडी बात, भगवान किसी को न दे ऐसा जीवन !'

अनारन निष्प्रभ हो गयी। वह बाबा का दिल दुखाना नही चाहती थी। जल्दी से बोली 'रहने दो बाबा तुम्हें दुख होगा बताते मैं नही पूछूगी तुम्हारा अतीत। जीवन की तडपन के ये दो छोर—मैं और तुम—एक ही जैसे तो रह होग।

नही अनारा दुख तो अब अग-अग म रमा है इसमे घबराना क्या ? महाराज को अपनी मजबूरिया से परिचित करवाने के लिए मैं अपनी बीती बताता हूँ। याद है न तुम्हें ख़िज्र के सिपाहियो न मेरी गदन पर भाले से घाव कर दिया था—यह है उसका निशान, नायक ने गदन पर अँगुली रखते हुए कहा। तुमने मेरे प्राणा की खातिर चीख चीखकर समपण कर दिया तो भी तुम्हारे हरम म जाने के बाद मुझे उन यमदूतो से रिहाई नही मिली। रात भर मुझे बीसियो कष्ट पहुँचाये गये। कई प्रकार के घाव मेरे शरीर पर दाग दिये गये। ख़िज्र के आदमी मुझसे लिखवाना चाहते थे कि मैंने अपनी खुशी से अपनी बेटी का निकाह उससे कुबूल किया है। मैंने उनकी बात नही मानी तो क्रोध मे उन्होंने मुझे बहुत पीटा। मार खाते खाते जब मैं मूर्छित हो गया तो उन्होंने शायद मुझे मरा हुआ जानकर मेरे मूर्छित शरीर को दूर ठडी रेत म फिकवा दिया। अगले दिन जब सूय सिर पर आ गया और धूप के कारण रेत गम हुई तो शायद मेरे घावो को सेंक मिला। मेरी मूर्छा टूटी। किसी प्रकार मैं उठकर बैठ पाया, तो देखा कि

मेरे शरीर मे कई जगहो से रक्त बह रहा है कही गाढा होकर जम गया है। कपाल मे से खून बहकर ठुड्डी तक आ चुका था। अग-अग पिराता था सो अलग। प्यास से गला सूखा जा रहा था चलकर रेगिस्तान मे से निकल सकने की कोई सभावना नही दीख रही थी। घावो को देखकर अब तक चीलो और गिद्धो ने आकाश मे मँडराना शुरू कर दिया था।

'सौभाग्य ही जानो तुमसे मिलना बदा था, एक साडनी सवार ने उधर से गुजरते हुए मेरी करुण दशा को देखा। जाने उसके मन मे भगवान क्यो कर अवतरित हुए, उसने दया करके मुझे थोडा जल दिया और फिर अपने साथ ही सॉडनी पर बिठाकर हमारे पडाव के पास छोड गया। सब लोग इकट्ठे हो गये। मेरी दुदशा से वे सब समझ गये। तुम्हारे अपहरण की बात उन्होंने जान ली मेरी मरहम-पट्टी भी की और सहानुभूति भी दिखायी। किंतु बिल्ली के गले मे घटी बाधने को कोई तैयार नही हुआ। खिज्र के शक्तिशाली शासन के विरुद्ध कौन हथियार उठाकर मेरे साथ चलता।

'मुझे अपमान का गम खाये जा रहा था। वह दुष्ट जो हमे पुतलिका नृत्य के लिए न्योतने आया था, फत्ते खॉ था उसका नाम। सबसे पहले उसी को दड देने के लिए मेरे हाथ खुजलान लगे। मैंने नगर म जा-जाकर उसे ढूढा और एक दिन पुरानी मस्जिद के समीप मैंने उसे देखा और पहचान लिया। वह मरी दशा दखकर मुझे नही पहचान पाया। मैंने कई दिन तक उसका पीछा किया उसकी गतिविधि को जाँचा और उसे दडित करने का निणय ले लिया। मैं क्रोध म उसका अग भग करने की सोचता था किंतु भवानी की कसम जब खड्ग उठा ता, छोटा मुह बडी बात उसका सिर कधा के ऊपर से उतरकर धरती पर लोटने लगा। शोर मच गया, सरे बाजार खून हो गया। लोग मुझे पकडने के लिए मेरी ओर भागे, किंतु जाने किस जोश म मैं तलवार घुमाता हुआ वहाँ से बच निकला। छोटा मुह और बडी बात मैं वहाँ से अपने ठिकाणे पर नही गया वहाँ नवाब के सिपाही मुझे निश्चय ही पकड लेते। इधर मैंने अभी खिज्र की हत्या की भी मन म ठान रखी थी।

मैंने अपना भेस बदल लिया और नागोर मे ही एक गदे और निधन

मोहल्ले म रहने लगा। सिपाहियो न पडाव वालो को अनेक कष्ट पहुचाए, किंतु वे वीरतापूवक धैय स यह सब सहत रह। आखिर एक दिन मैंन महल के पिछवाडे वाले उद्यान म छिपकर तुम्हार खिच्च पर धनुप से बाण फेंका। शायद तुम्हारा ही सजीला भाग्य रहा हागा कि वह पापी अकस्मात पीछे को मुड जाने के कारण बच गया। तीर सामन क पड मे जा घुसा। उद्यान खिच्च क सिपाहियो न घेर लिया। मैं वही लम्बी घास और झाडिया लताआ म बनी कुज मे छिप गया।

अधकार का लाभ उठात हुए जब मै उद्यान से बाहर निकला, तो नगर म कदम कदम पर मुझ भय और क्षाभ का वातावरण महसूस हुआ। मैं वहा स भागकर मेवाड की ओर चला गया। वहा भिखारियो का जीवन जिया, हत्या के आराप से बचने के लिए और अपनी पहचान को छिपाये रखने की खातिर मैंने अपना धधा भी त्याग दिया। धधे से कटकर जिस सत्रास और तनाव का जीवन मैंन जिया वह बडा विकट था।'

बाबा का व्यतीत सुनत सुनते अनारन की सिसकिया सुनायी दन लगी थी, महाराज पूण निश्चल हुए बाब पर घटित सुन रह थ आर कुछ साचत भी जा रह थ।

अब कुछ दिन पूव मुझे खिच्च क यहा स तुम्हारे छुटकार की सूचना मिली जस मरी दीघकालीन अभिलाषा को आलोक मिला हो। इसीलिए मैं तुम्ह खोजता यहा चला आया। अब मैं निश्चित हूँ प्रात काल चला जाऊँगा। मुझे खिच्च से अभी हिसाब चुकाना है आर अब म निभय होकर अपना काम कर सकूगा।

अनारन फफक पडी। महाराज न उसकी पीठ पर प्रम का हाथ रखा। बोले, 'नही बाबा अब आप शेष जीवन शांति स यहा रहो। खिच्च का दड देने का कार्य मुझे सौंप दो।

नही मुझ उसस बदला लेना है यह बदला म ही लूगा।

हठ छोडिय बाबा', महाराज न पुन कहा, आपके प्रताप स जोधपुर की सना सशक्त है खिच्च का मुह ताड दगी।

नही महाराज, आप उसकी रियासत उसस छीन सकत ह, मुझ तो उसके प्राण उसस छीनन हैं।

क्या ऐसा नहीं हो सकता', नायक की हठ को देखत हुए महाराज न प्रस्ताव किया, 'कि हमारे अनुरोध की रक्षा करने के लिए आप यहीं रुक जायें और आपके सकल्प की रक्षा क लिए भविष्य मे नागौर विजय अभियान का नेतत्व आपका साप दिया जाय ?'

'हाँ बाबा , अना ने मचलत हुए-स वचन किया, 'यह तो ठीक है ना ! आपका तथा महाराज का सकल्प एक ही समय पूण होगा । मान ला बाबा, मान जाओ आप । मैं तुम्हारे पाँव पडती हूँ ।'

ठीक है', नायक ने हताश से स्वर म कहा, 'मैं नागौर पर चढाइ करन तक इसी अतिथि कक्ष म ठहरूँगा । महाराज, आप शेष सब प्रबध कीजिये । मुझे यथाशीघ्र अपने सकल्प की पूर्ति के उपरात मत्यु का वरण करना है —उसी म मरा मोक्ष है ।

चार

अनारन बाई यद्यपि पासवान का पद प्राप्त कर चुकी थी, राज घरान की मर्यादाओ को समझती और पालती थी, राठौर वश की प्रतिष्ठा की सरक्षिका और राजकुमारा की माता समान थी, तथापि मीणा सस्कारा क कारण मुक्त विहार की उसकी प्रवत्ति शमित नहीं हो पायी थी। बचपन से जवानी तक का समय विस्तत गगन के नीचे खुले रामीर म अनेक साथिनो के साथ थिरक थिरककर नाचना, मीलो रेत पर दौड-दौडकर पकड पकडायी का खेल खेलना और मस्ती म बाबा के गल लिपटकर कहानियाँ कहना सुनना उसका स्वभाव बन गया था । नवाब खिष्प खा द्वारा अपहरण के उपरात उसे जनानखान मे बदी रहना पडा था, किंतु वहा भी उसने पर्दा स्वीकार नहीं किया था — मकीना क सपक मे वह मुक्त व्यवहार और अट्टहास का आनद भी ले लेती थी । उसकी सबल स्वतत्र मनोवत्ति ही थी जिसने उस अपने प्रेम दवता गजसिंह के सग भाग जाने का साहस दिया था और अब राठौर वश के रनिवास म सर्वोच्च पद प्राप्त

कर लेने पर भी उसकी विहार तथा भ्रमण की अभिलाषा बनी रहती थी। प्रात काल भवानी के मदिर तक की पैदल यात्रा और सायं महला के पिछवाडे चोखला उद्यान मे स्वय महाराज के सग विहार करना अनारन की दिनचर्या का अग बन गये थे। प्रेमिका के इतने से निहोरे को महाराज हृषपूवक स्वीकार करते थे और यदा-कदा इधर उधर जाते समय भी पासवानजी को साथ ले लेते थे, ताकि उसकी उन्मुक्त जीवन की पियास शात रह सके। इसीलिए इस बार जब मडार के नखलिस्तान से होकर अरावली की तलेटी मे बाघ क शिकार का कायक्रम बना तो महाराज ने पासवानजी को सग ले जाना उचित समझा।

रजवाडी सवारी का पूरा प्रबध किया गया था। महाराज और पासवानजी की सवारी के साथ लगभग एक सौ सनिक और पचास चुने हुए घुडसवार थे। मडोर तक महाराज ने हाथी पर जाना उचित समझा था। क्योंकि दुग से लेकर मडोर तक जाने के लिए नगर म से गुजरना होता था और महाराज प्रजा म अति लोकप्रिय थ, इसीलिए उन्हाने मडोर तक हाथी पर जाने का कायक्रम बनाया। इस बहान प्रजा जन को महाराज तथा पासवानजी के दशन सुलभ होगे और वे फूल मालाओ आरती के थालो और मगल गीता से अपने महाराज के प्रति हार्दिक प्रेम प्रदशन कर सकेंगे। प्रजा ने अभी तक पासवानजी के दशन कभी नही किये थ। केवल उनकी सुदरता उदारता और प्रजा वत्सलता की बाते ही सुनी थी, उन्हे प्रसन्नता थी कि महाराज महारानी की अकाल मत्यु के उपरात अब पुन उल्लास महसूस करत थे। इस उल्लास का समूचा श्रेय पासवानजी को था अत प्रजा के मन मन मे उनकी कल्पित मूर्ति बसी थी। उसी का साक्षात्कार करने की साध इस कायक्रम स पूण हो सकने का विश्वास जनता को था।

महाराज के रवाना होने से एक दिन पूर्व ही शाही खैमा और नौकर चाकर यात्रा मे जरूरत पडने वाले सब सामान खाद्य सामग्री तथा विश्राम और सुविधा की समस्त वस्तुएँ लेकर मडोर की ओर कूच कर गये थे। इस बार पासवानजी के साथ होने के कारण दास दासियो को विशेष आदेश दिय गये थे। महाराज का यह प्रवास एक प्रकार से उल्लास और आनद का कायक्रम था, इसलिए महाराज और पासवानजी के विश्राम विलास का

पूरा प्रबंध किया गया था। समूची यात्रा म किसी प्रकार की असुविधा, अव्यवस्था या कुप्रबंध के लिए अधिकारियो को दड मिलन की चेतावनी दी गयी थी, इसीलिए वे अत्यत सावधान और नौकरा चाकरो क प्रति कठोर बने हुए थे।

दीवानजी का आदेश था कि शाही खेमा मडोर क नखलिस्तान म आवश्यक प्राकृतिक दृश्या के सान्निध्य म किसी सुरक्षित स्थान पर गाडा जाय। महाराज और पासवानजी अरावली की तलेटी की ओर जाने स पूव दो दिन मडोर मे ही विश्राम करेंगे और वहाँ प्रकृति की मोहक लीला के बीच पासवानजी के साथ उल्लासपूण वातावरण मे विहार करेंग।

अगले दिन महाराज की सवारी चलने वाली थी। नगर मे प्रजा के चित्त मे उमग थी। लोग सुदर रग बिरगे कपडे पहने शाही सवारी की प्रतीक्षा म थे। घरो की दीर्घाआ तथा वीथियो के दोना ओर झरोखो मे लाल रग की बहार थी। कन्याएँ लाल रग के चोली लहँगे पहने, ऊपर लाल तथा सुनहरी जरी की किनारी वाली चूनरिया लिए अपने राजा तथा उनकी हृदयेश्वरी के दशना को उतावली हुई जा रही थी। सुहागनें घरो की दीर्घाआ म सोलह श्रृगार किय फूला की डलिया उठाय खडी थी। उनकी रेशमी साडिया और उन पर कढाई की ओढनियाँ उद्यान मे बहुरगी सुमन गुच्छा का स्मरण दिलाती थी। माथे पर फूलता बोरला उनके सुहाग का प्रतीक था—कगन, हमेल पायल और कमरबद उनके विशेष आभूषण उनकी समृद्धि और सपन्नता का प्रमाण देत थे। नगर द्वार पर श्रेष्ठियो की युवा बहुएँ सजी सवरी हाथा म स्वण थाल लिए कुमुम रोली, धूप दीप, फूल-तदुल और केला श्रीफल सजाये राजा की सवारी की आरती उतारन के लिए तयार खडी थी।

महाराज पासवानजी के साथ अपने एरावत पर सवार दुग की डयोढी से बाहर आने वाले थे। बीस घुडसवार एरावत के आगे चल रहे थे, बीस पीछे थ पाच पाच दायें-बायें अपने भाले ताने घोडा पर इस प्रकार मुस्तैद बठे थे, जसे धनुष पर चढा बाण हो। एक सौ पैदल सनिक भी सवारी के चारा ओर अपने हथियार सभाले राजा का अग रक्षण कर रहे थे। साथ म कुछ नौकर चाकर भी थे—छत्र बरदार, मशालची, महावत, मचान

बाधने वाले आदि। इस यात्रा मे अमर और जसवत को नही ले जाया जा रहा था। व दोनों धाय मा की देख रेख म रहने वाले थे। जसवत प्रसन्न था, उसे इस बीच कुछ पढ लिख सकने का अवकाश उपलब्ध होगा, किंतु अमर क्षुब्ध था, वह शिकार के सुअवसर से वचित रह गया था और साथ ही उसका कुठित मन यह सोचने को विवश हो-हो जाता था कि शायद पासवानजी ने उसके पिता को ऐसा भरमा लिया है कि अब व उसकी उपेक्षा करने लग है।

ज्योंही महाराज की सवारी दुग की डयाढी म पहुँची, 'महाराज की जय' के गगनभेदी स्वरा से आकाश गूज उठा। नगर के प्रवेश द्वार पर श्रेष्ठी वधुए महाराज के आगमन का सकेत पाकर युगल जोडी की आरती उतारने के लिए तत्पर हो गयी। उन्हाने अपनी अपनी थालियो मे सुगधित धूप और दीपक जला लिए थे। धूप का मलय धूम वातावरण को मादक बना रहा था—लचकता थिरकता यौवन उस मादकता को शतगुणित करता था। प्रथम घुडसवार ने नगर द्वार मे प्रवेश किया, सब सावधान हो गये। ज्योंही एरावत पर महाराज और पासवानजी के दशन हुए, एक स्वर मे वहा एकत्रित सभी नागरिको न महाराज का जय-जयकार किया। वीथि के दोनो ओर नव वधुआ न खडी रहकर दाना हाथो से अपनी-अपनी थाली को महाराज की ओर हिलाते हुए मगल गान आरभ किया, आरती अनुष्ठान की सपन्नता के लिए जो ब्राह्मण पुजारी बुलाये गये थे, उन्हाने वद मत्रो का उच्चारण किया और महाराज के एरावत को रोककर वीथि के बीचो-बीच चौक पूरते हुए नव ग्रह शमन की आहुतिया दी तथा महाराज को सोल्लास सकुशल यह यात्रा सपूर्ण करने का आशीर्वाद दिया। सवारी नगर शिराओ म स होता हुई आग बढी। सुहागिना और यौवन के द्वार का थपथपाती कन्याओ न वीथो से फूल बरसाने शुरू किय। महाराज हाथ उठा उठाकर प्रजा-जनो के उल्लसित अभिवादनो का उत्तर दे रह थे। पासवानजी इतना सम्मान-सत्कार पाकर लज्जा से गडी जा रही थी। वे सोचा करती थी कि नियति भी विचित्र शक्ति है। कुछ वर्ष पूर्व वह सपने देखती थी राजकुमार गजसिंह के, सपने सपने ही रह गये और विवश उसे नवाब खिज्र खाँ का बिस्तर गमाते रहना पडा और अब दिन ऐसे फिरे कि

महाराज गजसिंह की महारानी का स्थान और अधिकार वह भोग रही है। सम्मान-सत्कार का कोई अभाव नहीं। उसके संकेत पर महाराज चलते हैं तो उनका शासन भी उसी के इशारा पर चलता समझा। वाह रे भाग्य, विडबना तेरी ! कौन कब, क्या हो जाये कोई नही जानता !

अनारन बाई इन्ही विचारो म डूबी हाथ जोडे बैठी थी कि एक फूल माला गोलाकार म घूमती हुई आयी और सीधे पासवानजी के गले म लिपट गयी। दर्शको म उल्लास छा गया, और गभीर हर्ष ध्वनि हुई प्रजा *जन खिल उठे और अनारन बाई जैसे सपना स जग गयी। जिधर से माला* फेंकी गयी थी, पासवानजी की दृष्टि उसी दीर्घा की ओर उठी। माला फेंकने वाली चचल कन्या न दोना हाथ जोडकर उनका अभिवादन किया और मारवाडी भाषा म महाराज के साथ उनकी जोडी सौ वष तक बनी रहने की मगल कामना की। अनारन बाई खिल उठी। प्रसन्न होकर उसन अपने गले स सच्चे मोतियो की एक सुदर माला उतारकर उस कन्या की ओर बढा दी। एरावत क हौदे से छूटी हुई दीर्घा पर खडी वह कन्या मोती माला पाकर निहाल हो गयी। दीर्घा पर बैठी अन्य स्त्रिया ने कन्या के भाग्य की सराहना की।

सवारी आगे बढती रही।

महाराज के ठहरने क लिए सेवको ने मडोर म नाग गगा से कुछ हटकर शाही खेमा गाड दिया था। यह खेमा महाराज की ऐसी शिकार यात्राओ के लिए विशष तौर पर तयार करवाया गया था और 'दौलतखाना' नाम स पहचाना जाता था। खैमा क्या था पूरा एक मकान था, जिसकी बाहरी चहारदीवारी कपडे की थी। कपडे की [illegible] री के [illegible] ओर चार चार हाथ खाली जगह थी, [illegible] र समय शस्त्र लिए चौकसी करत [illegible] क [illegible] भारी पहरा रहता था किंतु [illegible] थे। अग रक्षको के इस [illegible] सोने, खान और [illegible] न क अलग

तथा शृगार के लिए भी एक प्रकोष्ठ सुरक्षित था। खान पान वाले प्रकोष्ठो म भोजन का समूचा प्रबध होता था, बीच की दीवार ऐसे कपा की थी जो धुएँ से प्रभावित न हो। बीच वाले बडे प्रकोष्ठ म महारा प्रजा जना तथा गावो के मुखियाओ को मिलते और बातचीत करते थे बीच के प्रकोष्ठ के पीछे दो विशेष प्रकोष्ठ थे एक पासवानजी के ठहर का तथा दूसरा महाराज का शयन-कक्ष था। शयन कक्ष के चारो ओर कड पहरा रहता था। पासवानजी के साथ जब महाराज शयन-कक्ष मे होते त मारे दौलतखाने मे किसकी मजाल थी, जो उन्हे कोई सूचना भी दे सके शयन कक्ष मे महलो की तरह ही एक बडा पलग बिछा रहता था, जिस प सुदर बिछाई और दो कढाई के तकिए रखे रहते। रात्रि के शयन काल पासवानजी जब अपने प्रकोष्ठ मे से महाराज वाले प्रकोष्ठ मे जाती दौलतखाने की साँसें रुक जाती किसी को फुसफुसाने तक की अनुमति न थी। अग रक्षको की पदचाप की ध्वनि ही दौलतखाने की एकमात्र धडक बन जाती थी।

यद्यपि राजपूतो मे रिवाज था कि वे घर से बाहर सदैव किसी छो सी खटिया पर ही सोते थे इसमे वे निद्रा मे भी सावधान रह सकते अ शत्रु द्वारा खाट के साथ बाध दिये जाने पर भी खाट सहित उठकर स लोहा लेते थे। केवल महाराज का ही प्रवास मे भी पलग उपलब्ध और अब जबकि पासवानजी इस बार साथ थी, तो उनकी सुविधा विशेष ध्यान रखा गया था। इसी जगह का महाराज आदेश आदि लि के लिए प्रयोग करते थे। इसलिए पलग के निकट ही एक छोटी चौकी चाँदी का कलमदान रखा था, जिस पर स्वण की मीनाकारी की गयी प्रकोष्ठ के बीचोबीच बिल्लौर के हडे टगे थे जिनमे कभी शमा रखा देते प्रकाश कई गुना बढ जाता था। दो दीवारो मे जलती मशालें गाडने स्थान बनाया गया था। बीच वाले हडे मे मद्धम प्रकाश देने वाली रात भर जलती रखी जाती थी घुप्प अँधेरे मे पासवानजी को घबर होने लगती थी। उस प्रकोष्ठ म ऋतु अनुसार जल झरी और अग्नि- का बराबर प्रबध था। महाराजा के चुने हुए पैदल और घुडसवार अग र रात दिन दौलतखाने की रक्षा मे मुस्तैद रहते।

बस दौलतखाना क्या था, महाराज की सुविधाओं का पिटारा और पूर्ण सुरक्षित दुर्ग था। प्रस्तुत यात्रा के दौरान महाराज को दो दिन दौलतखाने में ठहरना था। शिकार का आधार-स्थान भी यही था। कार्यक्रमानुसार महाराज दिन ढले अरावली की तलटी में जाने वाले थे और रात भर मचान पर रहकर शिकार का आनंद मनाते हुए अगले दिन दौलतखाना में ही विश्राम करने वाले थे। दो दिन के विश्राम के दौरान सेवकगण मचान बांधने और हाँका लगाने का कार्य पूर्ण कर लेंगे।

संध्या तक महाराज की सवारी मंडोर के नखलिस्तान में पहुँची। वहां पहले से पहुंचे अधिकारियों तथा दास-दासियों ने महाराज और पासवानजी का स्वागत किया। जोधपुर के रेगिस्तान से मंडोर के नखलिस्तान में दो दिन के लिए आने वाला प्रत्येक व्यक्ति मानसिक संतोष महसूस कर रहा था। महाराज की सेवा में रहने का उन्हें अतिरिक्त लाभ था—महाराज को प्राप्त सभी सुविधाओं में उन्हें भी आंशिक उपलब्धि होती ही थी। महाराज के एरावत और घुड़सवारों के घोड़ों के लिए जो स्थान नियत किया गया था, वहां सबके रातब का प्रबंध कर दिया गया। महाराज तथा पासवानजी विश्रामार्थ दौलतखाना में चले गये। सबको सेविकाओं ने यथेष्ट सावधानी से उनके स्नानादि का प्रबंध कर दिया। महाराज को स्नान से पूर्व शरीर की मालिश का शौक था, पासवानजी हाथी के हौद में झूलती थक गयी थीं, अतः दोनों के शरीर पर सुगंधित तेल-मालिश की गयी।

स्नानोपरांत महाराज बीच वाले बड़े कक्ष में पधारे। तलटी के गांवों के कुछ लोग उन्हें मिलने आये थे। जय-जयकार के बाद उन्होंने सेवा में निवेदन किया कि किसी वनैले पशु के उधर आ निकलने से वे बहुत परेशान हैं। उनका अनुमान है कि पशु बाघ है। उसने उनके कई जानवर मार दिये हैं, एक-दो बच्चों को भी उठा ले गया है। महाराज का आगमन उनके लिए जीवनदायी होगा।

'क्या बाघ रोज गांव पर धावा बोलता है?' महाराज ने पूछा।

'लगभग प्रतिदिन ही आने लगा है। कोई पशु बाहर बंधा रह जाय, वही उसका शिकार हो जाता है,' ग्रामीणों ने प्रार्थना की।

'आप लोगों में से किसी ने बाघ को देखा है?'

'नहीं', ग्रामीणों ने स्पष्ट किया देखा तो नहीं। वह छिपकर आता है और बिजली की सी तेजी से झपटकर गायब हो जाता है। उसके पंजों तथा बकरी को बिना घसीटे उठा ले जाने की घटनाओं से अनुमान लगता है कि यह बाघ ही होगा। जब कभी उसने गाय मारी है तो उसे घसीटकर जंगल तक ले गया है। घिसटने के चिह्नों को देखते हुए पता चलता है कि पीछे जिस छोटी नदी का जल नाग गगा तक आता है, उसी के किनारे कहीं वह छिपता है।

'तो उसे मारने के लिए वहीं जगह अधिक उपयुक्त नहीं होगी', महाराज ने पूछा।

'महाराज, आपकी अनुमति हो तो हम वहीं मचान बना दें? रात को पाडा बाँध देंगे और सध्या से ही नदी के किनारे से सारे जगल में हाका करवा देंगे, जिससे उसके दूसरी ओर जाने की सभावना न रहे।'

ठीक है आप लोग सब प्रबंध करें परसों रात हम मचान पर चलेंगे। पासवानजी भी हमारे साथ होंगी इसलिए प्रबंध पूरा और उपयुक्त होना चाहिए।' महाराज ने आदेश दिया, 'अब आप लोग जाइये हम विश्राम करेंगे।'

ग्रामीण बड़े आदर भाव से उठकर जुहार करके दौलतखाना से बाहर आ गये। महाराज ने दीवानजी को बुलाकर कुछ गोपनीय बातचीत की और भोजनादि के लिए भीतर के प्रकोष्ठों में चले गये।

दौलतखाना के भीतरी भाग में महाराज के अंग रक्षकों ने अपने स्थान सँभाल लिए थे। अंधकार छाने लगा था। भीतर के प्रकोष्ठों में मशालें और हंडे प्रकाशित कर दिये गये थे। महाराज और पासवानजी ने भोजन किया और चाँदनी रात में लीला सुख पाने की इच्छा से पासवानजी का हाथ थामकर नाग-गगा के तट की ओर चल दिये। महाराज की इच्छा जानकर अंग रक्षक उस समूचे क्षेत्र में दूर दूर तक फैल गये और मुस्तैदी से चौकसी करने लगे।

आज त्र्योदशी थी पूर्णिमा के दिन शिकार की खास योजना थी। चाँदनी आज भी खूब खिली थी। राजस्थान में चाँदनी कुछ अधिक खिलती है शायद इसलिए कि रेतीले प्रदेश में दूर दूर तक [illegible]

पडने वाली चाँदनी परावर्तन करती है। मडोर रेतीला नही है फिर भी जोधपुर के पुराने राजाओ की दूध धवल छत्रिया पर पडता प्रकाश कई गुना बढ जाता है। य छत्रियाँ नाग गगा के निकट ही बनी हैं, जोधपुर नरेशा की समाधिया के रूप मे। सफेद सगमरमर और चाँदनी की पुरानी दोस्ती है दोनो एक-दूसरे मे जब गले मिलते हैं, तो चमत्कृत हो उठते हैं। उल्लास के कारण काति और काति से ज्योति बढने लगती है।

नाग गगा एक बहुत ही छोटा झरना है। अरावली की तलेटी की ओर से किसी नदी की कोई छोटी धारा इधर भटक गयी है। इसी धारा से धीरे धीरे पानी गिरता है और आगे आकर बावडी के रूप म परिवर्तित हो गया है। रेगिस्तान मे झरना उल्लास का प्रतीक है शायद इसी कारण जोधपुर राज्य ने इस स्थान को उद्यान के रूप मे विकसित कर लिया है और ये छत्रियाँ आदि यहाँ बनवाकर इसी मिस राज्याधिकारियो को यहाँ तक आते रहने का आह्वान किया है। रात्रि के समय रेतीला प्रदेश प्राय शीतल होता है यहाँ तो हरितिमा जलाशय और चाँदनी भी हैं अत दिन भर के ताप लू और शरीर की टूटन को भुला देने म समर्थ इस वातावरण मे महाराज और पासवानजी बिन पिये ही प्रेम की मदिरा से मदिर हुए जा रहे थे। वातावरण की मदिरता चाहत की मधुरता और राज काज से दूरी की निश्चितता ने महाराज और पासवानजी मे मर्यादाओ के बोझ को भी कुछ हल्का कर दिया था। वे स्फूर्ति सी महसूसते हुए एक दूसरे का हाथ थामे मर मरीन छत्रियो मे स होते हुए नाग गगा के किनारे जल के गिरने की मादक ध्वनि को सुनने आ बैठे थे।

ठडी बयार चल रही थी। नखलिस्तान के फूलो को छूकर जो पराग कण वह साथ लाती, उसी से गधिया जाती थी। आकाश म निर्मल चाँदनी नाग गगा की शीतलता और पीछे पवत शृ खलाओ की महक चारो ओर से सुरक्षित एकात और समर्पित प्रेम की मादकता अभिभूत होकर पासवान जी ने महाराज के कधे पर शीश रख दिया। महाराज ने [illegible]
'अन्ना' और उसका हाथ प्यार से [illegible]

अनारन बाई एकबारगी तडप [illegible]
हाथ पर कोई अगार छू गया हो।

अर्धनिमीलित नेत्रों में उसने महाराज के क्रोड में बंधकर उनके विशाल सीने मे अपना मुख छिपा लिया। किंतु नजर लगने के भय से मुख पर दिये डिठौने में जैसे नजर और अधिक खिंचती है, वैसे ही अनारन के मुख छिपा लेने पर महाराज ने ठोडी से ऊपर उठाते हुए अपने उत्तप्त और पिपासित ओठ अनारन के स्पन्दित थिरकते हुए ओठों पर छू दिये। अनारन के लिए अब अपने को मर्यादित रखना कठिन हो गया। वह अवलम्ब पाकर पेड़ से लिपट जाने वाली लता की नाई महाराज से आलिंगन बद्ध हो गयी। मादक वातावरण में भला दो प्रेमी कब तक कृत्रिम दूरी बनाये रख सकते थे।

यही वह स्वर्गिक सुख था बचपन से अनारन ने जिसके सपने लिए थे। ईश्वर प्रदत्त सुन्दरता ने उसके सपनों को हवा दी थी। अनारन बाई सी सुन्दरी उस समय पूरे राजस्थान में कहीं नहीं थी। खानाबदोशों के साथ रहते हुए तलवार और भाला चलाने में भी उसने प्रवीणता प्राप्त की थी। सुंदरता के सोने में वीरता की सुगंध— महाराज गजसिंह तो पूर्णत लट्टू थे उस पर। अनारन बाई ने भी बहुत भटकने पर अब अपनी मंजिल पा ली थी अत महाराज के आलिंगन में लिपटकर वह समय की गति और जगत की भीति से ऊपर उठ गयी थी। महाराज की परछाईं बनकर जीना ही उसे इष्ट था और अब महाराज को भी अकेलापन भाता नहीं था। इसीलिए तो युद्धभूमि के अतिरिक्त हर जगह महाराज अपनी 'अन्ना' को साथ ले जाते थे।

पल घड़ियों में और घड़ियाँ पहर में बदल गयीं। महाराज और अनारन एक-दूसरे के आलिंगन में बंधे अलौकिक आनंद में विभोर होते रहे। चाँद जब सिर पर आ गया तो महाराज ने पुकारा, 'अन्ना।'

'प्राण।'

'क्या रात भर यहीं बैठे रहना है?'

'मेरा समूचापन आप हैं प्रिय। जहाँ आप हैं रात्रि तो क्या मुझे जीवन वहीं बिताना है।'

'तुम्हारी बातें!'

'नहीं प्रिय मंजिल को पाकर मैं धन्य हो गयी हूँ।'

'दौलतखाने में चलना है, या नहीं?'

पडने वाली चाँदनी परावतन करती है। मडोर रेतीला नही है फिर भी जोधपुर के पुरान राजाओ की दूध धवल छत्रियो पर पडता प्रकाश कई गुना बढ जाता है। ये छत्रियाँ नाग गगा के निकट ही बनी हैं, जोधपुरनरेशो की समाधियो के रूप मे। सफेद सगमरमर और चाँदनी की पुरानी दोस्ती है दोनो एक दूसरे से जब गले मिलते हैं तो चमत्कृत हो उठते हैं। उल्लास के कारण काति और काति से ज्योति बढने लगती है।

नाग गगा एक बहुत ही छोटा झरना है। अरावली की तलेटी की ओर से किसी नदी की कोई छोटी धारा इधर भटक गयी है। इसी धारा से धीर धीरे पानी गिरता है और आगे जाकर बावडी के रूप म परिवर्तित हो गया है। रेगिस्तान मे झरना उल्लास का प्रतीक है शायद इसी कारण जोधपुर राज्य ने इस स्थान को उद्यान के रूप मे विकसित कर लिया है और य छत्रियाँ आदि यहाँ बनवाकर इसी मिस राज्याधिकारियो को यहाँ तक आते रहने का आह्वान किया है। रात्रि के समय रेतीला प्रदेश प्राय शीतल होता है यहाँ तो हरितिमा जलशाय और चाँदनी भी है अत दिन भर के ताप लू और शरीर की टूटन को भुला देने म समय इस वातावरण मे महाराज और पासवानजी बिन पिये ही प्रेम की मदिरा से मदिर हुए जा रहे थे। वातावरण की मदिरता चाहत की मधुरता और राज-काज से दूरी की निश्चितता ने महाराज और पासवानजी मे मर्यादाओ के बोझ को भी कुछ हल्का कर दिया था। वे स्फूर्ति सी महसूसते हुए एक दूसरे का हाथ थामे मर मरीन छत्रियो मे स होते हुए नाग गगा के किनारे जल के गिरने की मादक ध्वनि को सुनने आ बठे थे।

ठडी बयार चल रही थी। नखलिस्तान के फूलो का छकर जो पराग कण वह साथ लाती उसी स गधिया जाती थी। आकाश म निर्मल चाँदनी नाग गगा की शीतलता और पीछे पवत शृखलाओ की महक, चारो ओर से सुरक्षित एकात और समर्पित प्रेम की मादकता, अभिभूत होकर पासवान जी ने महाराज के कधे पर शीश रख दिया। महाराज ने धीरे से पुकारा, अन्ना और उसका हाथ प्यार स अपने हाथो मे लेकर चूम लिया।

अनारन बाई एकबारगी तडप उठी। शरीर ऐसे थरथरा गया, जसे हाथ पर कोई अगार छू गया हो। महाराज कही जान न लें, इसी भय से

अधनिमीलित नेत्रो म उसने महाराज की क्रोड म मधकर उनके विशाल सीने में अपना मुख छिपा लिया। किंतु नजर मगन में भद से मुख पर स्मित हिलोरे ले उठा नजर और अधिक खिलती है वैसे ही अनारा के मुख छिपा लेने पर महाराज न ठोडी स ऊपर उठाते हुए अपने उत्तप्त और पिपासित थाठ अनारा के स्पन्दित थिरकते हुए ओठो पर म दिये। अनारा के लिए अब अपने को मर्यादित रखना कठिन हो गया। यह अवलम्ब पाकर पड़ स लिपट जाने वाली लता की नाई महाराज स आलिंगन बद्ध हो गयी। मादक वातावरण म भना दो प्रेमी एक तार कृत्रिम दूरी बनाये रख सकते थे !

यों वह स्वर्गिक सुख या बचपन से अनारा न जिसके सपने लिए थे। ईश्वर प्रदत्त सुन्दरता म उसके सपना को हवा दी थी। अनारन बाई सी सुन्दरी उस समय पूरे राजस्थान म कोई नहीं थी। नानायक्षोशो के साथ रहते हुए तलवार और भाला चलाने म भी उसने प्रवीणता प्राप्त की थी। सुंदरता के साथ म वीरता की सुगध— महाराज गजसिंह तो पूर्णत लट्टू थ उस पर। अनारा बाई न भी बहुत भटकने पर अब अपनी मंजिल पा ली थी अत महाराज के आलिंगन म लिपटकर वह समय की गति और जगत की भीति स ऊपर उठ गयी थी। महाराज की परछाई बनकर जीना ही उसे इष्ट था और अब महाराज को भी अकेलापन भाता नहीं था। इसी लिए तो युद्धभूमि म अतिरिक्त हर जगह महाराज अपनी अना को साथ ले जाते थे।

पल घडिया म और घडियाँ पहर म बदल गयीं। महाराज और अनारन एक-दूसरे के आलिंगन म बँधे अलौकिक आनन्द मे विभोर होते रहे। चाँद जब सिर पर आ गया तो महाराज न पुकारा, 'अना।'

प्राण।'

क्या रात भर यही बठे रहना है ?

'मेरा समूचापन आप हैं प्रिय। जहाँ आप हैं, रात्रि तो क्या मुझे जीवन वहीं बिताना है।'

'तुम्हारी बातें।'

'नहीं प्रिय, मंजिल को पाकर मैं धन्य हो गयी हूँ।'

'दौलतखाने म चलना है, या नहीं ?'

जहाँ न जायेंगे चलूँगी। आज इस बारादरी की मादक रात और आपकी बाँहों का सहारा पाकर मैं भी कुछ-कुछ भूल रही हूँ। अनारा की प्यार भरी और समर्पणमयी बातें सुनकर महाराज की मुस्कान गहरी होने लगी थी। हँसते हुए अनारा का हाथ थामकर उठे और बोले 'अच्छा चलो अब विश्राम करते हैं। कल चौदहवीं का चाँद अधिक सुन्दर होगा यहाँ। आओ।'

अनारा जैसे निर्जीव पुतलियों की तरह महाराज के कंधे का सहारा लेकर साथ चल पड़ी। सौ डेढ़ सौ कदमों के चलने पर ही दौलतखाना दौलत की प्रतीक्षा में था। महाराज और अनारा के आने से दौलतखाने की शून्यता ही दूर नहीं हो गयी बल्कि सारा महल प्यार की सुगंध से महक उठा।

बीच के प्रकोष्ठ में जलता मद्धम प्रकाश वाला दीया छोड़कर सेवकों ने धीरे धीरे सब दीये बुझा दिये। आसपास अपने-अपने स्थानों पर पहरेदार विराज गये। बाहर पहरेदारों की पदचाप सुनसान की तीखी आवाज बनने लगी। शयन-कक्ष में अनारा महाराज के सीने में मुँह छिपाये हुए उनकी प्रलम्ब भुजाओं में लिपटकर खो गयी।

चौदहवीं की रात्रि में भी महाराज मंडोर में ही विश्राम करने वाले थे। दिन भर का व्यस्त कार्यक्रम था। प्रातः अभी दैनिक चर्या से निवृत्त भी नहीं हुए थे कि कुल-पुरोहित आ विराजे। वास्तव में जोधपुर राज्य ने जब से मंडोर के नगरस्थान को विकसित किया एवं यहाँ पूर्वजों के नाम पर छत्रियों का निर्माण किया था तभी से इस स्थान का महत्त्व बढ़ने लगा था। इसी होड़ में पुरोहितों के दबाव में आकर महाराज ने एक निश्चित धन राशि इस नगरस्थान में कुल देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित करने के लिए अनुदान में दे दी थी। आज सौभाग्यवश पुरोहितों को अपनी कार्यवाही महाराज के सम्मुख प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था अतः वे आज के शाही पूजा-पाठ के लिए महाराज और पासवानजी को उक्त मूर्तियों के निकट ही ले जाना चाहते थे। राजधानी से चलते समय महाराज ने मूर्तियाँ देखने की इच्छा भी प्रकट की थी।

पासवानजी सुखी रात्रि में आलस्य से अभी डूबमुल ही दीख पड रही थी तभी प्रात समीर न अनेक प्रकोष्ठ में वातायनो से भीतर-बाहर आवागमन आरम्भ कर दिया। बाहर सब ओर चहल पहल सी महसूस हुई। सब लोग जाग चुके हैं, यह आभास पाकर अलसायी आँखो को जोर देकर खोलने के प्रयास मे वे अकस्मात रोमाचित हो आयी। सारे शरीर मे झुरझुरी की तरग स तरगायित होकर पासवानजी ने भिचे होठो से मुस्कराते हुए कुछ क्षणो के लिए चूनर की ओट म मुह छिपा लिया।

महाराज उठकर बाहर के प्रकोष्ठ म जा चुके थे यह देखकर तो अना लज्जा से रक्तिम हो उठी और जगकर पलग पर बैठ गयी। पास रखे गजर को बजाया। क्षण भर म ही दो दासियाँ उपस्थित हो गयी। 'आज्ञा स्वामिनी' हाथ जोडकर बोली।

'इतना दिन चढ आया आपने मुझे जगाया क्यो नही?' अना ने मुस्कराते हुए पूछा।

'महाराज ने मना किया था देवी! कहते थे यात्रा म थक गयी होगी, सोने दिया जाये।'

अना एक बार फिर लजा गयी। 'महाराज को मेरा ध्यान है अहो भाग्य। मन ही मन अनारन ने विचारा। फिर मनोभावो को छिपाते हुए आदेश दिया 'जाओ मेरे लिए स्नानादि का प्रबध करो।'

सेविकाएँ चली गयीं। अनारन वस्त्र सँभालते हुए उठी और पलग के निकट लगे बडे से दपण मे अपने को निहारने लगी। अग अग मे आलस्य छाया था किंतु बदन खिला पड रहा था। मन मे सतोष और चेहरे पर प्रिय प्रेम की दीप्ति विद्यमान थी। अनारन को अपने युवा सौन्दय पर गव हो आया अपने पर ही मोहित होने लगी वह! दपण मे देखते देखते गदन को कुछ मोड झुकाकर उसने अपनी ऊपरी पिडली को चूम लिया और अपने आप लजाकर छुई मुई सी रक्ताभा लिए हुए दपण के सामने से हट गयी।

बाहर महाराज कुल पुरोहितो से बतियाने लगे थे। मूर्तियो के निर्माण और स्थापना प्रक्रिया की चर्चा चल रही थी। जयपुर राज्य के प्रख्यात मूर्ति कलाकारो के परिवार ने नमदा के तटीय प्रदेश मे हल्के नीले सगमरमर को मगवाकर इन मूर्तियो को तराशा है। मूर्तिया को ...

देने मे उनकी कला का मुह बोलता प्रमाण मिलता है। ध्यान से देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि अभी बातें करने लगेंगी।' कुल-पुरोहित न जैसे महाराज को वहाँ चलने की प्रेरणा देते हुए बताया।

अनारन बाई भी इतने म स्नान ध्यान से निवत्त होकर बाहर के प्रकोष्ठ मे आ गयी। सभी उपस्थित लोगो ने खडे होकर उनका स्वागत किया। कुल पुरोहित ने आशीर्वाद दिया और वह आगे बढ़कर महाराज के निकट रखे एक आसन पर विराजमान हो गयी। पासवानजी का पद प्राप्त कर लेने पर पूरे राज्य म अनारन बाई को महारानी की प्रतिष्ठा और सम्मान उपलब्ध था। यो कहिये कि वे उत्तराधिकारी राजकुमार की माता नही थी अन्यथा महारानी के समस्त अधिकार उन्हें प्राप्त थे। अत कुल देवताओ के दशन-अनुष्ठान म भी महाराज का अन्ना की सगति की प्रतीक्षा थी।

पासवानजी के पधारने पर महाराज कुल-पुरोहित से सबोधित हुए, 'महाराज चलिये।'

कैसे चलेंगे महाराज ? पासवानजी के लिए पालकी मँगवायी जाये ? आप अश्व पर चलेंगे या फीलवान का बुलाया जाये ?' दीवानजी बीच मे बोल दिये।

'ऐसा कुछ भी नही चाहिए। प्रात काल का समय है, नखलिस्तान म घूमते हुए चलेंगे। निकट ही तो है —महाराज ने खुलासा किया और उठ कर खडे हो गये।

पासवानजी भी उठी। स्नानोपरात वे आलस्य मुक्त हो चुकी थी। महाराज के निकट आकर चलने को तैयार हुइ। अग रक्षको ने अपना स्थान लिया। महाराज और पासवानजी की पक्ति के पीछे दीवानजी और अन्य अहलकार आगे की ओर बढे। सबसे आगे कुल पुरोहित एक ताम्र पात्र मे दुग्ध मिश्रित जल मे दूब डाले चलने लगा। बीच-बीच म वह दूब से चारो ओर उस जल के छीटे बिखेरता हुआ महाराज की सादर अगवानी करता। दो विश्वस्त सेविकाएँ पासवानजी के साथ उनकी लबी शाही ओढनी को पीछे से सँभालती हुई चल रही थी। महाराज कभी-कभी प्यार भरी चोर नजरो से अपनी अन्ना को देख लेते थे।

यह छोटा-सा काफिला महाराज जोधा की सगमरमर की छत्री के पास से होता हुआ दक्षिण की आर बढते पथ पर चलते चलते शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच गया जहा कुल-देवताओ की मूर्तिया की स्थापना की गयी थी। कुल पुरोहित के सुपुत्र ने पहले से ही वहा पूजन का पूण प्रबध कर रखा था। एक थाली मे स्वण मुद्राएँ नारियल केला सिंदूर, तदुल मौली मिष्टान और पुष्प मौजूद थे।

जोधपुर के कुल देवता श्री गणेशजी की भव्य मूर्ति अ य शूर वीरो की मूर्तियो स अलग पवतीय चट्टान को काटकर लाल पत्थर से बनायी गयी थी। यह लाल पत्थर अरावली पवतमाला म सामा यत ही प्राप्य है। इसकी विशिष्टता लाल रग के अतिरिक्त इसमे की बालू जैसी भुरभुरी प्रकृति है। इसीलिए प्रस्तर मूर्ति को उकेरने के बाद उसके भुरभुरेपन को दूर करने के लिए सगमरमर तथा शखचूण के लेप से उस पर मुलायम सतह बना दी गयी थी। शखचूण इस काय के लिए दसावर से मगवाया गया था। लेप के उपरात विशिष्ट चकमक पथरी से उस पर घिसाई की गयी थी। ऊपर विभिन्न रगो से मूर्ति को रग दिया गया था। सगमरमर तथा शख चूण की लिपाई एव चकमक की घिसाई से भुरभुरे पत्थर की मूर्ति भी सगमरमर के समान दीख पडती थी। कुल देवता की इस भव्य मूर्ति के साथ ही एक मूर्ति भैरो की भी बनायी गयी थी। जोधपुर के राज्य परिवार मे भैरो की पूजा साधना की भी सुदीघ परपरा थी। कुल देवता श्री गणेश के पूजनोपरात भैरो को अध्य-अचण देने की मर्यादा थी अत कुल-पुरोहित ने इसी विचार से यहा दूसरी मूर्ति श्री भैंराजी की बनवा दी थी। मुख्य मूर्ति के सम्मुख रखे कुशासनो पर महाराज और पासवानजी को बैठाया गया। पुरोहित ने भली भाति लीप पोतकर तैयार की गयी वहाँ की धरती पर एक ओर स्वस्तिक अकन किया फिर उसी सिंदूर से नव ग्रहों के प्रतीक अकित किये और नव ग्रह-तोष के लिए पूजन आरभ किया। प्रत्येक ग्रह की स्तुति मत्रो सहित अन्न वस्त्र मधु दुग्ध पुष्पादि समर्पित कर सतुष्ट किया गया और पुरोहित ने श्री गणेशजी की स्तुति म श्लोकोच्चारण आरभ कर दिया। उपरात कुलदेवता की आरती उतारी गयी भैरो की मूर्ति पर पुष्प समर्पित करते हुए महाराज ने अ ना सहित, प्रणाम किया। मूर्तियो की

गहन, जीवतता और कलात्मक इतियों का रूप सब लोग गदगद हो उठे।

पुरोहित ने महाराज एवं पासवानजी को इतर देवी-देवताओं तथा राजकुल के वीरों की मूर्तियों वाली दीर्घा में चलने का आह्वान किया। ये सब मूर्तियाँ भी उसी प्रकार लाल प्रस्तर में उकेरी गयी थीं। संगमरमर तथा पाषाण से निर्मित होने और विशिष्ट घिसाई के कारण ये भी संगमरमर से बनायी प्रतीत होती थीं। इनमें कुलदेव श्रीरामचंद्र एवं महिषासुर मर्दिनी तथा भवानी की मूर्तियाँ विशेष आकर्षक थीं। भवानी जोधपुर राज्य की शक्ति मानी जाती है। यह मूर्ति अति तेजस्वी अष्टभुजी सिंह वाहिनी मातृ शक्ति थी—हाथों में खड्ग, वज्र गुर्ज, ढाल सर्प नरमुंड तथा झारी और मदिरा-पात्र। लेकिन निकट ही बनी महिषासुर मर्दिनी का सिंह महिषासुर पर कूदता हुआ दिखाया गया था। महिषासुर को देवी ने एक हाथ से केशों से पकड़ रखा था दूसरे हाथ का भाला उसके सीने पर तना था। अन्य छ: हाथों में खड्ग ढाल, धनुष बाण, वज्र, एवं विजयघोष करने के लिए शंख थाम रखे थे। दोनों मूर्तियों का दर्शन भय और प्यार के समन्वय का प्रतीक था। सब इन सौम्य प्रतिमाओं से प्रभावित दीख पड़ रहे थे। महाराज ने दीवानजी से पुरोहित को पूजन-दक्षिणा में एक सहस्र मुद्राएं देने का आदेश दिया और स्वयं अन्ना का हाथ थामकर टहलते हुए एक बड़े मौलश्री के पेड़ के नीचे आ बैठे।

सूर्य किरणें अभी अपने पूरे यौवन पर नहीं पहुँची थीं। वातावरण में अभी भी कुछ शीतलता शेष थी। छोटे छोटे किंतु तीखी सुगंधि बिखेरते हुए मौलश्री के फूल धरती पर छिटके पड़े थे कभी-कभी ऊपर से चूकर आने वाले फूल सिर पर ऐसे सुशोभित हो जाते थे जैसे अपना नाम सार्थक कर रहे हों। पेड़ के इर्द गिर्द का समूचा वातावरण गंधिया रहा था। मौलश्री की मादक महक महाराज के इस प्रवास को सुखद बनाने में अन्ना के अतिरिक्त सहयोग दे रही थी। राजकुमारों की माता के असामयिक निधन के बाद शायद यह पहला अवसर था, जब महाराज रोमांचित अनुभव कर रहे थे। अंग रक्षक दूर-दूर के पेड़ों तले मुस्तैद खड़े थे। उनके कान और आँखें

महाराज का सकेत सुनने या देखने मे ही लीन रहते और वे महाराज के पसीने पर अपना रक्त बहा देने का सौभाग्य मानते थे।

महाराज न देखा कि अन्ना के चद्रमुख पर विषाद की कोई भटकी सी बदली छाने लगी है। व्यग्र हो उठे वे, बोले, अन्ना, कहाँ खो गयी? इतनी अन्यमनस्क क्यो हो गयी हो? कुछ बात करो।'

'क्या बात करूँ, महाराज! आज न जाने क्यो मन उमडा पड रहा है, रुलाई आ रही है' अनारन न अधीर होकर कहा। महाराज ने देखा सच मुच अन्ना के नेत्र भँवर की भोगी पाँखो की तरह फडफडा रहे हैं।

अपना दुख मुझसे भी नही बाँटोगी क्या?' महाराज ने बडे दुलार से अन्ना का हाथ थामते हुए पुचकारा।

एसा कुछ नही मेरे देवता, आपके पावन भावो के सम्मुख मैं अपनी पवित्र देह भी आपको नही द सकी बस यही सोचकर अधीर हो जाती हूँ।' अनारन के बडे बडे नेत्रो मे कुछ देर से प्रतीक्षा कर रहे दो मोती गालो पर ढुलक गय।

'भूल जाओ उस दु स्वप्न को, अन्ना मेरी रानी! महाराज ने ढाढस बँधाते हुए कहा, तुम्हे किसी न एसा कटाक्ष दिया है, क्या?

अन्ना फफक पडी। महाराज क सीने स सिर लगाकर रोते रोते बोली, आपके रहते कटाक्ष देन की किसकी मजाल है मेरे मालिक! आपने मुझे सब दिया है—राजरानी बना दिया है। खिज्र न आपकी अमानत को बलात भोग्या बना दिया था, वह अपमान म भूल नही पाती हूँ। जिस सम्मान की रक्षा के लिए हमारे पूवजो ने महलो को छोड खानाबदोश कह लाना श्रेयस्कर समझा था, वह भी सुरक्षित न रह पाया। यही मुझे सालता है।'

महारा ने सीने से लगी अनारन को बाहु की कोड मे बाँधते हुए उसके गालो पर ढुलकते अश्रुओ को पोछा और बोल 'अरे, इतनी-सी बात पर इतने अनमोल मोती लुटा दिय रानी! खिज्र को तुम्हारे अपमान का मोल चुकाना पडेगा। उस नारकीय को अपना जीवन देकर ही तुम्हारे साथ किये भद्दे व्यवहार की कीमत चुकानी होगी?

'यह तो बादशाह का लिहाज था जो वह अब तक जीवित है। मैं

भूला नही हूँ, तुम्हारे अपमान को ! शीघ्र ही नागौर तुम्हारी रियासत होगी और खिज्र तुम्हारा वदी। वस अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा मात्र है।'

अनारन की आखो म चमक आ गयी।

महाराज गजसिह अन्ना की अयमनस्कता को समझते थ। अनारन अवसर पुरानी यादो मे खोकर दुखी हो जाया करती थी। खिज्र के हरम मे व्यतीत हुए दिन अन्ना का एक दुस्वप्न था। वह प्राय महसूस करती थी कि महाराज के प्रति वह न्याय नही कर रही है। महाराज से सब कुछ पाकर भी वह अपने को अनधिकारी समझने लगती थी। कभी-कभी तो अत्यत मधुर क्षणो मे वह अपनी कुठा स भयभीत होकर चिल्ला दती थी, किंतु उदार महाराज उसकी मानसिकता का अनुभव कर उसे सात्वना ही देते रह जाते थे। आज मडोर की इस विहार-स्थली मे पुन व्यतीत स्मरण हो आया था अनारन को। खिज्र को दड मिलने की सभावना और महाराज के अनुलेप-सम शीतल सात्वना वचना से अन्ना को ढाढस मिला, किंतु जिन कल्पित उमगा म खो जाने के लिए महाराज उस दिशा मे चले आये थ, उस सरस सभावना को नीरसता लीलने लगी। प्रेमालाप का स्थान चुप्पी ने ले लिया। महाराज कुछ समय तक अन्ना का वदन निहारते और उस पर छायी विषाद घटाओ को दूर करने की तरकीव सोचने लगे।

तभी मौलश्री के पेड पर शायद कोई पक्षी फडफडाया। छोटे छोटे सुगधित फूला की झडी सी लग गयी। दो चार फूल अनारन की बिखरी अलका म गुथ कर रह गय। महाराज को अवसर मिल गया। बोले, देखो, प्रकृति ने भी हमारे शुभ मिलन पर फूल बरसा दिये हैं। स्पष्ट ही, परमात्मा को भी हमारा सामीप्य स्वीकार है। फिर भला बीती वेदना को याद करके अपना वतमान क्या असुखद बनाती हो ! जरा माथे पर लटा से उलझे मौलश्री को तो दखें, कैसे बोरले स लटक रहे हैं, सुहाग चिह्न !'

महाराज के अतिम शब्द पर अन्ना शरमा गयी। माथे पर उलझी लटा को छिटकती हुई महाराज के सीने म मुह छिपाकर कुनमुनाई, क्या तग करते हो !

अच्छा तो तग भी मैं करता हूँ ? भोर की सुमगल वेला विसूरे मुह से उदास बनाती हो तुम ! और तग मैं करता हूँ ! अच्छा जो, ला हमे मुआफ

कर दो'—कहते हुए महाराज ने शरारत से दाहिने हाथ से गले में चुटकी बनाते हुए कहा।

महाराज की इस मुद्रा को देखकर अनारा रोमांचित-सी हो उठी, चिहुँक-कर अपने राजा के सीने पर मुठियों का आघात करने लगी। मुख-मंडल पर छायी विषाद घटनाएँ एकदम छँट गयी। बेदाग चाँद की तरह दमक उठा उसका चेहरा।

गजसिंह ने दोनों हाथों में अनारा के चेहरे को थामकर उसके [illegible] मुस्कराते नैनों को चूम लिया। अतीत की यादों के घेरे में रामानंदन का स्पर्श आँखों का जल बनकर बहने लगा था। महाराज ने [illegible] हुए अपनी पुष्ट भुजाओं में अनारा को समो लिया और बढ़ते हुए [illegible] बचने के लिए दौलतखाने की ओर चलने का संकेत किया। [illegible] अनारन को सहारा देते हुए वे अपने पड़ाव की ओर बढ़ [illegible]।

दूर दूर मुस्तैद खड़े सैनिकों ने भी घेरा तंग करना [illegible] सिमटते हुए चारों ओर से दौलतखाने से 100-100 [illegible] आकर पुनः चौकस मुद्रा में खड़े हो गये।

नीचे लटकाकर मजे म उतर भी सकता था।

मचान पर पासवानजी को तो साथ ही होना था। सुख सुविधा क अन्य सब प्रबध कर दिय गय थे। कुछ फासले पर के पडो पर कुछ अच्छे निशाने बाज सैनिक भी रहन वाले थे, ताकि यथासमय अपने राजा के काम आ सकें। मचान के नीचे थोडी ही दूर एक कम गहरे गड्ढे म उग पड क तने स एक बकरी बाधी गयी थी। उसकी मैं मैं की आवाज वनल पशु को निमत्रित करन के लिए पर्याप्त मान ली गयी थी, फिर हाका तो होन ही वाला था।

समाचार के साथ सुझाव था कि महाराज और पासवानजी सध्या घिरने से पूव ही यथास्थान पहुँच सकें तो हाक म सुविधा होगी। महाराज गर्जसिंह आवश्यकता को समझत थ। अत घडी भर म ही वे अरावली की ओर प्रस्थान क लिए तयार हो गय। कुछ चुन हुए सैनिक, अन्ना और ग्राम पच उनके साथ थे। दिन का तीसरा पहर लग गया था। शिकार-स्थल तक पहुँचने क लिए एक पहर का समय तो लगता ही, अत बिना विलब दौलत खाना के कम्प को छोडकर महाराज बढ चले। सवक के कधे पर भरी हुई बदूक लटक रही थी। बारूद म इस बार लोह की बारीक कीला-सी विशेष मारक वस्तु मिला दी गयी थी जिसकी चोट पशु को एकबारगी ही गिरा सकती था। महाराज की कमर म तो तलवार बधी ही थी, पासवान न आत्म रक्षाथ अपन साथ भाला ले लिया था। एक लब स्वप्निल अतराल क बाद अनारन भाले से खेलन का अवसर पाना चाहती थी। पुराने दिना की फक्कड मस्ती, तलवारो भाला के खेल और अन्ना की अस्त्र शस्त्र चलान म जागरूकता, सब याद आने लग थे।

मचान यात्रा म महाराज और अनारन घाडे पर सवार थे। दोनो घाडो की रास सवका न थाम रखी थी। अन्य सब पदल ही पवतीय पगडडिया पर चल रहे थे। राजस्थानी पहाडियाँ, ऊची कम कठोर अधिक। रास्ता अधिकतर काँटदार झाडिया और गडन वाल पत्थरा पौधा स भरपूर। दिन ढल रहा था, इसलिए अभी रोशनी बाकी थी। सब लोग सँभलकर चल रह थ। कोई साभर या खरगोश जस छोटे जानवर काफिल को देखकर बिदकते हुए झाडिया म इधर उधर भाग खडे होत थ।

राजस्थान मे सूय अरावली म छिपता है। भारत की उत्तर पूव की पवतमाला को यह गौरव प्राप्त है कि सूर्योदय का प्रथम दशन वही होता है किंतु अरावली शृखला तो सूय का विश्राम स्थल है। इसीलिए रात भर के लिए विश्रामाथ अवकाश प्राप्त करते करते भी कुछ समय तक अतिरिक्त ज्योति यहा बिखरती है। यही कारण है कि गहरी साझ घिर आने पर भी पेडा की फुनगिया पर अभी चमक शेष थी। घने जगल म सब कुछ दृश्य था। और यह सब महाराज और उनके साथियो के लिए सहायक था। मुहूत्त भर मे ही महाराज और पासवानजी न मच पर आसन सँभाल लिया। सनिक दूर के पेडो पर आसीन हो गय और जगल की दक्षिण दिशा की ओर से ग्रामीणा ने खाली टीनो, ढोला, मशाला और लाठिया की सहायता से हो हल्ला मचाना शुरू कर दिया। उत्तर पश्चिम को आगे बढते हुए हाका करन वालो ने कुछ दूर ऊपर स गाव का रख कर लिया, ताकि बाघ या अय कोई बनैला पशु यह समझ सके कि वे लाग गाव की ओर जान वाला कोई जन-समूह मात्र थे।

राजाओ महाराजाओ की भी क्या नियति है ? महला म, बाहर यात्रा म या जगल म भी कही एकात नही। पति पत्नी प्रेमी प्रेमिका के बीच भी सदैव सवक सविकाओ, सनिका-अगरक्षको की दीवार ! खुलकर प्यार भी तो नही कर सकते वे लोग ! किसी का कान उधर लगा है, तो किसी की आख—छिपा हुआ अपना कुछ भी नही। महाराज गजसिंह न आज इस मचान पर बठे-बैठे महसूस किया कि महला से तो यह जगल भला। पडा क पत्ता शाखाओ के कुदरती पर्दो म, दूर के पेडा पर बैठे सैनिको की दृष्टि स ओझल, दास दासिया के झमले स परे, उन्हाने एकात के इन क्षणा म अकस्मात अना को अपन अधिक निकट पाया। रात्रि गहरान लगी थी, आकाश की चादर पर मणियाँ बिखरी भली लग रही थी। निजनता, अधकार शाति और एकात, सामने बधी बकरी जरूर कभी-कभी मिमियाती थी। शाति का ऐसा अनमोल वातावरण महाराज को कम ही नसीब हुआ था, फिर ऐसे म साकार प्रेम का सपक ! वायु के शीतल झोको और सितारो की मद्धम ज्योति म अकस्मात उन्ह अना ज्यादा खूबसूरत दिखने लगी। महाराज रोमांटिक माहौल मे खो गय। जगल की पुकार और अपन कतव्य

को कुछ समय के लिए विस्मृत करके अन्ना को सीने म छिपा लेन को व्यग्र हो उठे।

सचमुच दो शरीर और एक प्राण कहलाने वाल महाराज और पासवान दीन दुनिया भूलकर एक प्राण एक शरीर हो गये। जब से अन्ना महाराज के पास आयी थी, इतना सुकून, इतनी राहत, इतनी खुशी उसे कभी प्राप्त नही हुई थी। आज सब कामनाओ म तृप्ति पाकर आत्म विस्मृत सी वह अपन राजा के क्रोड मे पूणता महसूसने लगी। समय तो जसे पख लगाकर उडता है ऐसे मौको पर! रात्रि का दूसरा पहर कब शुरू हुआ, किसी को मालूम नही। यह तो दो-एक साभरो के तेजी से भागने से चरमराती झाडिया और कुरमुरात पत्तो के तीखे स्वर ने महाराज और पासवानजी को अपने लोक मे लौटा लिया, अलग होत हुए महाराज की दष्टि पडो क पीछे से बकरी की ओर बढते दो बडे बडे चमकत अगारो पर पडी। बाघ ही हा सकता है वह, ऐसा मानकर महाराज न अन्ना को सावधान किया आर स्वय बदूक सँभाली।

बकरी ने भी शायद अपनी मृत्यु को आगे बढते देख लिया था। इस लिए उसकी बोलती बद थी, गले म बधी रस्सी को पूरे बल से खीचकर आतक भरी वह पिछली टाँगो पर खडी थी। बाघ की चमकती आखें कभी दिप जाती, कभी पत्तो पेडा की ओट मे अदश्य हो जाती। दूरी और स्थिति का अदाजा अभी नही लगाया जा सकता था। खतरे से चौकस वह भी बडी शान से एक-एक कदम बढाता हुआ पेडो की ओट म ही बकरी की ओर बढ रहा था। अभी सीधे निशाना साधने का अवसर नही बन रहा था, शायद यहाँ मचान बाधत समय बाघ प्रवेश की इस दिशा की ओर विशेष ध्यान नही दिया गया था—केवल बकरी बाधन वाले स्थान के साथ वाली खुली जगह ही सीधे बदूक की मार म आती थी। अत महाराज का बाघ के खुले मे आ जाने की प्रतीक्षा करनी पड रही थी।

खुले प्रागण मे प्रवेश से पूव बाघ पेडा के झुड म रुक गया। बडे गौरव शाली ढग स उसने चारा ओर देखा शायद उसकी छठवी इद्रिय कोई खतरा महसूसने लगी थी। वास्तव मे वही समीपही एक पेड पर बैठा सैनिक सो गया था और गफलत मे उसका भाला छूटकर खडखडाता नीचे

आ गिरा था। उस खडखड ने पेडो पर विश्राम कर रहे पक्षियो को जगा दिया था और कुछ समय के लिए जगल की आग का आभास होने लगा था। बाघ स्थिति भाँप गया। खुले प्रागण म प्रविष्ट होने की बजाय वह वही से मुडा और आगे के पजे उसी पेड पर रखकर पीछे के पैरो पर खडा होकर गुर्राने लगा। दिल दहला देने वाली गजन इतनी निकट सुनकर अचानक सैनिक की नीद टूटी और वह हडबडाहट मे सतुलन खो बैठा। भाला पहले ही नीचे गिर चुका था, सतुलन गँवाकर वह भी नीचे गिरा ही जाता था कि भाग्यवश पेड की एक झुकी हुई शाखा उसके हाथ लग गयी। वह सँभलकर उसी स लटक गया। विचित्र स्थिति बन गयी थी—बाघ बकरी की ओर बढना छोडकर पेड से लटके हुए उस रसगुल्ले का ही हडपने के लिए पेड के नीचे उछल कूद करने लगा। उसकी गुर्राहट और आक्राश भरी गजन स सब त्रस्त हो उठे। बदूक केवल महाराज के पास थी, और उनकी ओर से बाघ का निशाना स्पष्ट नही था। नीचे उतरकर कौन लोहा ले उससे ?

वीर महाराज गजसिह अब इस चाचलेबाजी को और सहन नही कर सके। मचान पर बैठे रहकर अपन सनिक का इस प्रकार मरने देना, उन्ह गवारा न था। सनिक तक ऊँची छलाग लगान वाला बाघ शीघ्र ही उस खीच लेगा, इसका सहज अनुमान उन्ह था। अत परिणाम पर विचार किये बिना वह शीघ्रता से रस्सियो की सीढी से धरती पर आ रहे और म्यान से तलवार खीचकर उपरोक्त दश्य की ओर भाग। अनारन उन्ह न रोक सकी न पकड पायी, परतु खतर का अदाजा वह लगा सकती थी। अत अपना भाला सँभालकर वह भी मचान से उतरकर महाराज के पीछे-पीछे भागी।

महाराज को पाव प्यादा धरती पर देखकर पडो पर बैठे सैनिको क कलेजे मुँह को आ गय। वहा पहुँचकर उनकी सहायता कर सकने का अवसर न था। महाराज बाघ के सामने पहुच चुके थ। बाघ लटके रसगुल्ले को पाने म कठिनाइ महसूस कर रहा था, और अब तो एक सामने पिरसा था। ऐसा मानकर क्रुद्ध बाघ महाराज की आर झपटा। वीर मूर्ति न पीछे हटना तो सीखा ही न था। उछल हुए बाघ पर तलवार का भरपूर वार किया।

वश पूछ बैठी महाराज क्या सोच रहे है जो चुपके चुपके आपको गुदगुदा रहा है। इस मौन मुस्कान का रहस्य ?

कुछ नहीं या ही जीवन की अनक विसगतिया म से एक यह भी है। अनधिकारी अधिकार भोगते है अधिकारी उपेक्षित रहते है। विडबना ही तो है यह ! बस यही सोचकर विधि के विधान पर हसी आ गयी थी।'

अनारन ने महाराज के मन का कुछ आभास हुआ, लजा गयी वह। कुछ कहने की बात भी नहीं थी। हा मन ही मन लड्डू फूट रहे थे उन्ही की मिठास उसके मुह मे घुल आयी थी। प्रसन्न मुद्रा मे बोली, 'मेरे प्राण ! काटो मे न घसीटिये दासी को बस चरणो के निकट बनी रहने दें। यही मेरा अधिकार है।

महाराज गदगद हो उठे। दाहिनी भुजा मे अनारन को घेरते हुए समूची ही गोद म समेटकर प्यार से बोले, 'आज ही तो तुम्हारी जगह निश्चित हुई है। तुम उसी जगह की सच्ची हकदार हो। मन मदिर मे पूजा की मूरत !

छुई मुई सी अनारन न सलज्ज अपना बदन महाराज के विशाल वक्ष मे दुरा लिया।

पाँच

नागौर और जोधपुर के राज्यो म पुरानी अदावत तो थी ही अनारन के अपहरण की घटना न नवाब खिज्र खा मे महाराज गजसिंह के प्रति कटुता और बढा दी। नवाब अनारन से छुटकारा चाहता था किंतु अपनी भोग्या के गजसिंह की बाँहो म होने की बात सोचकर ही ईर्ष्या से जल जाता था। और उसका यही दद धीरे धीरे वर का रूप धारण कर दोनो पडोसी राज्यो की सीमाओ पर छोटे मोटे झगडो सनिको की मारपीट और यथा यसर एक-दूसरे को हानि पहुँचाने के निरतर प्रयासो म बदल चुका था।

महाराज राजधानी से बाहर गये हैं, ऐसी सूचना प्राप्त कर सबना

किसी भी जागरूक पडोसी राज्य के लिए कठिन नही हो सकता था। अत इधर जब महाराज ने अरावली की तलेटी मे शिकार और पासवान के साथ मडोर प्रवास की योजना बनायी गुप्तचरो द्वारा नागौर म खिज्र खाँ को इसकी जानकारी प्राप्त हो गयी। अवसर का लाभ उठाने और महाराज गजसिंह को नीचा दिखाने के लिए नवाब ने जोधपुर को छूती हुई अपनी सीमा के दौरे का कार्यक्रम बना लिया। नवाब शरारत पर तुला था गजसिंह की शक्ति से परिचित होते हुए भी उसे विश्वास था कि बात यदि बढ भी गयी तो आगरे का मुगल दरबार उसका पक्ष लेगा।

सीमा पर शाही खँमे गाड दिये गये। सैनिको की रेल-पेल बढ गयी। हथियारबद सनिक टुकडियाँ इधर उधर गश्त करने लगी। नवाब जोधपुर के सीमावर्ती गाँवो मे हर रोज अपने तुर्की घोडे को भगाने लगा। ग्रामीण जनता मे आतक सा फैलने लगा। जोधपुर राज्य की सीमात चौकियाँ सतक हुईं। राजपूत सैनिको ने सध्या समय और विशेषकर रात्रि को अपनी सीमाओ मे चौकसी बढा दी। किंतु महाराज तथा अय अहलकार क्योकि राजधानी से बाहर गये हुए थे स्थिति की सही सूचना उन्हे नही दी जा सकी। स्थिति ऐसी गभीर भी नही थी कि इसे दोनो राज्यो मे आकस्मिक युद्ध का पूर्वाभास मान लिया जाता। ऐसा प्रतीत होता था कि नवाब अपनी सीमाओ का निरीक्षण करने उधर आया है। यही बात फलायी भी गयी थी।

तीज त्यौहार के दिन थे। राजपूत महिलाएँ और किशोरियाँ झूला मे डोलती गीतो की बहार मे झूमती, अपनी मस्ती मे हर्षोल्लास मग्न थी। सीमावर्ती गावो म भी झूले पडे थे किशोरियाँ और नव वधुएँ प्रेमल सपनो की पेंगें बढाती हवा से बातें करती थी। महाराज गजसिंह के नाम का इतना आतक था कि महिलाओ की स्वतत्रता मे किसी प्रकार की शरारत का विचार भी मत्यु को आह्वान करने जैसा समझा जाता था। नागौर के नवाब खिज्र खाँ को राजपूत ललनाओ का ऐसा मुक्त विहार न केवल आकर्षित ही करता था बल्कि उसके मानस की कामुकता का चोर छिप छिपकर उन गाँवो म ग्रामीण युवतियो का हास विलास और झूले की क्रीडा देखने को उसे प्रेरित करता था। अनेकधा वह साँसियो जसा वेष बनाकर

स्त्रिया के झूलो और गीतो की दिशा मे चला जाता था। दूर से उसके सनिक अगरक्षक उस पर दष्टि रखते थे किंतु गाती नाचती युवतिया के समूहा के निकट वह अकेला ही जाता। किशोरिया को उस पर सदेह न हो, इसके लिए वह कुछ छोटी मोटी चिमटा कडाही जैसी चीजे साथ रखता, जसे बेचने निकला हो। वास्तव म उसकी वासनात्मक भूखी दष्टि निरतर कुछ खोजती रहती थी।

श्रावण का शुक्ल पक्ष था। पूर्णिमा का चद्र आकाश म हस रहा था। यह वही रात थी जिस रात महाराज और पासवानजी शिकार के लिए मचान पर बठे थे। मचान पर बैठे प्रेमालाप म निमग्न महाराज गजसिंह के सपना म भी कही नागोर और खिज्र को गुजर नही था। पूर्णिमा की उसी रात्रि म नवाब खिज्र खाँ की कुदष्टि गाव की एक ऐसी ललना पर पडी, जो गाती थी तो फूल झरते थे थिरकती थी तो शरीर का एक एक वल मचल जाता था चलती थी तो मयूरी नत्य का आभास होता और हँसती थी तो एक साथ कई बिजलियाँ कौंध जाती थी। गाँव की अल्हड बाला अपनी समवयस्क किशोरियो के साथ थिरकती और करताल देती पूर्ण चद्र के शुक्लालोक मे साकार चाँदनी की तरह गीत की कडिया म उभरती हुई वातावरण को रगीन बना रही थी। चद्र के स ग नक्षत पाति भी कुछ कम न थी। एक तो गदराया यौवन, ऊपर से थिरकन, मचलन और अग मचालन ! खिज्र पर तो जसे गाज गिरी हो।

चद्रिका सी धवल रूपसी का नाम था लीला कुवरि। गाव के प्रधान की सुपुत्री और चार वीर भाइयो की बहिन थी वह। गाँव की अल्हड किशोरियो के साथ पूर्णिमा की आलोक किरणो मे झूला विहार को निकली थी। भाइयो का समूचे प्रदेश मे डका बजता था। किसकी मजाल थी जो लीला कुवरि की ओर आँख भरकर देख भी सके। नवाब के मन मे मैल आ गयी। इच्छा को लीला की लीलाओ से बल मिला। सब युवतियाँ चक्राकार गोल बाँधकर नाचने और गाने लगी। लीला बीचोबीच थिरक रही थी, जैसे मोरनिया के बीच कोई मोर पख फलाकर नृत्य मग्न हो। लीला ने स्वर साधा—

मावणियै री हीडो रे बाधण जाय।

अन्य सब लडकियो न स्वर म स्वर मिलाया—

भान्विर्ये री हीडो रे बाधण जाय ।

और तब लडकियाँ एक लय-ताल पर मिलकर नाचने और गाने लगी—

हीडो रे बाधण धण गयी रे
सात सहेल्याँ रै साथ ।
बाँध बधाय नै पाछी वली र
दिवन्नो तो दासी रै हाथ ।

इन पक्तियो के साथ किशोरिया न मुर्की ली और पूरे घेरे मे घूम घूमकर 'बाँध बँधाय नै पाछी वली र' की बार बार पुनरावत्ति करने लगी । तभी घेरे के बीच मे कबूतरी के तरह फुदकती हुई लीला कुवरि ने अपनी ओढनी को दोना हाथो से थामकर ऐसी फिरकी ली कि छिपकर नृत्य का नजारा करने वाले नवाब पर जाने कितनी बिजलिया टूट गिरी । उधर लीला का स्वर उभरा—

हीडो तो बडलै री साख सू रे
रैसम की तडियाँ
म्हैं नै बालम हीडसा रे
गल दै रे बाँबडियाँ ।

सब लडकिया ने मधुर स्वर से गीत की इन पक्तियो को दोहराया । हिंडोले की रेशमी डोरी को खीचने का अभिनय करते हुए मुक्त भाव से थिरकती हुई लडकियाँ राजस्थान के उन्मुक्त और विश्वस्त जीवन का प्रदर्शन करने लगीं । अब बीच बीच से एक एक लडकी निकलकर साभिनय थिरकने और गाने लगी । लीला कुवरि की परम सखी अपने घाघरे को दोनो छोरो से पकडे फिरकी खाती हुई आगे बढी और कठामत घोलने लगी— घूमघूमालो घाघरो रे' तभी दूसरी लडकी सिर की ओढनी को दोनो हाथो से पतग की तरह उडाती हुई आगे बढी— ओढण दिखणी रो चीर ।' सुदर ओढनी की तारीफ हो तो चूडा क्योकर पीछे रहे ! एक अन्य चचला दाहिनी भुजा को सीधी खडी किये बायें हाथ से उसमे पहने लाल चूडे की चूडियो को हिलाते और खनकाते आगे बढी । मुर्की सी लेती हुई मधुर रसामत वपण

करती चहक उठी— चुड़लो तो हसती दांत रौ रे, लायो रे नणदी रो वीर।'
और फिर सब समवेत गा उठी—

घूम घूमालो घाघरो रे
ओढण दिखणी रो चीर
चुडलो तो हसती दांत रौ रे
लायो रे नणदी रो वीर।

गान पक्तियो के साथ ही उनकी थिरकन तेज हो गयी, पांवो मे जसे पख लग गय हो। वे धरती पर फिरकियां मुकियां नही, जैसे उडती तितलिया की नाइ फूला का स्पश कर रही हो। एक समां बध गया।

झाडियो के झुरमुटो के पीछे छुपा खिज्र खां अब अपने को काबू नही रख सका। अपने अग रक्षको को सचेत रहने का सकेत कर वह लडकियो की नत्य क्रीडा के गोल को तोडता हुआ लीला कुवरि की ओर झपटा। लडकियो मे खलबली मच गयी। निकट ही छिपे खिज्र के सनिको न अय सब किशोरियो को भी घेर लिया और बलात् नागौर की सीमा की ओर ले जाने लग।

अरावली तनेटी मे उधर एक वीर ललना ने अपना भाला सिंह की गदन के आरपार कर दिया और इधर राजपूत लडकियो का सामूहिक हरण शत्रु के सनिको द्वारा सभव हुआ। गाँव मे हाहाकार मच गया। लीला कुवरि के चारो भाई, गाव के अय साथियो सहित हथियारबद होकर जब तक घटना स्थल पर पहुचे, खिज्र खां सब लडकिया का अपनी सीमा मे कुछ दूरी पर लगाय खेमे मे ले जान म सफल हुआ। लीला के भाई यह अपमान नही सह सके। अपने साथियो के साथ आग बढकर टूट पडे खिज्र के सनिक पडाव पर। मुस्लिम सैनिक पहले से ही सावधान थे। घमासान मचा, किंतु असतुलित होने के कारण शीघ्र ही लीला के चारो भाई बहिन की मान रक्षा के प्रयास मे खेत रहे। गाव के अय अनेक लोग भी मारे गये।

लाली कुवरि उस रात नवाब का बिस्तर गर्माने को विवश थी। अय लडकियो की नियति भी वही थी—जान कौन किस सैनिक अधिकारी के काबू म थी। सारा गाव शोक सतप्त था। राजपूती शान मिटटी मे मिल रही थी।

नवाब खिज्र खाँ भावी से बेखबर आज की रात लीला को नोच-नोचकर अपनी विजय पर इतरा रहा था।

प्रात काल यह मनहूस समाचार जगल की आग की तरह पूरे जोधपुर राज्य मे फल गया। महाराज गजसिह के सनिक अधिकारी बताबी से महाराज के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। तेज रफ्तार घुडसवारो का दस्ता अरावली म दुघटना की सूचना लेकर जा चुका था। किसी भी पल महाराज के लौटने अथवा वहाँ से सदेश मिलने की सभावना थी।

इधर जोधपुर नगर मे दु ख और क्रोध का तनावपूण वातावरण बन गया था। राजपूत कसमसा उठे थे। मुसलमानो की ज्यादतियो से पहले से परेशान राजपूतो की धमनियाँ फडक रही थी, सैनिको को अपना खडग कौशल दिखाने के लिए अवसर की तलाश थी। नागौर और खिज्र खाँ सबकी जबान पर था सब-कुछ कर गुजरना चाहते थे। सेनाधिकारियो न महाराज के आदेश की आशा से नागौर पर आक्रमण की पूरी योजना तैयार कर ली थी। राजकुमार अमरसिंह तो पिंजरे म बद सिंह की तरह चक्कर लगा रहा था, जैसे खुलते ही वह शत्रु की धज्जियाँ उडा देना चाहता हो। तलवार की मूठ पर बार-बार उठने वाले हाथो को मजबूरी स मल रहा था—जोधपुर के अपमान का बदला लेन म विलब क्यो ?

अनारन का पिता नायक अपने जीवन की एकमात्र साध को पूरा करने का अवसर निकट देख रहा था। अपमान का दश सहकर वह जी रहा था, केवल दश के विष को अपमान करन वाले के सीन मे कटारी के रूप मे उतार देने की आकाक्षा से ! मत्यु तो उसकी मुक्ति होगी, किंतु खिज्र का काम तमाम करने के बाद ! मौत से उसे भय नही, बस यहाँ से छूटकर वह नागौर पर टूट पडना चाहता है।

महाराज का आदेश पाने के लिए सदेशवाहको को गये लगभग 24 घटे बीत चुके थे। महाराज शिकार के लिए मडोर उद्यान से बहुत आगे अरावली के जगलो मे निकल गये थे। प्रेयसी की मधुर सगति एव आत्म विश्वास के कारण वे राज्य के प्रति निश्चित भाव से अवकाश की मुद्रा म

बाघ को मारकर भी वही अरावली की तलेटी मे बने थे। हर्षोल्लास मे विचरण कर रहे थे कि अकस्मात राज्य के सदेशवाहकों से अनपेक्षित सदेश मिला।

'खिज्र खा की यह मजाल ?'

'हाँ अन्नदाता।'

'गाव के लोगो ने क्या किया ?'

'वे भिड गये खिज्र के सैनिको से, अन्नदाता ! लीला कुवरि के चारों भाइयो ने खूब शौय प्रदशन किया। आखिर मारे गये। बहुत से ग्रामीण भी मरे।'

महाराज के मस्तक पर बल पड गये, मुट्ठिया भिच गयी। चोर नजर स अनारन की ओर देखा। वह तो पहले ही लज्जा और ग्लानि से अपने आप म धसी जा रही थी। महाराज उसका दद समझ गये। बेचारी, शायद सारी घटना के लिए अपने को जिम्मेवार समझने लगी थी।

'आदेश दें, महाराज' सदेशवाहक ने हाथ जोडकर प्रायना की।

'ठहरो आदेश नही मैं स्वय चल रहा हूँ तुम्हारे साथ' महाराज ने कहा। 'दीवानजी को बुलाया जाये' सेवक को आदेश दिया।

दीवान क आते ही महाराज ने निणय दिया, 'दीवानजी मैं एकदम राजधानी जा रहा हूँ, आप पासवानजी के सुविधापूवक, आने का प्रबध कीजियेगा। मेरे साथ केवल चुन हुए दस विश्वस्त सैनिक भिजवा दीजिये।'

पुन पासवानजी की ओर सबोधित हुए, चिता की बात नही दुष्ट को वह पाठ पढाऊँगा कि सारी नवाबी धरी रह जायेगी। फिर मुझे तुम्हारे अपमान का बदला भी तो चुकाना है', कहते हुए महाराज ने प्यार से अन्ना का हाथ दबा दिया और अकस्मात चचल हो उठे। आँखो मे प्रिया से बिछडने की कसक लिए वे एकदम वहा से हट गये।

महाराज गजसिंह आज का दिन घोडे की पीठ पर ही बिताने के आशय से बिना धयपूण विचार किये अपने सनिकों के साथ राजधानी के लिए लौट पडे। पीछे मुडकर देखना तो महाराज ने सीखा ही न था। हवा से बातें करते हुए घोड पर बठे बठे उन्होने नागौर के विरुद्ध अभियान की पूरी योजना तयार कर ली। वे खिज्र खाँ का सिर काटने के लिए उतावले थे,

किंतु नायक को वचन दे चुके थे। फिर कुमार अमरसिंह को भी तो सेना सचालन और युद्ध-प्रशिक्षण के अवसरो की अपेक्षा है। नागौर के लिए अमर ही काफी है। नायक बदला भी चुका लेगा—घायल सिंह अधिक खूख्वार होता है ना ! अमर की वीरता पर सदेह का प्रश्न ही नही। अनुभवी सेना पति तो साथ रहेगा ही।

जिस रफ्तार से घोडा भाग रहा था उससे कही अधिक गति महाराज के योजनामग्न मस्तिष्क की थी। उन्होंने नागौर-अभियान का सपूण चित्र अपने मन म तैयार कर लिया था। कौन अधिकारी क्या करेगा कौन किस दिशा से आक्रमण करेगा, कौन खिज्र से टकरायेगा आदि बातो पर हानि लाभ के पूर्व ब्यौरे सहित विचारकर लिया गया था। महाराज गजसिंह अनु भवी सेना-नायक थे, उनके लिए नागौर जैसी मच्छर रियासत को कुचल देना कोई कठिन बात भी न थी। केवल बादशाह का खयाल था। वह कुछ अन्यथा न समझ ल ! महाराज इस दिशा म भी असावधान न थे। गाँव के लोगो को बादशाह के पास शिकायत लेकर जाने तथा जहाँगीर न्याय की याद दिलान का प्रबध करना भी आवश्यक था। शाहजहाँ जब से सिंहासनारूढ हुआ था, खिज्र की शिकायतें सुन-सुनकर तग आ चुका था। नागौर उसकी आँखो म भी किरकिरी ही था और अब तो खिज्र के असयम ने बहुत बडा आघात पहुँचाया था मुसलमानो-राजपूतो की मैत्री पर। कुछ भी हो, महाराज चौकस थे।

तभी नगर की सीमाओ पर नरसिंहा फूका जाने लगा। नागरिको को यह जानते देरी नही लगी कि महाराज स्वय पधार रहे हैं। लोग प्रसन्न हो गये उनके मुरझाये चेहरे खिल गये। राजा वह जो प्रजा के लिए अपने सब सुखो का होम कर दे। प्रजा के कष्ट का समाचार सुनकर सदेश नही दिया, स्वय पधार गये। 'महाराज गजसिंह अमर रहें' कठ कठ से यह आवाज गूजने लगी। अमीरो, सेनाअधिकारियो एव अन्य चितातुर सरदारो को भी नरसिंहे के भारी स्वर ने चितामुक्त कर दिया। महाराज स्वय पधार गये हैं अब नागौर की खैर नही। महाराज के शौय, स्वाभिमान एव अदम्यता से सभी परिचित थे। प्रजा की प्रत्यक कन्या को अपनी पुत्री समान समझने वाले महाराज कन्याओ के अपहरण का अपमान उस नवाब की दुम से क्योकर

सह सकते हैं—मिट्टी में मिला देंगे रियासत को।

और ऐसी ही सैंकडो अटकलें, महाराज के साहस की प्रशसा मे सहस्रो स्तोत्र चारो ओर सुनायी पडने लगे। इन्ही उत्साहित प्रजाजनो के बीच महाराज ने प्रवेश किया। 'महाराज की जय' के गगन भेदी स्वर से जोधपुर के नागरिक अकस्मात उत्तेजित हो उठे।

दुर्ग म प्रवेश करते ही अपने खासा डयोढी वाले मोती महल के दरबार कक्ष म महाराज ने 'अति महत्वपूर्ण बैठक' बुला ली। यह दरबार कक्ष विशेष ऐसी ही स्थितियो के लिए बनाया गया था। कक्ष म महाराज के सगमरमर के ऊचे सिंहासन की दाहिनी ओर राजकुमारो के आसन बने थे। बायी ओर दीवानजी एव अन्य मन्त्रियो के बैठने के स्थान थे। सामने तीनो ओर विशिष्ट सरदारो, जिम्मेदारो और सेनाधिकारियो के लिए पक्के आसन बने हुए थे। छत ऊची थी, लगभग दस फुट की ऊँचाई पर चारो ओर एक दीर्घा बनी थी, जिसके आगे की ओर मरमर की महीन जाली बनी थी, जिसकी विशेषता यह थी, कि जाली के इस ओर से पीछे का व्यक्ति दीख नही पडता, जबकि जाली के पीछे बैठने वाला सारे दरबार को भली भाति देख सकता था। रनिवास की स्त्रियाँ यही बैठती थी। ऊपर छत म नक्काशी का काम तो राजस्थान की विशिष्टता रही है बीचोबीच काँच का एक बहुत बडा झाल लटक रहा था। आवश्यकता होने पर उसके दीपदानो म ज्योति रख दी जाती थी। कक्ष के कोनो म भी मशाल लगाने के मशालदान मौजूद थे।

यह गोपनीय और आकस्मिक बैठक भी महाराज के पहुचने पर सध्या म ही बुला ली गयी थी इसलिए कक्ष के सब दीपदान ज्योतिर्मान थे और समूचा कक्ष आलोकित था। दीवारो का मरमरीन पत्थर ज्योति मे ऐसे दिपता था जैसे मानो वो आभा लिए हो। महाराज बीच के ऊँचे सिंहासन पर विराजमान थे। सरदारो ने सामने के आसनो की पहली पक्ति म उपस्थित थे। दीवान, मन्त्री राजकुमार सभी अपने अपने स्थानो पर मौजूद थे। सामान्य सरदारों जमींदारो को निमन्त्रित नही किया गया था, व आसन खाली थे। दीर्घा की जाली के पीछे से झाँकती कोई आँख भी वहाँ नही

थी। पासवानजी अभी अरावली की तलेटी से वापस नहीं पहुँची थी, धाय माँ को वहाँ बैठने की अनुमति नहीं थी, सरदारों-अधिकारियों की पत्नियों को केवल समारोहात्मक दरबारों में ही बुलाया जाता था।

दरबार ए खास के सामने बड़ी महत्वपूर्ण समस्या थी। नागौर रियासत के नवाब द्वारा जोधपुर के सीमावर्ती गाँवों से तीज-त्योहार मनाती हुई अनेक कन्याओं और स्त्रियों का अपहरण! घोर अपमान! राजपूत प्राणों की आहुति दे सकते हैं अपनी बहू-बेटियों का अपहरण सहन नहीं कर सकते—और वह भी नागौर के मुस्लिम नवाब द्वारा! पूरी रियासत को कुचल देने से कम दंड की बात तो सोची भी नहीं जा सकती। मंत्रियों और सेनाधिकारियों की यही राय थी। महाराज तो घोड़े की पीठ पर दांत टिकटिकाते हुए ही पहुंचे थे। अतः निश्चय पर पहुँचते कोई विलंब नहीं हुआ। सबने एक जबान से नागौर को दंडित करने का प्रस्ताव किया और वह पारित हो गया। अब प्रश्न था अभियान योजना का!

महाराज की दृष्टि सामने की तीसरी पंक्ति के एक आसन पर विराजित अनारन के पिता नायक की ओर उठी। राजकुमार अमरसिंह बीच में ही उठकर खड़ा हो गया बोला, 'महाराज, नागौर को दंडित करने का काम आप मुझे सौंपने की कृपा करें। तब तक नायक भी सँभल चुका था। खड़े होते हुए बोला, महाराज, वह अवसर आ गया है जिसके लिए मैं मृत्यु को टालता रहा हूँ। मुझे इच्छित मृत्यु का अवसर प्रदान किया जाय। खिज्र का सिर काटे बगैर मुझे मौत नहीं आयेगी।'

राजकुमार अमरसिंह तथा नायक के आसन ग्रहण करते ही महाराज ने वकार की बहस को तूल देने की बजाय खुलासा किया—'इस अभियान की बागडोर अमर के हाथ रहेगी। सेनापति और अमरसिंह, दोनों अलग अलग सेनाएँ लेकर जोधपुर के साथ लगती नागौर की दाहिनी और बायीं पहलू की दोनों सीमाओं से आक्रमण करेंगे। नायक ससम्मान सेनापतिजी के साथ रहेंगे। सामना होने पर खिज्र खां से द्वंद्व का उन्हें पूरा अवसर दिया जायगा। अमर दाहिने पार्श्व से आक्रमण करेगा। इस ओर से राजधानी कुछ दूर पड़ती है, इसलिए मैं आशा करता हूं कि खिज्र का सामना सेनापतिजी के दस्ते से ही होगा।

'इस समय अभी सध्या का अतिम प्रहर है। रात्रि के दूसरे प्रहर मे आक्रमण होगा। आज की रात घोडो पर ही बीतेगी। माँ भवानी तुम सबकी रक्षा करे, प्रात तक मुझे खिज्र के पतन की सूचना मिलनी चाहिए। अब आप लोग जाइये और अभियानाथ प्रस्थान कीजिये। सैनिका की टुकडियो का विभाजन सेनापति करेंगे—आक्रमण गत रात मे सपन्न होना चाहिए।' इतना कहकर महाराज सिंहासन से उठ गये। उनके सम्मान मे सभी उपस्थित जन उठ खडे हुए।

रात्रि का दूसरा प्रहर! लीला कुवरि को सजा सँवारकर नवाब खिज्र खा के कक्ष मे धकेला जा चुका है। सकीना पुराने सौतिया डाह से तिलमिला रही है। सदा ही उसकी यह स्थिति होती है। नवाब किसी न किसी ललना का अपहरण कर करवाकर लाता है—अपनी रातो मे रगीनी भरता है सकीना घर की मुर्गी की तरह इस्तेमाल होती है। अत जब भी ऐसे अवसर हाथ लगे, तो नवाब की योजनाओ मे अडचन पैदा करती है। नवाब और सकीना का नाता साप और छछूदर का बन चुका है न छोडे बनता है न रखे। बस दोनो किसी अज्ञात मजबूरी के कारण एक दूसरे से बँधे है। सकीना नवाब के समस्त रहस्या को जानती है, नवाब सकीना के शरीर पर के रोए राए से परिचित है। नवीना भोग की तो उसे आदत है।

लीला की नवाब के साथ आज दूसरी मुलाकात थी। पहली बार अप हरण की रात्रि म नवाबी खैमे मे ही उसे हवस की शिकार बनना पडा था। राजपूत ललना, वीर भाइया की वीर बहिन, जब से भाइयो के बलिदान की बात सुनी थी, घायल सिंहनी की तरह बदले की ज्वाला म जल रही थी। उसे अपने पतन की चिंता अब नही थी, भाइया की आत्मा उसे पुकार रही थी वह आज नवाब से अपना हिसाब चुका लने के ध्यान मे मग्न थी। दासिया की आख बचाकर अपने कपडो म उसने एक कटार छिपा ली थी। वही नवाब के सीने म उतार देने को उतावली हो रही थी लीला। तभी नवाब न अपने कक्ष म प्रवेश किया। कक्ष म जसे मदिरा की तीखी गध का एक झोका आ गया हो! लीला कुवरि न नाक पर कपडा रख लिया।

खिज्र ने आते ही कहा, मेरे करीब आओ, जानम ! माशूक दूर हो तो जिंदगी फीकी लगती है ।'

लीला ने अपने कपडा म छिपी कटार को टटोला, फिर बोली, 'मुझे जाने दो धूत ।'

खिज्र ठठाकर हँसा और पलग पर बैठते हुए बोला जाने भी दू तो कहा जाओगी तुम ! वो काफिर तुम्हे अपने नजदीक नही आने देंगे। बेहतर तो यही है कि अब पुरानी जिंदगी भुला दो। यहा हरम म ऐश करो।' इतना कहते हुए खिज्र ने लीला को बाह से पकडकर खींचा।

लीला बिजली की सी तेजी स झपटी। उसके हाथ म मत्यु दती कटार थी, लेकिन खिज्र शराब म धुत्त होते हुए भी स्थिति को भाँप गया था। इससे पहले कि लीला उसके सीने पर सवार हो वार कर पाती, उसने उसका दायाँ हाथ मजबूती से पकडकर मरोड दिया साथ ही जोर स एक चाटा भी लीला के मुख पर रसीद किया। लीला के हाथ स कटार छूटकर फश पर आ रही। खिज्र ने क्रोध म उसके वस्त्र फाड दिये उठाकर पलग पर पटक दिया और उसकी चीखो की परवाह किये बगैर उसके शरीर को बुरी तरह नोचना शुरू कर दिया। तभी बाहर भगदड मच गयी। सेवको ने द्वार पर दस्तक देकर जोधपुर की सनाओ के आक्रमण की सूचना दी। नवाब के हाथ पाव फूल गये। चीखती चिल्लाती लीला को वही छोडकर जल्दी से बाहर निकल आया। जोधपुर का आक्रमण इतना तूफानी था कि राजपूत सेनाए सीमा सुरक्षा दलों को काटती हुइ कई कोस तक नागौर के भीतर आ चुकी थी। नागौर इस आकस्मिक आक्रमण के लिए तयार न था, सेनापति के हाथो के तोते उड गये थे। सामने नवाब को देखते ही घिघियाकर बोला, बदा परवर, राजपूत हमलावर बडी तेजी से आगे बढ रहे हैं, उनकी फौजें कुछ ही कोस पर हैं, जल्दी स बच निकलिये।'

'हमारी फौजें ?

'बेखबर आई आयी हैं। हमला दो-तरफा है। हमारी फौजो ने दो बार लोहा लिया, लेकिन उनका घेरा जल्दी ही टूट गया। बायी तरफ स बढ़ने वाले दस्ते जोधपुर के सेनापति की कमान मे हैं और यहाँ स कुछ ही कोस की दूरी तक आ पहुँचे हैं। दायी तरफ स अमरसिह फौजो की

कमान सँभाले बढ रहा है।' सेनापति न जल्दी स तफसील दी।

अमरसिंह का नाम सुनकर नवाब के पाव की धरती खिसकी। 'ठीक है, जल्दी फौजो की कुमक तैयार करो। कुछ दस्ते मेरे साथ बायी ओर की बढती हुई राजपूती फौजो का रोकन के लिए भेजो। आप खुद अमरसिंह की तरफ जायें। खिज्र जैसे अपने आप अपनी मृत्यु की ओर बढने की तैयारी करने लगा।

उधर नायक के हाथो मे भी खुजली हो रही थी। परियोजना सफल थी। नवाब बायें पार्श्व की ओर बढा। आठ दस कोस पर ही राजपूती सेनाओ द्वारा घिर गया। अभी रात्रि का तीसरा प्रहर था। चाद पश्चिम दिशा म ढुलकने लगा था। अगणित मशालो की रोशनी म जोधपुर की सेनाओ ने खिज्र को तो नही पहचाना था, किंतु उसके साथ फौजी दस्तो को दखकर पहले से ही सेनापति की आज्ञानुसार चारो ओर दूर-दूर तक बिखरना शुरू कर दिया था। जब खिज्र के दस्ते बीच को बढे तो दायें बायें बिखरने वाले राजपूती दस्तो ने अपनी मशालें बुझा दी। सामने के दस्तो के पास जलती मशालें देखकर खिज्र उनकी शक्ति का भी सही अनुमान नही कर पाया। दूसरी ओर, उसने कभी सपने मे भी नही सोचा था कि मुगल दरबार की अवज्ञा करके राजपूत सीधे एक मुस्लिम रियासत पर आक्रमण कर देंगे। वह समझता था कि ज्यादा से ज्यादा महाराज गजसिंह शहशाह के पास शिकायत लकर जायेगा। वहा कोई भी बहाना चलेगा। लेकिन यहा तो मरा साप जीवित हो उठा और गदन ही दबाने लगा है।

दाहिने बायें बिखरने वाले राजपूती दस्तो न अकस्मात घोडो को ऐड लगाकर तेजी से आग बढती खिज्री फौज को पीछे से घेर लिया। खिज्र खा और उसके दस्ते चारो ओर से घिर गये। घमासान युद्ध हुआ। योजनानुसार सनापति ने नायक को खिज्र की ओर बढन का पूरा मौका दिया। मार-काट करते हुए अतत नायक खिज्र के सामने आ ही पहुँचा। सनापति उसके अग रक्षक के रूप म साथ-साथ बढ रहा था। नायक के दो-तीन गहरे घाव भी लगे थे, किंतु उसे नवाब से हिसाब चुकाना था, इसी धुन म उसने आगे बढकर खिज्र को ललकारा। नवाब खिज्र खाँ तलवार का धनी था, किंतु आकस्मिक ललकार से उचट गया। एक बूढे को हाथ मे

भाला लिए अपने सामन देखकर खिज्र को अतीत मे खो गये कुछ हल्के सदभ स्मरण हो आये। वह गाज बनकर नायक पर टूटा। खिज्र के पहले वार को अपने भाले पर बचाकर अभी नायक सँभला भी न था कि उसने दूसरा भरपूर वार किया। तलवार जसे बिजली बनकर सीधे ऊपर से गिरी और खोपडी को दो भागो म फोडती हुई मुह तक आ गयी। लेकिन खिज्र भी नायक के भाले की नोक के सामने से ही वार कर पाया था, इसलिए कटते हुए नायक ने पूरी शक्ति के साथ भाला उसके सीने मे आर-पार उतार दिया। दोना योद्धा एक साथ धरती चूमने को गिरे और खेत रहे। नायक ने मरते मरते भी अनारन के अपमान का बदला चुका दिया और इच्छा-मृत्यु को प्राप्त किया।

खिज्र के धराशायी होते ही मुस्लिम सैनिको म भगदड मच गयी। रात्रि का चौथा प्रहर समाप्त हो रहा था। पूव दिशा मे लाली दिखन लगी थी खिज्र का शव राजपूत सैनिको से घिरा धरती पर पडा था, मुस्लिम सनिक कुछ भाग गये थे कुछ मृत्यु दाढो म समा गये थे और कुछ घायल पडे धरती पर तडप रहे थे। पूरी तरह प्रकाश हाने तक राजपूती सेनाएँ नागौर की राजधानी म प्रवेश कर गयी। उन्होने प्रशासकीय अधिकारिया को बदी बना लिया। अपहृत लडकियो को मुक्त करवा लिया गया। तभी सूर्योदय के साथ अमर की सेना दाहिनी ओर की समस्त मुस्लिम रक्षा पक्तियो का काटती हुई सनापति क दस्तो के साथ आ मिली। नागौर का पूण पतन हुआ। एक ही रात म असभावित आक्रमण के परिणामस्वरूप नागौर का शासन जोधपुर की सेनाओ क हाथ आ गया था। खुद नवाब की मृत्यु के पश्चात् तो किसी म आँख उठाने का भी साहस नही रहा था, गदन ऊची करना तो कटवान का निमत्रण देन जैसा था।

लीला कुवरि की खाज की गयी थी। नवाब के हरम की तलाशी हुई। तडपती हुई मरणासन्न दशा म घायल लीला को नवाब के शयन-कक्ष म से खोज निकाला गया। अमर का क्रोध भडक उठा। लीला को इस स्थिति म देखकर वह अपन को सयत न रख सका। सैनिको को उसन हरम की सब स्त्रियो को बदी बना लेन की आज्ञा द दी। सकीना को भी गिरफ्तार कर लिया गया। मृत्यु मुखी लीला न बताया कि वह कटार जो नवाब पर काम

न आ सकी, उसी को उसने अपने सीने में घावकर मृत्यु का आह्वान किया है। वह अब अपने लोगों को मुह दिखाने के काबिल नहीं रही। सकीना की सहानुभूति की बात कहकर मरते मरते भी उसने बंदिनी सकीना को बचा लिया। राजकुमार अमर को जब यह विश्वास हो गया कि लीला अथवा अन्य अपहृत लडकियों की नियति में हरम की स्त्रियों का हाथ रहा है, उन्हें मुक्त कर दिया गया।

नागौर की रियासत पर अब किसी का दावा नहीं रह गया था। नवाब खिज्र इतना एय्याश था कि विधिवत विवाहित पत्नी उसके हरम में कोई भी न थी। सकीना को भी आज तक उसने झूठे आश्वासन ही दिये थे। वैध संतान का प्रश्न भी इसीलिए कोई न था—अत समस्या थी रियासत के प्रशासन की। जोधपुर नागौर को अपने साथ मिला ले, तो बादशाह के संदेह का शिकार हो। अत सैनिक समिति की बैठक में तय हुआ कि नागौर पतन की सूचना शीघ्रातिशीघ्र बादशाह के पास भिजवायी जाये और रियासत को शाही प्रशासन में लेने की भी सिफारिश की जाये। हाँ, बादशाह की नाराजगी की चिंता तो थी ही, अत नवाब की कुटिलता, राजपूत स्त्रियों के अपहरण और बलात्कार की कथा को सविस्तार लिख भेजने का भी निर्णय हुआ। ग्रामीण राजपूतों के विरोध करने पर नवाब के सिपाहियों द्वारा अनेक की हत्या की बात भी लिखी गयी। रियासत के ही कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सही ली गयी, जो घटना के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की जा सकें। स्वयं वजीर ए आजम ने नवाब की कमजोरियों और ज्यादतियों की हामी भरते हुए बादशाह के पास नागौर शासन को शाही हुकूमत में सम्मिलित करने की बात लिखी। इस प्रकार बादशाह की प्रतिक्रिया से निपट सकने की आशा से सब कागजात तेज रफ्तार कासद के हाथ भिजवा दिये गये।

नागौर-विजय की सूचना कार्यक्रमानुसार सही समय पर महाराज गजसिंह को पहुँच गयी। नायक और नवाब खिज्र की एक-दूसरे के हाथों की नाटकीय घटना भी महाराज को बतायी गयी। अनारन

मोती झलक आये किंतु पासवान मर्यादा को बनाये रखते हुए खास महल मे महाराज के निकट बैठी अन्ना ने अपने को सयत किया। महाराज स्थिति की गभीरता को समझते थे, सहानुभूतिपूर्ण शब्दों म नायक की राजपूती आन की प्रशसा करते हुए पासवान को धैय बँधाने लगे। 'सच्चा राजपूत अपमान का बदला चुकाये बिना मर भी तो नही पाता। जोधपुर को नायक पर गव है।

सैनिक समिति द्वारा लिए गये निणय और उन्हे कार्यान्वयन करने की योजना भी महाराज के सम्मुख प्रस्तुत कर दी गयी। महाराज का माथा ठनका। वे जानते थे कि शाहजहाँ के सामने उन्हे जवाब देना होगा, किंतु राजपूत का स्वाभिमान। झुकना तो सीखा ही नही। महाराज ने शात भाव से सनिक समिति की योजना की पुष्टि कर दी।

इससे पूव कि शाहजहा की ओर से आगरे के लिए निमत्रण मिले, महाराज ने स्वय ही आगरा जाने का कायक्रम भी बना लिया। महाराज गजसिंह के स्वय दरबार मे पेश हो जाने एव नागौर की समूची शरारत को स्पष्ट कर देने से बादशाह का क्रोध शमित हुआ। शाहजहा के पास खिज्र के सबध मे ऐसी अनक शिकायतें पहले भी पहुँच चुकी थी अत उसने बात को तूल देने की बजाय अस्थायी तौर पर नागौर को शाही हुकूमत म ले लिया और महाराज गजसिंह को दक्षिण मे विद्रोहियो को सर करने का काम सौपकर सम्मानित किया।

छह

अरावली की तलेटी म शिकार क अवसर पर घटित घटना को लेकर पासवानजी की प्रतिष्ठा अकस्मात आकाश छूने लगी थी। रनिवास मे स्त्रियाँ जहाँ पहले थोडी बहुत ईर्ष्या से चालित थी, वे भी अब दबने लगी। धाय माँ ने तो अन्ना की बलैयाँ ले ली। उस स्वर्गीय महारानी म सभी गुण अन्ना म दीख पडने लग थे। शुरू-शुरू म राजकुमारो के सबध म जहाँ वह

शकालु दृष्टि लिए रहती थी अब विश्वस्त महसूसने लगी। अन्ना के पिता द्वारा खिज्र विरोधी अभियान म महत्वपूण भूमिका निभाने और अपने प्राणो पर खेलकर भी शत्रु का वध करने वाली घटना ने पूरे राज्य म अन्ना को सम्मानित किया था। 'नायक सच्चा राजपूत था' नायक महान वीर था', 'नायक प्राणा के मोल पर भी कुटिल शत्रु को दड देने मे समथ था', 'अनारन वीर राजपूत की बेटी है महाराज धमवीर है'—ऐसी अनेक बातो ने प्रजा के मन म भी अन्ना के लिए प्यार और सत्कार पैदा कर दिया था। पहले जो सत्कार पासवान पद के लिए था अब वह व्यक्तित्व और वश के लिए भी उमडने लगा। राज्य, राज्य की प्रजा, अधिकारीगण रनिवास तथा दुग के भीतर का प्रत्येक प्राणी अनारन के सम्मान से प्रसन्न थे, केवल राजकुमार अमरसिंह स्थिति के साथ सामजस्य नही कर पा रहा था। उसके अक्खड व्यवहार, अन्ना की उनात उपेक्षा और महाराज द्वारा उसे पासवान पद दिया जाने पर खीझ की मात्रा म कोई कमी नही आयी थी। धाय मा से भी अब वह खिचा खिचा रहने लगा था—घर मे भी तलवार की भाषा बोलता था। वीरता और बाहुबल मे अमर अद्वितीय था, किंतु अभिमान और विचारहीनता के कारण वही अमर अयोग्य भी सिद्ध हो रहा था। इधर नागौर मुहिम मे अमर की ईर्ष्या को हवा मिली थी। वह प्राय सोचता था—'महाराज ने जान बूझकर मुझे दाहिने पाश्व से बढने की आज्ञा की। मैं राजधानी मे पहले पहुँचा होता, तो नागौर के मुस्लिम अधिकारियो को सबक सिखा देता। खिज्र मेरी तलवार का शिकार होना चाहिए था।

'यह सब पासवान के कारण हुआ। उसके आवारा बाप को प्रतिष्ठा प्रदान करने की खातिर मुझे नीचा देखने को मजबूर किया गया।

ऐसी मानसिकता निरतर अमर के भीतर पनप रही थी। दूसरी ओर जसवत सवेदनशील था। वह अन्ना के प्रति पिता के प्रेम को पतन न मान कर मानवीय सवेदना समझता था। अन्ना क्योकि उसके पिता की प्रेयसी थी, इसलिए वह उसे माता समान प्रतिष्ठा देने के पक्ष मे था। दोनो भाई वास्तव मे एक ही कोख से पैदा हुई कोमलता और कठोरता की सवेदनाए थे, विनम्रता और अभिमान, सरलता और कुटिलता स्नेह और घणा, अपनत्व और परत्व तथा आदर और अनादर की विपरीत दिशाएँ थे।

जसवत अच्छी कविता भी लिखने लगा था उसे कभी-कभी अन्ना की वाह वाह भी प्राप्त होती थी—अमर इससे भी जलता था। 'राजपूत की कविता तलवारो की झकार मे होती है शब्दो की ध्वनि म नही' कहता हुआ वह जसवत की अभिव्यक्तिया पर नाक भौं सिकोड लेता था।

इस बीच एक दुर्भाग्यपूण घटना घट गयी। महाराज गजसिंह दक्षिण की मुहिम पर गये थे। राजधानी म दीवानजी की देखभाल मे ही सारा काय चल रहा था। करवाचौथ का पव था राजपुत्री के लिए मिष्ठान और फलो की डाली भिजवाना शकुन था। डाली प्राय भाई ही ले जाते हैं अत पासवानजी तथा धाय मा ने अमर को इस काय के लिए उपयुक्त समझा। अमर डाली लेकर बहनोई के घर चला। साथ म चार पाँच विश्वस्त सैनिक भी थे। मिठाई और फलो की टोकरियो तथा वस्त्राभूषण का छकडे म लाद लिया गया। आगे आगे घोडे पर अमरसिंह चला। पीछे छकडा और सुरक्षा सैनिक बढने लगे। अमर घोडे की पीठ पर बठा ऐसा लग रहा था, जैसे किसी मुहिम पर निकला हो।

बहनोई के घर पर प्यार से भेंट हुई। बहिन ने अमर की बलाएँ ले ली। साँझ के समय पति और भाई के लिए बहिन ने साथ साथ भोजन परोस दिया। भोजन करते समय दोनो जोधपुर की बातें करने लगे। बातो का केंद्र धीरे धीरे पासवान हो गयी। नागौर के युद्ध तथा अमर की ईर्ष्या की बात खुली। अमर ने अन्ना के लिए अशोभनीय वचनो का प्रयोग किया। बहनोई ने समझाने के विचार से अमर को टोका। अमर भडक उठा, मेरा अपमान हुआ है मुझे जान बूझ कर गिराया गया है। पिताजी भी इस षडयत्र मे शामिल हुए उसी कुलटा के कहने पर ! मैं यह सब सहन नही कर सकता।'

'तुम्ह पिताजी के लिए ऐसा नही सोचना चाहिए अमर।' बहनोई ने बडा होने के नाते फिर समझाना चाहा।

मैं सारे षडयत्र की चिंदी चिंदी कर दूगा। इस दुष्टा खिच की रखल को तो जरूर दड दूगा। वेश्या कही की ! अमर बहका।

'देखो, पासवानजी हमारी माता समान हैं। माता के प्रति अपशब्दो का प्रयोग तुम्हारी मूखता है और ' बहनोई आगे कुछ कह पाय, मूखता शब्द सुनकर अमर आपे से बाहर हो गया। भोजन की थाली पर लात

जमाते हुए कमर से तलवार निकालकर खडा हो गया। इससे पूव कि बहनोई कुछ प्रतिकार करे बहिन की आखो के सामने ही उसका सुहाग खुद भाई ने लूट लिया। 'मुझे मूख कहने वाला धरती पर जीवित नही रह सकता' बडबडाते हुए बहिन के क्रदन की उपेक्षा करके अमर अपने घोडे पर सवार हो जोधपुर के लिए लौट पडा।

हाहाकार मच गया। अमर ने बहिन का सुहाग छीन लिया यह समाचार सारे राजपूताने म जगल की आग की तरह फैला। जोधपुर के महलो म भी चीख पुकार हुई। महाराज गजसिंह दक्षिण की मुहिम पर थे, अमर को कौन कहे ? धाय मा और अनारन लडकी के वैधव्य पर अत्यत दुखी थी, किंतु महाराज के लौटने तक जहर का घूट पीने के सिवा कुछ नही कर पा रही थी। दीवान भी हतप्रभ थे। अमर की जगह कोई और होता तो अब तक बदीगह मे मौत की घडिया गिन रहा होता। पासवान भी अमर को बदी बनाने के लिए कह नही पायी—कही लोग अर्थ का अनथ करने लगें ! सारे वातावरण म एक तनाव एक घुटन भर गयी। सब के अदर ज्वालामुखी था जबान पर ताले के कारण उसका धुआ भी बाहर नही आ पाता था।

जब तक इस घटना की सूचना दक्षिण मे महाराज गजसिंह को मिले वे विद्रोहियो पर विजय पा चुके थे। युद्ध भूमि मे उन्होंने उपद्रवियो को तगडी मार दी। इस पर महाराज की बडी वाह वाही हो रही थी। विद्रोहियो को अपनी शक्ति पर गुमान था दक्षिण के छोटे राजा परेशान थे। अत्याचारो की शिकायत बादशाह शाहजहाँ से की गयी थी तभी गजसिंह को इस मुहिम पर आना पडा था। राजपूती तलवार और मुगलिया प्रशासन, सयुक्त विद्रोह की अजेय शक्ति पिघलकर बह गयी थी, दोना के सामने। इस पर दौलताबाद के स्थान पर स्वय बादशाह ने महाराज का स्वागत किया और इनकी वीरता से प्रसन्न होकर इन्हे सुनहरी जीन सहित एक खासा घोडा भेंट किया। महाराज का शाही दरबार मे भी पद बढा दिया गया। दौलताबाद से बादशाह और महाराज गजसिंह साथ-साथ लौटे। अजमेर पहुँचकर बादशाह ने वहाँ से सीधे आगरा जाने का कायक्रम बनाया। विदाई के समय पुन बादशाह ने गजसिंह को जोगी तालाब ‌ एक खासा खिलअत, एक हाथी और सुनहरी जीन वाला खासा घोडा

हार म दिये ।

अजमेर से ही गजसिंह ने जोधपुर का रास्ता पकडा। यहीं महाराज को अमरसिंह द्वारा बहनोई की हत्या का वह दुर्भाग्यपूर्ण समाचार मिला। महाराज सन्न स रह गये। अमर की उद्दडता मे वह परिचित थ, किंतु ऐसा विश्वास न था कि वह अपनी ही बहिन का सुहाग ले लेगा। किंकर्तव्य विमूढ महाराज अवाक रह गय। कोई और समय होता या कोई गैर होता महाराज ने मत्यु दड सुना दिया होता। परतु अपना ही रक्त ! दोष किसे दिया जाय ? महाराज अमर के प्रति खिन्न हो उठे।

जसवत भावुक था। अपने समकालीन कवियो म उसका उठना बैठना था। अमर की तलवार की भाषा जसवत के पास भावना की भाषा बन जाती थी। बडे भाई का वह आदर करता था किंतु आँख मूदकर उसका समर्थन करने म जसवत सदा बाधा महसूस करता था। शृंगार का विषय युग प्रिय चेतना थी उसी पर वह भी लेखनी उठाता और प्राय सफलतर अभिव्यक्ति प्रदान करता था। अनारन उसकी भावुक काव्य पक्तियो को सुनकर पुलक उठती थी। अमर के शौर्य और अनारन के लिए घृणा की तुलना म जसवत की भावुकता और अनारन के लिए ममत्व पासवान को आकर्षक प्रतीत होता था। रसपूर्ण मादक मधुर वातावरण म रहती अनारन को जसवत की काव्य रचना मनोहारी दीखती थी।

राज्य मे महाराज के दामाद की हत्या की दुर्घटना से शोक सा छाया हुआ था। अन्ना शिद्दत से महाराज की प्रतीक्षा मे थी। महला म अनचाही घुटन का कारण, अमरसिंह अपने बाहुबल पर विद्रोह करने का तुला था। केवल महाराज ही उसके रौद्र रूप को शमित कर सकते थे। प्रतीक्षा निरतर तीखी होती चल रही थी।

तभी जसवत पासवान के निकट पहुँचा। जसवत को देखकर प्रसन्नता हुई अनारन को। प्रणाम कर उत्तर स्नेहाशीष से देते हुए अन्ना आशान्वित भाव से जसवत को ताकने लगी।

अन्ना बा' जसवत न बडे स्नेह स कहा, 'महाराज को दक्षिण मे

विजय प्राप्त हुई है वे लौटकर सीधे इधर ही आ रहे हैं। उन्हे भैया की करतूत का भी पता चल गया है।'

हाँ', अना ने निराश भाव से उत्तर दिया 'यह अच्छा नही हुआ। इस घटना म मुझे भावी उपद्रव दीख पड रहा है। बहुत कष्ट होगा महाराज को।

क्या हम महाराज को शात करन मे कोई सहयोग नही दे सकते ? मैं चाहता हू कि व खुश रहे और भैया को भी क्षमा कर दें। कोई रास्ता सोचो ना अना बा जसवत ने अनुनयपूवक कहा।

अना जसवत के प्रस्ताव पर मोहित हो गयी। 'कितना ध्यान है उसे पिता का ! यही सोचकर वह क्षण भर के लिए जसवत के गुणो का अत विश्लेषण सा करने लगी। अमर ने तो उसे हर कदम पर निराश ही किया था। क्षणो मे युगो को ढालती हुई अना ने मौन भग किया 'जसवत क्या तुम स्वय अपन पिता को खेद मुक्त करने के लिए कुछ नही विचार रहे ?'

'विचारता तो हूँ बा, किंतु डरता हूँ। कही कोई अन्यथा न समझ ले। मै चाहता हूँ कि मधुर क्षणो मे आप उन्हे शात कीजिये। उनके तनाव को आप शमित कर सकती है, कहते कहते जसवन्त ने आँखें नीचे झुका ली। भैया की अक्खडता कही परिवार को न डस ले ? आप महाराज के क्रोध को भडकने मे रोकिये।' जसवत ने निवेदन किया।

अनारन जसवत की भद्रता और पारिवारिक प्रतिबद्धता को देखकर प्रसन्न हुई। फिर पूछा कैसे ?'

जसवत ने शीश झुका लिया। धीरे धीरे बोला मैं कैसे कहूँ ? आप महाराज को इतना व्यस्त रखिये कि वे अमर के अपराध का विस्मत किये रह। देखिये, मैंने कुछ लिखा है शायद आपको अच्छा लगे—

महा विवेकी ग्यान निधि धीरज सूरनिवान।
परम प्रतापी दानमति नीति रीति को जान॥
उचित नाहि बढि बालनो महाराज क पास।
चुप ही चुप हमत सहज क्रोध पाइहै नास॥[1]

---

1 प्रबोध नाटक

'वाह जसवंत तुम केवल अच्छा लिखने ही नहीं लगे स्थिति को समझकर शाब्दिक अभिव्यक्ति देने में भी प्रवीण हो गये हो। खुश रहो प्रभु तुम्हारी सृजन शक्ति को और अधिक प्रकाशित करे।' अन्ना ने आशीर्वाद देते हुए जसवंत के शीश पर हाथ रखा।

जसवंत चला गया। अन्ना उसके दोहों पर विचार करने लगी। महाराज के लिए तनाव मुक्ति का एक उपचार ही सुझा गया है वह! बड़ा समझदार हो रहा है अमर तो पत्थर है—न स्नेह न विवेक। जसवंत खरा सोना है। क्या संकेतों में माधुर्य की बात कह गया—महाराज को मैं कुछ और सोचने का अवसर ही क्यों दूंगी? इतने अंतराल पर तो लौट रहे हैं आज!—ऐसा सोचते सोचते ही रोमांचित हो आयी अनारन और छुई मुई सी लजा गयी।

जसवंत के दृष्टिकोण में मानव मूल्यों का आगमन और विकास दुर्ग के नाथ स्थानम के वर्तमान नाथ साधु जिन्हें श्रद्धा और आदर-वश जनता नाथजी कहकर पुकारती थी के संपर्क में आने के कारण ही रहा था। कवि हृदय जहाँ एक ओर कवियों की संगति में शृंगार और नायक-नायिका भेद का विवरण प्रस्तुत करता था वहाँ दूसरी ओर नाथजी के संपर्क में संसार की असारता नश्वरता और क्षणिकता की चर्चा करने लगा था—

मन इंद्री कौ रीच मैं होत आचरन जानि।
ताही तैं यह लेत है झूठ कौं सत मानि॥[1]

जसवंत के इस दोहे की चर्चा उन दिनों प्रायः महलों में होने लगी थी। धाय माँ ने तो यहाँ तक कहा, कहीं जसवंत विरक्त ही न हो रहे! लेकिन माधुर्य और उसके प्रभाव को पहचानने वाला व्यक्ति विरक्त हो सकेगा, अनारन ऐसा नहीं मानती थी। अनारन क्योंकि जसवंत की कविता में रुचि लेती थी उसकी शृंगारिक रचना से परिचित थी, इसलिए जब कभी उसे जसवंत के संबंध में धाय माँ भी चिंतनीय स्थिति बताती, तो वह हँसकर

1 सिद्धांत सार

टाल जाती। कई बार बातचीत म उसने जसवत की रुचियो का विश्लेषण किया था और अनेकधा अमर की अक्खडता पर जसवत की भद्रता को महत्वपूण बताया था।

नाथजी की सगति म बठे एक दिन जगवत ने जोधपुर राज्य के भविष्य की चिता व्यान की। उस खेद था कि बडा भाई सनकी और एकमात्र तलवार की भाषा बोलने-समझने वाला है। ऐसा राजा प्रजा म लोकप्रिय तो नही ही होता, वरन उपेक्षित और अग्राह्य होता है। जोधपुर की बागडोर जब अमर क हाथ म होगी, तो क्या बनेगा ? नाथजी भी इस स्थित को समझते थे इसलिए मन से चाहते थे कि जन हित म अमर की जगह यदि जसवत को मिल सके तो उत्तम होगा। यही कारण था कि वे जसवत की विरक्ति की पुष्टि नही करते थ। उसके विचारो को जानकर भी उस राजा क योग्य ही शिक्षा देते थे। जीवन दशन का निर्देशन वे अवश्य करते थे किंतु घर बार छोडकर माया से भागने का उपदेश उन्हाने राज्य परिवार क किसी भी सदस्य को कभी नही दिया था। फिर भी उनकी एसी मान्यता तो थी ही कि ससार नश्वर है, माया भ्रम है। इस धारणा को जसवत भी स्वीकार करता था। इसी से प्रभावित होकर जगवत न एक रचना नाथजी को सुनायी थी—

भरम पूत भरम पिता माता भरम स्वरूप।
भरम भारजा हित सहित देख्यौ भरम अनूप॥
भरम पढ्यौ पूरन भरन भरम धरयौ अभिमान।
भरम और त आप को जानत अधिक प्रमान॥
भरम गेह मैं आइ फिरि कीनौ भरम बिवाह।
भरम कहाई नादवा भरम कहाये नाह॥
भरम दान प्रतिग्रह भरम भरम तीरथ जात।
भरम स्नान उपवास हूँ भरम नैम नित प्रात॥
भ्रम जाग्रत भरम सुपन भरम सुषोपति आहि।
है तो भ्रम यह एक ही त्रिविध कहायौ काहि॥
आपस म अनुराग भ्रम भ्रम परस्पर द्वेष।
एक एक को भरम त देख्यौ करत अलेख॥

भ्रम कुटव परिवार सब भरम ग्रिहस्थावास।
भरम उदासी भरम ए वानप्रस्थ सन्यास॥
पच अगनि तापन भरम भरम ग्रीषमरिति माह।
भ्रम बरखा मे बैठनी सह मेंह बिनु छाह॥[1]

नाथजी ने जसवत को आशीवचन कहा, उसकी परिवर्तन होती मान सिकता को पहचाना और साथ ही धाय-माँ को यह सदेश भी दिया कि जसवत का राज्य-काय में व्यस्त रखें और यथाशीघ्र उसका विवाह कर दें। अनारन को जब यह स्थिति ज्ञात हुई तो उसने महाराज से बात चलाने का निणय लिया।

उसी दिन सध्या मे जसवत से भेंट होने पर अन्ना ने उसे टटोला। 'कहो जसवत आजकल मायावाद की बात करने लगे हो। क्या नाथजी के शिष्य बन रहे हो?'

'अरे नही अन्ना बा! यह तो कवि भावना है, जिधर बह गयी, कुछ कह डाला।'

'एसा क्या! दुग के लोग तो कहते हैं कि तुम सचमुच भ्रम को समझने-भाँजने लगे हो। जिदगी को भ्रम मानकर निराशा मे विचरते हो।' अनारन ने फिर कहा।

लोग मेरी रचना का यही एकपक्ष देखते हैं बा! मैं ता शृगारका कवि हूँ, आप तो मुझे समझती हैं। मेरी कविता का मूल शृगार है—देखिये न अभी चार पक्तियाँ लिखी हैं, आपको सुनाता हूँ—

आसव की यह रीति है पीयत देत छकाइ।
यह अचिरज तिय रूप मद सुध आये चढ़ि जाइ॥
द्रिग कपोल पुनि अधर तुव परम नरम ये गात।
हिय कोमल तें कठिन कुच यह अचिरज की बात॥[2]

'वाह!'

'देखा, भ्रम या मायावाद से मेरा कोई नाता नहीं। बस भावना और परिवेश की बात है। जब मैं नाथजी के सपर्क मे होता हूँ, मुझे ससार नश्वर

---

1 2 प्रथावली

और मायावी प्रतीत होता है, किंतु जब महला के हास विलास मे रहता और आपकी चेतना का पढता हूँ, तो शृगारिक लिखता हूँ।' जसवत न खुलासा किया।

अनारन बात की पर्ता तक पहुँच गयी थी। बोली, 'तुम्हार मुख से ऐसी ही कविता जचती है, तुम ऐसी ही रचना करो। राज दरबारो म विरक्ति नही आसक्ति ही जन कल्याण का आधार होती है। अमर तलवार से बात करता है यदि तुम भभूति की बात करन लगे, तो प्रजा का क्या होगा? महाराज क्या कहग?'

अन्ना बा! आप ऐसा सोचती ही क्या है? मैंने तो भ्रम की बात करते हुए नाथजी के अष्टाग योग का भी भ्रम ही कहा है। आपने शायद वह अश नही सुना—

जम जो पाच प्रकार का सोऊ भरम प्रतीति।
नैमु करन फिरि पच विधि यही भरम की रीति॥
आसन प्रानायाम हू ए पुनि भरम प्रकार।
भरम दिसि दिसि रोध भ्रम भरमैं प्रत्याहार॥
भरम धारणा ध्यान भ्रम भरमैं आहि समाधि।
जेतं साधन ते सब है केवल प्रेम व्याधि॥'

सचमुच यह मुझे ज्ञात नही था', अनारन न कहा। 'खैर तुम कविता के मूल्य पर शास्त्र ज्ञान की अपेक्षा मत करो। तुम्हे बहुत कुछ सँभालना पड सकता है।

होली का त्यौहार हर वप की नाइ इस बार भी मनाया जायेगा, लकिन उसमें वह उत्साह नही दीख पडता जो पहले वर्षों म था। महल की स्त्रिया मे वह उमग नही—खुशी होती भी है तो राजकुमारी का वधव्य देखकर ठडी पड जाती है। उधर महाराज को दामाद की हत्या का दुख तो है ही, अमर की बढती अभद्रता और मार काट से भी व चिंतित हैं। व प्राय सोचते

---

1 ग्रथावली

हैं कि उक्त गुणा के कारण राजकुमार अनचाहा युवराज है। प्रजा जन अमर सिंह के शौय की कद्र करते हैं, उससे डरते है किंतु उसे पसद नही करते। उनके गुप्तचरो न उन्हें ऐसी अनेक सूचनाएँ दी थी। जनता के मन की बात यदि होठा पर आते कापती थी फिर भी जानकार सूत्रा क लिए कुछ भी छिपा न था। महाराज इसी दुविधा में अभी तक युवराज की घोषणा नही कर रहे थे। दीवानजी एव मत्रिया न भी महाराज को कभी ऐसा परामश नही दिया—क्योकि उनकी सोच भी अभी दुविधा की शिकार थी। वे प्रजा पालक और प्रजा रक्षक मे भेद समझते थे। तलवार का धनी होने के कारण अमर प्रजा रक्षक हो सकता था, प्रजा पालक के गुण जसवत म थे।

अनारन होलिकोत्सव का प्रबध तो कर रही थी किंतु महाराज की उमगहीनता का परिताप उस भी कही भीतर साल रहा था। धाय माँ तो लगभग उसी दिन से मौन थी, जिस दिन अमर द्वारा बहनोई की हत्या का समाचार मिला था। वह अमर की सर्वाधिक समथक थी किंतु अब कहने को रह ही क्या गया था ! अत वह तभी से अवाक' थी। मरे मन से तैयारी हो रही थी। महल की दास दासियो को वप भर से होली की प्रतीक्षा होती है उनकी कतिपय आवश्यकताआ की पूर्ति हेतु धन प्राप्ति हो जाती है स्वामी आर राज्याधिकारिया का सपक मिलता है किसी की प्रसन्नता पा जाने की दशा म उन्नति की सभावना बनती है। होली का उत्सव न मनाय जान पर उनकी आशाओ उमगो पर पानी फेरने जैसी बात हो जायेगी—इसलिए भी अनारन और महाराज मन से स्वस्थ न होते हुए भी होली की तैयारियो मे सामान्यत सहयोग ही दे रहे थे।

निमत्रण भेजे जा चुके हैं। नगर के श्रेष्ठियो को सपत्नीक बुलाया गया है। राज्याधिकारी, सनिक अधिकारी एव वित्त-अधिकारी, सब वप म एक दिन अपनी-अपनी पत्नी एव अविवाहित कन्याओ सहित जनाना महल मे एकत्रित होत हैं। जनाना महल मे प्रवेश और उसकी शोभा देखने का यही एक अवसर सबको प्राप्त होता है—दूसरे किसी समय वहाँ प्रवेश निषध है।

महल क मुख्य भाग के साथ जुडा सगमरमर का दूध धवल प्रासाद

जनाना महल कहलाता है। इसकी ड्योढ़ी की रक्षा का प्रबंध सेना के विश्वस्त सुभटा के हाथ है। ड्योढ़ी क्या है, पूरा गोरखधंधा है। साधारण अनजान व्यक्ति तो अँधेरे म ड्योढ़ी को ही नहीं लाघ पाता। पत्थर की दीवारों से टकराकर रह जाना ही उसकी नियति होती है। खाशा ड्योढ़ी के नाम म प्रसिद्ध इस प्रवेश द्वार म आज मशाल जलायी गयी है और सनिक सादर पथ निर्देश कर रहे हैं। भीतर दाखिल होते ही बहुत बडा आगन है जिसके बीचोबीच संगमरमर की एक बडी चौकी बनी है। यह चौकी इतर केवडे की सुगंधियो स महकते घुले रंगो के बरतन रखने के काम आती है। आज उसकी विशेष शोभा है। रंग घुले बरतनो के अतिरिक्त उस पर फूलों की चगरें भी रखी है। फूलमालाओ की बहार है। रंग के माटलो के ऊपर फूलमालाएँ सजा रखी है। उसी चौकी के चारो ओर आगन म विशेष अतिथियो के बैठने का प्रबंध है। नगर श्रेष्ठी राज्याधिकारी सेनाधिकारी और वित्ताधिकारी आ आकर अपने आसनो पर विराज रहे हैं। स्त्रियो के बैठने के लिए अलग स प्रबंध किया गया है। महल की दास दासियाँ भी दूध धवल अगरखा और साडियो म अतिथियो की सेवा मे ऐसी सलग्न है जैसे श्वेत परियो के समुदाय उद्यानक्रीडा कर रहे हो! आगन के चारो ओर ऊचे झरोखो म महलो की स्त्रियो ने अपना अधिकार जमा रखा है। महाराज और पासवानजी के आसन अभी खाली है उत्सव के आरंभ के लिए उन्हीं की प्रतीक्षा है।

आँगन के एक कोने म आग जला रखी है। या तो बीच म अलाव जला कर स्त्रियाँ पुरुष उसके गिर्द नाच गाकर होली मनाते हैं किंतु यहा राजमहल म ऐसा न तो सभव है और न ही भद्र ही। इसीलिए आग जलाने की केवल रस्म पूरी कर ली गयी है। या राजकीय होली सूखे और जल म घोल रंगो से ही मनायी जाती है।

'सावधान महाराजाधिराज तथा पासवानजी पधार रहे हैं द्वारपाल की आवाज सारे आगन म गूज गया। सभी राजकीय अतिथि सम्मानार्थ अपने अपने आसनो स उठकर खड़े हो गये।

महाराज अपने साथ पासवानजी को लिए खाशा ड्योढ़ी से आगन म प्रविष्ट हुए। महाराज ने सफेद रेशम की दूध धुली पोशाक पहन रखी थी,

पासवानजी की साडी जैसे कार्तिकी चादनी से बनी हो। चोली, लहँगा और आढनी भी विशुद्ध काश्मीरी रेशम की सफेद—पासवानजी महाराज के साथ चली आती ऐसी प्रतीत हुई, जैसे दुग्ध सागर मे कोई मराली तिरती चली आ रही हो।

महाराज ने बीच म रखे ऊँचे और खाली आसनो के निकट आकर सभी उपस्थित लोगो का हाथ जोडकर अभिवादन किया और उन्हे आसन लेने का सकेत कर स्वय पासवानजी का हाथ थामा और आसन पर विराजमान हो गये। उनके अनुकरण म अन्य सब भी आसीन हुए।

अन्नदाता, होली आपको मुबारक हो, दीवानजी ने उठकर महाराज के माथे पर गुलाल का टीका किया और दीवानजी की धर्मपत्नी ने पासनावजी की गालो म रोली लगाते हुए ये ही शब्द दोहरा दिये। उपस्थित जना मे हर्षानद की ध्वनि हुई। चारो ओर मुस्काने बिखर गयी।

बीच के खाली चौक म वस्त्राभूषणो से अलकृत कुमारिया गुलाल की थालिया लिए फिरकी लेती तथा नृत्य मुद्राए बनाती हुई प्रविष्ट हुइ। धीरे धीरे उन्होंने अपने अपने थालो म से गुलाल की मुटिठया भर भरकर आगतुक अतिथिया पर उछालनी शुरू की। नाचती, फिरकी सी लेती वे कुमारिया चारो ओर घूम घूमकर रग बिखेरने लगी। सारगी, करना और तुरी के स्वर कन्याओ की थिरकन को तालबद्ध करने लगे। तबले की धा, धिन, धिनक के साथ पायलो की छन, छूम, छनन वातावरण को मादक करने लगी। महाराज और पासवानजी अपने आसनो से उठकर आगन के बीचो बीच बने चबूतरे के निकट पहुचे। सब उपस्थित जन सत्कार भाव से खडे हो गये। चबूतरे पर रख रग के माटलो से दोनो ने पिचकारियाँ भरकर एक दूसरे पर रग उछाल दिया। दोनो की सफेद पोशाको पर रग की लाली खिल उठी। सब लोग खुशी से झूम उठे। एक दूसरे पर रग उछालने की होड-सी लग गयी। स्त्रिया पुरुषो पर और पुरुष स्त्रियो पर झूम झूमकर रग फेंकने लगे। हसी के फव्वारे फूटे, मुस्काना की बिजलियाँ टूटी, हा हा, ही ही को फुलझडियाँ चली और गुलाबजल म घुले रगो म सब सराबोर हो गये।

रग खेलने का उन्माद टला। कुछ शाति हुई। आमन्त्रित अतिथिया ने

एक दूसरे को होली की बधाई दी। गले मिल मिलकर परस्पर रोली के तिलक लगाये और फिर सबने अपना आसन यथास्थान ग्रहण किया।

महाराज खडे हुए उनकी गुरु गभीर आवाज आगन मे गूज गयी। समस्त उपस्थित जन सायास मौन रहकर महाराज की बात सुनने लगे। मेरे सहयोगियो, नगर के श्रेष्ठीजनो तथा प्रजा के सम्माननीय आमन्त्रित सज्जनो होलिकोत्सव की आप सबको बधाई। आप लोगो की शुभकामनाओ और शौर्य से हमने नागौर पर विजय प्राप्त की और फिर बादशाह सलामत की इच्छानुसार दक्षिण के विद्रोह को भी शमित करने मे हमे सफलता मिली। हमारे अनुभवी सेनापति तथा मुख्यमत्री महोदय क्रमश विजयो और सुव्यवस्था के लिए विशेष प्रशसा के पात्र है। मैं प्रजाजनो की सहमति से इन दोनो को सम्मानित करता हूँ और दोनो को पटे प्रदान करता हूँ।' चारो ओर करतल ध्वनि गूज उठी। महाराजाधिराज गजसिंह की जय' का जयघोष होने लगा।

महाराज ने हाथ उठाकर सबको शात होने का सकेत किया और फिर बोले आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दक्षिण की गत मुहिम मे मलिक अबर से उसकी लाल पताका छीन लेने की स्मृतियो को अमरता प्रदान करने के लिए शाहशाह ने जोधपुर की पताका मे लाल रग की पट्टी डालने की अनुमति दे दी है। आज से जोधपुर की पताका का रूप बदल जायेगा। सारा आगन एक बार फिर तालियो की गडगडाहट से गुजरित हो उठा, प्रजा का हर्ष निनादित होने लगा। महाराज के जयघोष से जोधपुर दुर्ग का कोना कोना गुजायमान हो गया।

शाति होने पर महाराज ने आज के दिन की खुशी मे केन्द्रीय बदीगृह से 101 अपराधियो को मुक्त करने की घोषणा की और लोगो के आनदातिरेक की अभिव्यक्ति के बीच गभीर मुद्रा मे आसन ग्रहण किया।

दीवानजी उठे। उपस्थित जनो को सबोधित करते हुए बोले, 'आप सबके भोजन का प्रबध आज महाराज की ओर से भीतर के दरबार कक्ष मे किया गया है। इस बीच जो प्रजाजन श्रद्धाजलि के नाते महाराज को कोई भेंट देना चाहते हो, वे सादर आमन्त्रित हैं।

नगर-श्रेष्ठिया ने दस परएक एक करके महाराज के निकट

भेंट स्वीकार करने का निवेदन किया। अनेक उपहार थे—कश्मीरी पश, गजमुक्ताओं की मालाए हीरे जवाहरात, स्वर्णाभूषण, पासवानजी के लिए एक श्रेष्ठी ने विशुद्ध जरी के चोली, लहँगा और ओढनी प्रस्तुत किय, जो मात्र स्वण की बारीक तारा से ही बनाये गय थ, सूत या रेशम के तात उसम थे ही नही। जो मूल्यवान उपहार भेंट नही कर सके, उन्होंने स्वण पात्र म मोहरें ही भेंट कर दी। इस प्रकार महाराज को प्रसन्न करन के लिए सबने बढ चढकर भेंट प्रस्तुत की और क्रम से पुन आसन ग्रहण किया।

भोजन का समय हो गया था इसलिए दीवानजी के आह्वान पर सब लोग दरबार-कक्ष म प्रविष्ट हुए। वहा सामान्यत लगाय गये आसनो का क्रम बदलकर पक्तिबद्ध कर दिया गया था। महाराज और पासवानजी के लिए लकडी के 10-12 अगुल ऊँचे पश पर आसन लगाय गय थे—अय सब उपस्थित सज्जनो को वे देख सकते थे। कक्ष की दीर्घा म शहनाई गूजन लगी। प्रीति भोज से पूव बादाम और केवडे म तैयार की गयी शिव जडी का आचमन प्रस्तुत किया गया। जो लोग ग्रहण नही करत थे, उन्होंने भी प्रसाद के तौर पर एकाध घूट स्वीकार किया। भोज म परम स्वादिष्ट ढग से तैयार किय छत्तीस पदाथ परसे गय। सब लोग राज्य व्यवहार और उत्सव अनुष्ठान से प्रसन्न और सतुष्ट दीख पडते थे। मध्याह्नोत्तर काल का गजर बजा, समारोह समाप्त हुआ। महाराज ने हाथ जोडकर सबको विदाई दी और पासवानजी के साथ महलो की ओर चल दिय। अन्य सब सामत, श्रेष्ठी और अधिकारीजन भी सपरिवार अपन घरा को लौट गय।

होलिकोत्सव पर दो बातें विशेष ध्यान देने की हुईं। एक तो अमरसिंह को युवराज के रूप म कोई महत्व न दिया गया। गत उत्सवा म अमर सदैव महाराज के साथ रहा था किंतु इस बार उसकी पूण उपेक्षा कर दी गयी थी। इस व्यवहार से महाराज की उसके प्रति नाराजगी स्पष्ट थी, जो कि आमत्रित अतिथियो को भी भासित हो गयी थी। दूसरी महत्वपूण बात पासवानजी की अतिरिक्त प्रतिष्ठा और सबके साथ हिलन मिलन की स्वतत्रता पर ध्यानाकर्षित हुआ। महाराज पधारते और लौटते समय स्वय

हाथ थामकर अन्ना को साथ लाये और ले गये। रग उछालते समय उप स्थित महिला समाज मे पासवानजी न स्नेह, अधिकार और सहयोग बाँटा। सबके साथ भेंट की, होली की बधाई दी और अपनत्व दर्शाया। महिलाएँ तो उनकी भक्त ही हो गयी।

अमर ने भी यह सब देखा और महसूस किया, किंतु पिता के विरुद्ध आवाज नही उठा सका। हाँ, अनारन के प्रति उसकी घृणा और तीखी हो गयी। अभिमानी तो वह था ही उसे अपनी उपेक्षा के पीछे अनारन के हाथो की गध आयी। बहनोई की अकारण हत्या कर दना उसके लिए अनौचित्य नहीं थी वह अपने दुर्भाग्य के लिए दूसरे को उत्तरदायी ठहराकर शुतमुग की तरह अपन बचाव के साधन बना रहा था। समूचा बाहर बना रहकर वह रत म गदन छिपा लेन को ही अपनी सुरक्षा समझता है, ठीक वैस ही अमरसिंह अनारन का अपने पतन का जिम्मेदार बनाकर दूसरो की दृष्टि म निर्दोष बना रहना चाहता था। किंतु लोगो ने पासवानजी का सौहाद और अमर की अक्खडता खुद परख ली थी।

छोटे भाई जसवत से भी अमर को रजिश थी। वह धीरे धीरे अनारन का चहेता बन रहा था, भावुक था, कविता म खोकर अपन स्वाभिमान की पहचान भी भुला देता था अन्ना-सी रखल को माता समान स्वीकार करता था आदि बातें जसवत के साथ अमर की नाराजगी का कारण थी। राजपूत तलवार स खेलन के लिए पैदा होते हैं, या वेश्याओ की लल्लो चप्पो उन्हें शोभा नही देती —अमर सोचता था। पिता का क्या कहे। उन्ही की दुबलता' स तो यह नौबत आयी है। जाने खिज्र की जूठन मे उन्ह क्या मजा है? छी।

अमर राजमाग छोडकर पगडडिया पर सरपट भागा जा रहा था। उसे राह के काँटो और ऊबड खाबड गडढो का ज्ञान नही था। कभी भी पग लडखडान से वह गिर सकता था, किंतु हठी स्वभाव के कारण वह अपनी गति को विचार के चाबुक स हाकन की बजाय मिथ्या कल्पना के सकतक से चला रहा था। जसवत खिन्न था इस स्थिति से! पर बदर को कोई मोतिया का मोल कैसे सुझाये!

आखिर एक दिन सामना हो ही गया। भीतर से दोना परेशान

किंतु एक समजन मे विश्वास रखता है तो दूसरा हठी और अनास्थावादी। दोनो म सवाद की सभावना बहुत कम होती है, फिर भी कोई कब तक दिल म बोझ बनाय रख सकता है। जसवत न भाई से गले मिलन की 'औपचारिकता निभात हुए कहा, भैया, जीवन का कठोरता और अनुशासन की परिधियो म कैद करके क्यो असुखद बना रहे हो ? जिस पिता न पत्नी रूप मे अपना लिया बिन ब्याहे ही सही, हमारे लिए वह माता समान है। तुम अन्ना बा से इतना चिढत क्या हो, नाक भा क्या सिकोडत हो ?

जसवत यह तुम्हारा विषय नही है। तुम भावुक कवि हो, राजपूती मर्यादा और राज परिवार का अनुशासन तुम्हारी समझ से बाहर है। तुम तो बस सुरा-सुदरी के गीत गाओ नाथजी की सेवा करो। जिसने तलवार उठायी ही नही, वह त्रिया चरित्र क्या जान ! अमर ने व्यग्य किया।

भैया, यह तलवार उठाने और त्रिया चरित्र को समझन का क्या पारस्परिक सबध है ? तर्कहीन बात का क्या लाभ ?

'तुम्हें अपनी अन्ना बा के कारण अब मेरी बाते तर्कहीन लगती हैं अमर न चिढाया 'वह पिताजी को तो अँगुली के सकेत पर नचाती ही थी, अब तुम भी उसके इशारे पर नाचने लगे हो। तलवार चलाते तो नारी सगति की कमजोरियो को जानते।'

फिर वही वितर्क—नारी सगति और मा का आचल एक ही बात है क्या ? अन्ना बा माता समान हैं, उनका सपर्क मा की शीतल छाया है नारी सगति नही।' जसवत न अविचलित भाव से कहा 'कुछ समझ सोचकर बात किया करो। मुँह म जो आय बोल देत हो भया, यही तुम्हारी वह कम जोरी है जो तुम्हार सब गुणा को धो डालता है। अच्छा होगा यदि बात को मुह से निकालन से पूव उसकी समीक्षा कर लिया करो।'

अमरसिंह धीरे धीरे धैय खोने लगा था, किंतु जसवत की प्रतिभा उसका कवच थी, वह शालीन, भद्र और सतर्क ढग से अमर को परिवार की टूटन से सावधान करना चाहता था, उसम युवराजोपयोगी गुणो को पुनर्जीवित करना उसका लक्ष्य था। इसीलिए अमर की कटुता की उपेक्षा करते हुए जसवत ने आग कहा, तुम युवराज हो भया तुम्हे राज्य व्यवस्था सँभालनी

है। तलवार एक अनिवाय पक्ष है, राज्य की सुरक्षा के लिए, किंतु व्यवस्था का पक्ष नीति और प्रजा के प्रति स्नेह से सपन्न होता है। मैं विनती करता हूँ कि तुम इस ओर ध्यान दो और अपने अधिकारो के प्रति सजग रहकर स्वय को उनके योग्य बनाओ।'

मैं जानता हू कि यहा मेरे विरुद्ध एक षडयत्र रचा जा रहा है। तुम भी उसी षडयत्र के अग हो। फिर यह दिखावा क्यो ?' अमर ने फिर आघात किया।

'नही भया तुम्ह जरूर किसी ने बहकाया है या तुम्हारे पाप ने तुम्हे डरा दिया है। अन्ना बा और पिताजी तुम्ह बहुत चाहते है। तुम्हारे व्यवहार से उन्हे क्षोभ होना है किंतु इससे ममता तो नही मरती।'

रहन दो जसवत तुम्हारी अन्ना बा मरी मा नही बन सकेगी। सदव मेरे विरुद्ध पिताजी के कान भरा करती है। मुझे अपने रास्त पर चलन दो, तुम अपना रास्ता खोजो —अमर ने चिढते हुए कहा अन्ना के यहा आन के दिन से ही मेरा जीवन विफला होने लगा है।

जसवत को लगा कि अमरसिंह की घणा इतनी तीखी है कि उसका प्रभाव सौहार्द के पौधे के पत्ते शाखाओ को ही नही, जड तक को गला चुका है। अन्ना बा का महाराज से जुदा हो जाना ही इसका इलाज है किंतु यह कभी सभव नही होगा। अत बिगडी बात को आशा के अतिम छोर से पकडने के लिए जसवन ने अपने शब्दो को आत्मीयता के मधु म घोलते हुए कहा भैया, तुम यह क्यो नही मान लेते कि अन्ना का अस्तित्व ही कोई नही। तुम जोधपुर के युवराज हो, तुम्ह प्रजा पालक बनना है, प्रजा की गलती पर दड ही नही क्षमा भी देनी है। प्रजा तुम्ह चाहन लगेगी तो महाराज अपने आप तुम्हारा पक्ष लेंगे।

जसवत, तुम जाओ यहाँ से! मेरे घावा पर नमक मत छिडको। युवराज पद पर खुद नाखून गडा रहे हो और आड मेरी लेना चाहते हो। तुम निभाओ उस कुलटा स, मरे लिए वह पिताजी की रखल से ज्यादा कुछ नही—कहता हुआ अमर क्रोध म बडबडाता स्वय जसवत के सामन से हट गया।

हतप्रभ खडा जसवत इसके लिए तयार नही था। उस ऐसी आशा न

थी कि अमर इस प्रकार अन्ना था और पिताजी का भी अपमान करेगा। जसवत का विश्वास होने लगा कि अमर सचमुच पतन के गत मे गिर चुका है अब उसे सँभालना कठिन ही नही, असभव है। ईश्वर बचाये जोधपुर राज्य के भविष्य को ! इसी उधेड बुन और विचारो के ऊहापोह म डूबता उतराता जसवत अवाक खडा रह गया।

पिता के सम्मुख जसवत ने कभी अपनी श्रृगारिक कविता का पाठ नही किया था। पासवानजी कभी कभी उसे उत्साहित कर उसकी मुक्तक रचनाओ का रस ले लिया करती थी। महाराज जब दरबार में व्यस्त होते अन्ना समय काटने के लिए धाय माँ स बतियाने या जसवत की स्नेहिल बातें सुनने के लिए उन्ह बुला भेजा करती थी। किसी नयी काव्य रचना पर वाहवाही लेने कभी जसवत स्वय भी चला आता था। वह पासवानजी को माँ की तरह आदर देता और उनकी अनुज्ञा मे आचरण करता था।

आज उसन नायक-नायिका भेद पर लिखना आरभ किया। यद्यपि भानुदत्त की रसमजरी के तौल म ही जसवत ने अपन कथनो को सकलित किया था फिर भी भाषा अभिव्यक्ति और रचना-तत्व जसवत के कवि की देन थी। बल्लियो उछलता जसवत का हृदय नायक भेद एव नायिका भेद के मूल पदो को अन्ना बा को सुना देने को होड कर रहा था, किंतु पासवानजी महाराज के निकट बनी थी, इसलिए वहाँ जाने का साहस वह जुटा नही पा रहा था। उसे सदैव पिता स दुलार ही मिला था, पिता उसकी योग्यता से प्रभावित भी थे, किंतु उनकी उपस्थिति मे कविता कहने मे उसे झिझक थी। अत उसन एक सदेश पत्रिका लेकर उस पर लिखा—

मात सम अन्ना बा

नायक नायिका भेद सबधी एक ग्रथ का शुभारभ कर रहा हूँ। आशीर्वाद दीजिये बानगी पेश है—

नायक—एक नारि सा हित करै सो अनुकूल बखानि।
बहु नारी सो प्रीति सम ताको दक्षिण जानि॥

मीठी बातें सठ कर करिकै महा बिगार।
आवनि लाग न घप्ट का कियैं कोटि धिक्कार ॥[1]
नायिका—पदमिनि, चित्रिनि सखिनी अरु हस्तिनी बखानि।
बिविध नाइका भेद मे चारि जाति निय जानि ॥
स्वकिया ब्याही नाइका परकीया पर बाम।
सो सामान्या नाइका जाकें धन सो काम ॥[2]

आपका मत ? —जसवत।

पत्रिका पासवानजी के समीप पहुचायी गयी। पासवानजी ने पढा और मुस्करा दी। महाराज को छू गयी उनकी मुस्कान। पूछ बैठे 'क्या बात है ? वट ने क्या लिख दिया पत्रिका म जो मुस्कराहट थमती ही नही।'

लिखना क्या है आशीर्वाद मागा है। किसी नयी रचना की नीव रखी है प्रसाद भी भेजा है। रस लोग ? अन्ना ने मुस्कराते हुए पूछा।

हाँ हाँ मैं भी तो जानू क्या लिखता है जसवत ! सुना है शृगारिक काव्य कहने म बहुत आगे निकल गया है —महाराज ने अन्ना को पत्रिका की बानगी के पढन का सकेत करते हुए कहा।

अन्ना न पढ दिया। नायक के भेदो का मूल सकेत पाकर महाराज झूम गये। बोले जसवत मे सचमुच आलोक है प्रतिभा है' फिर स्वय ही उदास होकर कहने लग दूसरी ओर इस अमर को ही देखो ना बात को नही समझता बस तलवार भाँजने लगता है। ऐसे राज्य चलते हैं क्या ? मुझ तो जोधपुर राज्य की चिंता होने लगती है।'

पासवानजी ने प्रेम से महाराज का हाथ थामकर अपने गाल से छुआते हुए कहा 'मेरे मालिक, योग्यतर ही राज्य भोगने का अधिकार रखता है। जसवत प्रत्येक शिक्षा मे अमर से बाजी मार रहा है। राजोचित गुण उसमे नित्य वृद्धि पा रहे हैं।'

हाँ यह तो ठीक है, किंतु बडा होने क नाते अमर युवराज भी तो है। वीर भी है। उसकी मानसिकता को शिक्षा देन की अपेक्षा है, मैं ऐसा समझता हू —महाराज ने खुलासा किया।

---

1 2 भाषा भूषण

अनारन चुप हो रही। वह जानती थी कि अमरसिंह महाराज की कम जोरी है। उसकी अक्खडता और अभद्रता महाराज को सालती जरूर है, किंतु वह डंक इतना गहरा नहीं होता कि वे मन ही मन उसे क्षमा न कर सकें। जसवंत और अमर को अपनी दो आखें मानने वाले महाराज किसी एक आख पर पट्टी क्योंकर बाध सकते थे। उनके लिए अमर अमर था और जसवंत जसवंत। इसलिए अन्ना का सकेत बराबर समझते हुए भी उन्होंने अभी अमर के सबध मे कोई प्रतिकूल चिंतन नहीं किया। दामाद की हत्या पुत्र के हाथो हुई यह जानकर महाराज का अतमन उदास हो गया था व अमर से रुष्ट भी दीख पडते थे किंतु अभी उन्हें विश्वास था कि अमर का सुधार सभव है। अनारन इसीलिए निशाना चूकता महसूस कर चुप हो गयी थी।

अन्ना ने अपनी प्रसन्नता और आशीष जसवत को भिजवा दी। सन्देश मे विशेष बात महाराज भी तुम्हारी रचना से खुश हैं प्रकट थी। जसवन्त सतुष्ट हुआ और अपनी नयी रचना मे व्यस्त हो गया।

उधर अनारन ने महसूस किया कि महाराज अमर का पक्ष लेते हुए कहीं उसके सुझाव पर रुष्ट न हो गये हो ? अत उनका ध्यान बँटाने के लिए चौखला उद्यान मे विहारार्थ उन्हें लिवा ले गयी। महाराज वहाँ जाकर बावडी के किनारे अन्ना की जघा पर सिर रखकर लेट गये। अन्ना उनके मस्तक पर हल्के हल्के हाथ फेरने लगी।

जोधपुर की विशेषता है कि दिन भर की धूप और गर्मी के बाद साँझ होते ही ठडी हवा चलने लगती है। दिन म मारू मरुस्थल की तीखी लूए साँझ होते ही सुहानी और ग्राह्य हो जाती हैं। बावडी के निकट लेटे महा राज भी साझ की उसी बयार का आनन्द ले रहे थे। प्रिया का प्रेमल स्पर्श उक्त आनद को शतगुणित कर रहा था। महाराज कुछ समय तक मस्ती म लेटे रहे तभी साँझ के दरबार खास का गजर बजा। अधिकारियो को दिन भर की कारगुजारी महाराज के सम्मुख प्रस्तुत करने को आना होता है इसलिए महाराज भी सावधानीपूर्वक उठे और उद्यान के परकोटे के साथ साथ बनी सीढियो से होते हुए राज प्रासाद की ओर चले। अनारन पीछे-पीछे चली।

सेनापति ने अमर के समीप पहुँचकर अभिवादन किया। अमरसिंह की वीरता शौर्य और अडिग साहस से सेनापति बहुत प्रभावित था। महाराज का वह आदर करता था किंतु अमर से आतंकित रहता था। उसे सदव यह दुविधा बनी रहती थी कि हो न हो, किसी दिन अमर राज्य का सेनापति बन जायेगा और महाराज उसे पद मुक्त कर देंगे। इसीलिए वह अमर की चापलूसी और उसको भडकाते रहने म अपनी कुशलता मानता था।

कहिये सेनापतिजी आज आपका कैस आना हुआ ?' अमर ने सहज प्रश्न किया।

आप गुण सपन्न है युवराज ! हम आपके चाकर है आपके अधिकारो के रक्षक और पोषक। जो हम सुनते है हम सालता है, इसलिए आपका निर्देश चाहता हूँ' सेनापति न शीतल सी वाणी मे आग्नेय उत्सुकता पैदा करने का सफल प्रयास किया।

'क्या सुना है आपने ? हम भी तो जानें ! कही पासवानजी के सबध म तो आप कुछ नही कहना चाहते ?' कुमार ने पूछा।

आपने बिलकुल सही अनुमान किया युवराज। सेनापति को कहने का सहारा मिला सुनते हैं उस दिन के मामूली झगडे को तूल देते हुए पासवानजी महाराज से जसवत को युवराज घोषित करने का आग्रह कर रही हैं।'

तो ? राज्य महाराज का है जिसे चाह, सौप दें। मैं ऐसी परवाह नही करता। आप क्यो परेशान हैं ? अमर ने सीधा प्रश्न किया।

वीर ही धरती पर शासन करने का अधिकारी है युवराज। हम आपकी वीरता के प्रशसक है इसलिए आपके ही आधीन पद पर बने रहने का गौरव चाहते है। सेनापति न दुम हिलाते हुए अमर पर हाथ रखना चाहा।

अमर सोच मे पड गया। क्या महाराज सचमुच उससे युवराज पद छीन लेना चाहते हैं ? जसवत भावुक हो सकता है किंतु मेरे विरुद्ध राज्य पाने का प्रत्याशी नही बन सकता। जरूर कुछ दूसरी ही बात होगी। इस पर अब उसने सेनापति को टटोलना शुरू किया आपन, सेनापतिजी ! जो भी सुना है उसका प्रमाण ?'

प्रमाण तो समय दगा, युवराज ! हाँ एक बात बिलकुल स्पष्ट है—पासवानजी जितना जसवत को चाहती और सराहती हैं, उतना आपको नही ।'

पर यह तो स्वाभाविक ही है। जसवत उन्हें माता समान मानता है, मैं उन्हें स्वीकार ही नही करता ।'

नही इतना ही नही। मैंन उन्हें महाराज के निकट उक्त प्रस्ताव करते सुना है !

सुना है और आपको विश्वास भी है, तो फिर इस स्थिति से उबरने का तरीका भी सुझाइये सेनापति !' अमरसिंह ने सेनापति को फिर टटोला।

'इस दिशा म आपको पासवानजी से सावधान रहन की अपेक्षा है, युवराज ! सभव हो तो उनकी प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया पर नजर रखनी होगी। आप मुझे सेवा का अवसर दें तो मैं प्रबध कर दूगा।' सेनापति ने अमर पर अनुग्रह की छाया डालनी चाही।

यह तो आप अपन स्तर पर करते ही रहें। मुझे तो मरा कतव्य सुझाइय।'

एसी स्थितिया म शक्ति ही सहयोगिनी होती है युवराज ! उसी का सकलन करें और समय पर प्रयोग मे लाने योग्य सामथ्य बनाये रखें !'

'ठीक है, इस पर और विचार करेंग।' सेनापति सकेत समझकर अभिवादन करता हुआ वहाँ से चलने लगा। वह जानता था कि यह समय युवराज के अपने वीर योद्धा साथिया के साथ तलवार क व्यायाम का था। युवराज ने चलते चलते सेनापति को सावधान किया—आप एक बहुत बडा दायित्व ओढ रहे हैं, चौकस रहियेगा।'

सेनापति के जाते ही पासवानजी की बात सोचकर अमर का मुह कडवा हो गया। जहाँगीर की प्रेमिका नूरजहाँ की तरह पासवान अपना जाल बिनन लगी है। महाराज जागरूक हैं शायद इसीलिए अभी तक कुछ अप्रिय घटना नहीं हुई अन्यथा नागिन का काटना और फूंकना दोना म बराबर का विष-वमन होना है। किसी तरह पासवान का प्रभाव शून्य करना होगा। स्त्री पर हाथ उठाना या उसके विरुद्ध कोई अनचाहा कदम उठाना राज पूत का गौरव नही हो सकता, इसीलिए मुझे चुप हो जाना पडता है।

युवराजपद ? यह तो अधिकार का प्रश्न है अन्यथा नहीं चाहिए मुझे यह राज्य और सिंहासन। मैं तो सैनिक हू सनिक ही रहना चाहता हू। हाँ, सेनापति द्वारा उठाया प्रश्न अधिकार और गौरव पर होने वाली चोट के कारण मुझे सालन लगा है। देखता हूँ कोई कैसे मेरा अधिकार छीनता है।—अमरसिंह अपने कक्ष मे बैठे बैठे विचारो के जुगनू पकडने लगा। रात भी तो घिर आयी थी।

अमरसिंह और सेनापति के बीच हुई बातचीत के उपरात सेनापति ने रनिवास के एक चाकर को पटाकर पासवानजी के विरुद्ध भेदिया बना लिया। उसे खूब बडी रकम का लोभ और ऊचे पद के लिए सब्ज बाग दिखाये गय थे।

पासवानजी मे नूरजहाँ सरीखी चतुरता राज्याधिकार भोगकी लालसा या अपने प्रेमी की कमजोरी से लाभ उठाने की इच्छा कुछ भी न था। वह तो सरल बालिका की तरह समर्पिता मात्र थी। हिंदू ललना त्याग और बलिदान दन मे विश्वास रखती है, अधिकार और छीना झपटी मे नही। इसीलिए जब महाराज के सम्मुख एक बार आत्मसमपण कर दिया तो उसके बाद उनके राजकीय कार्यों मे हस्तक्षेप का विचार तक अनारन को कभी नही आया था। हाँ जसवत के प्रति उन्हें सहज ममत्व था, वे उसे चाहती थी, पुत्रवत प्यार करती थी इसीलिए कभी कभी अमर की अक्खडता स रुष्ट होकर वे महाराज से जसवत के पक्ष की बात कर बठती थी। शायद ऐसी ही सामान्य धरातल पर की किसी प्रतिक्रिया को सेनापति ने हवा देना आरभ किया था।

सेनापति का अपना स्वाथ था किंतु अनारन केवल जसवत के प्रति ममता क ही कारण बीच मे बलि का बकरा बन रही थी। दुभाग्य यह कि एसी परिस्थितियो म महाराज गजसिंह को बादशाह का बुलावा आ गया। स्त्री अपने पुरुष का सहारा पाकर पेड पर लता की तरह नित्य ऊची चढती रह सकती है, किंतु उससे दूर हटने पर तो वह भू शायिनी, उपेक्षिता मात्र है।

शाहजहाँ ने निजामुलमुल्क और खा जहाँ लोधी को दड दने के लिए बालाघाट पर तीन ओर से आक्रमण की योजना बनायी थी। इन तीन सेनाओ म से एक का सेनापति गजसिंह को बनाया गया था। बादशाह न इसी सदभ म गजसिंह को एकदम आगरे पहुँचने का सदेश भिजवाया था। महाराज का जाना अनिवाय था। अनारन को महाराज की अनुपस्थिति स भय होता था। उसे उस वातावरण म अपने विरोध का आभास होने लगा था। लेकिन मजबूरी की आँखा पर पट्टी बधी होने के कारण करुणा का नाता स्थापित करना सभव न था।

महाराज के चले जाने पर अनारन का आभास वास्तविकता मे बदलता दीख पडने लगा। अन्ना को जैसे सदेह के सूत्रो मे बाँधकर उसके चारो ओर एक विचित्र-सा तनावपूण माहौल बनने लगा। सेनापति इस दिशा मे बडी सावधानी से अपना जाल कसता जा रहा था। महाराज विदा लेते समय दीवानजी को अनारन की सुख सुविधा का ध्यान रखन एव मान मर्यादा की सुरक्षा का काय सौंप गये थे। और उस दिन दीवानजी ने सध्या की बैठक मे महसूस किया कि अनारन भीतर से दु खी है—महाराज के निकट न होन का विरहात्मक दु ख कम, वह भीतर कोई मानसिक कष्ट पाल रही है। दीवानजी सावधान हो गय।

पीढियो से महाराज के पुरखा की सेवा मे चले आ रहे दीवानजी सेनापति की शिकारी आँखें अन्ना पर गडी देखकर विह्वल हो उठे। उन्हें यह समझते देर नही लगी कि इसके पीछे सेनापति ने अमर से भी कोई बात भिडाई होगी। अत वे इस षडयन्त्र की तह तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हुए। नकारात्मक ढग अपनाया गया।

दीवानजी की तीखी दृष्टि से स्थिति छिपी नही रह सकी। उन्होंने अनारन बाई के उस चाकर को जिसे सेनापति ने पटाया था अपने कार्यालय मे तलब कर लिया। एक ही डाँट म वह समझ गया कि प्राणो से भी हाथ धोना पड सकता है—सारी बात अक्षरश उगल दी। दीवानजी के चरण पकड गिडगिडाने लगा क्षमा माँगा। दीवानजी ने सहारा दिया, 'चलो जो हुआ, भविष्य मे उपयुक्त व्यवहार करो। उचित होगा कि सेनापति जितनी बात तुम्हें बतायें या कहें तुम मुझे बताते रहो। उन्हें यह आभास

न होने दो कि तुम उनके आदमी नहीं हो—लेकिन ध्यान रखो कि पासवान जी को तुम्हारे कारण कोई परेशानी न हो।'

जान बची लाखो पाये' की मुद्रा म सेवक लौटा तो पासवानजी का सामना हो गया। उन्होने जसवत को बुला देन का आदेश दिया। सेवक आज्ञा पालन के लिए चला गया। अनारन एकात मे सोचने लगी। अतीत के चित्र एक एक करके उभरने लगे। खिज्र द्वारा अपहरण का दुखद चित्र उभरा महाराज द्वारा अनारन मुक्ति का नाटकीय काड स्मृति पटल पर अकित हुआ फिर बचपन मे युवराज गर्जसिंह के शौर्य के प्रति अन्ना का प्यार और प्रेम से गुथी श्रद्धा सुमना की माला पहनाने की तसवीर आखा मे आकर अटक गयी। अनारन जसे गर्जसिंह की युवा मूर्ति को एकटक निहारने लगी निहारती ही रही। उसे पता ही नही चला कि जसवत उसके कक्ष म आ चुका है और जुहार करके आदेश की प्रतीक्षा मे है।

अन्ना बा, कहा खो गयी आप ? आवाज से पासवान की तद्रा टूटी। सामने वही मूर्ति विराजती थी। बिल्कुल वही नाक-नक्श युवराज गर्जसिंह की वर्षो पूर्व देखी प्रतिमा, जसवत म साकार हो गयी थी। अनारन उसे देखती ही रह गयी। दोबारा 'अन्ना बा' पुकारे जान पर पासवानजी को चेतना हुई और हर्षाह्लाद से उनके सारे शरीर म फुरहरी हो आयी। उठकर उन्होन जसवत का बडे प्यार से अपन समीप बिठा लिया।

क्या बात है, अन्ना बा, कहा खो गयी थी आप !' जसवत न जानना चाहा।

कुछ पुरानी बातें याद हो आयी थी उन्ही की भूल भुलयाँ म खो रही थी तुमन साकार प्रकट होकर मुझे उबार लिया। महाराज जब से गय है, विचित्र मन स्थिति रहती है। वातावरण भी जसे दम घोट रहा हो। मुझे ऐसा प्रतीत होता है जसे कोई हर समय मेरा पीछा कर रहा हो।'

जसवत ने धैर्य बँधाया 'नही बा, ऐसी कोई बात यहा महल म सभव नही। अकेलेपन की उदासी प्राय मन म ऊलजलूल भाव चित्र बनाया ही करती है। आप अपन को व्यस्त रखा करें। न हो तो कुछ पढा करें। मैं कुछ पठन सामग्री का प्रबध कर दूगा।'

नही जसवत, मुझे अकेलापन इतना नही सालता, जितनी वातावरण

की घुटन डशती है। यो भी मालूम नही क्या, हर व्यक्ति मे एक खिचाव सा महसूस करन लगी हूँ। अमर तो शुरू से ही मुझसे खिचा था, अब तो जो भी मिलता है, खिचा-सा लगता है। धाय माँ कभी आ जाती, तो मन बहलता था, अब वह भी न जान क्यो, इधर आती ही नही।' अन्ना ने जस शिकायत की हो।

धाय माँ अस्वस्थ ह। आयु का रोग, दवा और तीमारदारी से भी कोई लाभ नही—इसीलिए व अपने यहाँ ही लेटी रहती है। मैं उनके निकट जाता हूँ तो कभी उनके होठो पर मुस्कान आ जाती है, अन्यथा वे तो अब घडियाँ गिन रही हैं।' जसवत ने सूचना दी।

अनारन चौंक गयी। महाराज की अनुपस्थिति म वह धाय माँ को ही अपना हितैषी समझती थी। क्या वह भी उस छोड जायगी? पासवान चितित हो आयी।

जसवत अन्ना की अन्यमनस्कता समझ गया, लौटने के लिए अनुज्ञा चाही।

लकिन जसवत, तुम्ह तो मैंने कुछ खास कहने को बुलवाया था, अनारन ने लौटन को तत्पर जसवत को टोका।

'आपका आदेश? मैं किस काम आ सकता हूँ आपके?' जसवत ने विनम्र भाव से पूछा।

तुम जानते हो कि महाराज बाहर गय हैं। यो तो दीवानजी सब बातो का ध्यान रखते ही हैं, तथापि अपना कोई मर निकट नही। युवराज तो शुरू से ही मुझे घृणा भाव से देखत हैं। केवल तुम्हारे ही स्नह के कारण मैं अपन को परिवार का अग समझती हू इसीलिए तुम्हे ही युवराज भी मानती हू। गत अनेक दिनो से मेरा परिवेश विषैला प्रतीत हो रहा है, उसमे कौन विष घोल रहा है? यही मरी समस्या है।'

'नही अन्ना बा! यह आपका भ्रम हो सकता है। अमरसिंह के यहाँ रहते, महाराज की अनुपस्थिति म भी कोई गलत आचरण का साहस नही कर सकता। भया की तलवार का लोहा जो समस्त राजपूताना मानता है जोधपुर म किसी की क्या मजाल जो आपकी ओर आँख उठाकर भी देख सके।' जसवत ने अनारन को भयातुर समझकर उसका निराकरण

करना चाहा।

'जसवत तुम ठीक कहते हो, किंतु यदि शत्रु भीतर ही छिपा हो, इतना निकट कि तलवार का वार अपने को ही घायल कर दे, तो ।' अनारन कुछ कहते कहते एकदम रुक गयी। उसकी दृष्टि न कक्ष के सामने के द्वार की चिलमन के पीछे छिप दो पैरो को देख लिया था। जसवत ने भी अन्ना की दृष्टि का अनुकरण करत हुए स्थिति को भाप लिया। धीरे से आगे बढते हुए जसवत ने चिलमन के पीछे खडे चाकर को गदन से पकड लिया और अन्ना के सामने ला पटका। 'क्या कर रहे हो वहा, बालो', जसवत न गभीर स्वर मे पूछा।

सेवक न हाथ जोडकर बडे विनीत भाव स निवेदन किया, 'कुछ भी नही राजकुमार। मैं तो पासवानजी के लिए स्नानागार मे जल रखने के लिए आया था। आपके खीचने स देखिये सब जल बिखर गया है।'

जसवत न आखो ही आखो म अन्ना बा से कुछ पूछा और सेवक को वहा से जान का कह दिया। सेवक के जाने के बाद अकस्मात अन्ना की आखो म खारी पानी के झरने बह निकले। जसवत स्थिति को समझना चाहकर भी असमथ सा अनुभव कर रहा था। अमर पर वह सदेह नही कर सकता था और अमर के रहत महला म कोई षडयत्र कर सकेगा, ऐसा उसे विश्वास नही था।

फिर भी मैं दीवानजी को स्थिति की खोज-खबर के लिए कहूँगा', कहत हुए अन्ना बा को जसवत न धैर्य बँधाया और वहा से चला आया। भावुक जसवत बा को रोते दखने का साहस नही जुटा सकता। वहा से दूर हट जाने मे ही उसने अपना क्षेम जाना।

एक सशक बोझिल मन लेकर जसवत अनारन के कक्ष से निकला। उसे विश्वास हो गया था कि महला मे कोई ऐसा विरोधी तत्व अवश्य मौजूद है, जो अनारन बाई के साथ शत्रु भाव का व्यवहार रखता है और किसी भी माल पर उसको गिराना चाहता है।

षडयत्र की तह तक पहुचा के लिए दीवानजी न षडयत्रकारियो से मिल

जान का ढाग रचा। सेनापति प्रसन्न हो गया। दीवान को अपने साथ पाकर उसने अपनी पाँचो घी मे महसूस की। युवराज अमरसिंह अभी पूरी तरह षड्यन्त्र में सम्मिलित नही हो रहा था। उसे राज्य का मोह नही था, उसे तो केवल अधिकार और गौरव के बडे बडे शब्दो से भरमाकर उसकी राजपूती मर्यादा को झझोडा गया था। दीवानजी को समूची स्थिति मे सेनापति का स्वार्थ ही दीख पडा—वही अमर को भडकाकर अपना उल्लू सीधा करने के प्रयास मे है, यह समझते दीवानजी को देरी नही लगी। ऊपर से यह दर्शाते हुए कि वे अमर और सेनापति के सहयोगी है, उन्होने अमर को अपने कार्यालय-कक्ष मे बुलाया। आदर मान के उपरात सीधा प्रश्न किया, 'युवराज यदि सचमुच महाराज, पासवानजी की इच्छा से ही सही, जसवत को युवराज पद दे दें तो आपका क्या इरादा है? सेनापति आपके साथ है। मैं भी पारिवारिक परपरा के उल्लघन करने को उचित नही मानता।'

मैं महाराज की इच्छा पर स्वीकृति के फूल चढाऊँगा। इरादा कैसा?' —अमर ने स्पष्ट कहा।

आपकी तलवार का पानी सारा राजपूताना स्वीकार करता है। जिसके पास शक्ति होती है, इच्छा तो उसी की चलती है, क्या अपना अधिकार यो ही छोड देंगे? दीवानजी ने पुन टटोला।

जसवत मेरा छाटा भाइ है, मुझे उससे प्यार है। यदि मेरे अधिकारो का भाग वह करेगा, तो भी मुझे कोई आपत्ति नही होगी। मैं अपने और जसवत मे कोई अतर नही मानता।'—अमर ने खुलासा किया।

अधिकार तो छीन लिए जाने चाहियें, अपने-आप कौन देता है।

अमर हँस पडा बोला, दीवानजी, यह आप कह रहे हैं? अधिकार किससे छीनने होगे? छोटे भाई जसवत से? पिताजी से? हिंदू सस्कारो मे जन्मे पले व्यक्ति से आप मुगलिया परिवार जसी प्रतिक्रिया की आशा करते हैं? मैं अपने भाई या बाप के विरुद्ध शस्त्र उठाऊगा? नही। आप भूलते हैं दीवानजी, भाई या बाप का रक्त बहाकर सिंहासन तो क्या खुद परमात्मा भी मिल सकता हो, तो नही चाहिए मुझे। उस दिन गुस्से मे मेरे हाथो बहन का सिंदूर पुछ गया—उसके लिए मैं आयु भर अपने को क्षमा नही कर सकूँगा। मैं केवल एक सनिक बनकर रहना चाहता हूँ मुझे राज-पाट

की दरकार नहीं'—कहते कहते अमर भावुक हो गया। आखे छलक आयी उसकी।

मैं अक्खड जरूर हूँ, शालीनता की कमी मुझमे हो सकती है, किंतु मुगल राजकुमारो की तरह मैं अपने परिवार पर तलवार नही उठा सकता। विरोधी का सिर कुचलना राजपूत का गौरव है, भाइयो की हत्या करके तथाकथित अधिकारो का भोग कलक है मेरे लिए'—अमरसिंह ने बात और भी स्पष्ट की।

दीवानजी गद्गद हो गये। उठकर युवराज को गले लगाकर भरी आवाज म बोले, 'युवराज, मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी। मेरा मन कहता था, आप जैसा एक सच्चा राजपूत षडयत्रकारी नही हो सकता। निश्चय ही, आपके कधे पर रखकर किसी और ने बदूक चलाने की कोशिश की है।'

दीवानजी सेनापति से मिले। बोले, यह पासवानजी, सुना है, हमारे युवराज को अधिकार च्युत करवाना चाहती ह। आपने भी कुछ जाना इस सबध म?

सुना तो मैंने भी है, परतु तथ्य की पुष्टि अभी नही हो सकी। युवराज के विरुद्ध महाराज के कान भरा करती है, ऐसा पता चला था। सेनापति ने प्रतिक्रिया जानने के लिए कहा।

नही, नही, हम ऐसा नही होने देंगे। युवराज अक्खड जरूर हैं, किंतु वीरता और साहस म पूरे राजपूताना म उनकी तुलना नही। आप साथ दें, तो मैं बात करूँ महाराज से!' दीवानजी ने छेडा।

सेनापति दीवानजी की बात सुनकर जैसे उछल पडा हो। दीवानजी भी वही महसूस कर रहे हैं जो मैं करता हूँ। तब तो हमारी विजय निश्चित ही ह। ऐसा सोचकर धीरे से दीवानजी के कान म बोला, यह सब षड्यत्र पासवानजी का है। कवियो से राज सिंहासन नही सभला करते। अमर का पद च्युत किया जाना राज्य के हित म नही, इसलिए पासवानजी को ही उखाडना होगा, उनका प्रभाव शून्य करना होगा। आपका क्या खयाल है?

आप सही कहते हैं, दीवानजी ने सेनापति की हाँ म हाँ मिलाते हुए कहा, मैं भी कुछ समय से इस पर विचार कर रहा हूँ। सच्चे अधिकारी का

ही अधिकार मिलना चाहिए यह तो निश्चित ही है।'

'हा, मैं नही सहूँगा इस अन्याय को' सेनापति की बात से क्रोध झलकने लगा था, 'आप साथ दें तो मैं अधिकार छीनकर सही व्यक्ति को दिलवा सकता हू।'

नहीं, हथियार उठाना तब तक व्यर्थ होगा, जब तक कि खुद युवराज इसके लिए तैयार न हो। युवराज जसवत के लिए त्याग और पिता के आदश का आदर करने का तत्पर हैं। उन्हें तो मनाओ।'

मैंन बात की है। वह धीरे धीरे हमारे विचार का समझने लगे है। मरा विश्वास है कि व साथ देंगे' सेनापति उत्साहित हो उठा था।

इधर दीवानजी के लिए अब चित्र बिलकुल स्पष्ट था। वे समझ गय थे कि पडयन्त्र जसी यह प्रथम चिन्गारी सेनापति की ही देन है। फिर भी सेनापति पर कुछ भी प्रकट न करत हुए दीवानजी न इस दिशा मे गहरा विचार करन का आश्वासन दिया।

सनापति के यहाँ स दीवानजी जसवत के कक्ष म जा पहुचे। जसवत 'भाषा भूषण' को पूर्ण करने म जुटा था। चारा ओर सस्कृत रीतिग्रथो के ढेर लग थे, बीच में जसवत अपनी पाडुलिपि पर झुका था। राज प्रासाद मे जहाँ सदा राजनीतिक घेराबदियो की ही बात होती है, केवल जसवत का प्रकोष्ठ ही एसा स्थान है जहाँ शास्त्र और साहित्य की बात की सभावना बनी रहती है। जसवत न दृष्टि उठाकर जब दीवानजी को अपने निकट दखा तो सम्मानाथ उठ खडा हुआ। अभिवादनोपरात आसन ग्रहण करने को निवदन करत हुए दीवानजी का मुह ताकन लगा। मन क्षण भर क लिए चचल हो उठा, चिंता बाहरी सतह तक झलकने लगी। जसवत को भय लगा कि कही महाराज का कोई असुखद समाचार न आया हो।

जसवत की साहित्यिक व्यस्तता एव निश्छल व्यवहार देखकर दीवान जी किसी भी मोल पर उस षडयन्त्र का अग स्वीकार करने को तयार नही हा सक। फिर भी स्थिति स भली भाँति परिचित होन और महाराज की अनुपस्थिति म राज्य की सुचारु व्यवस्था बनाये रखन क लिए उन्होने जसवत से कहा, 'कलाकार का क्षेत्र इतना गहरा होता है कि उस अपन पराये की तमीज कम ही करनी होती है। वह कता होता है इसलिए अपनी

रचना म ही बसा रहता है—शायद उसके पास अन्य चितन के लिए हमेशा समयाभाव बना रहता है। तुम्हारा क्या खयाल है, जसवत।'

दीवानजी, मैं इन बाता को क्या जानू ? मुझे तो पिताजी और अन्ना का स्नेह प्राप्त है। भैया और आप राज-काज देखते है। भैया की तलवार के आतक से ही राजपूताना कापता है और मेरे लिए इस प्रकार की शाति रचना के लिए बडी सुखद है। जसवत ने खुलासा किया।

नही, मेरा अभिप्राय राजनीति म स्वार्थ पूर्ति के लिए हथकडो के औचित्य अनौचित्य की सारता स था। कोई युवराज पद के लिए सघर्ष करने लगे किसी का अधिकार छीनने का प्रयास करे तो उसे क्या कहा जायेगा ?

युवराज मेरे बड भाई है मेरे लिए आदरणीय। मैं तो स्वय उन्हे अपने अधिकारो के प्रति उदासीन देखकर दुखी होता हू। हा जिस सिंहासन का उत्तराधिकार उनके पास है उसकी रक्षा के लिए तलवार ही नही, शील, प्रजा हित और जनता के लिए स्नेह की भी बडी अपेक्षा है। यही मैं भैया से कहता रहता हू'—जसवत ने अमर स हुई बातचीत का उद्धृत किया।

दीवानजी ने जसवत को खरा सोना जाना। षडयन्त्र के बीज अभी प्रस्फुटित ही हुए हैं और वे भी केवल सेनापति द्वारा सिंचन के कारण—यह जानते-समझते दीवानजी को देरी नही लगी। फिर भी जसवत की कुछ और परीक्षा लेते हुए बोले, सुना है पासवानजी आपको चाहती हैं और स्नेहवश महाराज स आपको युवराज बनाने की सिफारिश भी किया करती हैं।'

उनका स्नेह मेरा सम्बल है। मेरी माता के स्थान पर वे हैं उन्ही के आशीष स मैं अपना जीवन यापन कर पाता हूँ। भैया भी उनके लिए वैसा हो है किंतु वह अपनी सीमाओ म बँधकर ही विलग-सा बना रहता है। अन्ना बा के लिए हम दोनो म कोई अतर नही। महाराज स उनकी क्या बातचीत होती है यह मुझे मालूम नही।' जसवत ने स्थिति स्पष्ट की।

दीवानजी ने खाली होते तरकश का अतिम तीर छोडा, यदि महाराज आपको युवराज घोषित कर ही दें तो आपकी क्या योजना होगी ?'

प्रथम तो मैं इसका विरोध करूगा, फिर भी यदि बात न बने तो भैया का अधिकार उसे सौंपकर अपने को भरत की नाई उसका सेवक मान गौरव

का अनुभव करूँगा। आप दीवानजी, यह क्योंकर पूछ रहे हैं, क्या आपको मेरी प्रकृति पर भी सदेह होने लगा है ?'

दीवानजी बात टाल गये। अब उनकी शिकारी दृष्टि केवल सनापति के गिद मँडराने लगी। किंतु महाराज की अनुज्ञा के बिना वे कुछ भी विशिष्ट कदम नही उठा सकते थे।

राज्य का सेनापति ही यदि षडयन्त्रकारी हो जाये, तो राज्य का भविष्य सहज ही कल्पित किया जा सकता है। हाँ, यह ठीक है कि षडयन्त्र राज्याधिकारियों के विरुद्ध नही था सेनापति केवल पासवानजी का प्रभाव मिटाना चाहता था, फिर भी अनुचित को उचित तो नहीं ही कहा जा सकता।

दीवानजी के सक्रिय हो उठने और धैर्य बँधाने से पासवानजी को सांत्वना हुई थी। उन्हे महाराज की अनुपस्थिति का खेद था, धाय माँ की रुग्णता का दुख था और जसवत के प्रति ममता को मैत्री आँखो से देखने वाला पर राय भी था। यह सही था कि पासवानजी को जसवत में अमर की अपेक्षा अधिक गुण दीख पडते थे महाराज से भी उन्होने एकाध बार ऐसी चर्चा की थी, किंतु इसमें षडयन्त्र कहाँ था, यह उनकी सरलता कभी नही जान पायी।

अमर के नाम पर सेनापति द्वारा उठाया यह बवडर उनके मर्म को दुखा गया। व सोच में पड गयी कि आखिर उन्होने राज्य पर अपने दात गडाने का तो कोई प्रयास नही किया, अपनी सतान भी उनकी कोई नही, जिसकी खातिर राज्य हडपने का विचार उनके मन में जगा हो। यह तो मात्र अमर के व्यवहार को देखते हुए उसमें राजकीय गुणों की कमी महसूस करती हैं, वही उन्होने महाराज से भी कहा है। यह सब सोचकर उसे कोफ्त होने लगी। मन को उक्त अप्रिय स्थिति से हटाने के लिए अनारन ने धाय माँ के निकट जाने का विचार बनाया।

सेविका के पास सूचना भेज दी गयी।

पासवानजी ने स्नान किया, हल्का सा शृगार भी सेविकाओ ने कर दिया। होली के अवसर पर श्रेष्ठियो से भेंट में प्राप्त सुनहरी घाघरा चोली

और ओढनी पहनकर व धाय माँ के कक्ष की ओर चली। सग मे दो विश्वस्त दासिया ने फलो की दो छोटी टोकरियाँ भी उठा रखी थी। अपने प्रासाद के मुख्य पोल से बाहर आकर खाशा ड्योढी म से होती हुई सीधी मोती महल के पीछे वाले प्रकोष्ठ की ओर चल दी। वही धाय माँ का कक्ष था। माग म दास दासिया ससम्मान शीश झुकाकर दीवार के साथ रुक जाते। पासवानजी का अभिवादन करते और महाराज की जय बुलाते थे। अनारन वाई मबके अभिवादन का उत्तर देती मन ही मन फूली न समाती धाय माँ के कक्ष म पहुँची।

धाय मा का अनारन के आने की सूचना मिल चुकी थी। सेविका ने उसके बिस्तर की चादर आदि सब बदल दिय थे धाय मा के पहनने के कपडे भी बदला दिये गय थे। बिस्तर के निकट ही एक बढिया चौकी पासवानजी के लिए रख दी गयी थी।

धाय मा रोग और वृद्धावस्था के कारण बहुत कमजोर दीख पडती थी। बिलकुल जसे हड्डियो के ककाल पर झुर्रीदार त्वचा का आवरण डाल दिया हो। चेहरे पर अतीत के तेज का अवशेष भले हो अधिकार मद नाम की कोई चीज दीख नही पडती थी। महारानी की मत्यु के बाद पूरे मोती महल मे जिसका एकछत्र राज्य रहा था वह धाय माँ आज उपेक्षित सी अपने कक्ष म पडी मौत की घडियाँ गिन रही थी।

पासवानजी उस ढलती हुई भव्य मूर्ति को देखकर द्रवित हो उठी। नेत्र भीग गये। चौकी पर बैठने की अपेक्षा धाय मा के निकट बिस्तर पर बैठकर ही पासवानजी ने अपनी दाहिनी भुजा म उन्हे लपेटत हुए जसे सीने से लगा लिया। मुझे मझधार म छोड जाओगी माँ? कहते-कहत उनकी आँखें तेजी से छलक पडी। धाय माँ भी अपने को सयत न रख सकी। कुछ क्षण दोना की आँखो का कडवा पानी गालो पर बहा। धाय माँ न ही बात सभाली। अपन झुर्रीदार हाथो से अनारन के आँसू पोछते हुए उसने उनका चेहरा अपने दोना हाथो म थाम लिया। प्यार से पुचकारती हुई बोली मई मैं अभी मरने वाली नही। फिर तुम तो मेरे मन का बोझ हल्का करने वाली हो इसलिए मेरी बेटी के समान हो। तुम्हारी प्यारी-सी यादें ही तो मेरा सबल हैं। वादा करो अब रोओगी नही।'

'नही रोकूँगी मा', कहकर मुस्कराने की कोशिश मे अनारन फूट पडी। धाय माँ ने शीश पर हाथ फेरा। अनारन को अपने सीने मे छिपा लिया। मैं तुम्हारा दुख जानती हूँ, बेटी। कोई किसी का प्रसन्न देखकर सतुष्ट नही होता ! महाराज लौट आयेंगे सब दुरुस्त हो जायेगा।' धाय माँ ने विश्वस्त किया।

'मा मुझे आपका बडा सहारा है। यदि आप मुझे छोड गयी तो मैं नितात अकेली रह जाऊँगी, इस महल मे। बस आप बनी रहे यही मेरी दुआ है।'

'ऐसा भी कभी हुआ है पासवानजी। पका हुआ फल हूँ कब किसी हल्के मे झाके सी गिर जाऊँगी, कौन जाने !' धाय-माँ ने दार्शनिक ढग से कहा।

नही अभी नही अभी मेरी खातिर आपको जीना होगा', कहते हुए अनारन धाय माँ से लिपट गयी।

कुछ और इधर उधर की बातें भी हुईं। महाराज के विरह म दुबली हो जाने का सकेत भी धाय मा ने किया। चर्चा चलते चलते अमर पर आकर अटकी 'अमर के स्वभाव मे कोई परिवतन हुआ या नही ? धाय मा ने पूछ लिया।

अनारन ने सिर झुका दिया। प्रश्न अनुत्तरित रहा, किन्तु मौन ने वचन से अधिक समझा दिया। धाय माँ बोली हा बेटी, यह अमर तुम्हारे कष्टो का कारण बन सकता है। इसमे प्रजा प्रेम और बडो के प्रति सत्कार का नितात अभाव है। वह जितना शूरवीर है, उतना ही बेसमझ भी है प्रजा पालक बनकर वह प्रजा का विश्वास कभी नही जीत सकता परिणामत इसके सिंहासन पर बठने के बाद तुम्हारा भविष्य दुखद हो सकता है। साव धान कर रही हू तुम्हे सँभलना।'

मैं समझती हूँ माँ। किन्तु मैं कर ही क्या सकती हूँ। राज्य परपरा मेरे बदले तो बदल नही सकती। मेरी हैसियत ही क्या है ? महाराज की कृपा है सो प्रभु उन्हे बनाये रखें। अनारन ने बडे हताश भाव स कहा।

धाय माँ की आँखो मे दो मोती तैरे और धीरे से गालो पर चू गये। उन्होने बडे स्नेह से अनारन का हाथ थामा हल्का सा दबाया और अपने

ओठों से छूलाकर छोड़ दिया। बोली, पासवानजी अधिकार कार्ड देता नहीं लिए जाते हैं। पासवान का पद कोई साधारण बात तो नहीं।'

अनाग्न सबंत समझ गयी। यों तो उस दिशा में वह पहले भी जागरूक थी किंतु अब सावधान भी हो गयी। सेनापति और अमरसिंह की छायाओं से दीवानजी का सहारा पाकर अब वह निर्भीक सी महसूस करने लगी थी। महाराज के लौटन तक का ही तो कष्ट था।

अमरसिंह की ओर से विशेष प्रोत्साहन न मिलने एवं दीवानजी के द्वारा पूछताछ के कारण सेनापति चौकन्ना हो गया। उसके मन में संदेह का सप फुफकारने लगा था। कहीं दीवान धोखा तो नहीं देगा। मैंने असावधानी में पासवानजी के विरुद्ध सारी योजना उसे बता डाली। अमरसिंह को अधिकार के प्रति प्रेरणा दी थी वह फिर पुराने ढर्रे पर आ गया। विचित्र भेद है मुगल और हिंदू संस्कारों में। यही स्थिति किसी मुगल शाहजादे के सामने होती तो वह विद्रोह का झंडा फहरा देता और यह अमर है कि राज्याधिकारियों का सहयोग पाकर भी पिता या भाई के विरुद्ध हथियार तो क्या आवाज तक नहीं उठाने को तत्पर।'

गलती तो मैंने की जो अमर को प्रेरित करने चला। मेरा भी स्वार्थ तो था किंतु इतना शूरवीर व्यक्ति परिस्थिति के प्रति इतना ठंडा होगा ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता था।'

सेनापति इसी उधेड़बुन में विद्रोह के कगार पर पहुँचकर भी असमर्थ सा अनुभव कर रहा था। सेना की कुछ ही टुकड़ियाँ तो उसके पास थीं अधिकतर सैनिक तो महाराज के साथ दक्षिण की मुहिम पर गये थे। उपलब्ध टुकड़ियों के जोर पर सेनापति राज्य में कोई उथल पुथल कर सकने का साहस नहीं रखता था। उधर अमर का भी भय था वह अकेला ही ऐसे छोटे मोटे विद्रोह को दबा सकने में सक्षम था। तात्पर्य यह कि सेनापति दो पाटों में घिरकर साँप छछूंदर की स्थिति में आ गया। उसे भय था कि महाराज के लौटन पर उसकी दुर्गति भी हो सकती है। अतः महाराज के आने से पूर्व ही वह अपने लिए कोई सुरक्षित योजना विचार लेना चाहता था।

त्याग पत्र का विचार भी उसके मन म आया किंतु उससे तो उसके विरुद्ध सदेह और भी पक्ता। भाग जाये तो पकडे जाने की यत्रणा, कुछ अनुचित कर बैठे तो राज्य मे बना मारा आन्र सत्तार धूल म मिल जाय। भूल यह हुई कि न्नि की बात चार नहीं छ नही आठ काना तक पहुँचा बैठा। बात तो चार काना म ही आग को सरकन लगनी है, आठ कानों में पहुँकर तो वह पहिया पर चलने लगेगी। अन्ना का सेवक दीवानजी, अमर सिह—कौन भडा फोड दे क्या पता !

बेचारा सेनापति !

आखिर पासवानजी की शरण ही उसे सर्वाधिक सुरक्षित महसूस हुई। समय निश्चित कर एक न्नि वह पासवानजी के महला मे जा पहुँचा।

ाइये सेनापतिजी कैसे आय ?' धाय माँ द्वारा सावधान की गयी पासवानजी न सतक प्रश्न किया।

यो ही दशन को चला आया था। सोचा महाराज की अनुपस्थिति म मेरे योग्य शायद कोई सेवा हो।

महाराज को गये दो मास हुए। चलिय आपको ध्यान तो आया—शायद कुछ अन्य महत्वपूण कार्यों मे व्यस्त रह। दीवानजी कुछ ऐसा ही बता रहे थे।' अनारन न स्थिति भापने के लिए चिलमन के बीच से ध्यान पूवक सेनापति के चेहरे को पढना चाहा।

दीवानजी की बात अनारन ने तो अपनी बात म वजन पैदा करन को कही थी किंतु सेनापति के चोर मन ने यह परिणाम निकाला कि दीवानजी ने जरूर उसकी विद्रोह भावना की कलई पासवानजी के पास खोल दी है। उसका चेहरा विवण हो गया। घबराहट म वाणी प्रकपित हो उठी—नहीं नहीं पासवानजी मैं तो दास हूँ आपका। आप आपने याद ही नहीं कभी याद ही नहीं किया अन्यथा सिर पर नही सिर के बल उपस्थित होता। आप सेवा सेवा बताइये।'

बुलाया तो मैंने आज भी नहीं फिर सवा का ध्यान कसे आ गया ? अनारन चौकस हो गयी थी। उस सेनापति की घबराहट से उसका कोई अदश्य भेद भासित होने लगा था। दीवानजी की बातें उसे याद थी और धाय माँ की चेतना भी अभी ताजा थी।

पासवानजी ने अवसर का लाभ उठाया। बोली 'तो क्या आप समझते हैं कि अमर ही राज्य सँभाल सकता है जसवन्त असफल रहेगा।'

अब सिवाय समर्थन के सेनापति के पास कोई चारा न था। कहने लगा, 'आप जिसे सहयोग देंगी, सफल वही होगा। आपका यह दास भी पूरा साथ देगा।

ठीक है समय आने पर परीक्षा हो जायेगी। पासवानजी ने घुंडी बनाये रखी। सेनापति अपने को सही सरक्षण मिल गया समझकर कुछ सतुष्ट हुआ और पासवानजी के महल से लौट पड़ा।

दक्षिण मे निजामुलमुल्क और खाँ जहाँ लोधी का पूर्ण दमन करने मे राजा गजसिंह को सफलता मिली। राजा गजसिंह की सेनाओ ने शत्रु का मुँह तोड दिया। दोनो सरकशो ने न केवल हथियार डाल दिए, बल्कि बादशाह के हुजूर मे उपस्थित होकर जुहार बजाने की शर्त स्वीकार कर ली।

महाराज गजसिंह की इस विजय से शाहशाह बहुत प्रसन्न हुए। वास्तव म दक्षिण की उक्त रियासतें आगरा से इतनी दूर पडती थी कि वहाँ के शासक कभी भी विद्रोह की पताका फहराने लगते थे। आगरा से कुमक पहुँचते पहुँचते काफी विलम्ब होता था और परिणामत विद्रोही शक्ति सचित करने म सफल हो जाते थे। राजधानी से सहस्रो कोस दूर दक्षिण म शत्रु के घर म शत्रु का मुह तोडकर गजसिंह ने शहशाह की दृष्टि मे बहुत सम्मान प्राप्त कर लिया था। अत शाहजहा ने महाराज का खुलकर स्वागत किया। आदर भाव से उन्हे जडाऊ पट्टे वाली एक तलवार भेंट की। साथ ही ईरानी कलाकारो द्वारा बनायी एक बहुत ही सुदर कलाकृति 'अजदहा पैकर' उपहार रूप म प्रस्तुत की। महाराज युद्ध से कुछ समय के लिए मुक्त होकर पुन अपनी राज्य व्यवस्था सँभालने के लिए जोधपुर चले आये।

महाराज की शानदार विजय सकुशल लौटने और शहशाह से समादृत होने के उपलक्ष्य म जोधपुर मे एक भव्य स्वागत समारोह हुआ। समारोह मे

नत्य, गान तथा वीरो को सम्मानित करने का कायक्रम था। राजस्थान की प्रसिद्ध नत्यागना कचनार इस समारोह मे विशेष आमत्रित थी। कचनार का रूप लावण्य थिरकन, अग सचालन सभी पूरे प्रदेश के युवको के लिए चुम्बक का काय करते थे। इसीलिए नत्य गान का कायक्रम प्रासाद के बाहर वाले खुले आगन म आयोजित किया गया।

कचनार ने अपनी कला की पराकाष्ठा को छू लिया। उसकी प्रत्येक मुर्की प्रत्यक थिरकन पर पडाल वाहवाह से गुजरित होता रहा। मुगल दरबार म देखे नगीना के नत्य के वाद आज महाराज को सही तौर पर एक मनोहारी नत्य देखने को मिला था। महाराज के पाश्व मे बैठी पासवानजी ता कचनार की नत्य कला पर फिदा हुई जा रही थी। लगभग आधे मुहूत्त तक नत्य का ममा बँधा रहा। दशक इतने तमय थे कि उन्हे महाराज की उपस्थिति तक का ध्यान न रहा। वे कदाचित अशिष्ट भाव से कभी ऊचे स्वर मे भी वाहवाह की आवाजें कर बैठते। कचनार ने अतिम थिरकन के साथ जब महाराज का वदन किया तो ऐसा लगा कि जादू टूटने पर बुत बने लोगो म प्राण घर करने लगे हो। पासवानजी तो इतनी प्रसन्न हुइ कि उन्होंने अपना जडाऊ कगन उतारकर कचनार की दाहिनी कलाइ मे पहना दिया। कचनार साभार नमित हुई। महाराज ने गजमोतियो की माला उस भेंट मे दे दी। तत्पश्चात अनेक सरदारो, मत्रियो और श्रेष्ठियो ने भी स्वण मुद्राओ के रूप मे कचनार की झालिया भर दीं।

राजपूताना के अनक लोक गायको ने भी समाराह म भाग लिया। भाटो चारणो के दौर के वाद महाराज के सकेत पर शास्त्रीय सगीत का रग भी जमा। चारो ओर माधुय छा रहा था, शृगार रस की महक बिखर रही थी, गायक जन प्रेम, मिलन और माधुय के गीत गा रहे थे। चारणो की वीर प्रशस्तियो के उपरात माधुय के गीत, वीरो की धमनियो मे रक्त सचार को ऊष्मा प्रदान कर रहे थे। मधुमती भूमिका म खोये युद्ध से लौटे वीर अपनी अपनी सगिनिया की कल्पनाओ और स्मतियो म खो गये थे। तभी पासवानजी की ओर से एक फरमाइश हुई। इस सुहाने मधुर वातावरण म राज्य के कवियो की मधुर वाणी भी क्यो न हो। महाराज ने भी

स्वीकृति मे गदन हिला दी।

देखते ही देखत श्रोताओ के बीच से उठकर कुछ जाने मान कवि मच की ओर बढे। सब ओर हर्ष ध्वनि होन लगी तालियो की गडगडाहट म समारोह का रग दोबाला हो गया। कविया की निजी मुद्राएँ दर्शनीय थीं— पगडी के ढीने और विचित्र पेंच, मुँह मे पान की गिलौरिया ओठो के कोनो से झाकती लाल लाल पीक और घुटना मे ऊपर तक लपेटी धोतियाँ—बस वे स्वय साक्षात कविता दीख रहे थ। कुछ कवि बाहर से भी आये थे। *कविता पाठ का श्रीगणेश करने के लिए उन्ही मे से एक महानुभाव का आह्वान किया गया।* महाराज युद्ध जीतकर आये थे, दक्षिण मे तुर्कों की तेग काट डाली थी राजा गजसिंह ने, अत उसने आगे बढकर इसी पर एक ओजपूर्ण सवैया कह डाला—

> प्रबल प्रताप दावानल मो विराजै वीर,
> अग्नि कै पारे रोरि धमकि निसाने की।
> ठट्ट तुरकान क निघट्ट दारे बाननि सो
> पेस कर लेता है प्रचड तिलगान की।
> कविनाथ कहैं सिंह मतग हैं जाको
> क्रोध त्रिपुरारि को सौ लाज बर बाने की।
> चढिकै तुरग जग रग करि सलनि सो,
> तोरि डारी तीखी तरवार तुरकाने की।

करतल ध्वनि से मडप गुजरित हो उठा। महाराज के बदन पर मुस्कान खेल गयी, पासवानजी को रोमाच हो आया और उपस्थित श्रोताओ न सिर चालन करते हुए वाह वाह कहा। भरतपुर से आये कवि चद्रनाथ के सवैये के उपरांत अब शृगारिक कविया की पूरी पक्ति अपने महाराज का मन बहलाने को उत्सुक बैठी थी। महाराज साढ़े-तीन महीन के बाद आये थे, *पासवानजी को इस बीच कई आँधियाँ झेलनी पडी थी* इसलिए वे मधुर शृगार भरी कविताओ से रोमाचित होना चाहती थी, ताकि एक लम्बे वियोग के उपरांत मिलन के क्षण उद्दीप्त हो उठें। अत अब जिस कवि का आह्वान किया गया, उसने पासवानजी का नखशिख चित्रण कर उनके मन की बात पूरी कर दी। महाराज मे आज की रात प्रेम की उत्कटता,

मधुरता का आस्वादन एवं लीला विलास की तीव्र उत्तेजना उत्पन्न करने में कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता था। पासवानजी का स्वरूप यों चित्रित किया गया—

मंद गजराज की सी चाल चलें मंद मंद
पद अरबिंद से सुछंद सुकुमार हैं।
केहरि की कटि ऐसी खीन कटि पीन कुच
हेम कुंभ से हैं कंठ कंबु सौं ढार है।
धनुष सी बाकी भौंह बनी है मुदित' दृग—
मृग कैसे चाव मुख चंद ऐसा चारु है।
चतुर बिहारी एक प्यारी मैं निहारी जाके
आनि की सुषमा की उपमा अपार है।

एक बार पुनः करतल ध्वनि हुई। पासवानजी लजा गयीं, किंतु उनके चेहरे की मुस्कान अपनी प्रशंसा सुनकर संतोष प्रकट कर रही थी। महाराज निकट ही बैठे थे, बायीं कुहनी से पासवानजी को चुपके से एक टहोका लगाया और मुस्कराते हुए अगले कवि को सुनने की तैयारी करने लगे। पासवानजी महाराज के इस अप्रत्याशित स्पर्श से प्रकंपित हो उठीं। लेकिन प्रकंप भाव को छिपाने के लिए उन्होंने अपनी ओढ़नी को ओढ़ने का स्वांग रचा, जैसे हेमंत की शीतल वायु के झोंके से वे प्रकंपित हो उठी हों। किंतु एक आशु कवि की तीखी दृष्टि से उनका यह कैतव-कर्म छिपा न रह सका। वह बिना आमंत्रित किये ही शीघ्रता से आगे आया और ऊंचे स्वर से बोल उठा—

ज्यों-ज्यों आवत निकट कंप त्यों-त्यों उपजावत,
सकुचावत सब अंग रुचिर रोमांच रचावत।
अधरहिं खंडन करत नयन भरि आवत पानी,
सीत्कार उच्चार होत मुख गद गद बानी।
हठि बसन हरत लागत हिऐं मान मान मयमंत को
कविराज कंत निय सों मिल्यो कि चल्यो पवन हेमंत को।

आगे जिस कवि को आमंत्रित किया गया वह नारी-सौंदर्य, नख शिख चित्रण एवं रोमानियत के शब्द-चित्र प्रस्तुत करने में माहिर था। आज

पासवानजी रोमानी और भावुक हो रही थी, महाराज से एक अवधि तक अलग रहकर आज मिलन-सुख की कल्पनाओं में खोयी सी ऐसी रचनाएँ सुनने में आनंद अनुभव कर रही थी। महाराज को उनकी प्रसन्नता में बाधा डालने की तनिक कोई इच्छा न थी, अतः वे भी भाव विभोर होकर शृंगारिक काव्य रस में बहे जा रहे थे। कवि ने दो सवैये पश किये—पहला नायक को चोर कहकर तंग करने का उक्ति चमत्कार था तथा दूसरा वसंतागमन पर नायिका का हर्षोल्लासपूर्ण चित्रण था—

करि की चुराई चाल, सिंह की चुराई लंक,
ससि को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की।
पिक को चुराया बैन, मृग को चुरायो नैन,
दसन अनार हाँसी गूजरी गभीर की।
कहै कविराज बेनी ब्याल की चुराइ लीनी
रती रती सोभा सब रति के सरीर की।
अब तो कन्हैया जू को चित हू चुराइ लीनो,
चोरटी है गोरटी या छोरटी अहीर की।

वाहवाह की ध्वनि ने स्वागत किया। दूसरा सवैया कहने के लिए कविराज ने पैंतरा बदला—

खेलिबा का फाग देवदारा सो उतरि आयी,
दीरघ दगनि देखि लागती न पलकैं।
खुलत दुकूल भुजमूल दरसत बर,
उन्नत उरोज हार हीरन के फलकै।
राज कवि भू पर धरत पाँव मद मद,
आनन के ऊपर अनूप छवि झलकै।
लाल लाल रंग भरी मदन तरंग भरी,
बाल भरी आनंद गुलाल भरी अलकैं।

काव्य रस का प्रवाह चल रहा था किंतु जसवंत चुपचाप मंच के पास एक सुघड श्रोता के रूप में राजकुमार वाले आसन पर विराज रहा था। पासवानजी मन से चाह रही थी कि जसवंत भी अपनी कोई रचना कहे परंतु वे यह भी जानती थी कि वह महाराज की उपस्थिति में कुछ भी

कहने का साहस नहीं करेगा। फिर भी मच का सचालन करने वाले को उन्होंने सकेत म आदेश दिया कि वह जसवत को भी कुछ कहने को प्रेरित करे। और मच से अकस्मात एक घोषणा सुनायी पडी, 'आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हमारे सर्वप्रिय महाराजकुमार जसवतसिंहजी भी बढिया कविता करते हैं। यहाँ मौजूद हैं। उनसे विनती है कि वे भी अपनी रचना का आस्वाद इस शुभ अवसर पर हमे चखने की अनुमति दें। जसवत ना ना ही करता रह गया। घोषणा समाप्त होते ही उल्लास भरी करतल ध्वनि के साथ साथ जसवत की रचना सुनने के लिए उपस्थित लोग मचलने लगे। जसवत ने महाराज की ओर देखा और नेत्र झुका लिए। पासवानजी स्थिति को समझती थी, अत उन्होंने महाराज के कान म चुपके से जसवत को प्रोत्साहित करने की प्रार्थना की।

'हाँ हाँ जसवत, हम भी तो सुनें हमारा साहित्यकार लडका क्या सोचता और कहता है। जाओ, मच पर जाओ।' महाराज ने सहारा दिया। लाज के बोझ से दबा-सा जसवत कनखियो से पिता की ओर देखता हुआ अपने आसन से उठकर मच पर जा बैठा। धीरे से बोला, 'शृगार का माहौल बना है तो मैं भी इस पक्ष मे एक-आ मुक्तक कहे देता हू। गलती हो तो क्षमा कर दीजियेगा।

'हाँ, राजकुमार आप कहिये, हम आपकी कला से परिचित हो चुके है, गलती नही, रस बरसता है उसम'—कुछ आवाजें श्रोताओ म से उभरी।

देखिये मध्या नायिका का एक चित्र है, जिसम कविवर बिहारी का 'तापना रग झलकता है। मुक्तक पेश है—

तरुनायी अरु बालपन है मध्या के गात।
रवि ससि दोनू देखिए मानो पूर्यो प्रात॥

दोहे का तौल, स्वर लय ताल सब नपी-तुली थी। श्रोता मुग्ध हो गये। खूब ताली बजी। 'कुछ और भी कहिये, राजकुमार' माँग बढने लगी—

जल सूरज पुहुमी जरै निसि याम कृम होत।
गीषम कू ढूँढन फिरै घन ल बिजुरी जोत॥
सुरत अंत तियबदन पर श्रमजल के कन सेत।
तिनक लीक फली तऊ सोभा दूनी देत॥

कुंभ उच्च कुच सिव बन, मुक्तमाल सिर गंग ।
नखछत ससि सोहै खरो भस्म खोरि भरि अंग ।।
कब की चितवन चोप सो बलि देखत कटि नाहिं ।
सिंध भज डर हरिन क यह अचिरज जिय माहिं ।।

राजकुमार के मुक्तका ने समाँ बाँध दिया । चारो ओर शोर मच गया । कुछ उत्साही श्रोताओं ने 'महाराजकुमार जसवंतसिंह की जय' का जय घोष करना शुरू कर दिया । जसवत न पहली बार मच पर स कविता कही थी, अत वह झपता हुआ सा आँखें नीची किय महाराज की प्रतिक्रिया जान लेना चाहता था । उसका ध्यान उधर ही लगा था । महाराज के चेहरे पर मुस्कान झलकी और धीरे धीरे प्रात की धूप की तरह खिल गयी । उन्हें जसवत के मुक्तक पसद आय थे । अत वे अपन स्थान पर से उठे और मच पर बठे जसवत की ओर बढे । उन्होने जसवत का शीश अपनी दोनो भुजाओ म लेकर उसे प्यार किया और सिर चूम लिया । काव्य रचना के क्षत्र म नाम पाने का आशीर्वाद दिया महाराज ने—तो जसवत गदगद हो उठा । उसकी वाणी मूक हो गयी । वह साभार पिता के पाँवो पर झुक गया । इसके साथ ही काव्य रस स्रोत का अत हुआ ।

महाराज का स्वागत सम्मान समारोह भी लगभग समाप्त ही था । महाराज युद्ध म साहस और शौय प्रदशन करन वाले अपन पाँच-सात सनिको को सम्मानित करना चाहते थे । उन्हान उनके लिए परवान तयार करवाय थ और एक जडाऊ मूठ और लाल मखमली म्यान वाली तलवार उनकी कमर मे बाँधन का कायक्रम था । समाराह के अतिम भाग म यह कायक्रम एक ओर वीरा का सम्मान था, तो दूसरी ओर यह सनिको म साहस और काय चेतना क प्रति जागरूकता लान की छुट्टी थी ।

स्वागत-समारोह काफी समय तक चलता रहा । पासवानजी यद्यपि महाराज के निकट रही, तथापि सब लोगा क बीच मे कही दवा घुटा प्रेम शीश उठान का माहस कर सकता है ! बेचारी मन मारे बैठी रही ।

समाराह की समाप्ति पासवानजी के लिए महाराज से मिलन सयोग के भरपूर क्षणा की उपलब्धि का सदेश था । अत समाराह के अत का सर्वाधिक स्वागत पासवानजी की ओर स ही हुआ ।

एकात यद्यपि कोई पसद नही करता, फिर भी प्रेमी युगल के लिए उद्दीपक होता है। कुछ लोग तो एकात से इसलिए दूर भागते हैं कि उनका मन चलायमान न हो। उनका कहना है कि एकात पाते ही उनका चचल मन अनावश्यक, असाधारण एव ऊल-जलूल बातो म उलझ जाता है। बारहा सयतकरन पर भी एकात म बने रहने के कारण उनकी कतिपय अतृप्त और दमित असामाजिक और मानव क भीतर के पशु से सबद्ध अनेक प्रवनिया उह चालित करती हैं। वे समाज विरोधी और अनगल कार्यों म नही, तो सोच म जरूर लिप्त हो जाते हैं। परिणामत अपने सतुलन को बनाये रखने की खातिर व एकान से कतराते हैं बचते है और यथासभव एकात से दूर रहते हैं। किंतु प्रेमी हृदया का एकात स गहरा सबध होता है। प्रेमी अकेला है, तो एकात म अपने प्रेमिक के विचारो म खोया विरह को भी सरस बनाया करता है—प्रमी प्रेमिका दोना हैं, तो एकात उनके लिए प्रणय लीला का ईश्वर प्रदत्त सुअवसर होता है। वे एकात स घबराने की अपेक्षा एक दूसरे म समाकर अपन अधूरे और अकलपन को तप्त कर लेते हैं। तभी तो आचार्यों ने शृगार रस का वणन करत हुए विभावो के अतगत एकात को उद्दीपन क रूप म अत्यत महत्वपूण स्थिति स्वीकार किया है। और समारोह के उपरात यही चिरप्रतीक्षित एकात पासवानजी और महाराज को भी प्राप्त हो गया।

रात्रि का प्रथम प्रहर अभी आरम ही हुआ था कि सुगध की एक लपट, महकती हवा का एक झोका महाराज के कक्ष म प्रविष्ट हुआ। पासवानजी सोलह शृगार किये किसी परी या किन्नरी से कम प्रतीत नही हो रही थी। शरीर पर चदन की रसी बसी गध, खुले लम्बे, घने काले केशो म कस्तूरी युक्त आमला की सुगधि जैसे केश राशि की प्रकृति हो। अग अग पर रत्न जडित आभूषण कश्मीरी रेशम का लहँगा चोली और प्यारी-सी ओढनी, चद्र को भी लजा रहा था पासवानजी का मुख। महाराज कक्ष म अपने पलग पर अवल बठे शायद पासवानजी की ही राह देख रहे थे। एकात म पासवानजी को निकट पाकर महाराज उठे और सयत भाव से कुछ कदम पासव नजी की ओर बढ़े—और फिर न जान क्या हुआ कि दोना राजा होने क सयम, मयादा या आडबर को भुलाकर दौडकर एक-दूसरे के आलिगन

में ऐसे बँध गये, जैसे युगों से बिछड़े हों। कुछ क्षण दो शरीर इसी प्रकार लिपटे से खड़े रहे और तब धीरे से महाराज ने अपने बायें हाथ से पासवान जी की ठोडी को ऊँचा उठाते हुए अपने उत्तप्त होठ उनके फड़कते हुए होठों से छुला दिये। पासवान की शिराओं में जैसे आग की एक लीक कौंध गयी। डगमगा गयी वे, महाराज ने सँभाला तो, परंतु अकस्मात उनका फूटकर रो देना और फिर रोदन का अनवरत सिसकियों में परिवर्तित हो जाना उनके लिए भी विचित्र चेतना थी।

महाराज ने सिसकती हुई पासवानजी को सीने के साथ भींच लिया। उनके चंद्रमुख को दोनों हाथों में लेकर कोमल कपोलों, मदिर अधरों और कजरारी आंखों पर शत शत चुंबन चिपका दिये। आँखों के भीतर के रोदनीय लाल डोरों में झांकते हुए बड़े ही प्यार से महाराज ने अनारन को अपने निकट पलंग पर बिठाया और रुकती हुई सिसकियों के कुछ शांत हो जाने पर अति कोमल वाणी में पुकारा—'अन्नू'

पासवानजी के कानों में जैसे किसी ने मधु टपका दिया हो। महाराज ने भी महसूस किया कि अब तक यही एकमात्र शब्द उच्चरित हुआ है जो प्यार की अनेक दास्तानों से अधिक व्याख्यायक है।

अन्नू उत्तर में महाराज को भुजाओं में भरकर अपना शीश उनके विशाल वक्ष पर टिकाते हुए मिमियाई, 'मेरे स्वामी।'

और मौन का साम्राज्य एकबार पुन आच्छादित हो गया। महाराज की चेष्टाओं और पासवानजी के अनुभवों ने मिलकर कुछ-कुछ बिहारी के दोहे के प्रथमांश कहत, नटत, रीझत, खीजत, हिलत मिलत लजियत वाली स्थिति उत्पन्न कर दी।

उद्दाम काम ज्वर का उपचार हो जाने के उपरांत प्रेमी प्रेमिका अकेले छोड़े जाने, विरह के क्षणों को बिताने की असमर्थता और अन्य सबके द्वारा उपेक्षा की पात्रा बनी होने के उलाहना उपालंभों और शिकवे गिलों का ढेर लगाने लगे। 'आखिर मेरा यहाँ कौन है, आपके सिवा ? किसके भरोसे आप मुझे इतना अर्सा तड़पती छोड़कर दूर रह सके ?' अनारन ने निहोरा किया।

'क्या पीछे कुछ कष्ट पहुँचा तुम्हें ? दीवानजी तुम्हारी सुविधाओं का

ध्यान नही रखते रहे ?' महाराज न भोले भाव से जानना चाहा।

दीवानजी मेरी भौतिक सुविधाओ का ध्यान रखते थे—मेरा मन जो आपको सोचता था, उसका उपचार दीवानजी क्या करते ?' पासवानजी न कनखियो से महाराज को ताका।

जाना तो मेरी विवशता थी। लेकिन सभी तो थे तुम्हारे पास—अमर, जसवत, धाय मा और फिर मेरा प्यार भी तुम्हारे सग सग था।'

'हू ऊ, सभी तो थे मेरे पास! अमर को मेरी सूरत से नफरत है, धाय माँ बीमार पडी है, आपका प्यार तडपाने के सिवा कर ही क्या सकता था ? हाँ, जसवत जरूर कभी कभी दु ख सुख पूछ लेता और मेरी उदासी को बाट लेता था। उसके मुख स 'अनारा बा' सुनकर मरा वक्ष प्रकपित हो उठता है। वही मुझे मा का स्नेह देता है, सचमुच उसी के सहारे जी गयी हूँ इतना समय!' अनारन न दिल की गाठ खोलनी शुरू की। 'जसवत न होता, तो शायद आपके लौटने पर आपकी अनु' आपको न मिलती।'

'क्या होता हमारी 'अनु' को ? किसी की क्या मजाल जो अनु से कुछ कह सके! मौत भी तुम्हें नही छीन सकती मुझसे।' महाराज ने धैर्य बँधाना चाहा।

'हा, चुपके से विष द दिया होता किसी ने या हत्या कर फिकवा दी होती जगल म, तो आपके सम्मुख बहाना की व्याख्या की कमी तो न होती।

महाराज का माथा ठनका। विष दिये जान की सभावना या हत्या की बात स उन्हें षडयन्त्र की गध मिली। ऐसा क्या ? कौन [illegible] हो सकता है वह जो मेरी अनुपस्थिति म पासवानजी म शत्रुता कमाय ? क्या [illegible] मृत्यु का भी भय नही! प्रात काल होते ही दीवानजी [illegible]।' ऐसा सोचते हुए महाराज न पासवान को टटोला, 'आखिर कौन है, [illegible] सिर पर मत्यु की छाया गहरा रही है ? धाय माँ [illegible], उन्होन तुम्हें सावधान जरूर किया होगा।'

हाँ, इसीलिए तो मैं सप्राण आपके [illegible] भी उन्हें मेरी बडी चिता रहती है। [illegible] रहने का सकेत मुझ दिया। पासवानजी ने [illegible]

मुख से सेनापति का नाम निकल गया था।

महाराज ने बात सुन ली, किंतु एकदम क्रोध से उबल नहीं पड़े। पासवानजी ने समझा कि शायद महाराज ने ध्यान नहीं दिया, अत उन्होंने महाराज को दूसरी बातों में टालने का प्रयास किया। महाराज स्थिति की गंभीरता का अनुमान लगा सके इसलिए उन्होंने पासवानजी को परेशानी में डालने की अपेक्षा बात को अपने स्तर पर निपटाने की ठानी। स्त्रियाँ भावुक तो होती हैं, साथ ही जब कोई उनके कारण कष्ट पाने वाला हो, तो वे अकस्मात करुणा से द्रवीभूत हो जाती हैं—ऐसा महाराज जानते थे। इसीलिए उन्होंने उस समय मौन बनाये रखना उचित माना।

किंतु उस रात महाराज शांति से सो नहीं पाये। प्रातःकाल की प्रतीक्षा में उन्हें एक एक पल काटना दूभर हो गया। रात्रि भर वे पासवानजी की बगल में रहकर भी अन्य किसी भाव से उत्तेजित नहीं हो पाये। ऐसे शिथिल और अशक्त उन्हें अनारन ने पहले कभी महसूस नहीं किया था। अभी थोड़ी देर पूर्व जिस पुरुष में प्रेम और पौरुष की गरिमा चरमसीमा को छू रही थी, वह साधारण बातचीत में कहे गये चार वाक्यों में ऐसा खो जायगा एक अचंभा ही तो था यह—अनारन के लिए। नहीं शायद महाराज ने मेरी बात सुन ली है शायद वे क्रोध में हैं, शायद सेनापति में उनके विश्वास को गहरा आघात पहुँचा है, तभी वे अवाक् हो गये हैं—अनारन ऐसा सोचने पर मजबूर हुई।

महाराज और अनारन, दोनों संग-संग शयन-कक्ष में लेटे, रात बीतने तक की घड़ियाँ गिन रहे थे। एक दूसरे से बतियाने या प्रेमालाप का सारा उत्साह जैसे ठंडा हो गया था। तीन महीने की जुदाई के बाद मिलन की घड़ियों में पूरे करने योग्य सैकड़ों अरमान अकस्मात दबकर अवास्तविक बन गये थे। समय था कि सिमटने का नाम ही न लेता था—दोनों एक दूसरे की ओर पीठ किये ऐसे लेटे थे, जैसे गहरी नींद में सो रहे हों। उनकी चेतना सजग थी—एक प्रतिशोध की अग्नि में जल रहा था, दूसरा पश्चात्ताप की ज्वाला में झुलसता तड़प रहा था। महाराज क्रोध में सेनापति का सिर कलम करवा लेने और उसे पासवानजी के विरुद्ध षड्यंत्र करने का उचित दंड देने की युक्तियों को सजग चेतना में खोये निद्रा के मिस पास

वान को टाल रहे थे। पासवानजी असावधानी से मुख से निकले सेनापति शब्द पर पश्चात्ताप के उत्ताप मे सुलगती करुणाभिभूत हुई ऐसी सिकुडी थी जैसे गहरी नीद मे मीठे सपनो मे डूबी हो। आह अजब विडबना थी प्रेमी प्रेमिका इतने निकट, जितने आत्मसात उतने ही अनल की गहराइयो मे डूबते हुए शथिल्य ग्रस्त।

बडी भयानक होती है भीतर की आग। बाहर की आग पानी से बुझ जाती है या बुझा ली जाती है किंतु भीतर की आग ज्यो ज्यो सोच के जल से घुलती है और अधिक भडकती है। मनुष्य जल्दी से जल्दी कुछ कर डालना चाहता है—असयत, असतुलित और असगत। किंतु विवेक ही कुठित हो जाये तो कौन रोके उसे ! कैसे रोके ?

पासवानजी के लिए यह स्थिति अधिक शोचनीय थी। उन्हें किसी भी प्रकार की हानि पहुँचा सकने मे असफल या असमर्थ कह उसे प्रात काल का उदय होते ही उस अपराध के लिए दडित होना है जो अपराध करने मे वह सफल नहीं हो पाया तो पासवानजी की सहज स्त्री-सुलभ ममता को ठेस तो पहुँचेगी ही। यही सोच सोचकर अनारन के नत्र अनामत्रित अश्रुओ का आगमन टाल नही सके। कोयो को जल स्तभन मे असमर्थ जानकर कोमल कपोलो ने उस नमकीन जल को बह जाने दिया अपनी उठान लेती समतल ढलानो से !

मात

महाराज पावक सिंह की नाई टेसू के फल-सी फूली हुई आँखें लिए विपद दरबार की प्रतीक्षा मे थे। दीवानजी स्थिति और सभावित परिणाम के आभास-मात्र से ही चिंतित थे। किसी अनिष्ट की कल्पना मात्र से ही पनाहें काँप-काँप जाती थी। सेनापति महाराज की आशकित ... उनके मन मे परमात्मा से यो ही मृत्यु की माँग करने लगा था। अन्य मत्री और सरदार डर रहे थे, अपनी असावधानी और लापरवाही के कारण रह की

समावना से। बचाव का एक ही कानूनी माग दीख पड रहा था—मुकद्दमा दायर करन वाला ही यदि मुकद्दमा उठा ले, तो स्थिति के शात होने के लक्षण बन सकते हैं। दीवानजी चाहते थे कि किसी तरह पासवानजी महाराज का क्रोध शमित करने का प्रयास करें और इसी आशय की प्राथना लेकर वे उनके पास जा ही पहुँचे।

अभी दरबार सजने म एक घडी शेष थी। दीवानजी महाराज के क्रोध से परिचित थे। सेनापति का अपराध छोटा नहीं था किंतु राजा का सेनापति होने के नाते दीवानजी उसको दडित करने के पक्ष मे नही थे। वे महाराज के आभार का बोझ उस पर लादकर उसे भविष्य के लिए लट्टू बना लेना चाहते थे अर्थात उनका विश्वास था कि क्षमा पाकर सदा के लिए उसकी आँखें झुकी रहेगी। यही सोचकर दीवानजी ने पासवानजी से निवेदन करने का निश्चय किया।

पासवानजी को सूचना भिजवाकर दीवानजी उनसे मिलने पहुँचे। स्पष्ट शब्दो मे सेनापति के लिए क्षमा-याचना का प्रस्ताव उनके सम्मुख रखा। महाराज के आगमन से पूव ही पासवानजी को स्थिति समझायी जा चुकी थी। उन्हें मालूम था कि सेनापति अपने कारनामे पर अत्यत लज्जित है और इस समय उस भूल को हवा देना उचित नही। अत दीवानजी के सकेत पर पासवानजी महाराज के पास सेनापति के लिए क्षमा का प्रस्ताव लेकर जा पहुँची।

महाराज ! क्रोध को थूक दीजिये। मन को शात कीजिये।' अनारन ने उन्हें क्रुद्ध मुद्रा म देखकर निवेदन किया।

अन्ना, सेनापति का यह आघात तुम पर नही, मेरे प्यार अर्थात मेरे प्राणो पर था। उसे इसका दड मिलना ही चाहिए।' गुरु गभीर आवाज मे महाराज ने कहा।

किंतु महाराज जो अपराध सपन्न ही नही हुआ, उसका दड कसा ?

'अपराध करने का विचार बनाना या अपराध कर डालने म कोई विशेष अतर नहीं। और वह भी नियमो के रक्षक द्वारा ! कस गले उतर यह बात ?

'स्वामी मेरा निवेदन यही तो है। अपराध सपन्न होता तो कानून म

उनकी स्वाथ पूर्ति हो सके तो उन्हे कोई आपत्ति नही। क्या कानून इस बात की छूट देता है ?

महाराज अपने ही बनाये जाल म उलझ गये। कर्त्तव्य च्युति सेनापति से अधिक युवराज म प्रमाणित होती थी।

महाराज ने युवराज द्वारा बहनोई की हत्या के बहुत बडे अपराध को क्षमा कर दिया था तभी आज उसके कदम पुन लडखडाये। यदि उस समय उसे दडित किया जाता, तो गलत दिशा अपनाने का साहस उसका नही हो सकता था। युवराज के प्रसग म क्षमा कँटीली नागफनी की तरह करुण हृदय म चुभने वाली बन गयी।

वतमान स्थिति म महाराज क्षमा के भाव को दूर रखना चाहते थे। वे सेनापति की विकृत सोच को राज्यद्रोह मानकर उसे दडित करना चाहते थे किन्तु अनारन का युवराज सबधी सहज तक उन्ह भीतर तक हिला गया। वे न केवल स्थिति के प्रति सावधान हो गये बल्कि दड देने के अपने निणय पर पुनर्विचार करने को भी तैयार हुए।

महाराज को अनिणय और दुविधा की स्थिति मे भाँपकर अनारन न खुलासा किया छोडिये महाराज जसे युवराज हमारा बच्चा है क्षम्य है, वैसे ही सेनापति राज्य की सेनाओ का नायक है राज्य का सेवक है, विकृत मानसिकता के कारण गलती करने जा रहा था चेतना पाने पर पश्चात्ताप करन लगा पर्याप्त है। उसे भी क्षमा कर दीजिये सदव आपके प्रति आभारी रहेगा।'

हल्की सी स्मितीय आभा महाराज के वृद्ध चेहरे पर फूलो की ताजा खिलखिलाती महक बिखेरन लगी। धीरे स सिर हिला दिया उन्होने और अनारन न महाराज क विशाल वक्ष पर अपना शीश टिका दिया। धीरे धीरे महाराज के क्रोड म बँधती चली गयी अनारन की प्यारी सी गुस्ताखी !

दरबार-ए खास म सभी उपस्थित थे। दीवानजी तथा अन्य मत्रीगण, सेना पति दोनो राजकुमार जोधपुर के दुगपाल नगर कोतवाल को भी बुलाया

प्रताप की महिमा है कि पिछले तीन महीना मे जोधपुर नगर मे कोई अपराध नही हुआ। लोग सुखपूवक अपने-अपने व्यवसायो मे व्यस्त हैं वहाँ छल कपट या चोरी चकारी की कोइ घटना नही हुई।' कोतवाल ने सहष बताया कि इस बीच उसका विभाग पूरी तरह से चौकन्ना रहा, महाराज के आशीर्वाद से सब कमचारी विश्वस्त और सक्रिय रहे।

व्यापार और वित्तमत्री ने गव से बताया, महाराज, आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत तीन महीनो मे श्रेष्ठियो ने निश्चित और सुरक्षित रहकर व्यापार मे धन लगाया और व्यापार तथा धन का कई गुना बढा लेने म सफल रहे। इस वष का राजस्व गत वष की अपेक्षा 40 प्रतिशत अधिक एकत्रित हुआ है। श्रेष्ठी रामभजनलाल ने हीरे पन्नो के व्यापार म कई करोड मुद्रा अजित की है और सर्वाधिक राजस्व चुकाया है। इस दष्टि से इस वष व्यापार बढाने का पुरस्कार उन्हें ही दिया जाय, मेरी यह प्राथना है।'

राज्य के व्यापार और राजस्व की स्थिति जानकर महाराज प्रसन्न हुए। अब राज्य की सीमाओ पर सुरक्षा की जानकारी देने का प्रश्न उठा। सेनापति की ओर महाराज ने दष्टि घुमायी। वह घबरा गया और हडबडा हट मे उठकर अभिवादन करके पुन अपने आसन पर बैठ गया। महाराज मुस्करा दिए। श्मश्रु मुस्कान लिए उन्होंने सेनापति को सबोधित किया, 'कहिए सेनापतिजी राज्य की सीमाओ की क्या स्थिति है ? आप तो चुपके से बैठ ही गये।'

सेनापति ने साहस सँजोकर उठते हुए अपने आसन का सहारा लिया, शायद भीतर से उनकी टाँग काँप रही थीं। कठिनाई से वाणी मुखरित हुई 'महाराज, देश की सीमाओ पर प्रत्यक सैनिक चौकन्ना सावधान और प्राण पन से कायरत है किसी पक्षी की भी मजाल नही कि सीमा पार से आकर पर मार सके। मैं स्वय प्राय निरीक्षणाथ सीमाओ पर जाता रहा हू और अपने अधीनस्थ सेनाधिकारियो के काय-पालन से सतुष्ट हू। नागौर तो अब मुगल राज्य के प्रबधाधीन है, तथापि वहाँ की सीमा पर हम अधिक सावधान रहे हैं ताकि पुरानी बाधा के घाव भर सकें।'

महाराज ठठाकर हँसे बोले, क्या सेनापतिजी ! क्या फिर कोई खिन्न

वहा जमा है या आप ही दूध के जले छाछ को फूंक रहे हैं ?

सेनापति अब तक अपने कदमो पर स्थिर हो गया था। कहने लगा महाराज का सब प्रताप है। खिज्र तो क्या उसकी रूह भी आपके नाम से कापती होगी। वहा कडा सुरक्षा प्रबध तो गाँव के लोगो म सुरक्षा और विश्वास की भावनाए जगाने के लिए किया गया है।

दुग के भीतर की क्या स्थिति है महाराज न जानना चाहा सुना है कुछ विकृत मस्तक के लोगो ने दुग और प्रासाद म भ्रातिया फैलाने का प्रयास किया था।'

सेनापति एकदम लडखडा गया। पहले की बातचीत म शायद उसने समझ लिया था कि महाराज को उसकी भूल का ज्ञान नही किंतु प्रश्न तो मुह बोलता था। महाराज सब जान गये हैं इसम किसी प्रकार के सदेह को स्थान न था। इस विचार मात्र से ही सेनापति के शरीर म कम्प और स्वेद का सचार होने लगा। तुतलाते हुए बोला महाराज क्षमा करेंगे दुग के भीतर तथा महलो मे भी सब सकुशल हैं। यो बातें तो कई उडी किंतु अनाधारित होने के कारण उन्हे हवा नही मिल सकी।

महाराज ने सेनापति के धैय की अधिक परीक्षा न लेना ही उचित समझा। उन्होने दष्टि घुमाकर युवराज की ओर कर ली। पूछा हमारे युवराज को क्या कहना है ? राज्य सभालने का कुछ अनुभव उन्हे मिला या नही।

युवराज अमरसिंह बडे आदर भाव से उठे और बोले सवप्रथम पिताश्री के चरणो मे मेरा प्रणाम स्वीकार हो। दीवानजी की उपस्थिति म और आपकी कृपा दष्टि के कारण मुझे राज्य काय म घटने की आवश्यकता नही पडती। मैं तो तलवार भाला और धनुप के अभ्यास म ही लीन रहता रहा। यो ही सेनापतिजी ने कुछ बात उठायी थी किंतु सारहीन जानकर भुला दी। न हमारे राज्य म मुगल राज्य के संस्कार हैं और न हम मुगल राजकुमार हैं। अत सब प्रकार म आपके ही नाम का प्रबल प्रताप है सब प्रजा और अधिकारीगण उसे स्वीकारते हैं। पश्चाताप और भूल-सुधार भूल की अपेक्षा अधिक महत्वपूण है। शेष आप सब जानते ही हैं यहाँ उसे दुहराना उचित नही होगा।

महाराज ने शीश हिला दिया। किंतु अमर की बात में छिपे कुछ गोपनीय संकेतों को लेकर सब उपस्थित दरबारियों में सरगोशियाँ शुरू होती गयीं। सेनापति तो बस काटो तो लहू नहीं तन में। मुँह लटक गया उसका। 'महाराज की अनुपस्थिति में महलों में जरूर कुछ हुआ है' ऐसी धारणा सबकी बन गयी थी। पूछें भी तो किससे सभी एक समान अनबूझ। जिन्हें कुछ मालूम है व मुँह पर वज्र कपाट लगाये बैठे हैं—क्या हुआ, बस यही सबकी उत्सुकता थी।

बात महाराज ने स्वयं सँभाली। 'हमें प्रसन्नता है कि हमारी अनुपस्थिति में राज्य ने प्रगति की और सभी अधिकारीगण निरंतर राज्य की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। सीमाओं पर सुरक्षा और शांति तथा राजस्व में वृद्धि के कारण हमारा गौरव बढ़ा है। युवराज ने युद्धकला में और अधिक प्रवीणता पाकर हमारा मस्तक ऊँचा कर लिया है। हम अपने उन सब साथियों को पुरस्कार देकर सम्मानित करेंगे, जिन्होंने राज्य की प्रगति में महत् सहयोग दिया है।' इतना कहते हुए महाराज ने ताली लगायी। करतल ध्वनि की आवाज चुकने भी न पायी थी कि भीतर की ओर से सेवक बड़े-बड़े चाँदी के थालों में कुछ वस्तुएँ लेकर उपस्थित हो गये।

सबसे आगे वाले थाल में जड़ाऊ मूठ की बढ़िया तलवार थी जिसकी म्यान पर लाल मखमल झिलमिलाती थी और दस्ते पर अनेक कीमती पत्थरों की चमक दमक दीख पड़ रही थी। महाराज ने सेनापति को आगे आने का संकेत किया, सेनापति लज्जा से गड़ गया, किंतु सभी दरबारियों के सम्मुख डरते अकड़ते हुए वह महाराज के सम्मुख पहुँचकर अभिवादन में झुक गया। महाराज ने बिना किसी कुंठा के उसे कंधों से छूकर ऊपर उठाया और प्रसन्नतापूर्वक प्रशंसात्मक ढंग से उसकी आँखों में झाँकते हुए वह जड़ाऊ तलवार उन्हें भेंट की। यह तलवार सेनापति की महती सेवाओं और राज्य की समग्र रक्षा के संदर्भ में उसे प्रदान की गयी थी।

वित्तमंत्री को महाराज ने बड़े-बड़े मोतियों की माला स्वयं अपने हाथ से पहनायी। 'दीवानजी को क्या पुरस्कार दें', महाराज ने कहा 'सारी व्यवस्था का आधार ही वे हैं। अतः उन्हें मैं अपने बड़े भाई के रूप में

सम्मानित करता हूँ —ऐसा कहते हुए महाराज ने दीवानजी को गले लगा लिया। गले लगने की प्रक्रिया म महाराज न दीवानजी क कान म फुसफुसाया, 'यही चाहते थे न आप। लीजिये अब सँभालिय अपनी उदारता को।' दोनो मुस्करा दिये।

सेनापति लज्जा की ऊष्मा स पिघलने के स्तर तक तडप गया था। मैंने क्या किया महाराज से बदले म क्या मिला? उसकी समझ म महाराज के औचित्य का रहस्य अजाना ही बना रहा। फिर भी वह महाराज क आभार तले इतना दब गया महसूस करन लगा कि जसे उसकी कमर टेढी हो रही हो। इसस पूव कि महाराज विशेष दरबार समाप्त करन का आदेश दें सेनापति के कोया से दो अश्रु ढुलककर उसके समश्रु गालो को थोडा भिगो गये।

कोई गुड देने से मरे तो उस विष क्यो दिया जाये। यही नीति महाराज न अपनायी थी। सेनापति सदा के लिए मुरीद हो गया। 'जान बची लाखो पाय लौट के बुद्धू घर को आये' वाली स्थिति म वह अपने को महाराज द्वारा पुनर्जीवित किया गया प्राणी समझन लगा—महाराज ने बडी उदारता और जन भलाई के मिस सारी दुखद स्थिति को ही नही बचा लिया बल्कि राष्ट्र-कल्याण के लिए सेनापति का दोगुना विश्वास अर्जित किया। राजनीति का यह खेल सफलता स सपन्न हुआ। दीवानजी और पासवानजी भी शायद यही चाहते थे।

सेनापति की मानसिकता अन्य पुरस्कार विजेताओ से भिन्न थी। उसके दिल का चोर बार-बार उसे झझोडता था और भीतर ही भीतर वह शम स गडा जा रहा था। युवराज न भरी सभा म एक प्रकार स उसकी कलई ही खोल दी थी। उस यह विश्वास भी पूरी तरह हो चुका था कि पासवानजी से महाराज को यह अनपेक्षित प्रसग पता चल चुका होगा। अत जो व्यक्ति दरबार म दडित होने की आशा से उपस्थित हुआ हो वह पुरस्कृत हो जाये अचभा ही तो था। भाग्य की विडबना कहो, या दीवानजी तथा पासवानजी की उदारता सनापति दड स साफ बच गया।

अब उसकी निजी चेतना उसे कोसने लगी थी, कचोटने लगी थी। वह उस घड़ी को कोसने लगा जब स्वार्थ से बँधकर उसने युवराज के निकट पासवानजी के विरुद्ध एक भी अपशब्द कहा था। वह युवराज को कोसने लगा, जिसने सबके सामने उसकी भद्द कर दी। सबसे अधिक वह अपनी बुद्धिहीनता और अस्वस्थ मानसिकता को कोसने लगा, जिसने वर्षों से खाय राजा के नमक को हराम कर डाला। घर पर भी रात भर वह सो नहीं पाया—उसका मन एक कुंठा, एक असंतोष से भर गया।

प्रातः की दैनिक दिनचर्या से निपटकर सवप्रथम कार्य सेनापति ने महाराज और पासवानजी को मिलने का किया। महाराज के प्रासाद के भेंट-कक्ष में ही पासवानजी भी चली आयी। उनके सामने वह आँख ऊँची नहीं कर पाया, समूचे धरती में गड़ता महसूस करते हुए अपनी पुरानी वफादारियों का हवाला देकर सेनापति ने दोनों से क्षमा माँगी। उसने स्पष्ट भाव से अपनी क्षणिक कमजोरी और दुर्भावना की नीति को स्वीकार किया। शीघ्र ही दीवानजी द्वारा सजग किये जाने एवं चेतना होने पर पश्चाताप में जलने की बात भी की। पासवानजी चुप रहीं, महाराज ने मुस्कराते हुए कहा, 'सेनापतिजी यही पश्चाताप आपके काम लगा, आपकी अक्षम्य भूल उसी आधार पर क्षमा कर दी गयी। राज्य को आपसे बड़ी बड़ी आशाएँ हैं। युवराज अभी बालक है, फिर भी उसके संस्कार उसे विद्रोह से रोक रहे। यही बहुत हुआ।

'क्षमा करें अन्नदाता! मैं नहीं जानता कि मुझमें वह बेवफाई का क्षण क्योंकर उभरा, फिर भी मैं आपको अपनी समस्त राजपूती मर्यादाओं सहित यह विश्वास दिलाता हूँ कि कर्तव्य की वेदी पर ही मेरा प्राणोत्सर्ग होगा। ईश्वर मुझे बल दे कि मैं आपके काम आ सकूँ।' ये सेनापति के शब्द थे।

इस प्रकार षड्यन्त्र शुरू में ही दब गया, किसी प्रकार की असुखद स्थिति का सामना हुए बगैर राज्य सुचारु गति से चलता रहा।

सर्वाधिक लाभ में रहीं पासवानजी, जिनके प्रति महाराज का प्रेम करुणा मिश्रित हो गया। उनका सम्मान आदर तो पहले ही था, अब तो महाराज उन पर हजार जान से फिदा रहने लगे।

राजस्थान म जल विहार सपना ही तो हो सकता है। कुए, बावडी बनवा कर पानी का प्रबध कर लेना और बात है, जोधपुर जस रेगिस्तान मे जल विहार के लिए तरण-ताल की कल्पना अनहोनी ही तो थी। किंतु पासवान जी की नादानी भी महाराज क लिए प्यार का आदेश था—ताल भी ऐसी जगह हो, जहाँ किसी का दखल न हो। महाराज और पासवान मुक्त भाव और खुल अग विहार कर सकें। कल्पना का रग दने का निश्चय महाराज न मन ही मन किया और राज्य के शिल्पियो को बुला भेजा। बाहर क राज्यो के प्रसिद्ध शिल्पियो का भी निमत्रित किया गया।

राजपूताना का तद्युगीन महान शिल्पी बरकत भी बुलाया गया था। महाराज की ओर से तरण ताल बनान और एकात का ध्यान रखन की वस्तुस्थिति बताकर सब शिल्पियो का एक एक सहस्र मुद्रा प्रदान की गयी। उन्हें आदेश दिया गया कि व राजपूताना की रगिस्तानी स्थितियो का ध्यान रखत हुए पासवानजी क सपना क एक जल विहार कद्र का प्रारूप तैयार करके दिखायें—इसके लिए एक मास का समय दिया गया।

शिल्पियो म होड लग गयी। तरण ताल राजपूताना की गर्मी म एक बारगी सूख जायेगा कहाँ स आयगा उसम जल ? एकात क लिए तो कोई चारो ओर ऊची चारदीवारी बना लगा धूप और गर्मी स बचाव क लिए जत महलो म तहखान होत है क्या एसा तरण-ताल सभव है ? या ऊपर किसी प्रकार बिना दीवारो के गोल स्तभो पर छत खडी रह सके तो बात बने। ताल शिल्पी रात दिन ऐस ताल का नमूना तयार करन म व्यस्त हो गय थ, जो राजपूताना की धूप गर्मी स बचा रह सके जहाँ प्रमी युगल को जल क्रीडा के लिए पूर्ण एकात मिल सक और जिसका जल नित्य शीतल बना रहे।

पासवानजी का सपना साकार करन की धुन म शिल्पी ताल क नमून बनाते मिटाते पुन बनात और निरतर उसम सशोधनात्मक परिवतन करन चलते। एक मास का समय समाप्त होने को आ रहा था, बरकत, जिसक नाम की शमा वास्तु की महफिल म सदव रोशन रहती थी अभी नमूना तो क्या विचारलोक म उसका रेखा चित्र भी तैयार नही कर पाया था। चारो ओर दीवार बना लेना ऊपर छत डालना जल का बाहर की

करने लगी रानीजी पर पानी के छोटे उडाकर व एसे खिलखिलाती जस अनक घुघरू एक साथ बज उठे हो। तभी बरक्त ने एक ओर स आते शाही पाशाक पहने हुए एक युवक को देखा। सभी युवतिया लजा गयी और निकल निकलकर गुसलखाना म छिप गयी और युवक महाराजा अपनी रानी परी क साथ जल मे ऐस विहार करन लगा जस मराला का कोई युगल किलोल कर रहा हो।

बरक्त अपन को छिपाता राजा रानी की उत्तेजनापूर्ण जलक्रीडा देखता हुआ पीछे हटते हटत अकस्मात कपडे बदल रही चदन काष्ठ की एक चेतन मूर्ति स टकरा गया। दोना ही एक साथ चीख उठ और महाराजा क महिला प्रहरिया ने भागकर बरक्त को पकड लिया। राजा न क्रोध म बरक्त का शीश धड स अलग कर देने का आदेश द दिया।

सैनिक बरक्त को लेकर वधस्थल पर पहुँच। जल्लाद न उसकी गदन को लकडी की टिखटी पर बाधकर ज्योही खड्ग का वार किया, वह बहुत जार स चीख पडा। आख तो खुल गयी उसकी किन्तु अभी भी उसका समूचा शरीर भय स प्रकपित था। पसीन म भीगा हुआ बरक्त अपन वध की बात को भूलकर तरण ताल क स्वरूप क प्रत्यक अंग पर विचार करन लगा। सचमुच जसे वह परीलोक म पहुँच गया था और परिया क राजा रानी की जलक्रीडा करत देखकर उस आशा होन लगी थी कि वह वास्तव म महाराज और पासवानजी क सपना का आकार द सकगा। अत वह उठा, झारी म स थोडा जल लकर ओठ गील किय और उसी समय सपन म देखे तरण-ताल का नमूना तैयार करन म जुट गया। शिल्पिया द्वारा तालाब के नमून पश होन मे एक ही दिन तो शेष था।

बरक्त न सोचा कि राजपूताना म एसा तरण-ताल रामानी ना होगा हा एकान्त का द्योतक होन और साफ-सुथर जल की सभावना इसम बनती है। धूप पानी का नही छूती, इसलिए जल क सूखन या घटन का कुछ भय नहा। कोई वहाँ क रोमानी वातावरण म जसा चाह जलक्रीडा म सलग्न हो। राजा क निजी प्रासाद का भूगभ, पछी भी पर नही मार सकत ५ वहाँ।

सब समस्याओ का एक साथ हल ! नमूना तयार करत हुए यही सोच

सोचकर उसका चित्त बल्लिया उछल रहा था और प्रतीक्षा थी उस दिन राजदरबार म अपना सपना पश करने तथा उसका विस्ता पासवानजी का सपना बनाने की।

दरबार म सभी शिल्पी अपने-अपने तरण-ताल के नमूनो, प्रस्ताव सुझावा को लकर उपस्थित हुए। किसी के पास तरण-ताल था, कि पास गोपनीयता और एकात कही स्नानागार का प्रावधान नही थ कही ऊपर छत न होन के कारण राजस्थान के तापमान की दृष्टि से शीतल रह सकने की असभावना। शिल्पियो ने एक एक करके अपन महाराज और पासवानजी के सम्मुख प्रस्तुत किय। इस विशेष दरब शिल्पिया क अतिरिक्त केवल महाराज और पासवानजी ही थे। दीव विशेष सहायक के तौर पर उपस्थित थे।

सवप्रथम शिल्पी का ताल धरती की सतह पर एक साधारण त का नमूना था, जिसके गिद ऊची चहारदीवारी का प्रावधान था और द्वार पर सरक्षक के खडे रहने का सामान्य सा स्थान रखा गया था। विहार और वह भी सूय रश्मियो क नीचे, बात गल नही उतरी। मह न सिर हिला दिया। पासवानजी चुप रही।

दूसरा नमूना ताल क ऊपर छत वाला था किंतु उसम वातावर शीतलता और पानी का वाष्पीकरण से रोकने का कोई प्रबध न पासवानजी को पसद नही आया।

तीसरे शिल्पी राजपूताना भर म प्रख्यात वास्तुकार थे। उनका प्र था कि तरण-ताल को धरती की किसी निचली सतह पर बनाया जाय, सुरक्षा और एकात दोनो हाग। स्नानागार अथवा पोशाक बदलन सुविधा स्थल उस प्रस्ताव मे भी नही था। फिर भी महाराज को ज उन्हाने पुर्नविचार के लिए उसे चुन लिया।

बरकत तो पिछल दो दिन से अपने सपने मे ही खोया था। सपन मिट्टी गारे क सहारे तरण-ताल के नमूने के रूप मे पेश करने क लिए महल के भीतर का समूचा निर्माण इगित करना था—तभी ताल

वास्तविक स्थिति समझ आ सकती थी। अत शीघ्रता म ही सही फिर भी जितना वह बनाकर ले आया था, वह सचमुच एक साकार सपना ही प्रतीत होता था। ताल का प्रतिरूप महाराज के सामने वाली चौकी पर रखवाकर स्वय बरकत ने सुझावा और प्रस्तावा के माध्यम से अपने सपने का विस्तार करना आरभ किया। कला का जादू सिर चढकर भले ही न बोले दिल म समाकर गुदगुदी तो करता ही है। अत कलाकार शिल्पी ने जब तरण ताल का प्रस्ताव भूगम मे बनाने तथा उसमे अनक सुविधाओ और समस्या समाधाना पर प्रकाश डाला, तो महाराज तो शीश हिलाते ही रह गय। पासवानजी अवाक रह गयी। खो गयी उन्ही सपना म जो उन्होने जल क्रीडा की दिशा मे देखे और महसूस थ। जल के शीतल स्पश और महाराज के शरीर स लिपटकर तैरने के रोमाच की दिव्य अनुभूति म खो गयी पासवानजी। महाराज अभी पूव प्रतिरूप के साथ उसकी तुलना करके गुण दोष विचार ही कर रहे थे कि पासवानजी ने विनय कर कहा मुझे तो यही नमूना पसद है महाराज! मुझे ऐसा लग रहा है जसे इसम शिल्पी न मेरे ही सपने को आकार दिया हो। ऐसा ही ताल बनवाइये स्वामी।

महाराज चौक पडे। वे भी इसी निणय पर पहुँच रहे थे। उन्ह पासवानजी के शब्दो पर, जो अभी भी कानो के द्वार पर छोटी घटिकाओ की तरह बज रहे थे, अचभा हुआ और साथ ही उनकी सौंदय-दष्टि की अनुशसा महाराज के नत्रो से झलकने लगी। बोले प्रिय तुम्हारी पसद सर्वोत्तम है। तरण ताल ऐसा ही बनेगा।' पासवान पुलकित हो उठी।

बरकत को योजना का मुख्य शिल्पी नियुक्त कर दिया। दुग के अदर महल के बीचो बीच कक्षा म कुछ परिवतन करके भूगभ म तरण-ताल तथा चारो ओर गुसलखान और पोशाक बदलने के लिए दीवारो की ओट आदि बनाने उस स्थान तक पहुचने की सीढियाँ बीच की दीवार मे प्रकाश क प्रवश के लिए एक रहस्यमयी खिडकी और कई मजिल ऊपर महल की छत से भी ऊची शान नक्काशीदार छत तयार करने का काय बरकत ने अपने हाथ लिया। वास्तु-काम शुरू हो गया।

सगमरमर की घडाई और यथास्थान उस बिठाने लगाने का काम वह स्वय अपने हाथो करता था। उसके मन-मस्तिष्क पर सपने म देखा तरण

ताल ऐसे छा गया था कि वह एक मनोरोगी की तरह निर्माण के
बनता जा रहा था। जो वस्तु उसकी बंद आखों ने देखी थी वह खुले
से देखकर रोमांचित होना चाहता था। इसी दिशा में एक सच्चे क
की नाई अपने निर्माण को सप्राण बनाने में वह जुट गया था।

मध्या के समय महाराज और अनारन प्रतिदिन चौखला महल म वि
जाते थे। चौखला महल दुग के भीतर भ्रमण के लिए बनाया ग
बागीचा था। दुग के ऊपरी भाग म महाराज के निवास स्थान
चौखला महल के लिए प्राचीर के साथ साथ सीढियाँ उतरती थी ज
चौखला बागीची म आकर खुलती थी। या तो चौखला का बहुत बड
था, किंतु उस पर प्राय सतरियो का पहरा रहता था और चारा
परकोटे के भीतर राजा और पासवानजी मजे म स्वतंत्र घूम सक
द्वार प्रवेश से लेकर ऊपर से उतरने वाली सीढिया तक फला यह
तीन भागो म बटा था। यदि द्वार से प्रवेश किया जाता तो सर्वप्रथ
उछालने वाला फव्वारा सामने पडता था। इस फव्वारे का निर्मा
सुंदर था ही इसकी परिधि मे एकत्रित जल म मचलती छोटी
मछलिया इसका विशेष आकर्षण थी। यद्यपि ऊपरकोट से उतरकर म
सीधे उद्यान मे पहुचते थे, तथापि वे प्राय घूमते फिरते पासवानजी क
फव्वारे की परिधि पर आकर बठते और विश्राम करते थे। पास
मछलिया को चारा देती और उनके साथ नित्य अठखेलिया करने के
ही यहाँ तक पहुँचती। फव्वारे के आगे के भाग म जल की एक ब
बनायी गयी थी। यह सुंदर बावडी राजपूताने के सूखा ग्रस्त क्षेत्र के
विशेष उपलब्धि थी। महाराज तथा अनारन बाई प्राय यहाँ जल
करते थे, किंतु क्योकि बावडी मे जल क्रीडा नही की जा सकती थी
न ही स्थिति म गोपन भाव संभव था, इसीलिए पासवानजी ने मह
का तरण-ताल बनवाने का प्रस्ताव किया था।

उद्यान का अंतिम और सबसे बडा भाग बागीचा था। यहीं मह
सीधी सीढ़ी उतरती थी, जो कि दुग की दीवार के साथ साथ बनायी

थी। बागीचे म हरी घास, फूला क पौधा छायादार पडो और लता गुल्म आन्कि वहार थी। जोधपुर राज्य की सीमाओं म मडोवर उद्यान के अतिरिक्त यदि कही जल और हरियाली क दशन हात तो इसी उद्यान म सभव थे। मडोवर रेगिस्तान का नखलिस्तान था तो चौखला दुग क भीतर का नखलिस्तान।

महाराज और पासवानजी नित्य सध्या वला म अधिकारियो की वठक स पूव उक्त उद्यान म विहार करत थ। व प्रवश द्वार स उद्यान म न जाकर प्राय प्राचीर के साथ साथ उतरन वाली सीढिया से आते और वही स लौट जाते थ। इसका लाभ उन्ह ना केवल इतना ही था, कि वे एकात भाव से विचरण कर सकत थ किंतु महला स चौखला प्रवश-द्वार तक के सभी सरक्षकगण अधिकारी तथा द्वारपाल महाराज क आगमन क तनाव स मुक्त रहते थ। यही एकान म बैठकर पासवानजी महाराज को अपन नयन बाणा से घायल करती मुस्कराहटा क फला स बधती प्यार स गलबहियाँ डालकर झूल झूल जाती और महाराज के हृदय सिंहासनासीन होकर स्वच्छिन आचरण करती। महाराज पागल प्रेमी की नाइ अनारन के सकेत पर कुछ भी करने को तैयार रहत—मुगल सम्राट जहागीर जैस नूर जहाँ को पाकर साम्राज्य को भुला देता था वस ही महाराज चौखला के एकान म पासवानजी क अतिरिक्त सब कुछ भुला दत। आज भी एक एसी ही सध्या थी बावडी क गोल घेरे म जब विहार करत हुए पासवानजी ने टोक दिया— महाराज न जाने आपन क्या सोचकर यह सब सम्मान और पद मुझ दे दिया है आखिर तो मुझे महला से निकलना ही पडने वाला है ऐसा भासता है।

यह क्या अपशकुन बोल्ती हो। मरी रानी को महलो से कौन निकाल सकता है? ऐसा सोचने का भी साहस नही कर सकता कोई।' महाराज न गव से कहा।

यह मैं जानती हू तभी ता नित्य प्राथना करती हूँ कि प्रभु मुझे आपस पहले अपने पास बुला ले। आपक बाद यहाँ का जीना नरकाधिक दु खद होगा। पासवानजी न टटोला।

'यह क्या सोचने लगी हो, 'महाराज ने बाहरी स्पष्ट भाव दिखात हुए

कहा, 'ईश्वर के दरबार मे पहले कौन जायेगा, यह तो ईश्वर ही जाने। हाँ, मेरे बाद यदि रहने का प्रश्न हुआ तो युवराज तुम्हारी सेवा करेगा।'

युवराज और मेरी सेवा !' पासवानजी ने मुस्कान का फंदा डाला, आप अच्छा मजाक भी कर लेते हैं। अमर को तो मैं एक आँख नहीं सुहाती, भला वह मेरी सेवा करेगा? किसी काल कोठरी मे सडती स्मृतियां म आपको पुकारती रह सकू तो भी बहुत होगा। फासी का फन्दा भी मिल सकता है'—कहते कहते पासवानजी ने गर्दन पर हाथ फेरा और उनका स्वर भारी हो आया।

महाराज काप गये। प्रेयसी की आँखो म आँसू देखकर स्थिर नही रह सके। पासवानजी के चद्र बदन को दोनो हाथो से थामते हुए उन्होंने उसकी चुम्बकीय आँखें चूम ली और बडे आद्र स्वर मे बोले, 'क्या तुम यह कहना चाहती हो कि अमर को युवराज बनाना मेरी भूल प्रमाणित हो सकती है?'

ऐसा करने का मेरा क्या अधिकार है? मैं तो आपके चरणो म ही प्राण त्याग सकू ऐसी मेरी मनोकामना है।' यह पासवानजी के शब्द थे। जो व्यक्ति अकारण अपनी बहिन का सुहाग ले सकता है सेनापति की बातो मे आकर षड्यंत्र स्वीकार सकता है, उसके लिए मेरे जैसी स्त्री का क्या मोल?'

नही अन्ना ! तुम्ह भ्रम है अमर के सबध मे। वह मेरे विरुद्ध कभी विद्रोह नही कर सकता। उसके सस्कार मुगल शहजादो के नही, हिंदू राजकुमारो के हैं।'

यह बिल्कुल सही है। वह आपके विरुद्ध विद्रोह नही करेगा, उसका विरोध मुझसे है। शायद वह सोचता है कि मैंने उसके पिता का प्यार बाँट लिया हालाँकि ईश्वर साक्षी है कि मैंने दोनो राजकुमारो को सदैव अपने दो नयनो के समान माना'—अनारन न महाराज के मम को छूना चाहा।

चलो छोडो महाराज न अनारन का हाथ अपने हाथो मे सहलाते हुए कहा, हम उसके गुणों का विश्लेषण कर रहे हैं उसके कर्मों का मूल्याकन करने के बाद ही उसे सिंहासन देने की बात सोचेंगे। मैं जानता हूँ, वह वीर है सच्चा राजपूत है किंतु स्वमान भी अपमान नही सह सकता। राज्य-सचालन के लिए समझौता अनिवाय है अमर समझौता कही नहीं

कर सकता। यही उसकी कमजोरी या सबलता है।'

आप तो स्वय ही सब जानते हैं अत मुझे कुछ कहने की विशेष अपेक्षा नहीं —कहते हुए अनारन बाई बावडी की मुडेर स उठ गयी। महाराज ने भी साथ दिया। दोनो टहलते हुए उद्यान की ओर बढे। उद्यान मे से सध्या आरती के लिए पासवानजी ने कुछ फूल चुनकर आचल मे रखे और सीढियो की ओर चली। महाराज और वे धीरे धीरे सीढिया चढते हुए दुर्ग के ऊपरी भाग म अपने निवास कक्षो म आ पहुचे।

सध्या क समय महाराज के शयन कक्ष के साथ वाले देव कक्ष मे पूजा और आरती का प्रबध था। यह कक्ष या तो छोटा था तथापि इसमे कुछ विशेष सुविधाएँ जुटाई गयी थी। इसकी छत पर विभिन्न रगो के काँच जडे थे दीवारो पर भी वैसे ही काँच थे जिनमे एक आकृति सहस्रो आकृतियाँ म दीख पडती थी। शीश महल की नाईं पूजा गह एक कदील जलन मात्र मे चमचमा उठता था। पासवानजी तथा महाराज सध्या की अधिकारी समिति की बठक के उपरात कुछ घडिया पूजा कक्ष मे जरूर विताते थे।

उद्यान से महलो मे आने के उपरात महाराज अधिकारियो के दैनिक काय कलाप सुनन के लिए समिति म जा बठे और अनारन अपन कक्ष मे आकर बावडी पर हुई बातचीत का विश्लेषण करन लगी।

अनारन का मतव्य स्पष्ट था। वह अमर के विचित्र हठी निदयी और असतुलित रवय से डरने लगी थी। यदि अमर राज्य सिंहासन पर अधिकार करता है तो निश्चय ही अनारन को राज्य म निष्कासित होना पडेगा क्योकि अमर उसे पसद नही करता। इसके विपरीत यदि सिंहासन पर जसवत आता है तो उसका भविष्य सुरक्षित रहता है क्योकि वह उसे माता समान आदर देता है। वह जानती थी कि राजाओ क बाद बाइयो बडारणो और पडदायतो की कितनी करुण दशा होती थी। यह सही है कि उसका पद इन तीनो कोटियो से ऊपर था। वह पासवान थी किंतु उस सरीखी स्त्री राजा की सेवा मे जितना ऊँचा पद पाती थी उतनी ही दूसरो की ईर्ष्या और घणा की पात्र बनती थी। जोधपुर के महलो म भी उसके

भाग्य से ईर्ष्या करने वाली स्त्रियों की कमी न थी। महाराज के साथ सती होना या उस सामाजिक अधिकार नहीं, अतः यदि महाराज के बाद उसे कुछ वर्ष और जीना पड़ा तो निश्चय ही उसकी दुर्दशा असह्य हो सकती है। बस यही चिंता उसे खाये जा रही थी। धाय माँ पेड़ पर झूलता सूखा पत्ता थी कब तक खड़खड़ की संभावना होगी। कभी भी दूर जा गिरेगा। ऐसे में कौन होगा उसका संरक्षक।

अनारन का मन अकस्मात चंचल हो उठा। महाराज के सम्मुख अपना सब-कुछ अर्पित कर देने पर भी क्या पाया उसने।' इसी उधेड़ बुन में वह मानसिक शांति की खोज में देव शरण में चली आयी। जोधपुर महाराज के इस निजी पूजा कक्ष में सात चौकियों पर सात विभिन्न देव मूर्तियाँ स्थापित थी। यद्यपि महाराज की इष्ट भगवती दुर्गा ही थी तथापि अन्य छः चौकियों पर एक ओर श्रीकृष्ण शिव और ब्रह्मा विराजते थे तो दूसरी ओर श्रीगणेश राम और राम सेवक हनुमान की मूर्तियाँ रखी गयी थी। बीच वाली दीवार के पास वाली बड़ी चौकी पर भवानी, सिंह वाहिनी महिषासुर मर्दिनी रूप दुर्गा माँ विराजती थी। अनारन ने उद्यान से लाए फूलों के गजरे बना लिए थे दो सुंदर मालाएँ भी बनायी थी। एक फूल माला तो वह अपने शयन कक्ष में महाराज के लिए छोड़ आयी थी और दूसरी बड़ी माला उसने देवी भगवती के शृंगार के लिए तैयार की थी। अनारन की चिंतायुत सोच ने उसके नेत्र भिगो दिये थे, हृदय की धड़कन बढ़ा दी थी शरीर प्रकंपित हो आया था उसका। अतः पूजा कक्ष में घुसते ही उसने थाली में से बड़ी फूल माला लेकर माँ दुर्गा की सिंहारूढ़ मूर्ति के गले में डाल दी थाली उसके चरणों में रखी और नत शिर मूर्ति के चरणों में गिरकर फूट पड़ी।

जब तक महाराज अधिकारियों की बैठक की समाप्ति पर पूजा कक्ष में पहुँचे अनारन खूब रो चुकी थी। उसके गालों पर अश्रु धाराओं के चिह्न नेत्रों के कोयों की लाली और वाणी की अवरुद्धता इस बात का प्रमाण थी कि वह काफी देर से रो रही थी। महाराज ने भगवती के चरणों में प्रणाम कर अनारन को सहारा देकर ऊपर उठाया। उसने शीघ्रता से आँसू पोंछ डाले और व्यवस्थित होते हुए फलों की डलिया लेकर अन्य छः चौकियों

पर स्थापित देव मूर्तियो पर गजरे और फूलो की पखुडियाँ चढाने लगी। महाराज ने भी सदा की तरह साथ दिया। पुष्पार्पण के उपरात महाराज पालथी मारकर भगवती मूर्ति के सम्मुख विराज गये उनके कुछ पीछे बायें पार्श्व म से बाहर की ओर खिचती हुई पासवानजी हाथ जोडकर अधमुदे नैना स विचार मग्न हो गयी। महाराज के होठा स धीरे धीरे प्रस्फुटित होने लगा—

कल्याणदाय कल्याण्य फलदायै च कमणाम।
प्रत्यक्षायै स्वभक्ताना पष्ठय देव्यै नमो नम।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषा सवकमसु।
देवरक्षण कारिण्य पष्ठी देव्यै नमो नम॥

स्तोत्रोच्चारण करत हुए महाराज उठे पासवानजी को वामाग पर लेकर एक-साथ दोना ने देवी को प्रणाम किया और महाराज के भुजदड का सहारा लिए लिए ही अनारा महाराज के शयन-कक्ष मे चली आयी।

अब तक महाराज अनारा क अनवरत रुदन का अनुमान कर चुके थे। उन्हे सहानुभूति हो रही थी किंतु वे समझ नही पा रहे थे कि अनारन को धय क्योकर बधाया जाय। दो टूक व यह भी नही कह पा रहे थे कि अमरसिंह युवराज नही होगा— हाँ उनके मन म यह उद्वलन जरूर था कि अमरसिंह क्या सफल नरश हो पायगा। क्या उमकी हठपूर्ण, असतुलित नीति राज्य-सचालन म सहकारी हो सकती है? शायद नही शायद सभल जाय हाँ नहीं नही शायद वह कभी समझौता नही कर सकता।

अनू मरी प्राण यह क्या रोनी सूरत बना रखी है? चिंता छोडो सब ठीक होगा। तुम जसा चाहोगी वसा ही होगा प्रिय अब तो मुस्करा दो ना। अरे मुस्करा भी दो ऐसी सुदर चादनी रात म एकात पाकर भी क्या कभी कोई राता है?' कहत-कहत महाराज ने पासवानजी को बहलाया गुदगुदाया फुसलाया और कुछ देर बाद प्रकृतस्थ करने म सफल हो सके।

क्या सोचकर उदास हो जाती हो तुम? जरा हम भी तो जानें,' महाराज न जानना चाहा।

नहा, कुछ नहा मेरे प्राणाधार। मुझ यो ही रुलाई आ गयी थी। आप

बादशाह के सकेत पर अपना राजपूती धम निभाने चल दते, अकेले जी भी तो नहीं लगता मरा। बस उन्मास हो जाती हू। अनारन ने टालने वाली भाषा म कहा।

केवल इतनी ही बात नहीं ऊहूँ मैं नहीं मानता। अपनी पीडा स्पष्ट कहो। मैं तुम्ह वचन दता हूँ कि तुम्हारे खेद का शमन होगा।' य महाराज थे।

नहीं मेरे दवता, आपकी उपस्थिति म मुझे कैसी पीडा ? हा, कभी भविष्य स चिंतित हो उठती हूँ राज्य के उत्तराधिकारी स डर लगन लगता है। कहत हुए पासवानजी का स्वर भारी हो गया और नेत्र द्रवित हो उठे। और वे कटे पड की नाइ महाराज की भुजाओ म गिर पडी। महाराज न उन्हें धैय बँधाने के लिए अपने क्रोड म बाधते हुए उनका मुख चूम लिया।

अनारन को विश्वास होन लगा था कि अब तक महाराज स्थिति का समझ चुके हैं और वे अमर की अयोग्यता को भी पहचानत हैं। जसवत छोटा भाई अवश्य है किंतु उसका सौहाद प्रजा के प्रति सहानुभूति, स्नेह और कलाकार की मस्ती शायद साम्राज्य के लिए अधिक श्रेयस्कर हो ? अमर के प्रति महाराज का काई हठ नहीं केवल परपरा से बँधे व उसे युवराज मानते हैं। ऐसे विश्वास के ही कारण वह धीरे धीरे महाराज को जसवत के प्रति जागरूक करने का प्रयास कर रही थी। वह जानती थी कि एक बार महाराज यदि जसवत के गुणा और योग्यताओ को जान लेंगे तो वे अमर के अध शौय स उसकी श्रेष्ठता का भी सही मूल्याकन कर सकेंगे। अत विनम्र भाव स बोली 'महाराज अमर शक्तिशाली है किंतु क्या जसवत की निजता म उस तुलना म कुछ नहीं ?'

कौन कहता है ? जसवत मुझे अधिक प्रिय है। वह हर प्रकार से अमर की अपेक्षा उत्तम सिद्ध हो सकता है—यह महाराज की प्रतिक्रिया थी।

तो फिर यह अमर को ही युवराज बनाने की बात क्या प्रजा के लिए हितकर होगी ? अन्ना ने हल्का सा तीर चलाया।

महाराज अन्ना की पीडा समझते थे। यदि अनारन को माँ बनने का अवसर मिला होता तो शायद वह जसवत का भी पक्ष न लेती, किंतु अब जसवत के मुख से 'अन्ना बा' या 'बा' शब्द सुनकर ही वह जसवत के प्रति

ममता से इतना भर जाती है कि बिना किसी मथरा के ही कक्यी की भूमिका निभाने को उतारू हो रही है। किंतु हाय रे प्रेम ! प्रेमिक अधा होता है प्रेम-पात्र के लिए। विवेक नहीं भावकता चलाती है उसे उसका आचरण व्यवहार तक प्रेम-पात्र द्वारा अनुशासित होने लगता है। महाराज भी अन्ना के विरोध म कोई निणय लेने मे असमथ है—गान ग्रान म वचन द डाला है— वही होगा जो तुम चाहोगी।'

किंतु अनारन भी साहस नहीं बटोर पा रही कि बेबाकी से जसवत को युवराज घोषित करने की माँग कर सके। भीतर ही-भीतर प्रेम की भीति उसे भी झकझोड रही है। प्रीति और भीति इतने आत्मसात है कि एक दूसरे को अलग नहीं किया जा सकता। प्रीति बनी रहे इसीलिए भीति पनपती है और भीति प्रीति को आस्थावान बनाती है। कही प्रेम पात्र रुष्ट न हो जाय ! यही भय प्रेमिक को नित्य नवीन प्रेम से आप्लावित करता है।

अत असमजस की बाधा मे पडी अनारन उस समय मौन हो आयी। अतमन म एक उलझन छिपाये ऊपर से उल्लास प्रदर्शित करत हुए महाराज के सीने म अपने को छिपा लेने के लिए मचल उठी वह।

बरकत बाहरी दुनिया को भूलकर अपने काम म मग्न था। मिस्त्री मजदूर और चना मिटटी रसी मे लीन उसे यह भी भान नहीं था कि सूय कब उगता है ! या भी समूचा काय महला के भूगभ म चल रहा था इसलिए सूय क प्रकाश से परिचित हो पाने के अवसर उसे कम ही मिलते थे। लेकिन बरकत को क्या चिन्ता ! काले तेल मे भिगोई रुई की मशालो के आलोक मे भगर्भ म तरण-ताल का स्वप्न साकार हो रहा था।

महाराज और पासवानजी साथ साथ ताल क निरीक्षण को जाते थे। जो जसी कमी कभी उन्हें खटकती, वही उसका समाधान ढूढा जाता। एक दिन पासवानजी न पोशाक बदलने तथा जल विहार के साथ-साथ बीच मे कुछ विश्राम करने के लिए स्थान ताल के साथ ही उपलब्ध करवाने सकेत किया। बरकत ने झट अपने मान चित्र म सभावना रेखा महाराज और पासवानजी क सम्मुख प्रस्तुत कर दी। महाराज

गये। कार्य इतने कलात्मक ढग से चल रहा था कि वहाँ पहुचकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई सचमुच स्वप्नलोक मे विचरण करने लगा हो। पासवानजी तो सचमुच सुध बुध भूल जाती थी। चौखला उद्यान उनके लिए अब द्वितीयक महत्व का स्थान हो गया था। पूणत तैयार हो जाने पर पासवानजी जल विहार को उद्यान भ्रमण से अधिक ग्रहण करेंगी, यह तो लगभग निश्चित ही था। जल विहार मे अग-स्पश, जल के भीतर प्रेमी प्रेमिका की लपक झपक और पकड पकडाई का खेल इतना उद्दीपक होता है कि उसकी तुलना म उद्यान मे अनेक पहरुओ की उपस्थिति म भ्रमण मात्र मे नीरसता महसूस होने लगती है।

महाराज और पासवानजी ज्यो ही भूगभ से ऊपर अपने प्रासाद म लौटे, *तो जसवत को अपनी प्रतीक्षा करते पाया।*

जसवत ने आसन से उठकर पिता और अन्ना बा को प्रणाम किया। उसके हाथ मे देसी बादामी कागजो की एक गटठी देखकर अनारन ने पूछा, 'कोई रचना पूरी हो गयी है क्या ?'

हाँ अन्ना बा ! वह नायक-नायिका भेद की जो रचना सस्कृत कवि भानुदत्त को आधार बनाकर लिखना आरभ की थी, वह आज पूण हुई। पिताजी का आशीर्वाद लेने आया हूँ।

वाह वाह यह तो बडी प्रसन्नता की बात है। हमारा बेटा इतनी अच्छी रचना करने लगा है यह तो उस दिन आगरा से लौटने पर ही पता चला था, अब पुस्तक भी रच डाली जानकर मुझे खुशी हो रही है।' महाराज ने खुशी व्यक्त करते हुए जसवत के शीश पर हाथ फेरा और उसे अपनी बगल म भर लिया।

अन्ना का चेहरा पुस्तक पूरी हो जाने के समाचार से ही खिल उठा था। महाराज द्वारा जसवत को बगल मे लेने पर तो वह चिहुँक पडी, 'चलो पिता को पुत्र की प्रतिभा का भान तो हुआ। जीवन मे केवल तलवार भाँजना ही तो एकमात्र काय नही, लिखने पढने का भी तो कुछ मोल होता है!'

महाराज इस फब्ती का कुछ उत्तर दे पाते इससे पूव ही अनारन जसवत को सबोधित करती हुई बोली, 'पुस्तक का नाम क्या रखा है, मेरे

बेटे न !'

'भाषा भूषण'

'बहुत सुदर नाम रखा है। सचमुच तुम्हारी रचना भाषा को अलकृत करेगी, यह मेरी भविष्य-वाणी है।'

सब आपका आशीर्वाद है।' कहकर जसवत पिता का मुख निहारने लगा।

महाराज योद्धा थे, शूरवीर! कविता की कोमलता और भावुकता से उनका अधिक परिचय नही था। आजीवन युद्ध ही लडे थे। कविता तो उनके लिए मनोरजन का साधन थी, प्रेरणा या मुग्धता का नही। बोले 'कविता करते हो, अच्छी बात है, किंतु राज काज भी देखा करो—भविष्य तुम्हारा भी तो है।'

जसवत के लिए यह एक अति सामान्य वाक्य था जो एक नरेश पिता ने राजकुमार से कहा था, किंतु अनारन के लिए इस वाक्य के पीछे अनेक कल्पनाएँ और सभावनाएँ छिपी थी। वह सोचने लगी थी कि शायद महाराज पर उसकी बातो का प्रभाव हुआ है और वे जसवत मे युवराज देखने लगे हैं। इसी सभावना से अभिभूत होकर उसने प्रसन्न मुद्रा मे जसवत को अपने निकट लेकर उसका सिर चूम लिया।

घनी मूछो के बीच महाराज मुस्करा दिये। वे अनारन की प्रत्येक मुद्रा को समझते थे।

तरण-ताल के निर्माण मे एक समस्या आ गयी। महल के जिस पार्श्व मे ताल बनाया जा रहा था वहाँ से ऊपर की मजिलो के कक्षो को हटाना था। धरती से बीस हाथ नीचे बनने वाला ताल महल की सबसे ऊपर वाली मजिल पर गोल गुबदनुमा छत से ढका जाने वाला था, नीचे की मजिलें सीधी चौगिर्दी दीवारो से कटने वाली थी—उन दीवारो के साथ जो कक्ष थे उनकी कोई खिडकी दीवार मे नही खुल सकती थी समस्या थी आवश्यकतानुसार प्रकाश लाने की! मशालो से काम चल सकता था, दिन मे ताल के निर्माण कार्य के लिए मशालो से ही रोशनी की जा रही थी, लेकिन

सदा के लिए यही प्रक्रिया स्वस्थ नही थी। सीधे सूय का प्रकाश और खुली वायु का प्रवेश अनिवाय था।

बरक्त कई दिनो से इसी समस्या से जूझ रहा था। आकाश-वातायन या ऊपर झरोखे रखने की बात अनेक बार उसके मन म आयी थी, लेकिन उस दिशा म ऊपर से कोई झाँक भी सकता था। इस प्रकार महाराज और पासवानजी के मुक्त जल विहार म बाधा होती थी।

निरतर विचार और प्रयोग करते हुए बरक्त मायूस हो रहा था। राज्य के सभी तकनीकी काम करने वाले अपने मस्तिष्क पर जोर दे-देकर थक चुके थ। तभी एक दिन महाराज के दरबार म एक परदेसी उपस्थित हुआ। पता चलने पर कि वास्तु कलाकार है महाराज ने उसे बरक्त क पास भेज दिया। परदेसी के सम्मुख भी समस्या रखी गयी। गहन खोज के उपरात बरक्त और परदेसी को आशा की किरणें दीख पडने लगी—समाधान क उस पक्ष तक अभी किसी का ध्यान ही नहीं गया था।

सबसे ऊपर की मजिल से नीचे दो मजिल छोडकर ताल का एक पाश्व ऐसा भी था जो सीधे पवत शिखर पर बने भवानी के मदिर के सामने पडता था। महल की उस दिशा मे गहरी पवतीय घाटी मात्र थी। परदेसी वास्तुकार का विचार था कि उस दिशा मे यदि वातायन बनाये जायें तो हवा और प्रकाश मिलेंगे, तथा गहरी घाटी होने के कारण कोई उन झरोखो से झाकने का जोखिम भी नही लेगा। पुन झरोखे सीधे आकाश की ओर खुलने की अपेक्षा ऐसे घुमावदार बनें कि प्रत्येक खुले स्थान के सामने आडी दीवार रहे। रोशनी को प्रत्यावर्तित करने के लिए आडी दीवारो के सामने दपण लगाये जायें। आवश्यकता होने पर य झरोखे खोले या बद भी किय जा सकें।

महाराज के सम्मुख व्याख्या सहित यह प्रस्ताव पेश हुआ। महाराज न मदिर की ओर पहुचकर प्रत्यक्ष निरीक्षण किया। बीच मे गहरी घाटी के कारण मदिर वाले शिखर अथवा उस टेकरी के किसी भी छोर पर खडे व्यक्ति की दृष्टि यदि झरोखे से भीतर भी पहुचेगी, तो वहाँ से चालीस हाथ नीचे बने हरण-ताल मे जल क्रीडा मे व्यस्त किसी व्यक्ति को नही छू सकेगी। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। बरक्त तनाव मुक्त होकर पुन

जी-जान से झरोखो के निर्माण-काय मे जुट गया। महाराज ने परदेसी को ससम्मान पारितोषिक देकर विदा किया। पता चला कि परदसी कोई इटालियन पयटक था, वास्तुकला मे प्रवीणता पाने के लिए ही वह देश विदेश की सुदर वास्तु-कलाएँ देखने के लिए पयटन कर रहा था। राजस्थान की लोक विश्रुत कलाओ की बात सुनकर ही उधर भ्रमण को निकला था।

झरोखा के निर्माण के बाद जब प्रकाश प्रत्यावर्तन का प्रबध कर दिया गया, तो उस साठ हाथ गहरे गुबदनुमा तरण-ताल म प्रकाश की किरणें जगमगा उठी। भीतर इतना प्रकाश आने लगा कि बिना किसी कृत्रिम रोशनी के ताल के तल का कार्य बचा थाय चलाया जा सकता था। महाराज के आदेशानुसार नीचे सगमरमर की सलीके से काटी शिलाए लगायी जाने वाली थी। स्नानागारो की दीवारो और ताल की सतह स दस दस हाथ ऊपर तक दीवारो पर सीप के चूण के पलस्तर पर बेल बूटे बनाय गये थे। सगमरमर पर कारीगरो न महीन खुदाई का काम किया था। ताल के चारो ओर का फश मुलायम चीनी मिट्टी की टाइलो का बना था, सीढियो म जबलपुर स मँगवाया लाल पत्थर लगाया गया था। इस प्रकार तरण ताल का निर्माण ऐसी सामग्री स किया गया था कि वह पानी न सोख सकें। राजस्थान मे जल का अभाव ही इसका मुख्य कारण था। महाराज चाहते थे कि ताल म एक बार भरा जल महीनो तक न सूखे न कम पडे और न ही गदा हो।

गदा होन का तो प्रश्न ही नही था, क्योकि उस ताल म महाराज और पासवानजी के अतिरिक्त किसी को उतरने की अनुमति ही नही थी। नहाने के लिए यदि कोई स्वास्थ्य वद्धक द्रव्यो का प्रयोग करना हो तो उसके लिए साथ ही स्नानागार बनाये थे—ताल म तो केवल जल क्रीडा ही लक्ष्य था। सगमरमर के फश म पानी के सूखन या कम पडन की सभावना कम ही थी।

इस प्रकार जोधपुर के महलो मे पासवानजी की फरमाइश पर भूगभ म तरण ताल बनकर तैयार हो गया। बरकत न दरबार म उपस्थित होकर जिस दिन यह सूचना दी, उसी साथ महाराज और अनारा बाई न उसके परीक्षण निरीक्षण का निश्चय किया।

अभी पूरी तरह सध्यावरण नही हुआ था, वातावरण मे गर्मी बदस्तूर मौजूद थी, डूबते सूय की सीधी किरणा मे भी तीखापन बाकी था और अभी राजस्थान की झुलसी रेत बराबर सेंक दे रही थी—जब महाराज और पासवानजी भूगभ म उतरने वाली सीढियो पर से होते हुए तरण-ताल के निकट पहुँचे। ऊपर सरक्षकगण सावधान हो गये थे सीढिया के द्वार पर पहरा बिठा दिया गया था। महाराज और पासवानजी के होते तरण-ताल के निकट अय कोई व्यक्ति तो क्या, पक्षी भी पर नही मार सकता था।

तालाब म दो दिन पूव ही साफ पानी भरा गया था भूगभ म बाहरी ताप स बचा रहन क कारण वह शीतल भी था और सफेद स्फटिक पत्थरो के तल पर भरा जल, दूध धवल दीख रहा था। पासवानजी को जोधपुर की भयकर गर्मी मे शीतल जल का ताल देखकर ही रोमाच हो आया। महाराज क गले म बाहे डालकर ऐसे झूल गयी, जैस लता पेड का आश्रय लेकर झूल जाती है। उनके हर्षोल्लास की सीमा न थी, बस अपनी कृतज्ञता प्रकट करने मात्र के लिए गलबहिया डाले डाले ही महाराज का मुख चूम लिया और क्षण भर बाद ही एक शालीन महिला की नाई साधारण हो आयी।

प्राणा के सगी क साथ जल क्रीडा का सुअवसर बडे भाग्य से मिलता है। खुले मे किसी सर-सरिता म ऐसा कब सभव होता है। और यहा तो शाही शान थी क्या मजाल इधर कोई आँख भर दख भी ले। आँखें निकाल ली जायेंगी। इसी निर्भीक, निवसन युवा शरीरो के जल की सतह के भीतर अठखेलिया करने के यथाथ आनद को ही तो जल क्रीडा कहा जा सकता है। आज यह अवसर महाराज को अपनी प्राण प्रिय अनारन की सगति मे प्राप्य था। ताल के भीतर घुसे महाराज भी चिहुँक चिहुँक उठते थे। पासवान थी कि छेडखानी कर पानी मे गोता लगाती तो कही ताल के दूसरे छोर पर दिखायी देती—उनके हास्य किल्लोल का स्वर सुन जो महाराज उधर मुडते, तो वह पुन जल मे समा जाती।

यद्यपि प्रकाश का प्रर्याप्त प्रबध हो गया था, किंतु सध्या उतर जाने के कारण रोशनी मद पड रही थी। मशालो के लिए महाराज का आदेश न था।

यही कारण था कि बचपन म जोहडा-तालो पर मुक्त भाव से तरने

स्नान करने वाली अनारन आज जोधपुर नरेश की संगत में उसी भाव को उजागर कर रही थी—साथ ही प्रेम और उल्लास मिलकर उसे कोई षोडशी चचला बन जाने को बाधित किये हुए थे। जल की तह में महाराज भी अपनी कुमारावस्था को पुनर्जीवित किये पासवानजी के स्फटिक शरीर से लपक झपक और भीजन मीजन का सुख लाभ कर रहे थे।

घटा भर जल क्रीडा कर लेने पर आज दोनों प्रेमी परम सतुष्ट और श्रमित प्रतीत हो रहे थे। जल से बाहर आकर जब दोनों ने स्नानागारों मे जाकर पुन शाही पोशाक धारण की तो उनके भीतर का अल्हडपन उनसे विदा हो चुका था। अनारन की नजरें झुकी थी लज्जावश वह महाराज की आँखो में देख सकने में असमर्थ थी। महाराज को भी अपनी भक्त चेतना पर विस्मय था। बया ताल के शीतल जल में कल्लोल करते हुए महाराज और पासवानजी राजकीय गरिमामय युगल था या कोई प्रेमी हसो का जोडा! महाराज निकट अतीत के उसी उल्लास में खोये हुए थे उन्होंने पासवानजी के सुनयनो में लज्जा का आवरण नही देखा।

दोनो सीढियो से ऊपर चले आये। एक सुन्दर सुखद स्मृतियो भरे दिन का अवसान हो रहा था। महाराज प्रसन्न थे उन्हे तरण ताल बहुत पसन्द आया था। पासवानजी भी प्रसन्न थी, उन्हे महाराज पर प्यार आ रहा था। उनके एक साधारण सकेत पर जोधपुर जैसे रेगिस्तान मे निर्मल शीतल जल वाले तरण ताल का निर्माण महाराज के ही कारण सभव हो पाया था।

महाराज ने अपने निजी कक्ष मे पहुँचते ही बरकत को तलब कर लिया। अनारन भी वही मौजूद थी। बरकत के आने पर महाराज ने उसे बधाई दी वास्तु श्री' की उपाधि और सिरोपाव भेंट किया। पासवानजी पुरस्कार रूप अपने गले का नौलखा हार उतारकर बरकत को दिया बरकत की आँखें चमक उठी—यह चमक सफल कला थी। झुककर उसने महाराज और पासवानजी को त और कक्ष से बाहर चला गया।

मुर्गे की बाँग के साथ लोग अभी उषा के स्वागत की तैयारियाँ कर रहे थे। राजभवन म पहरुए अभी बदले नही थ। महाराज और पासवानजी गहरी नीद सो रह थे, तभी खाशा डयाढी की ओर से महाराज के लिए समाचार पहुँचा कि धाय माँ रोग के कारण अत्यधिक कष्ट मे है, शायद कुछ ही घडियो की मेहमान हा !

महाराज की अतीव विश्वासपात्रा दासी मधुआ को शयन कक्ष मे भेजा गया। अतीव सावधानी और चतुरता से उसने महाराज की निद्रा भग की और उन्ह दुखद समाचार पहुँचा दिया। महाराज हडबडाकर उठ बठे, पास वानजी की नीद भी टूट गयी। मधुआ एकदम वहाँ से हट गयी—अनारन न महाराज की व्यग्रता देखकर कारण जाने बगर बात समझ ली और तेजी स पलग पर स उतरकर अस्त-व्यस्त वस्त्राभरण को सँभालन लगी।

दानो साथ साथ मुख्य प्रासाद से निकलकर खाशा डयोढी की ओर बढे। अमर और जसवत को धाय मा स बहुत प्यार था, अत वे उक्त सूचना पाकर पहले से ही धाय माँ के कक्ष म पहुच चुके थे। महाराज और पासवानजी न कक्ष मे प्रवश करते हुए दखा कि धाय माँ ने जसवत और अमर को दोनो बाजुआ म लेकर उनक सिर अपन सीन पर टिका रखे हैं। ऐसा करन से शायद उसे सुकून मिल रहा था तभी वह कुछ शात भी दिख रही थी।

महारानी की असामयिक मृत्यु के पश्चात धाय माँ न दोना को मा का प्यार दिया था राजकुमारो ने भी उसे माँ के ही स्थान पर स्वीकार कर लिया था। उनका समूचा हित धाय माँ द्वारा सरक्षित था, ऐसा ये महसूसन लग थे—इसीलिए आज धाय माँ का महाप्रस्थान उनकी व्यक्तिगत हानि सा प्रतीत हो रहा था। वे दोना अश्रुपूरित नत्रा के साथ धाय माँ के सीन पर सिर रखे सुबक रहे थे। धाय माँ की आँखें खुली थी, उसका ध्यान प्रवश द्वार की ओर अटका था। वह शायद महाराज और पासवानजी की ही प्रतीक्षा म थी।

महाराज और पासवानजी को साथ-साथ प्रवेश करते दखकर धाय माँ क मुख पर हल्की निबल मुस्कान खेल गयी। ज्योही दोनो रोग शैया क निकट आये धाय माँ न सकेत से पासवान को अपने बहुत पास बुलाकर उस

वत और अमर के हाथ उन्हे सौंप दिये। अभी पासवानजी न दानो के कधा पर सरक्षण के हाथ धरे ही थे कि धाय मा का सिर लटक गया और आखें पथरा गयी। पासवानजी ने दोनो राजकुमारो को अपने अग से भीच लिया। उसके मुख से चीख निकल गयी।

अमर ने उसी समय पासवानजी का हाथ झटककर परे कर दिया और धाय मा के मृत शरीर से चिपट गया। जसवत के भी आसू बह निकले और उसने पासवानजी के आचल म ही मुख छिपाकर पीडा को सह सकने का सामथ्य खोजना चाहा। महाराज किकतव्यविमूढ खडे देखते रह गये— जस उनकी दुनिया का एक घटक लुट गया हो, एक भरे माहौल मे शून्य बन गया हो।

कुछ ही क्षणो म महाराज चेतना म लौट आय। स्वय उन्होन एक आर स धाय मा का बिस्तर पकडकर सेवका की सहायता से उनकी मत दह को धरती पर लिटाया और शोक ग्रस्त हो एकटक उस स्नेह मूर्ति को ताकने लग। पासवानजी ने उनके कधे को छूकर सावधान किया। दास दासिया ने दिया बत्ती और अन्न-दान आदि करवाया।

अब दिवागमन हो चुका था। चारा ओर रोशनी फल गयी थी पक्षी चहकने लगे थे ठडी बयार शरीर को छूकर हल्की सिहरन पैदा कर रही थी। भवानी मदिर की चोटी की ओर से रुक रुककर मोरा के कूकन की आवाज आती थी और कहो दूर किसी मस्जिद मे सूर्योदय की अजान का गभीर स्वर हवा के घोडो पर सवार धाय मा क कक्ष के द्वार खटखटा जाता था।

दोपहर तक सब सगे सबधी एकत्रित हुए और सायकाल सूर्यास्त स पूव ही धाय माँ का दाह-सस्कार कर दिया गया। मिट्टी मिट्टी मे मिल गयी। सारा दिन महाराज और पासवानजी पर उदासी बनी रही किसी काम म मन नही लगा। महाराज अपनी दनिक बैठका म भी भाग नही ले पाये, बेचारे दीवानजी को वह अकेले ही सँभालना पडा। मालूम नही महाराज किस सोच म पडे चिंतित बन रहे। पासवानजी को रह रहकर अमर द्वारा हाथ झटककर परे हट जान की बात सालती थी। यो तो अमर का आचरण उनके लिए नया नही था, किंतु मरने वाली की इच्छा

का भी निरादर ! मा नही, मा की स्थानापन्न तो थी वह, घडी भर रुक्कर यदि अमर ऐसा करता, तो शायद इतना दुखद न होता। धाय मा के लिए पासवानजी म बडी सहानुभूति थी, अत अमर के आज के व्यवहार म उन्ह विशेष अभद्रता दीख पडी।

उसी दिन सध्या गहराने पर एक ऐसी घटना घटी, जिसन जलती पर तेल का काम किया। अत्यधिक उदासी और खेद म मुह लटकाये बैठी पासवानजी को महाराज न चौखला उद्यान म कुछ घूम लेने और फूलो की सगति म मन बहलाने का प्रस्ताव किया। पासवान मान गयी। उदासी तो सारे परिवार म छायी थी, इसलिए महाराज दोनो कुमारो को भी साथ ले गये। परकोटे की दीवार की सीढिया उतरकर चारो व्यक्ति चौखला उद्यान म भ्रमणार्थ आ गय। दोना कुमार अलग से जाकर फव्वारे के निकट बठ गये और इधर उधर की हाँकने लगे। अमर ने जसवन्त को अनक नवीन ढग के तलवार के वारो तथा आत्म रक्षा के ढगो का विवरण देना शुरू किया। जसवत मनोयोग से जानने सीखने का प्रयत्न करने लगा।

उधर उद्यान प्रखड मे महाराज तथा पासवानजी ने हरी घास पर चहलकदमी का कायक्रम बनाया। राजस्थानी रेगिस्तान मे हरी घास मिल सके, तो उसकी शीतलता का पूरा आस्वाद लेने के लिए नगे पर चलने का जो आनद मिलता है, वह जूतो सहित चलने का कदापि नही। महाराज तथा अनारन ने उद्यान मे घास पर पाव रखने से पूव इधर उधर उगी फूलो की झाडिया मे अपने जूते उतार दिये।

पासवानजी के जूते बडे सुदर राजस्थानी सुनहरी कढ़ाई का नमूना थे। विशुद्ध सोने की तार स कढ़े इन शाही जूतो पर बहुमूल्य मोतियो की झालरें लगी थी, जो दूर स ही दिपदिपाती थी। पासवानजी क बढ़े हुए प्रत्येक पग के साथ जूतो की चमक चपला सी कौंध कौंध जाती थी।

झाडी म जूते उतार दने क बाद पासवानजी महाराज की बाजू का सहारा लिए चौखला उद्यान म हरी घास की शीतलता का आनद लती रही। घूमते घूमते दोनो न प्रथम मिलन से लेकर आज तलक की अनेक

रामाचपूर्ण बातें की, क्षोभ और उदासी का भरसक कम करने का प्रयास किया मुस्कराए खिलखिलाये, फिर भी धाय माँ की विलगता का आघात वे पूरी तरह भुला नही सके। इसीलिए बात का सदर्भ धाय माँ की मृत्यु वेला और उनकी अन्तिम इच्छा की ओर मुड गया।

प्रात की तीखी तिक्त घटना अकस्मात पुन स्मरण हो आयी। अमर इतना अभद्र हो गया है कि उसे धाय माँ के मृत शरीर का भी लिहाज न हुआ—बहुत बुरा लगा था पासवानजी को। और कोई समय होता तो शायद वे वहीं विरोध ही नही, विद्रोह कर देती, किंतु उक्त शोकावसर पर ऐसी अशिष्टता उन्हें क्योकर शोभा देती? महाराज से अमर की शिकायत किये बिना वह नहीं रह पायी। महाराज ने सब कुछ देखा-सुना था इसलिए गभीरता से बोले "हाँ प्रिय मैं जानता हूँ, पानी सिर से चढ़ता जा रहा है कुछ करना ही होगा।

अनारन एस स्पष्ट और प्रतिक्रियावादी उत्तर की आशा नही करती थी अत एकदम स्तब्ध स अवाक रह गयी। यही तो वह भी मन से चाहती थी। महाराज ने भी आज महसूस किया, बडी बात हुई। अत इस विषय पर आग बात चलाने का प्रश्न ही न था—अनारन मन-ही मन विहँसकर चुप बनी रही।

अधेरा घिरने लगा था, आकाश में टिमटिमाते सितारे भी ऊपर से झाँककर कुछ कहने-सुनने की मुद्रा में आ गये थे। कृष्ण पक्ष होने के कारण चाँद अभी विश्राम कर रहा था। पासवानजी ने प्रासाद में लौट चलने का प्रस्ताव किया। महाराज ने पच्चार के निकट गपियाते अमर-जगधन को आवाज दी और लौटने को तैयार हो गये।

उद्यान से बाहर आकर महाराज ने झाडी में से निकालकर अपना जूता पहना अनारन भी अपना जूता पहनने चली। दुर्योग से उन्हें यह ध्यान न रहा कि उन्होंने जूता किस झाडी में उतारा था। सामने की एक दो झाडियों में देखा, तो वहीं दीख नही पडा—अँधेरा भी बढ़ता जा रहा था पासवानजी व्यग्र हो आयीं।

अमर सामने पड़ा। 'अमर बेटा जरा मेरा जूता ढूँढना जाने रख दिया'—बड़े सहज और वात्सल्य भरे स्वर में [illegible] ने कहा।

जसवतसिंह को इस पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है। मेरी मत्युपरात युवराज जसवतसिंह ही शासक होग। राजकुमार अमरसिंह शासक की अनुमति पर ही राज्य म रहन के अधिकारी होंगे।'

आदेश पत्र तैयार करवाकर उस पर शाही मुहर लगा दी गयी। महाराज गजसिंह न मुहर पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और आदेश दिया कि इसकी एक प्रति शहनशाह के पास सूचनाथ भेज दी जाये।

समूचा मत्रीमडल सन्न रह गया। महाराज की दढ़ता और तनी भकुटि को देखकर किसी को कुछ भी पूछने का साहस नही हुआ। समाचार जगल की आग की तरह पहले महलो मे फिर दुग मे और तत्पश्चात प्राचीरो को लाघता हुआ पूरे नगर म फल गया।

अनारन चुप थी, चुप ही रही। हा उसके तनाव म कुछ कमी आयी। महाराज हल्कापन महसूस करने लगे। राजकुमार दोनो विस्मित थे किंतु किसी ओर से कोई प्रतिक्रिया न थी। नगर म लोग अपनी-अपनी समझ क अनुसार महाराज के निणय पर टीका टिप्पणी कर रहे थे— अच्छा ही किया अमर की अक्खडता से मुक्ति मिली, जिसे जिन्दगी की कीमत नही, वह राज-काज क्या सँभालेगा। महाराज रखैन की बातो म आ गय परपरा तोड रहे हैं। जसवत का सिंहासनासीन होना प्रजा के हित मे है किंतु ? 'महाराज ने सोया राक्षस जगा दिया, ईश्वर भली करे। क्या जाने अमर क्या कर डाले।' जितने मुँह उतनी बातें।

प्रजा का विस्मृति बोध बडा प्रबल होता है। चार छ दिन बातें चली शाति हो गयी। अमरसिंह अपन कुछ अभिन्न मित्रो क साथ जोधपुर छोड कर आगरा चला गया। शाहजहा अमर की वीरता से परिचित था—वह साम्राज्य की सुरक्षा मे सहयोगी हो सकेगा, ऐसा मानकर शाहशाह ने उसे दरबार मे बुलाकर अपना लिया। दोहजारी का पद और नागौर की जागीर जिस पर विजय पान म अमर का भी हाथ था उस प्रदान की गयी। जोधपुर से नाता तोडकर अमर पडोसी राज्य का दोहजारी जागीरदार बन गया।

प्रतीत हुआ, जसे एक सुहाना स्वप्न अकस्मात टूट गया हो। अनारन का समूचा ससार ही लुट गया था। अचानक उसने अपने को बिलकुल अकेली पाया। रिश्तेदार-नातदार तो पहले ही मर खप गये थे, एकमात्र सहारा था महाराज का। रजक रक्षक और रमणक व ही थे। जीवित थे तो अनारन आकाश म उडती थी उनके प्रेम के पखा पर ऊँची उडानें भरती थी—अब नही रहे तो जैसे बीच आकाश म किसी न पक्षी के पख काट दिय हो। लुज पुज वह धडाम से धरती पर गिरकर तडप रही थी! किंकर्तव्यविमूढ पासवान पद प्रतिष्ठिता अनारन को तो अपने प्रिय सग सती होने का भी अधिकार न था। काश वह महाराज के जीवन काल मे ही चल बसी होती! सम्मान ता सुरक्षित रहता। अब तो वह दासिया से भी नीची स्थिति में जीयेगी।

नही यह नही सह सकेगी अनारन। इतने वष जहाँ हुकूमत की हो, वहाँ दासी बनकर एक दिन का जीना मत्यु से अधिक उत्पीडक है।

नया समाचार मिला। बादशाह ने स्वय जसवतसिंह को ताज पहनाया और जोधपुर का शासक स्वीकार कर लिया। महाराज जसवतसिंह आगरा से जोधपुर के लिए रवाना हो गये हैं।

मन म एक बार खुश फहमी जगी। जसवत तो मेरा सम्मान करता है, मुझे सादर आश्रय दे सकता है—आखिर उसके महाराज बन सकने मे मैं भी तो एक भूमिका हूँ —थोडा उत्साह हुआ।

विचारो ने पुन करवट बदली। कौन जाने, ऐश्वय पाकर किसका मूड नही फिरता! बहुत चोटें सही हैं, जीवन मे। अब कवच ही नहीं रहा, तो चोट घातक होगी। नही सह सकूगी, साधारण ताना भी विष बुझे तीर जसा लगेगा। अब इस गुलशन से अपना घोसला हटाना ही उचित है। समय के तूफान ने वह पेड जड से उखाड फेंका है जिस पर मैंने घोसला बनाया था, किंतु कौन लड सकता है मौत से! मुझे जसवत के पहुँचने से पूव ही महलो से विदा हो जाना चाहिए।

सूखे अश्रुओ वाली फटी-फटी आँखें लिए, अनेक दास-दासियो की उपस्थिति म अनारन ने मौन भाव से महलो को सदा के लिए त्यागने का निणय लिया और साधारण वस्त्र पहनकर जैसे बनवास की तयारी कर ली।

दीवानजी ने समझाया, रोका, विनती की, किंतु बार-बार भीतर की हूक ने अनारन को रुलाया और चले जाने की प्रेरणा दी।

जसवंत बड़ी तेजी के साथ जोधपुर की ओर बढ़ा। मन का चोर उसे सजग किये हुए था—'कहीं अमर नागौर से आकर राज्य पर अधिकार ही न जमा ले! शाहंशाह ने उसे शासक स्वीकार कर ही लिया है, अतः अमर शासक तो बना नही रह सकेगा, किंतु झंझट तो खडा हो सकता है ना!' बस इसी अंतर्द्वंद्व में महाराज जसवंतसिंह तेजी से जोधपुर की ओर बढे चले आ रहे थे।

अनारन महलों से निकली। दुर्ग की ड्योढी को लांघते हुए नगर-द्वार की ओर बढ़ी। महलों की अनेक स्त्रियाँ पीछे चल रही थी, सबकी आँखें गीली और बदन मुरझाये हुए थे। सबने कितना चाहा था कि अनारन रुक जाये। दीवानजी ने विश्वास दिलाया था कि उसका सम्मान यथापूर्व बना रहेगा। किंतु मचलता हुआ मन विश्वास की पतली डोरी के टूट जाने के भय से ही आतंकित था, बार-बार मनाने पर भी मानता न था—मान-मानकर भी अवमानना करता था। इसीलिए आखिर वह महलो से निकल ही पड़ी थी, शेष जीवन काशीजी में बिताने का सुदृढ निश्चय करके वह नगर-द्वार की ओर बढ़ने लगी थी।

सूचना मिली, नये महाराज राज्य की सीमाओं में प्रविष्ट हो गये हैं। राजकुमार जसवंत या कवि जसवंतसिंह को सबने देखा था, महाराज जसवंतसिंह से कोई परिचित न था, इसलिए उन्हें एक नजर देख-भर लेने को सारी प्रजा टूटी पड़ रही थी। व्यक्तित्व ऐसे ही बदलते है, 'तू' से 'तुम' और 'तुम' से 'आप' की यात्रा तै होती रहती है।

अनारन अभी नगर-द्वार तक नही पहुँची थी, कि 'महाराज जसवतसिंह की जय' के गगनभेदी जयकारों से सारा नगर प्रकंपित हो गया। महाराज घोडा भगाते हुए सीधे दुर्ग के नगर-द्वार की ओर बढ़े चले आ रहे थे। वे महलों के किसी भी संभावित अनिष्ट की कल्पना से ही परेशान थे, इसी व्यग्रता में वे प्रजा के अभिवादन अभिनंदन का यथोचित उत्तर भी नही दे पा रहे थे। फिर भी सड़को पर दोनों ओर एकत्रित हुई भीड़ के जय-जयकार को हाथ उठा-उठाकर सहर्ष स्वीकार करते अपनी ही चिंताओं मे घुलते हुए

वे भरसक तेजी से नगर-द्वार पहुँच गये।

नगर-द्वार पर अपने नये महाराज का स्वागत करते हुए दीवानजी ने पासवानजी की जाने की हठ और उनके इधर ही बढ़ी आने की सूचना दी। महाराज जसवंतसिंह की छाती पर जैसे किसी ने चोट कर दी हो। वे वहीं घोड़े से उतर गये। सामने अनारन के बनवासी रूप को चले आते देखकर उनके नेत्र सजल हो गये। झपटकर उधर बढ़े और घुटनो के बल झुककर हाथ बाँधे हकलाते हुए बोले, 'अन्ना बा ! मुझे किसके सहारे छोड़ जा रही हो ?' इतना कहते-कहते महाराज जसवंतसिंह के नयनों से दो मोती झड़ गये। वाणी पहले से भीगी थी, अनारन किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ी की खड़ी रह गयी।

'अन्ना बा, आप तो राजमाता है, राज्य की स्वामिनी; फिर यह क्या वेश बना लिया है, महलों मे चलो। आपकी अनुपस्थिति में मुझे धैर्य कौन बँधायेगा'—कवि-हृदय द्रवित हो गया। बेबस अनारन हर्षातिरेक में जसवत के शीश को वक्ष में छिपाकर फूट-फूटकर रो पड़ी।

नाम : डॉ. मनमोहन सहगल

शिक्षा : एम. ए., पी-एच. डी. लिट्

सम्प्रति : प्रोफेसर ऑफ हिन्दी,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

प्रकाशित औपन्यासिक कृतियाँ :

जिंदगी और जिंदगी
जिंदगी और आदमी
बदलती करवटें
कश्मीर की कसक
गुरू लाधो रे
मानव छला गया
एक और रक्तबीज
अन्ना पासवान